



मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

(भूतपूर्व जोधपुर-नरेश परमपद-प्राप्त राजर्षि महाराजा श्री श्री मानसिंहजी महोदय रचित व्यावहारिक आत्म-ज्ञान के पद्यों का संग्रह)

दूसरा भाग

संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक

रामगोपाल मोहता

बीकानेर (राजस्थान)

भाचार्य श्री विनयचन्द्र मान सपथार, जयपुर



मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

(भूतपूर्व जोधपुर-नरेश परमपद-प्राप्त राजर्षि महाराजा श्री श्री मानसिंहजी महोदय रचित व्यावहारिक आत्म-ज्ञान के पद्यों का संग्रह)

दूसरा भाग

सम्यक्कर्ता तथा प्रकाशक

राममोपालक मोहता

दीकानेर (राजस्थान)

सरी चार)
१००० ()

सन्वत् २००६

(मूल्य कागज, छपाई,
का री। रु०)

जय-श्री महा प्रेस

C/o कोहराम भवरनाथ त्रिभूद माज

कोट गेट, श्रीकानेर में भवरनाथ स्वर्णकार द्वारा मुद्रित



संग्रहकर्ता तथा प्रकाशक

रामगोपाल मोहन

मान पद्य-संग्रह

दूसरे भाग की पद्य-सूची

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
एक		आ	
भवतुज गारे हम हीं है	...गान १९	आ खड़ी रे महल में	...गान ३१
भरज कल ओ म्हारा नाथ	... ,, ३४	आज म्हारे निज सू	... ,, ५१
भव भर्म उड़ाय भली	... ,, ३९	आवो आवो म्हारी सुरता नार	... ,, ११५
भव सुनिये तराधिपति देव	... ,, ४३	आवो आवो म्हारी सुरता थनि	... ,, १२९
भरे हरि दुजो नाई रे	... ,, ७२	आवो म्हारी सीया रसियो ही राम	... ,, १२३
भव मेरी भानी सुरता नार	... ,, ७४	आस दूर कर कीजे	... ,, १२८
भवम कुए पर सुरता जल	... ,, ६५	आवो आवो म्हारी सुरता, पियाजी	... ,, १३८
भव हम प्रेम पियाला	... ,, ६६	आसावरी गायन जाने	... ,, १३९
भव अभिमान निवारो प्यारी	... ,, १०२	आये बन्ध छुड़ावने	दोहा १६९
भव मान बावरी चालो	... ,, १२७	आवो रे आवो काजी पण्डितों	गान १८१
भव तुम मौज करो री	... ,, १३६	आया में तो मन रँगिया रे	... ,, २१०
भव तुम उठो उठो रे लाल	... ,, १३७	आवे जिसी चस मारत है	... ,, २१३
भव मम होय सचेत, मना रे	... ,, १३८	आछो लागे बज रो सनेह	... ,, २४१
भव न ठगाएने हम	... ,, १६४	आवो जी मिल होरी खेले	... ,, २८५
भव चुप रहो मत मोय	... ,, १८५	इ	
अपने करने में आलड़	कविता १८६	इन छवि पर बलिहारी	...गान ७
भव मोहे अपनी हीं दोष	...गान १६०	इतने न डरो नाथ	...कविता १७९
अगर श्रीकृष्ण नहीं	... ,, २३१	इतने भेड़ सू सिंह बनावो	...गान २८०
अरे विपना तू क्यों बावरी	... ,, २५५	उ	
अव ही महत् निज आवो	... ,, २८१	उन हर की बलिहारी	...गान ३
अव के जानन्द म्हाने आवो	... ,, २८२	उगाया सूर अपने में	... ,, ८७
		उदाये बन्ध सब बिल के	... ,, ९९
		उड़ सखी क्या सोवे बाकी	... ,, १०३

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
उगाया एक नया सूरज ... गान २३०		और घूट गिवत बिमारी .. चौपाई २३२	
ऊ		ओम को मंत्र पठपो हमने .. सर्वया २८०	
ऊधो प्यारे क्या ब्रह्मज्ञान ... ,, २४१		क	
ऊधो क्या मोहे जोग ... ,, २४२		करलो भक्ति अपने रूप की . गान ७६	
ऊधो मैं जोगिन वा ... ,, २४४		करी हम सकल कमाई .. ,, ७८	
ऊधोजी प्यारे क्या मोहे ... ,, २४५		कर मन दुष्कर्मों रो त्याग ... ,, १४३	
ऊधोजी वांनि कहतां लाज ... ,, २४५		करदो करदो भरम ने दूर .. ,, १५३	
ऊधोजी प्यारे अब तो ... ,, २४६		कही मानी रे कही मानो . ,, १६०	
ऊँब नीच नहीं म्हारे .. ,, २३४		कर कर के मत्संग सोरठा १६६	
ए		कहने को ब्रह्मज्ञान सो दोहा १६८	
ए कीयां बिन ना रहे ... दोहा १८७		कही मानो हरि कही मानो	
एक सौ भाठ पडे उपनियद .. सर्वया १९५		सब सन्त ... गान १८८	
एक हू पद को अर्थ करे कोऊ कवित्त २२२		कही मानो हरि कही मानो द्विज ,, १८८	
एडो कलजुग भायां आवनी ... गान २५४		कवि चातुर चपल प्रवीण . ,, १५१	
ऐ		कवीर कवे जिन स्वांग घरपो . सर्वया १९२	
ऐमो अन्नर अमर घनस्वाम .. ,, ९		कद मिलती गोपाल गान २४१	
ऐडो रस और न आवे .. ,, २५८		कनक कामिनी जगत मे .. दोहा २४९	
ओ		कबहु गढ़ गाव बसावत .. सर्वया २५०	
ओलूडी आवे ह्यो म्हारे नाचरी ,, ६७		कर्म के परवाण होन विभूति कवित्त २६९	
ओ रावल अनन्त अपार ... ,, १३५		का	
ओ		काहे को सोती राखे थोरी .. गान १०६	
ओरन को ब्रह्मज्ञान ददे ... सर्वया १९५		कों	
		काई रे जहूर रस पीयो रसिया .: गान १५५	

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
हिंदू रे कुपन्ध पन्ध जावो ... गान १५६		को नहीं जीते भूपती ... दोहा १७१	
गंदे रे इसो हठ लियो ... " १५६		कोई बालो ऊण घर चलो रे गान २६१	
गोंदे रे नींद मुख सूतो भनवा ... " २८२		कोई रसिया होवे सो ... " ८४	
कि		को	
किगने बात बताऊं मेरे ... " १८९		कौशल्या कुन्ती और माद्री कवित्त १८२	
की		क्या	
कीजे मान बिचार नित कुण्डलिया १५७		क्या करूँ कर नहीं जानूँ ... गान ९	
कीनी हे जुल्म अपार रे ... गान २२७		क्या ग्रन्थ सुनायो, अपनी ... " १६२	
कीनो विविध बिचार ... सोरठा २६८		क्या कहूँ कहियन जाय ... " २३४	
कुं		क्या रटणो राबेस्याम ... " २७४	
कही कही नहीं सांख ... सबैया १७		क्यों	
कुं		क्यों बन जाऊ और रहूं मैं ... " ९७	
कृष्णचन्द्र पुरुष एक, गोपी ... गान ४		क्यों भई वावरी, पी पा पा पी सो ... " १३१	
कृष्ण.कहो किम आवे ... " १२		क	
कृपा कर नाथ बतावो ... " ६३		कटक मान तिहारो राबे ... " १०२	
कृष्ण जिसे जामी नहीं ... दोहा १४४		कू	
कृष्ण विमोग के बीच ... सोरठा २००		कूब मिलेजी कूब मिले ... " ७९	
कृष्ण मेरी, नहीं गोरी नहीं ... गान २७८		कूब खुशी जी कूब खुशी ... " ८२	
के		क	
केसे मतिमन्ध अन्ध ... कवित्त ९९		कम हू को कीनो घूत ... कवित्त १७	
केल जिला जन झुकत रहे ... सबैया १४६		कर जो भीता न होती ... गान २२८	
केसेक ओम् और राम ... " २८०		कि	
कै		किरधारी प्यारे बारी तोपे ... " १०६	
कैसे हीरे लुटाये ... गान २०१		की	
को		कीता ही भीता क्या करे ... दोहा २२४	
कोइक पूजत कालिका कुण्डलिया २		कु	
कोई कहे यह भोवन को और सबैयां १५०		कुलदेव बने शिर हाथ ... सबैया ११	
		गुण माफ करो मैं सेवक बारी ... गान ११	
		गुनि जन गुंम गाय गाय ... " १५	

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
गो		छा	
गो अनीन सब मे गोपाल	गान ५१	छाण छाण अभी पीवणो	गान १३५
गोम्बामी गये जख ही बन	सर्वेया १७९	छाण अभी जुपती देजं	.. ,, १३६
ज्ञा		छानी न छिपे कवि तरक	कवित्त १७८
ज्ञानी मदा नित थोष्ट ही है	सर्वेया १८	ज	
ज्ञान और विचार सील	.. क.पत्त १६५	जग है ही नही मुधरे	.. सर्वेया ९२
घ		जहा के है हम अहा के है	गान ६२
घणी खमा म्हारे सनगुरु रो	गान ६५	जय रूप हमारो	.. ,, २१५
घट के कपट पट तोडो ए	.. ,, १०६	जनक अनक कहे सब ही	.. ,, २१७
घणा जनन मू मिल्यो है	.. ,, १५७	जा	
घू		जाय अरि जाय सली सोया	.. ,, १००
घूँघट पट खोस रावे	.. गान १०४	जि	
घ		जिते दूँडने को गये	.. ,, १६४
घरण ही पोंवन घोय बडे	सर्वेया १६	जिन्हे न पूरो भाव, पोला	.. सोरठा १६९
घा		जिको अतम पाई	.. गान १७२
घारो ही वेद ने कही	.. चौपाई २	जीव बह्य सोरण	.. ,, २६६
चालो रे मदवा संहन पिल्लर	गान २१	जो	
चाली म्हारी गुरता गिगन	.. ,, ५८	जो कीयो सो कीयो	गान २५
चाल मुहाण सुन्दरी, याने	.. ,, ११९	जो बी पुदली लवण बी	दोहा ५९
चालो सहाया'मैय्या अलबेला	.. ,, १२३	जो निज को जिज जान	सर्वेया ८६
चालो म्हारी सुरता सुन्दरी	.. ,, १३२	जो देगू सो मेरो मित्रा	गान ८७
चालो चालो रे अमर घर आय	.. ,, १५४	ज्यो	
चाहे रहो तुम जाय के बन	सर्वेया २१४	ज्यो कीनो ज्यो बाह बाह	.. ,, २५
चारों ही वेद सो गाय बनी	.. ,, २१५	ज्यो दाचो ज्यों ही राचो	.. ,, १९३
चार वेद मुकु मुनि पढयो	दोहा २५०	झू	
		झूलत मेरो अक्षण्ड इयाम	.. ,, ४,

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
कूट ही कूट कहे जग को	सर्वथा १९६	दूर	
ठा		दूर करो दिल झूत विकार	गान १४९
गङ्गुर सेवक नाथ ... गान	२७८	दूर नहीं हो निवाह ... "	२३९
ता		दे	
गाया हुआ दूत नाथ पिया	सर्वथा ८१	देखो मैं तो सब घट क्याम	" ५
तु		देखी मैं तो सब जग खेल	" ६
कुम हो कृष्ण संशय नहीं	गान ९८	देखी माया सब गोपाल की	" १०
तुम्हें तो सहज बीखता है	" ३६	देखूँ नाथ को वीस दियो	" १५
कुम हो नरेक और दैत कष्ट	कवित्त ८९	देखो हृद्य हृद्य बीच गार हूँ	गान १०७
कुङ्की निकिया भूत ... दोहा	१७८	देखो जोगीदे रो रूप	" १३७
दू		देखो ध्याते मन न बयो	" २११
दू है जो अनादि ब्रह्म सदा	गान ३८	देखो देखो पीता प्रब विचार	" २२०
ते		देखो मनश्याम सब बीच	" २७०
तेरो रूप दू ही आव है...	" २७	देखो उर माँय हरि ने ... गान	२६९
तो		दो	
तोड़ो तोड़ो रे भरवना रो बन्ध	गान १५४	दोय से एक जो धुरा ... सर्वथा	२४३
तोड़े फिर कोई न सतावे	" २०२	ध	
त्या		धर्म मंत्र पढ़ के कुन्ती ... कवित्त	१८१
त्याग बले हरि गोकुल को	सर्वथा २४०	धर्म भूमि और कुशलेत्र रे माँय	गान २१५
था		धन्य तुम्हारी माई, बात सब	" २२३
धौसुं प्रीति करो मनमोह्य	गान ९	घर के कृष्णचन्द्र अवतार	गान २७२
धो		धर्म धर्म सब कहे ... "	२८७
धीही सी कही कृष्ण	कवित्त २२२	धी	
धीधी बात बनावे उदय	गान २४२	धीमे बरत म्हाारा मेहा पावो	" ५८
द		धीरे पलावो नाव केवट शश्या	" २३७
दश और एक पड़े जगनिन्द	सर्वथा २१५	न	
दि		नमो गुरु देव गुरुसिंह	गान १८
दिल लिख मन में निज ज्ञान	गान १८७	नमो जो नमो सतगुरु स्वामी	" १९

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
नरपति घन धन बुद्धि तुम्हारी	गान ४२	निषाद मझ्या अब अपने घर	गान २१७
नरेसु सब मे मुन्दर श्याम	" ७५	निषाद भैया यह नही	" २१८
नही त्यागी घरवारी	" ९४	निगुण सगुण बहा न्यागे	" २४३
नही बहिये अस मोहि मोक्ष	" १९१	निमित्त अवगार धार	" २६९
नही क्षयारे चाय अचाय	" २०८	नी	
नही डम्बर अङ्ग भभूत छई	सर्वैया २५७	नीन्द उटाई म्हारे नाथ जी	गान ७७
नर दिव्य नेत्र मे सार	गान २८३	नृ	
नर ए नही ज्योपारी	" २८६	नृप मयो रे बावरो, किनकी	गान ३१
ना		नृप कहिये बान सँभार	" १५०
नाथ शरण मे नाम समान	" ४९	नृपनि बोही मंगार मे	" २५६
नाथजी ने निज मे पायाजी	" ५५	प	
नाथ निज अमर हमारे जी	" ५५	परीहा कृथा बोल कयो खोके	गान १२
नाथ करण सो ना कियो	बोहा ९९	परतक परतो देखियो होतो	" १७४
नाम रटे ज्यारी अर्थ विचार	गान १४८	पण्डित कितडो तू वेद-मुणादे	" १८४
नाथ को डाँड उठायो नही कर	सर्वैया १६८	परहित कारण ही कियो	बोहा २००
ना कथनी सूँ काम	सोरठा १७१	पढ गीता रहे सीता उन्ही	गान २२७
नारी रतन निपजावे देखो	गान १९९	पढे हम मन्त्र गीता का	२३२
नारी पुरुष ने कोय, बालक	सोरठा २०१	पा	
नाथ म्हाने साकट माध न	गान २०४	पास मे देव और दूर गये हम	" १७
नाम-वैरागी घरयाँ अपनो	सर्वैया २११	पार भव सिन्धु लगावे रे	" ६४
नाथ रहे इतने ही मे सीधे	" २१३	पाय लिया अब पाय लिया	" ८०
ना उतते कुछ जोग सजयो	" २१४	पास जिमको बूँदना कैसी हँसी	" १४०
नाथ हम चरण छोड कहाँ	" २३८	पाँच हू तत्र और पाँच	सर्वैया १८२
नि		पारथ बनाय हारि ने गीता	गान ६७०
निरख रूप मुख पाई हो	गान ७	पि	
नित्य आनन्द रहू सदा	" ९७	पिया थाँ सूँ सम्बन्ध आदि	गान ५२
निज प्यारा हमारा नैनी	" २२६	पिया बुलावे रे	"
निषाद भैया कर मोहे	" २३५		

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
प्री			
प्री पीयो रे अमी रत ...	गान १५३	वात सुनी श्रज नारिन ...	गान २४७
प्री प्याला नित प्रेम का ...	दोहा १५५	वान कृष्ण क्या तुल्य ...	" २७७
प्री प्याला प्रेम का ...	" २३२	वि	
प्या		विहारी जी रो छोयो ...	" १३
प्यारी सुनी सरसी काँव ...	गान ११६	वु	
प्यारी अब तो पीहू ने श्याम ...	" ११८	बुद्धि को विवेक कर अन्तरगत कवित १९६	
प्यारी ए चाल सखी उस देव ...	" १२९	व	
प्यारी ए अदर न हुआ कोय ...	" १२९	बक कहे नृप मान सुनी अब ...	सर्वथा ९२
प्र		बक कहे भूपति सुनी वो पोषी ...	दोहा ९४
प्रथम वेदाचार्य कोहँ द्वितीय ...	कवित १८२	बक कहे मुन मानसी मत कर ...	" ९८
प्रभु है प्रेम से राजी ...	गान २३३	बक कहे तर राख सुनी सुन ...	सर्वथा १००
प्रे		बक कहे हो मानसी जैसी ...	दोहा १४४
प्रेम नहीं पर पर में ...	गान ११	बक कहे भूपति सुनी करो ...	" १७५
प्रेम पयोधि मंगाय सहाँ ...	सर्वथा १७	बक कहे सुन मानसी मत ...	" २०५
प्रेम को नीर कियो संग में ...	" १७९	बक कहे सुन मानसिह यह ...	" २२१
फ		प्र	
फकीरा सोनी सरे नहीं काम ...	गान २०७	ब्रह्मा और विष्णु महादेव ...	कवित २४
फकीरा स्वनि फकीरी सुँ बार ...	" २०७	ब्रज में खेल रघो गोपाल ...	गान ७५
फकीरी कायर सुँ कद हीम ...	" २०४	बहुतानी अभिमान में रह ...	कुण्डलियां १९५
फकीरा मती रे भिगाहो देव ...	" २०५	बच बनिता हो भक्त ...	छन्द २४०
फे		ब्रह्म की वात को छोड़ ...	सन्देश २४२
फेर घरी अवतार रे निज ...	" २२८	भ	
फ		भगवत नारद को समझाव ...	गान ४६
फने हम त्याग के स्वागी ...	" २८६	भक्ति भक्ति सब हो कहे ...	दोहा ७७
फा		भई है सुखा वावरी रे दणने ...	गान १११
फाला सब माँग खेके म्हारो ...	" ६	घरी बका रोवनी गीता में ...	" २२१
फाला सूता चदासी मुख नीन्द ...	" ६		

पद्य	मा	पृष्ठ	पद्य	मा	पृष्ठ
भाग भला नाग भेटिया	गान	१६	माननिह ससार मे	दोहा	१
भू			मानमेव वो भगवती	कुण्डलिया	२
भूलो रे भूलो बक नाम	कवित्त	९९	माया ब्रह्म द्वितिये नही	दोहा	३
भूल पड़े बपुरे मपुरे	सर्व्या	१८१	मान कहे महादेव सब	"	३
भूल पड़बो सगरो जग	"	१९२	मानसिह या जगत मे	"	१०
भे			भारय वाम हमारा साधो	गान	१४
भे कहु शत सारो	गान	९५	माननिह सतगुरु मिरुवा	दोहा	१५
भेद पकीरी न भाय सन्तो	"	२०८	मान कहा तुम जुलम करे	सर्व्या	१७
भेद दियो नही कान जो फाडे	सर्व्या	२१४	माया बडी नवराली ह्यो नाथ	गान	२१
भ			माया ब्रह्म भिन्न कहा माने	"	२४
भत मन मे धवराय शिष्य तू	गान	२०	मान कहे हो नाथजी	दोहा	२४
भद छकिया ने ना छोड ध	"	२१	माया ही खेल करे	सर्व्या	२४
भत भूल जीव बण आदि	"	२८	माननिह ससार मे मुनता	दोहा	२४
भन धर्म अधर्म विचार	"	८९	माया न भिन्न भिन्न ब्रह्म	कवित्त	२५
भन कहे ध्यारो ध्यारो	"	९३	मान अज्ञान नही अब तू	गान	३९
भन भावे नदनगोपाल	"	११८	मान कहे मित्रो सुनो	दोहा	४८
भना रे मेरा अब तो जूने	"	१४२	मानसिह ससार मे मोडी	"	५६
भना रे मेरा भग लूटे ठगभी	"	१४२	मान मत व्याकुल होय	गान	६४
भन सुनिरन कर बिन स्वर	"	१४७	माननिह या जग मे	दोहा	७९
भन चेत चेत अब	"	१५१	मान मान मली मान कहे	"	१०१
भत मोबा रे भरम के री नीन्द	"	१५२	मान मान को मेट के	कुण्डलिया	१०१
भत हो मन तू जग ते हैरान	"	१५९	मान मे ब्राह्मण धनो बग्यो	सर्व्या	१०१
भन सुख पायो रे	"	१६२	मान मान म्हारी मुरत मृदागण	गान	११९
भरे न लासो बात	सोरठा	१६८	माननिह जो रट रटी सो रट	"	१२८
भन समझ विचारो माची	"	१७२	मानसिह ससार मे सत्पुरुषा	कुण्डलिया	२६५
भत मोई चालो हाथ	सोरठा	१७६	मानसिह मंगर मे हंस स्वरूपो	दोहा	१६५
भन गीता बानप उर घर रे	गान	२२७	मानसिह जीवणै खेले	दोहा	१८३
भन री मच रही हाक	सोरठा	२५७	मान कहे अब मान मन	कुण्डलिया	१६०
भन गगा न्हावो	गान	२५८	माननिह ससार मे मन्चो भोत	दोहा	१९७

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
मान कहे सन्तो सुनो यह अचरज दोहा	१९७	मं	
मान कहे हो नाथ जो कीजे	२१३	मंत्रो से सुत नहीं होवे ... गान	१८०
ता फेरत भसखरा तिलक ..	२१४	मंत्र के बीच में तंत्र लिखे सर्वथा	१८२
तन हँसे मुख ते मयुर	२२२	महा	
..मि		महारी नौद उड़ाई नाथ मिलिया गान	४८
मेल्यो सखी मग में बनवारी मान	८	महनि कृष्ण मिल्या हो नाथ्यो ..	४६
मेल गये प्रेम पुजारी रे	११	महारा सतगुरु स्वामी सूती ..	५१
मिलिया सख गुण समधी मोय	४७	महारा नाथजी आषो वांका ..	६०
मिजी ए महाने राम रँगीली ..	५७	महारे मन में सवाई आनन्द ..	८४
मिले धनि रँगीलो जलो	१२८	महारी सुरत सुहायण जाग ..	१०८
मित्रो महाने था लघुता नहीं ..	२८७	महनि कौण अगवाई रे ..	१३२
मु		महनि वषी सुहावे रे बाजे ..	१४१
मुक्त होत बाबाल अति ... दोहा	२१०	व	
..मू		यह क्या मौज तुम्हारी गान	२६
मुरत सदर हमारी सापो ... गान	८८	यह उलझन क्या मानी ..	२६
..मे		यह गीता प्यारी नर ..	२२५
मेरहवा बरसत फवों नहीं	२५५	यह निर्गुन नहीं भावे ..	२४६
मेरे मन्दी चौक में रास ..	२७५	यह मत हमको न भावे ..	२४८
..मं		यह है गंग हमारी बहे गहरी ..	२५८
में बीर सयाना सिंह समाया ..	१०३	मूँ	
में हो लिखी फकीरी गान	२५९	मूँ मंत्रन सुत कीजे लेना गान	१८२
में तो नहीं हठयोग ..	२७६	..यो	
..मो		योग भाया जो कृष्ण की कुण्डलिया	९
मोहन रूप मिल्यो जग में ... गान	५	..र	
मोहे भगवत भक्ति भावे	१३	रहा कुछ भी नहीं क्व ... गान	८१
सो सम कीर्त है	२६२	रसिक होय सोई पावे यह	८३
		रट गो रक्षक गोपाल	१४३

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
रा		व	
रावल राम रयो माय खोज्याँ	१३४	वक्ता ज्ञान न कीजे ज्ञानी	गान १९२
राच रही ज्यो लाली हिना	१४	वा	
राम रक्षा के सिवाय दूसरो	कवित्त २१३	वा वा मन् पान तुम्हारो	गान २३
राधे राधे सब करे	दाहा २७३	वा वा हो झहारा नायत्री नाचो	५३
रू		वा वा नाय निज रूप तुम्हारो	५६
रूप वर्ण दिन बना खे	... गान २७	वाह वाह जगे हम वा वा जगे	७९
रे		वा वा प्रेम तेरो राधे	१०५
रे तुपति थालाक तू	... दोहा २४	वा वा पिवा बुठारे	७३
रे रे मुन बक कुछ क्याल	... कवित्त ८९	बी	
रे मन मेरा आतम तत्त्व	... गान १२४	बीरा म्हारा बीं सूँ नरम क्यो	गान १४५
रेल पर मेख मारी	... २३०	बृ	
रु		बृया विवाद न कीजे मित्रो	... गान १९०
रुन्यो रँग राम रो रे जोगिया	गान २०६	बं	
रुपन भईया प्यारो लागे	.. २३९	बंरागी मुख से कहे देखो	दोहा २४
रुपट रोल मचाई रे	.. २०८	बो	
रु		बो मग रह गयो ग्यारो	गान २३१
रुज तपो नाज मजनी	.. १०५	बि	
रुज केत्या ममम	... ११२	बिब और हम निज एक रूप	.. १५
रुी		बिष्य सब क्यो मगुजयो	.. ७०
रुीला मभी हमारी सन्तो	.. ८८	बु	
रुीजे अमर फल लीजे	.. १६५	बुद्ध मन मे सारग करे	.. दाहा २३
रुे		बोब	
रुे चालो उग देस सायब	गान २०	बोच क्रिया के नीर ते	दोहा १७९
रुेस लेख भव ही बहे	... दोहा ९९	ब्या	
रुो		ब्याम स्वल्प सभी जग	मर्बया ४
रुोक कहे मत्संग करो	... मर्बया १६६	म	
		सदयाँ गणपति गुण पायो ए	गान १

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
भृश दर्शण कीना विहारी	गान ७	साधो मत नारी बंध	१९७
तगुह मिलिया भयो रे ...	, ५०	साधो महीं सूं बुरी बहो नहीं	१९८
तगुह ऐसी कृपा जो कीन ...	, ५०	साधो मेरे नारी पुष्प नहीं	२००
तगुह मिलिया आय	... " ५६	साधो भाई कद मिटसी	१०३
हयों ए ऐसा हरिजन ध्यावो	" ६८	साधो ऐसे देखो मैं	२०९
हयों ए म्हारी धन आङ्गणो	" ८५	साधो मेरे बिन गेरु रंग छाया	२६०
हयों ए म्हारी घर बँडे आयो	" ८५	साधो भाई म्हाने नहीं मुक्ति रो	१६३
जनन को बेहे बण्ड और ...	कवित्त ९०	साधो भाई मैं तो उड़ गया ...	२६४
हयनी ए प्यारी समसा रो ...	गान १२०	साधो सब जग कुटुम्ब	२६५
हयों ए म्हारी चालो चालो	" १२०	साधो हम ऐसा यज्ञ कर लीन	२६७
उरनो म्हारा रे चालो रे चालो	" १५८	साधो महीं सूं वो यज्ञ नग	२६८
पब शैवी डरावे घनि बहकावे	" १७३	साधो भाई आ भक्ति नहीं	२७४
तमस लो छपने मन में तुम ...	" १८९	साधो मैं तो बो ठाकुर ...	२७९
तब जग रूप हमारी सन्तो ...	" २३३	सारङ्ग मन मीठा घणी	२८०
सत सङ्गव को सुख नाय ...	सर्वथा २५७		
सत बोझो रे साफ सत बोझो	गान २८३		
सा			
सारंग राग सुहायणी जिण में	दोहा ६८	विन्धु सुतापति पायो ...	गान ११
साधो भाई साधे ज्ञानी	... गान ९०	सिंहनी के गर्भ हूते श्वान	कवित्त २८
साधो भाई विगड़ी लैन	... " ९०		
साधो मेरे धिगड़े सो योगी	... " ९१		
साधो भाई धोड़े में मत	... " ९२		
साधो म्हाने नार मिश्री	... " १४०		
साधो भाई हिस अहिस	... " १४५		
साधो ब्रह्म संभावो	... " १४६		
साधो मैं तो इण विष मृतक	" १७५		
साधो भाई पाचक ज्ञान तज	... " १९४		
साधो भाई जाग्रत बहे	... " १९४		
साधो भाई दूर करो रे अज्ञाना	गान १९६		
		सि	
		सी	
		सीताराम कहन मुख ...	कवित्त २१२
		सु	
		सुरता प्यारी मत डरपो बे	गान १०९
		सुरता गोरी अब ता जगा ले	" १२१
		सुरता म्हारी बावरी पिया पुत्र	" १३३
		सुन पण्डित ज्ञानी मत हो	" १८४
		से	
		सेवा से जो मिले अमर ...	" १४७
		सेर सेर पीवे भंग खटक रहे	कवित्त २१२
		सो	
		सो याधू सत मानिये ...	गान १६

पद्य	पृष्ठ	पद्य	पृष्ठ
मोक्ष समक्ष में, बावरे	गान १४५	हा ब्रह्मविद्या नहीं जाऐ	" १८६
मोघ मती मन मूढ नीन्द	" १५८	हा रे मन्तो करो अपनी	" १९२
स्वा		हा निरन्त्र निज रूप तिहारो	" १२५
स्वाग धरयो शिर	सर्वैया २१३	हासी जो आत मेरे मन में	सर्वैया २७९
स्वामी मरडा सेबडा	पुण्डरिया २१४	हु	
ह		हुये नीरुग के रम ठाकुर	गान ८६
हमारै मन गुह पद बहुत स्नेह	गान ५६	हुग फकीर किकर किनका	सर्वैया २०२
हम पीते ही व्याला बुपचाप	" ८०	हे	
हम मस्तान हे बावरे	" ८१	हे म्हाारी मुपड बलाली	" ३३
हरि ता जागे तू ही मोवे	" १८४	हे महैज चीनब-बु	" ३
हठ छेड बावरी घाने मिलाऊ	" १२२	हेजी मै तो सुगणा ही सन्त	" १९
हम रग आयो रे हृद रग	" १६१	हेजी म्हाने पियाजी रो सँज	" ६९
हरी के कोई जान न पात	सर्वैया २७५	हेजी ये तो कुबजा रे महता	" ७१
हरि के यदि जान और पात	" २७२	हेजी मै तो वृति रो अम्ब पुजाई	" ७१
हा		हे	
हा रे आनन्द आयो रे	गान ७२	हे कहना तो लाज म्हाने	गान ९६
हा रे अजब खिलारी	" ७३	हो	
हा ए सुरता सुता शरमी	" ११३	होय तिकर ज्यारो काम	गान २०९
हा ए सुरता निज आत्मन	" ११४	होवे होवे जो पारव समान	" २२४
हा ए सुरता भल भल जामी	" ११४	होत फकीर बुरे जबरे	सर्वैया २६०
हाँ बलो सखी देश हमारे	" १२५	होरी मै हिम्मत से खेलना	गान २८४
हा समझ निज मारग	गान १२६		



मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्याख्यात्मक आत्म-ज्ञान

—०००००—

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, एक अखंडित देव ।
 गुणिजन गुण गायन करे, करत बुद्धि जन सेव ॥
 मानसिंह जग आयके, ऐसा रटहु गणेश ।
 आय जाय जन्मे नहीं, अमर रहत हमेश ॥
 गुणगण^१ गणपति^२ गणाधिपति^३; गुणहु अनन्त गुण होय
 मानसिंह यो गणपती, मरे न जन्मे कोय ॥

॥ गान ॥

॥ राम देश । ताल दीपचन्दी ॥

सईयाँ गणपति गुण गावो ए ।
 निराकार निर्दोष गजानन्द, सोई मनावो ए ॥ देर ॥
 मूल महल में ॐ गणेश, सोई निज ध्यावो ए ।
 निश्चय करने उलटा चालो, नित्र घर आवो ए ॥ १ ॥
 ज्ञान कर्म संग नित रहवो, बाहर न जावो ए ।
 अपनो स्वरूप सोई तुरिया विच, मौज उड़ावो ए ॥ २ ॥

१—तीन गुणों का समुदाय, २—सगुण ईश्वर, ३—पञ्चल ।

भ्राम न हूँधो कान नहीं मूँदो, अन्न ये समावो ५ ।
 मातो हि सुभ्र निन्ना हि परिभ्रम, सहजे चदावो ५ ॥ ३ ॥
 प्रकृति पुरुष पुरुष सं प्रकृति, भिन्न न यतावो ५ ।
 नू है जगत् जगत् है तुम्ह में, एक गिलावो ५ ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु ब्रह्म स्वरूपी, सहज दिग्भावो ५ ।
 मान गणेश मरे नहीं जन्मे, अमर पद पावो ५ ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मान सेव वो भगवती, रही विश्व को धार ।
 वो देवी क्या सुमरिये, जो और से मांगस्य हार ।
 और से मागण हार, भोग फिर और लगावे ।
 इतनी सिम्हन नाँव, आप दाये जो खावे ।
 पुरुषार्थ मे हीन तौ, पूजत मुख मंवार ।
 मान सुमर वो भगवती, रही विश्व को धार ॥

॥ कुण्डलिया ॥

योगमाया जो कृष्ण की, कृष्ण सर्व आधार ।
 तू उनही को ध्याय ले, तब हो बेडा पार ।
 तब हो बेडा पार, रूप अपन को पावे ।
 कृष्ण के भोंव मसाय, मया फिर बोंव मवावे ।
 चाल मश दरता रहे, मिटे जो इत विभार ।
 योग माया जो कृष्ण की, कृष्ण सर्व आधार ॥

॥ कुण्डलिया ॥

कोइक पूजत कालिका, कोइक चण्डी ध्याय ।
 कोइक पूजत शीतला, अन्धविश्राम न जाय ।
 अन्धविश्राम न जाय, कहो कब तक सबभ्राये ।
 कह ग्ये संत अन्ध, अन्ध^१ जो कहन थराये ।
 इ भो पाहे कितनी कही, अन्न जरा नहीं आय ।
 कडयक पूजत कालिका, कडयक चण्डी ध्याय ॥

॥ चौपाई ॥

चान वेड मे कही यह वाली । इच्छा आदि ब्रह्म की मानी ॥
 ताते बात समझ कर लीजे । पुरुष एक रट दुविधा मजीजे ॥

२—शेष भगवान् ।

इच्छा पुरुष माँय मिल जावे । तातें पुरुष जो एक कहावे ॥
अविद्या मात्र लेश है भाई । तातें बंधन रूप कहाई ॥

॥ दोहा ॥

नाया ब्रह्म द्वितिये नहीं, हुवा न कभी होय ।

मानसिंह जग भरम में, पड़ी लटक रही सोय ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे महादेव सब, करे न अर्थ विचार ।

देव विचारे आपनो, तो भव सागर पार ॥

सब देवन का देव है, महा एक आत्म देव ।

और देव सब छोड़ के, कहिं आत्म सब ॥

जीव भाव जड़ता तजो, फिर नहीं आय कलेश ।

सब से शेष पावे तुम्हें, उनको समझ महेश ॥

विषय तजे इन्दी तजी, तज दीनो जव मन ।

तव मिल गये निज शंभु, से, आत्म अखिल रतन ॥

॥ गान ॥

॥ राग टोडी । ताल तिताला ॥

उन हर की बलिहारी, साधो मैं तो उन हर की बलिहारी ।

सबके हृदय श्रीच जो व्यापक, वेदःटे नित चारी । साधो मैं तो ॥ टेर ॥

नदी काशी कैलारा में जाऊँ, पैद एक नहीं धारी ।

तीन गुरों पर मन को मारबो, सो महेश त्रिपुरांगी ॥ १ ॥

नहीं भंग पीवे न होय वावरो, चातुर अजब खिलारी ।

जगत् रच्यो और रहत अकर्ता, इनकी शोभा न्यारी ॥ २ ॥

देवनाथ गुरु कृपा करी जब, त्रिगङ्गी बात सुधारी ।

मानसिंह परम्यो निज शंकर, गिरजा सुप्त हमारी ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरव । ताल दादरा ॥

हैं महेश दीन बन्धु, सर्व व्यापी प्यारे ।

हम हैं तेरे तुम हो भरे हम न तुम से न्यारे ॥ टेर ॥

कहते हैं यह मसखरे सब मकर से उचारे ।

नाल को बजाय नाय भूठ कहे सारे ॥ १ ॥

कहते तुमको भंग पीये कलंक भूठ डारे ।

त्रिशवपति हो जो तुम्हो जगन के उजारे ॥ २ ॥
 तुम से भूमि और आकाश सूर्य चन्द्र तारे ।
 जाने नहीं अर्थ तेरो वृथा मर को मारे ॥ ३ ॥
 कहते है जो शिव शिव अर्थ ना विचारे ।
 आत्म रूप शिव स्वरूप वेद कहे चारे ॥ ४ ॥
 कहने बम्म भोला तुम्हे मूख जो गंवारे ।
 अगर आप भोले होते जगन किम रचा रे ॥ ५ ॥
 करते है यह विनय नुम से वेद विधि उचारे ।
 मगर अर्थ भूल गये जिनमे दुख भारे ॥ ६ ॥
 बार बार जर यह माँगूँ घट के पट उचारे ।
 मान जीव भाव त्याग ब्रह्म मे बिडा रे ॥ ७ ॥
 ॥ सर्वथा ॥

श्याम स्वरूप सभी जग है वह नित्य मदा न गयो नहीं आयो ।
 गुं इन गोल मे भूल गयो इन न्यारो हिन्य रो जो मोद बतायो ।
 देवदुनाथ कृपा करके निज रूप दिव्याय के भरम मिटायो ।
 मान को जान परी अग्रही तब पोल के पन्थ को दूर हटायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल ध्रुपद ॥

भूत^१ मेरो अखण्ड श्याम^२, पास रहत 'पारी'^३ ॥ टेर ॥
 नाय कही जाय आय, प्राण को आघाती ।
 भूले जीव जाने नाई, पावन दुख भारी ॥ १ ॥
 पंच कोश पंच विषय, रहत आशाकारी ।
 देय जाके दिव्य दृष्टि, मोह तम हारी ॥ २ ॥
 नहीं राघे कुकर्म कीन, कृष्ण ना व्यभिचारी ।
 मानमह पूर्ण ब्रह्म, कुरी कहे लचारी ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल ध्रुपद ॥

कृष्णचन्द्र पुरुष एह, गोपी जगत् सारी ॥ टेर ॥
 घत स्वर्ग नये नये, भीख के भिगारी ।
 कहत हरि ब्रह्म विहागी, जगन को दिहारी ॥ १ ॥

१—मन्वेद्य व्याप रहा, २—आत्मा, ३—सुद्धि ।

कृष्ण जैसे महा योगी, वेद रटत चारी ।
इनके मन में शरम नाँही, कहवत ध्यमिचारी ॥ २ ॥
मान कहे देवनाथ, मेरी तो सुधारी ।
मेरी कही तुम भी मानो, होवहु भवपारी ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

मोहन रूप मिथ्यो जग में ओ मोहन हारो रे;

रूप निज श्याम निहारो । हौं रूप निज० ॥ १ ॥

आदि अमर अज्ञात कहाय, नित्य रहे ओ आय न जाय ।

गुणजन करत विचार धार नित एक ही सारो रे । रूप निज श्याम० ॥ १ ॥

यही गोपाल और ग्वाल कहाय, नारी पुरुष में एक रहाय ।

बोही मैं बजाय के विश्व नयावन हारो रे । रूप निज श्याम० ॥ २ ॥

वन उपवन लीला सब जोय, न्यारो नहीं तो मिले क्या कोय ।

गीता ग्रन्थ में कृष्ण स्वयं यूँ आप पुकारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ३ ॥

भूल पड़े सो न्यारो गाव, न्यारो कहे जाके हाथ न आव ।

इ ड लेशो सब जगत् मिले नहीं श्याम हमारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ४ ॥

तुम हूँ वो जो भंड को लाल, वो तो गये काल के गाल ।

घट पट हूँ वो आत्म कृष्ण नहीं तो काल तुम्हारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ५ ॥

देवनाथ भ्रम भञ्जनहार, जिन दिललाथो नित्य अबतार ।

मानसिंह जब निरख लियो भ्रम उड़ गयो सारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राम माँड-आसावरी । ताल तिताला या कैरवा ॥

देख्यो मैं तो सब घट श्याम विहारी रे ॥ १ ॥

श्याम बिना कोई घट नहीं खाली, हरदम सभक विचारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ १ ॥

जिण घट में जो श्याम न होवें, चट देवें बाहर निकारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ २ ॥

बोही मन्दिर बोही है मूरत, बोही है प्रेम पुजारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ३ ॥

जड़ चेतन में श्याम ही दीखे, श्याम रूप नर-नारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ४ ॥

श्याम ही मित्र श्याम कहिये शत्रु, सृष्टि श्याम निहारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु मिले मान को, जिण क्रियो सुखकारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भाँड-आसावरी । ताल तिताला या कैरवा ॥

देख्यो मै मो मत्र जग खेल विलारी रे ॥ टेर ॥

खेले खेन अखेल हे नित, इनकी है गन इरु ग्यारी रे । देख्यो मै० ॥ १ ॥

मोतियाचिन्द कियो मत्र जग को, भूल गयो जग मारी रे । देख्यो मै० ॥ २ ॥

अंजन ज्ञान कियो गुरु मुख सूँ, जब मूझी मोहे मारी रे । देख्यो मै० ॥ ३ ॥

साधक सिद्ध ने मिद्ध सुजान भयें, मोई अंजन हम मारी रे । देख्यो मै० ॥ ४ ॥

नभ पानाल भूमएडल सारो, कौतुक रूप निहारी रे । देख्यो मै० ॥ ५ ॥

मान कहें ऐसी मई मम दृष्टि, जैसे तुलसी पुकारी रे । देख्यो मै० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती-गरवा, मेलो । ताल नकटा दादरा ॥

बाला मत्र मोंय खेले महारो श्याम, एने कोई जाणतो नथी ।

जाणतो नथी एने पहिचानतो नथी, बाला मत्र मोंय खेले० ॥ टेर ॥

मधो कहिये श्याम हमारो रे । सब मोंय खेले मत्र धी ग्यारो रे ।

हों रे बाला पूरण रूप तमास, एने कोई जाणतो नथी ॥ १ ॥

भूला जीय बाहिर भरभावे रे । बिस जाण्यो बिन केम करी पावे रे ।

हों रे बाला शी कर थाय विश्राम, एने कोई जाणतो नथी ॥ २ ॥

प्राणानु 'यारो बालो आपनु आप छै रे, भेद बिना बधा महे मन्ताप छै रे ।

हों रे बाला पडता नथी वेद ना कलाम, एने कोई जाणतो नथी ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु भेद जणाव्यो रे । शुद्ध करी ने रूप समझाव्यो रे ।

हों रे बाला दूर धई रह्यो छै अधान, एने कोई जाणतो नथी ॥ ४ ॥

मानसिंह हवे भूलत मोई रे । जेवो हनो तेवो दीधो लखाई रे ।

हों रे बाला दीधो छै काल सिर पाव, एने कोई जाणतो नथी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती गरवा । ताल नकटा दादरा ॥

बाला सूता उडाडी गुरु नौद छै रे ॥ टेर ॥

जन्म अनेकनी था नीन्द एवी कहिये ।

होंरे बाला आयने बजाई गुरु वीण छै रे । बाला सूता उडाडी० ॥ १ ॥

जागी गयो छूँ हवे पावो नथी मोऊँ ।

होंरे बाला गुरु चरणों मे मिर दीन छै रे । बाला सूता उडाडी० ॥ २ ॥

आन्ध तत्त्व पाया हवे मधे दुःख टटा ।

हारे वाला ब्रह्म घोड़े चढ़ी थयो वींद छै रे । वाला सूता उडाड़ी० ॥ ३ ॥

देवनाथ हाथ पकड़ आप में मिलायो ।

हवे मान थयो गुरु बिच लीन छे रे । वाला सूता उडाड़ी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड—आसावरी । ताल कैरवा ॥

नेरल' रूप सुख पाई हे, बिहारी^१ जी रो, निरल रूप सुख पाई हे ॥ टेर ॥

य में बिहार^२ करे ओ निभय, किये सूँ ही शंके^३ नाई हे । बिहारीजी रो० ॥१॥

सुल सुहागण श्याम ने निरलयो, मन मन्दिर रे माँई हे । बिहारीजी रो० ॥२॥

नेत मोंकी ज्यौरे पड़दो न कोई, बात करौ मन भाई हे । बिहारी जी रो० ॥३॥

गल न ज्वान वृद्ध कुञ्ज नाँही, एक रस रहत सदाई हे । बिहारीजी रो० ॥४॥

एक रस श्याम^४ श्यामा^५ भई एक रस, रस^६ बिच रस हो समाई हे । बिहारी ॥५॥

मानसिह गुरु देवनाथ सो, भ्रम दियो दूर भगाई हे । बिहारीजी रो० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ राग टोड़ी जौनपुरी । ताल कैरवा ॥

मनसुख दरसण कीना, बिहारीजी रा, परगट दरसण कीना ।

कर दरसण सत्र दुविधा भागी, इत उत कहीं भटकी ना । बिहारीजी रा० ॥ टेर ॥

क म कपाट ज्यौरा नहीं उबड़े, ओ समझे मत हीना ।

करम कपाट को दूर कियो जिन, सदाई रहत रङ्ग भीना ॥ १ ॥

एण दरसण में अमृत घरसे, भाग बढ़ा जिन पीना ।

हे मतिमन्व प्रकट नहीं जोये, जाय पथरन सिर दीना ॥ २ ॥

मन्दिर में गायें और नाचे, निरल बहू विध कीना ।

हम तो परिश्रम बहुत ही कीनो, बाढ बाह तक नहीं दीना ॥ ३ ॥

गाय गाय सिर दूखण लागो, नाचण शक्ति रही ना ।

हम ही थाक कर घर को चले गये, उण तो कुञ्ज भी कही ना ॥ ४ ॥

ऐसो गूंगो देष हमारी, वृत्ती मान रही ना ।

मानसिह आत्म भयो अनुभव, पल एक दूर गई ना ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मोरी । ताल कैरवा ॥

इन छवि पर बलिहारी, मोहन प्यारे इन छवि पर बलिहारी ॥ टेर ॥

१—आत्म ज्ञान, २—आत्मा, ३—व्यापक, ४—सदा एक रस, ५—आत्मा,

६—सुरता, ७—आत्म प्रेम ।

ममता स्वरूप मुहुट शिर धारी, सब जग को अधिकारी ।
 मय को खेलावे आपही खेले, ऐसो है अजब मदारी । मोहन प्यारे० ॥ १ ॥
 मीठा बोल चाल अति मीठी, प्रेम सहित ब्रह्मचारी ।
 अपना ही भाव मकरल मोहि देखे, ममके न जग को न्यारी । मोहन प्यारे० ॥ २ ॥
 चारु वेद उपनिषद डरु शत, हो नुम सार मे सारी ।
 नो मारांश गुम नहि राख्यो, गीता प्रगट पुकारी । मोहन प्यारे० ॥ ३ ॥
 नभ और भू पाताल सभी सब, लागत हमको प्यारी ।
 आप बजावे आप बस भयो है, करत रागनी सारी । मोहन प्यारे० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु निगुण मगुण होय, बात कही अति भारी ।
 मानमिह गम अन्तर कर के, मन बिच देख्यो भुरारी । मोहन प्यारे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ नर्ज लावणी की । ताल करवा ॥

मिथ्यो सखी मग में बनवारी, उन्ही से लागी हो तारी ॥ ६ ॥
 सैन मोहन से लगी शहारी, सैन लगते ही मुग्ध हारी ।
 गो रत्नरु गोपाल ने, मम तन मन बस कीन ।
 और बात माये कछु नदी मूमे, भई श्याम आधीन,
 भूल गई तन की मुधि सारी, उन्ही से लागी० ॥ १ ॥
 भैर मे अजय रंग प्यारी, प्रेम की छटा नहुत भारी ।
 कंद कियो इणु विषय को, प्यारो रह गयो आप ।
 जो इणुने जाये नहीं मरं, महे तीन रुताप,
 कहे यूँ वेद प्रकट जारी, उन्ही से लागी० ॥ २ ॥
 उड़े अय जीव ब्रह्म दोई, पिया^१ और प्यारी^२ परु होई ।
 पहदा टूटा छूँत का, पायो एक स्वरूप ।
 अपने आप ममा नभो सरे, बुर भरम वा कुर,
 आनन्द उपयो दिल मे भारी, उन्ही से० ॥ ३ ॥
 करं क्या जन एख से हारी, थाक गये वेद कत प्यारी ।
 दूण चट हील श्याम ने, सबको लिशे चिन चोर ।
 विश्व विभू की कुञ्ज गली मे, खेले बलकिशोर ।
 खेन रही गोपी संग नारी, उन्ही से० ॥ ४ ॥

मिले गुरु देवनाथ नामी: कृप कर भेत्यो निज स्वामी ।

मान शून जोवन (१) तखो गुण्डन को नहीं दीन ।

महान में मान समा नयो सर, होय कृष्ण में लीन,

मिटी है विपदा सब म्हारी, उम्हो से लागी० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'ब्रज के रसिया' की । ताल कौरवा ॥

ऐसो अजर अमर घनश्याम (२) श्याम से प्रीत लगाई रे ॥ टेर ॥

प्रीत लगाय के पलटत (३) नाई रे । जो पलटे तो प्रीत न कहाई रे ।

प्रीत लगाय के पलटत नाई । जो पलटे तो प्रीत न कहाई ।

शीश (४) उतार धरयो जब अपनो आवत नाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥१॥

प्रीति करी जद यह फल पायो रे । अपने संग निज रूप बनायो रे ।

प्रीति करी जद यह फल पायो । अपने संग निज रूप बनायो ।

जीय जीव के जाल मिटाय जिन भ्रान्ति भगाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥२॥

सन् चित् घन प्रमु नाम तुम्हारो रे । सब में रहत लगत अति धारो रे ।

सन् चित् घन प्रमु नाम तुम्हारो । सब में रहत लगत अति धारो ।

कथा कहूँ शोभा आपकी मैं कुछ पार न पाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥३॥

देवनाथ को साथ सुहायो रे । जिन ब्रह्मण्ड को ब्रज यह बतायो रे ।

देवनाथ को साथ सुहायो । जिन ब्रह्मण्ड को ब्रज यह बतायो ।

मान रास अज्ञ देखत मन में हरष मनोई रे । ऐसो अजर अमर० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'ब्रज के रसिया' की । ताल कौरवा ॥

थौसू प्रीत करी मनमोहन (५), म्हारी (६) प्रीत निभायो जी ॥ टेर ॥

इए भव में कोई साथी न म्हारो जी । थे हो म्हारा ने मैं हूँ थारो जी ।

इए भव में कोई साथी न म्हारो । थे हो म्हारा ने मैं हूँ थारो ।

आदि सनातन जाण आपखो मत विसराज्यो जी । थौसू ॥ १ ॥

थे छो मोटा ने मैं हूँ छोटा (७) जी । होय अविद्या में कर्म किया खोटा जी ।

थे छो मोटा ने मैं हूँ छोटा । होय अविद्या में कर्म किया खोटा ।

अब तो आपखो जाण अविद्या दूर हटाज्यो जी । थौसू ० ॥ २ ॥

१—मनुष्य जीवन, २—आत्मा, ३—दृढ़ निश्चय, ४—देहाभिमान का त्याग,
५—परमात्मा, ६—जिज्ञासु, ७—जीवभाव ।

हम तुम दोऊ इक संग उपनाये जी । एक अनेक तुमही तो बनाये जी ।
 हम तुम दोऊ इक संग उपजाये । एक अनेक तुम ही तो बनाये ।
 मैं हूँ अंश तुम्हारी प्रभु अब मोय मिलाओ जी । थाँसूँ ० ॥ ३ ॥
 किया अनेक एक कर लीजे जी । तुम बहुनामी कबु नहिं बीजे जी ।
 किया अनेक एक कर लीजे । तुम बहुनामी कबु नहिं बीजे ।
 हम तुमरी आशा को पाली अब तुम पालीओ जी । थाँसूँ ० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मज्ञानी जी । मान बात तब ही पहिचानी जी ।
 देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मज्ञानी । मान बात तब ही पहिचानी ।
 प्रेम विद्याला पाय नाथ अपनाओ अपनाओ जी । थाँसूँ ० ॥ ५ ॥
 ॥ गान ॥

॥ तर्ज 'प्रज के रसिया' की । ताल कैरवा ॥

देवी माया मय गोपाल की, क्या तुम रास दिखावो रे ॥ १ ॥

अमल मिले नकली नहीं भावे रे । झूठे स्वॉग कुछ ध्यान लगावे रे ।

अमली मिले नकल नहीं भावे । झूठे स्वॉग कुछ ध्यान लगावे ।

मत् पुरुषों रे स्वॉग धार मत रयान गमावो रे । देवी माया सव ० ॥ १ ॥

कृष्ण समान नहीं ब्रह्मचारी रे । आप समान लखी प्रज नारी रे ।

कृष्ण समान नहीं ब्रह्मचारी । आप समान लखी प्रज नारी ।

झूठो नाम लगाये धरम नै दाग लगावो रे । देवी माया सव ० ॥ २ ॥

अन्तर कृष्ण को ध्यान लगावो रे । होय यारीक कृष्ण में समावो रे ।

अन्तर कृष्ण को ध्यान लगावो । होय यारीक कृष्ण में समावो ।

जायो ईश्वर रूप जन्म तुम फेर न पावो रे । देवी माया सव ० ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु पर उपकारी रे । महज बतायो है कृष्ण मुरारी रे ।

देवनाथ गुरु पर उपकारी । महज बतायो है कृष्ण मुरारी ।

मान कहे मैं देवूँ नहीं तुम दूर हो जावो रे । देवी माया सव ० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह या जगत में, पूजा एक महान ।

पूजन जिवे (१) को भूल गये, पूजन लगे पहान (२) ॥

मानसिंह या जगत में, पूजा एक प्रधान ।

पूजन जिवेको भूल गये, सभी बिगोई नान ॥

सेवा कर जाने नहीं, सेवक नाम धरय ।

निज मन्दिर में श्याम है, तिनकी सेवा पाय में
ऊपर विलक लगाय के, जगत दिखाऊ सन्त ।

अन्तर तिलक (१) से विश्वरियो, लख्यो न प्रेम को पन्थ ॥
॥ प्रेम पन्थ जाने विना, प्रेम नगर (२) किम आया ॥

प्रेम नगर आया विना, गिरधर मिलसी नाँय ॥
प्रेम गाम पारथ चल्थो, मिले है सुन्दर श्याम ।

सो! गीता को देख लो, कहत प्रेम को गाँव ॥

प्रेम राम की, मैल सो, पारथ प्रवल्त कीन ।
रूप भूमयो, भाव कियो, रह्यो जग में लीन ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल कैरवा ॥

मिल गये प्रेम पुजारी रे, मन्दिरिये (३) में मिल (४) गये प्रेम पुजारी (५) रे ॥ टेर ॥

प्रेम पुजारी कण्ठ पट खोल्यो, दरश दियो गिरधारी रे । मन्दिरिये में मिल गये ॥ १ ॥

रूप मन्दिर में दरशय प्रेमा, मिटी है कल्पना सारी रे । मन्दिरिये में ॥ २ ॥

मन मैलपण्य दूर गयो संघ, हरदम रहत जजियारी रे । मन्दिरिये में ॥ ३ ॥

भानसिंह जब मिले गिरधर में, नाँहि पुरुष नाँहि नारी रे । मन्दिरिये में ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल कैरवा ॥

प्रेम नहीं पर (६) घर में; यह देख्यो मैं तो, प्रेम नहीं पर घर में ॥ टेर ॥

चाहूँ ही धाम वीरथ सभ खोज्यो, पायो मन मन्दिर में । यह देख्यो मैं तो ॥ १ ॥

पर घर प्रीत प्रीत नहीं घर सूँ, सो योही रहसी अधर में । यह ॥ २ ॥

प्रेम पन्थ कोई विरला पावे, कह्यो न जाय भँवर (७) में । यह ॥ ३ ॥

वाहिर भटकी कबहुँ न पाये, लो दीवी संगरी उमर में । यह ॥ ४ ॥

पर घर पलट कर को घर जोयो, उतरने खेली समर (८) में । यह ॥ ५ ॥

भानसिंह प्रेम पद पूर्यो, जाय मिल्यो गिरधर में । यह ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल कैरवा ॥

सिन्धु सुता (९) पति पायो; अन्तर में तो, सिन्धु सुता पति पायो ॥ टेर ॥

१-ज्ञान, २-सर्वात्म भाव, ३-मन, ४-परमात्मा से मिल गये, ५-आत्मप्रेम के उपासक, ६-वाहिरी मन्दिरी आदि में, ७-अविद्या, ८-विचार लक्ष्यीय, ९-परमात्मा

शिव रिपु(१)मेरो कष्टु ना कर ही, विष्णु प्रिय(२)मन भायो । अन्तर में तो ॥१॥
 भृगु के मित्र (३) को अलग कर डीना, राधे मीत (४) अपनायो । अन्तर० ॥ २ ॥
 मग्न रिपु (५) को नाश कियो जद, मीत (६) प्रह्लाद मुन्नायो । अन्तर० ॥ ३ ॥
 राधे रिपु (७) को अलग कियो मैं, मान यूँ सहज समायो । अन्तर० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

कृष्ण कहां किम आवे । अद्धा विन कृष्ण कहा किम आवे ॥ टेर ॥
 क्या बो आवे कहां गयो है, नैन (=) विना नहीं पावे ।
 नारी नर और नर निरखे नारी, कृष्ण को दोष लगावे । अद्धा० ॥ १ ॥
 यह तन रथ इन्द्रिय सब घोंडे, अर्जुन मन ठहरावे ।
 निज निश्चय की वाग डोर कर, कृष्ण हाथ पकड़ावे । अद्धा० ॥ २ ॥
 शुद्ध चेतन निज कृष्ण विराजे, दिव्य दृष्टि दरमावे ।
 गुरु गम ज्ञान तक कर पूछे, सब रुंशय भग जावे । अद्धा० ॥ ३ ॥
 मन और जीब जो एक रूप है, जीव ही ब्रह्म कहावे ।
 अर्जुन कृष्ण कृष्ण भयो अर्जुन, गीना गुम गम पावे । अद्धा० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु रेड कियो जद, मन को भ्रम मिटावे ।
 मान कृष्ण मेरे पाम मदा है, कृष्ण फिर भेज युत्तावे । अद्धा० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिताला ॥

परोहा (१) वृथा बोल कवों शोवे । तू बोले पर शक (१०) मुने नहीं
 बिरहनी (११) मुन कर रोवे ॥ टेर ॥
 मरुधर(१२) देश कोमां जल(१३) दूरो, कहीं यहाँ निकट पड्यो है ।
 धुँद(१४)चहे तं जाय दधि(१५)दिग, जहाँ नित मेघ(१६)चह्यो है ॥ १ ॥
 इन्द्र(१७)भी निकृ(१८)निकुर है हम भी, दोनूँ को युद्ध(१९)दिह्यो है ।
 महा भयानक काल (=०) निकरु मक्षो, तब हूँ न प्राण हरयो है ॥ २ ॥

१—ब्रह्मदेव, २—मन्वृगुण, ३—कांध, ४—प्रेम, ५—मोह, ६—ज्ञान, ७—मान,
 ८—ज्ञान-दृष्टि, ९—नाम रटने वाला, १०—भगवान, ११—भक्त, १२—तुरीय पद,
 १३—आनन्द, १४—आनन्द, १५—विचारसमुद्र, १६—ज्ञानामृत रूपी वर्षा, १७—परमात्मा,
 १८—नाम रूप से परे-निर्बन्ध, निर्लिप, १९—एकना की लड़ाई, २०—मृत्यु ।

ज तो पपीह पीह (१) मत बोलो, नहीं मन मान मोहे ।
 बाल पीह पीह पीहहि (२) बुलावे, जब जानें हम तोहे ॥ ३ ॥
 धे दिन (३) गये सुनत बान तेरी, अब वो दूर (४) गयो है ।
 उइ परे जाय अब मत खावे, शीश पचाव रहो है ॥ ४ ॥
 पिशा परदेश (५) जहाँ तुम जायो, वहाँ पइ वो क्या रोहे ।
 मान कहे चानक (६) मानो अब, काहे को मूल्य बयो है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राम मालकोश । ताल तिताला ॥

मोहे भगवन भक्ति भावे ।

महा सम्बन्ध प्रेमवुत लीनो और न सम्बन्ध मुहावे ॥ टेर ॥

गोस्वामी रं सतगुरु मेरे, जिनसे प्रेम बढ़ायें ।

गो अतीत गोपाल निरख के, बाहर कही च जायें । मोहे भगवत० ॥ १ ॥

सब कुछ भोगत रहत अमोगी, बाल न वृद्ध कहावे ।

पेम्पो पाय खबर क्यों आयें, मन मन्दिर दरसावे । मोहे भगवत० ॥ २ ॥

पौच पकील निरली सब गोपी; तुरिये पर जही आवे ।

अनहद रास रच्यो एकताई, कृष्ण में गोपी समावे । मोहे भगवत० ॥ ३ ॥

दग्धापन्य के जाल फँसे नहीं, प्रेम माग बिच आवे ।

बिरव सभी है कव बिष्णु को, सो हय इष्ट-मनावे । मोहे भगवत० ॥ ४ ॥

पोला पन्थ में बहुत रहे हम, अब ना रथान गमायें ।

पूतली वैष्णव बिरव को जाने, सो इस माग में आवे । मोहे भगवत० ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु गम गोकुल में, मधु भर बैल मुनावे ।

पानसिद्ध अब भरे न जन्म, ब्रह्म स्वरूप समावे । मोहे भगवत० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तबे "मारवाड़ी माली के बंके" की । ताल कैरवा ॥

हारी जी रो लोको है अमर मुदाई हो ।

१५५० मैं तो निरख परख मुख पाई हो ॥ टेर ॥

र (७) ने जः (८) सूँ बरिषो है लोको, जिन में बानो (९) लग्यो अमोलो ।

न चढ़ाव्य आई हो । बिहारी जी रो ॥ १ ॥

१- परमात्मा का नाम रटना, २- परमात्मा ३- अन्ध-विश्वास की दशा,
 ४- आगे बढ़ गये, ५- दूर, ६- पपीह, चतुर, ७- अन्तःकरण, ८- पद-सम्पत्ति,
 ९- गदता ।

शिव रिपु (१) में तो कहु ना कर ही, विष्णु प्रिय (=) मन भायो । अन्तर में तो ॥१॥
 भृगु के मित्र (२) को अलग कर डीनों, राधे मीन (४) अपनायो । अन्तर ० ॥ २ ॥
 अम रिपु (५) को नाग कियो जद, मीन (६) प्रह्लाद मुदायो । अन्तर ० ॥ ३ ॥
 राधे रिपु (७) को अलग कियो मैं, मान यूँ सहज ममायो । अन्तर ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

कृष्ण कहां किम आवे । अद्वा विन कृष्ण कहां किम आवे ॥ टेर ॥
 क्या बो आवे कहां गयो है, नैन (=) विना नहीं पावे ।
 नारी नर और नर निरखे नारी, कृष्ण को दोष लगावे । अद्वा ० ॥ १ ॥
 यह तन रथ इंद्रिय सब छोड़े, अर्जुन मन ठहरावे ।
 निज निरखय की वाग डोर कर, कृष्ण हाथ पकड़ावे । अद्वा ० ॥ २ ॥
 शुद्ध चेतन निज कृष्ण गिराजे, दिव्य दृष्टि दरमावे ।
 गुरु गम ज्ञान तक कर पूछे, सब संशय भग जावे । अद्वा ० ॥ ३ ॥
 मन और जीव जो एक रूप है, जोव ही अर्थ कहावे ।
 अर्जुन कृष्ण कृष्ण भयो अर्जुन, गीता गुण गम पावे । अद्वा ० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु भेद दियो जद, मन को भ्रम मिटावे ।
 मान कृष्ण मेरे पाम मदा है, कृष्ण कि भेज बुलावे । अद्वा ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिनाला ॥

परीक्षा (१) घृषा बोल कथो खोवे । नू बोलै पर शक (१०) सुने नही,
 विरहनी (११) मुन कर रोवे ॥ टेर ॥
 मरुधर (१२) देरा कोमां जल (१३) दूरो, कहां कहां निरवट पड्यो है ।
 बूंद (१४) चहे तो ज्ञाय दधि (१५) दिग, जहां नित मेघ (१६) रह्यो है ॥ १ ॥
 इंद्र (१७) भी निद्र (१८) निद्र है हम भी, दोनों को बुद्ध (१९) द्रिष्ट्यो है ।
 महा भयानक बाल (=०) निरुम गर्यो, तब हूं न प्राण हरयो है ॥ २ ॥

१—अमदेव, २—सहस्रगण, ३—कोष, ४—प्रेम, ५—सोह, ६—ज्ञान, ७—मान,
 ८—ज्ञान-दृष्टि, ९—नाम रखने वाला, १०—भगवान्, ११—भक्त, १२—तुरीय पद,
 १३—आनन्द, १४—आनन्द, १५—विचारसमुद्र, १६—ज्ञानाग्न रूपी वर्षा, १७—परमात्मा,
 १८—नाम रूप से परे-निर्गन्ध, निर्लिप्त, १९—एकज की सङ्घर्ष, २०—शृगु ।

या तो पपीह पीह (१) मत थोलो, नहीं मन भावन मोहे ।
 बाल पीह पीह पीयहि (२) बुझावे, जब जानें हम तोहे ॥ ३ ॥
 वो दिन (३) गये सुनत वान तेरी, अब वो दूर (४) गयो है ।
 उड़ परे जाय कान मत खावे, शीश पचाय रह्यो है ॥ ४ ॥
 पिया परदेश (५) जहाँ तुम जावो, यहाँ पड़-वो क्या रोहे ।
 मान कहे चातक (६) मानो अब, काहे को मूरख मयो है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मोहे भगवन भक्ति भावे ।

महा सम्बन्ध प्रेमयुत लीनो और न सम्बन्ध सुहावे ॥ टेर ॥
 गोस्वामी सो मतशुरु मेरे, जिनसे प्रेम बढ़ावे ।
 गो अतीत गोपाल निरल के, बाहर कहीं न जावे । मोहे भगवत० ॥ १ ॥
 सब कुछ भोगत रहत अभोगी, बाल न बृद्ध कहावे ।
 ऐसो पाव अदर क्यों भ्यावे, मन मन्दिर दरसावे । मोहे भगवत० ॥ २ ॥
 पाँच पचीस मिली सब गोपी, तुरिये पद वहीं आवे ।
 अनहद रास रच्यो एकताई, कृष्ण में गोपी समावे । मोहे भगवत० ॥ ३ ॥
 पन्थापन्थ के जाल फँसे नहीं, प्रेम भाग विच जावे ।
 विश्व सभी है रूप विष्णु को, सो इस इष्ट-मनावे । मोहे भगवत० ॥ ४ ॥
 पीला पन्थ में बहुत रहे हम, अर ना श्याम गभावे ।
 असली वैष्णव विश्व को जाने, सो इस भाग में आवे । मोहे भगवत० ॥ ५ ॥
 देवनाथ गुरु गम गोकुल में, मधु भर बैन सुनावे ।
 मानसिंह अब मरे न जग्मे, ब्रह्म स्वरूप समावे । मोहे भगवत० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "भारवाड़ी गाली के डंके" की । ताल करवा ॥

विहारी जी रो लीगो है अमर सदाई हो ।
 निःकथो मैं तो निरल परल सुख पाई हो ॥ टेर ॥
 चार (७) ने छः (८) सूँ बणियो है लीगो, जिह में चागो (९) लग्यो अनालो ।
 वृत्ति पदावण आई हो । विहारी जी रो ॥ १ ॥

१- परमात्मा का नाम रटना, २- परमात्मा ३- अन्ध-विश्वास की दशा,
 ४- आगे बढ़ गये, ५- दूर, ६- पपीह; चतुर, ७- अन्तःकरण, ८- पद-सम्पत्ति,
 ९- प्रकृता ।

त्नाम्य (१) योग को मोर मुट्ट है, प्रेम प्रीत को सोहे लट है।
 पकटक ध्यान लगाई हो। विहारी जी० ॥ २ ॥
 इण छोमे रा तार (२) अनन्ता, गिख गिख हार्या वेद और मन्था ।
 धारे सो अमर हं जाई हो। विहारी जी ॥ ३ ॥
 ओ छोंगालो छैन छवीलो, कृष्णचन्द्र नित रहत रंगीलो ।
 मिले ओ रंगीली (३) तो पिव पाई हो। विहारी जी० ॥ ४ ॥
 ओ छोंगालो नित मतवालो म्होंने घणो नित लागे वालो ।
 छोडण कदे न चित्त चाई हो। विहारी जी० ॥ ५ ॥
 नाथजी आधा पट सुलवाया, मान मान मे महान मिलाया ।
 हूँ मैं मन्दिरिये रे भौंई हो। विहारी जी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी । ताल तिताला ॥

मारग धाम (४) हमारो, साधो माग्य वाम हमारो ।
 मन से ही धाम चले न दाहिने (५), निज स्वरूप चित्त धारो ॥ डेर ॥
 वृत्ति भगवती प्रभा कीनी, कियो ज्ञान अजियारो ।
 श्रीर मंत्र ले 'नरवमति' को, उा विषं मेरे धारो । साधो मारग वाम० ॥ १ ॥
 पौष् (६) पचीम (७) मिल जागण (८) कीनो, उड गयो भरम अन्धारो ।
 डेचं ने नीच जाति कुल नाहि, ऐसी पथ हमे प्यारो । साधो मारग वाम० ॥ २ ॥
 वृत्ति उपवृत्ति सुरती और निरंती, जमघट भयो अपारो ।
 भेद भाव को दूर कियो है, एक ही रूप निहारो । साधो मारग वाम० ॥ ३ ॥
 प्रेम प्रीत मद पियो धापके, मन अजिया (९) सुन सारो ।
 मधमिलगोठ (१०) गरीबंगम (११) पर, आनंद भयो है अपारो । साधो मारग ॥ ४ ॥
 जग आचार को पलट दिखे हम, कीन ब्रह्म व्यभिचारो ।
 ऐसे वाम धर ओ कोई आवे, वो प्यारो है मित्र हमारो । साधो मारग० ॥ ५ ॥
 ना कोई करम ज्यू कर्म नाहि, हूँ दोनूँ से न्यारो ।
 ब्रह्म ज्योति उर अन्तर जागी, जीवपनो उज्यो सारो । साधो मारग० ॥ ६ ॥

१-समता, २-नाम रूप, ३-जिज्ञासु वृत्ति, ४-अज्ञान प्रसन्न जनसाधारण की
 मनक के विरुद्ध, ५-जन साधारण की रुढ़िवाद के अनुकूल, ६-इन्द्रियां,
 ७-प्रवृत्तियां, ८-आत्मज्ञान, ९-वकरा, १०-पुरुनारूपी सद्भोज, ११-आत्मातन्त्र

ब्रह्म स्थिर थावर (१) वार भयो अंब, लख्यो ब्रह्म आधारो ।

पड़वा (२) धीज (३) एक कर लीनी, ऐसो मतो विचारो । साधो मारग वाम ॥ ७ ॥

इस मारग को वाम मारगी, होवे तो हो भवपारो ।

मान कहे उलटा क्यूँ दौड़ो, रत्न जन्म को हारो । साधो मारग वाम ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'पनजी मुखड़े बोल' की । ताल कैरव ॥

शिव और हम नित एक रूप है, शिव नहीं म्यारो रे; मित्र (४) हमारो रे ॥ १ ॥

जब तक जाल आविद्या फैली, तब तक जीव विचारो रे ।

जाल आविद्या दूर करी जब, शुद्ध निहारो रे । मित्र हमारो रे ॥ १ ॥

जब तक जीव भाव नहीं मिटियो, उल्लो न भरम अन्धारो रे ।

जीव भाव मिट ब्रह्म भयो जब, परम उजारो रे । मित्र हमारो रे ॥ २ ॥

आज काल को मित्र नहीं है, आदि अनादि प्यारो रे ।

जीव अहंकार मिट्यो जब तन सूँ, लागत प्यारो रे । मित्र हमारो रे ॥ ३ ॥

मंग तमाखू पी पी मुलफ्त, क्या तुम शिव को चितारो रे ।

शिव पद (५) तुम से दूर रह जासी, नरक द्वारो रे । मित्र हमारो रे ॥ ४ ॥

मान कहे थे मानो मित्रो, अत्र तो आँल उधाड़ो रे ।

चारूँ वेद पुकार कहे, मानक (६) मत हारो रे । मित्र हमारो रे ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

गुरुदेव बने सिर हाथ धरे अपने शिष्य से फिर कपट चलावे ।

अन्तर और ने बाहर और ही आप डूबे और शिष्य डूबावे ।

ऐसे जो भूल न भेटो गुरु तुम भेटो जबे कि खरो पत आवे ।

मान कहे बिन जान किबो गुरु अन्त समय फिर वह पछतावे ॥

॥ सवैया ॥

देकदुनाथ को शीश दियो हम खूब तरह उन्हे पहिले वजाये ।

खोट न देखी रती उनमें तबही चरणों बिच शीश नमाये ।

चाहे जैसे हो वजाय लिये हम खोटे खरे कई बोल सुनाये ।

शत्रि के पूत सो चूके कवे हम मान कहे सब भरम उड़ाये ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह सतगुरु मिल्या, लिय मैं दोल वजाय ।

१—शनीचर, २—प्रतिपदा=अत्र क, ३—द्वितीया=इ व, ४—जीव ब्रह्म की एकता, ५—आखी सिधति, ६—मनुष्य जन्म ।

मन मन्दिर घैठाविद्या, पलरु न बाहर जाय ॥
 जाजम ढाला जुगत सूँ, मन बुद्धि चित अदकार ।
 चारो पावनल दाविद्या, घैठा संत विचार ॥
 गम करी गादी करी, नुरियो क्रियो तखन ।
 मान गुरु यूँ टोकियो, क्रियो जो आतम रच ॥
 टोको काढ्यो तत्त्व सूँ, शिष्य यूँ शीरा नवाय ।
 शीरा क्रियो सय बुद्ध दियो, अत्र कुत्र देवण नाय ॥
 पौच पोरं ने पकडिया, पकड ने क्रिया माथ ।
 मानमिह दु ख अत्र भिट्यो, कता चाद विचाद ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज बाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

सो माधू मन मानिये, समता सहज ममावे ।
 अपणो रूप सत्र मे लखे, राम न द्वेष बढावे जी ॥ १ ॥
 क्रम करे अकरता रहे, दुःख मुक्ष स्तीग न माने ।
 पीड पराई आपणी, दूजो भेद न आणे जी ॥ १ ॥
 करतय करणो समझ के, सव बुद्ध कर लेवे ।
 नीच करम स्वपने ना करे, ज्यो मूँ टाको देवे जी ॥ २ ॥
 करम करे सो योगिया, निरुमा रतिव न रहवे ।
 अपणे योग्य सबवे लखे, सवमे मम होय केहवे जी ॥ ३ ॥
 सो माधू मेरे प्राण है, जग मांही भल आवे ।
 भोग धार जग ना ठगे, अपणो काम दिखावे जी ॥ ४ ॥
 पर उपकारी संत है, ज्योय चरण पुजावे ।
 बासो चरणे दक लेत ही, उनके सम हो जावे जी ॥ ५ ॥
 धोय चरणे करु आरती, किग मिग जोत जगाऊँ ।
 पाँचो बाती जग रही, मग्गुव दरमण पाऊँ जी ॥ ६ ॥
 देवनाथ ठेसे संत है, गुरु कृष्ण अवनारा ।
 मानमिह अर्जुन हुवा, सो निज शिष्य तुम्हार जी ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

1. चरण ही धोवन धोव ऊहे सव प्रेम को नीर कोई नहीं लावे ।
 प्रेम के नीर से धीवे जो पाद जो सो पय पीय हृदय शुद्ध थावे ।

प्रेम भी हो हर स्वारथ हो नहीं शीतलता जरखा जल थावे ।
मान कहे सोई धोय चरण चरखासुत पीये वही संत कहावे ॥

॥ सबैया ॥

प्रेम पयोधि मंगाय तहाँ जिन माँय मधुरता मिश्री मिलाई ।
जरखा जल से शुद्ध धोय लिये पद फिर करखी की कैसर चढ़ाई ।
सुख शिला ले शील को चन्दन समता हाय उन्हें घुटावाई ।
मान कहे अस पूज गुरु पद ले उन आझा यो शीश चढ़ाई ॥

॥ सबैया ॥

पास ने देव और दूर गये हम पास के देव को हीन दुराई ।
भूल फरी अस भारी अति हम और ही और में टाट कुटाई ।
पहिले ही जान पिछान कियो नहीं मान सबे यों ही राम गमाई ।
देव समान ही देव भयं अब देन रहे हमते भिन्न नाई ॥

॥ कविचा ॥

गम हू को कीनो घृत पंच तत्व वीपक लीन, ता विष ज्ञान को प्रकाश जो
दिलायो है । पंच विषय वाली फर ताहि में जगन लख्यो, करके विवेक दोऊँ हाथ
में बढायो है । कृष्णरूप गुरु व्यापक सब वीच नित, अजुन जीव रूप हाथ पारती
मलायो है । तब बोध भयो तब दूट गई आपदा सब, मानसिह सहज यों स्वरूप
में समायो है ॥

॥ सबैया ॥

मान कहा तुम जुलम करे उन मोल स्वरूप को फेर बुलाये ।
कृष्ण ही मोल और मोल वे अजुन काहे को धर दोनि वे आये ।
शब्द सदा अनेक अमर हैं जो कोई पद अजुन तिर जाये ।
देवहु नाथ विचार कर शुद्ध कृष्ण स्वरूप में सहज समाये ॥

॥ सबैया ॥

कड़ी कही नहीं साच कहीं मैं वेद ने ग्रन्थ वे साक सुनाये ।
भर्म पटे अधर्म वदे तंवही अवतार धरे हरि आवे ।
इनमें इचरज कहा तुम मानिये सर्व भूतेश तो कृष्ण कहावे ।
ज्ञानी सदा है कृष्ण स्वरूप अज्ञानी सोही अजुन बन जावे ।
मान अन्देश करो न दयानिधि या विष संशय जग नहीं आवे ।
हो तुम कृष्ण और अजुन हूँ मैं कृष्ण की गीता यह साफ मनावे ॥

॥ मधैया ॥

झानी सदा नित श्रेष्ठ ही है यह वेद और ग्रन्थों में साध मुनाई ।
आगे भी श्रेष्ठ ये श्रेष्ठ अभी यहाँ पर झानी कोऊ पावत नाई ।
जो भी मिले सब स्वारथिये उनमे कुछ श्रेष्ठता नाँय दिखाई ।
कोऊ तन पत्रव पूजन धन को स्वारथ की मन पूजा मँगाई ।
मन की पूजा तो आप कही तुम कृष्ण के रूप से भिन्न हों नाई ।
मान कहे में मान लई अर्जुन वनके यह पूजा चढ़ाई ॥

॥ गान ॥

॥ राग मारंग-मल्लार, तर्ज बाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

तुम हो कृष्ण संशय नहीं, बेर ही बेर पुधकूँ ।
वेद बनना बोहूँ पूछ लो, कहते हिम्मत न हारूँ जी । १ ॥
गुरु नाम है श्रेष्ठ जन, श्रेष्ठ परु ब्रह्म कहावे ।
अब लखे तेहि ब्रह्म है, कृष्ण स्वरूप दिवावे जी ॥ १ ॥
पाव पत्नीमों सूं परे लखे, सब ने सम कर राखे ।
कृष्ण अर्थ यह सिद्ध है, गार्गाचार्य थो भाखे जी ॥ २ ॥
बधन फरे मोई कृष्ण है, यह ही सिद्धान्त हमारा ।
वेद व्यास की देख लो, माने कृष्ण अचनाए ॥ ३ ॥
अर्जुन करे मोई 'अर्जु' है, गुरु ने 'जन' होव पूखे ।
भारतना उरमे नहीं, तो फिर क्यों गुरु पूजे जी ॥ ४ ॥
बला कोशल मेरे नाथजी, जीवन के आधारा ।
मानसिद्ध परमाणु से, मैं हूँ शिष्य नुष्टारा जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल दीपचन्दी ॥

नमो गुरुदेव गुमाई, चरण मे, नमो गुरुदेव गुमाई ।
घार दार फरु बन्धन थोने, राखूं म्हादे हरिदे रे माई । चरण मे ॥ १ ॥
गो अनीत स्वामी अन्धन के, वेद ग्रन्थ सब गाई ।
हो अग्रार प्रभु धार न पावे, रोष रतन यह जाई । चरण मे नमो गुरु ॥ १ ॥
मन मन्दिर मे आप विराजो, पूजू प्रेम रुदाई ।
ध्यान भूप और पुष्प प्रीतिके, ज्ञान मुग्धो आई । चरण मे नमो गुरु ॥ २ ॥
पशु पत्नी ने टाशो मैं बर्ष कर, मानुष देह धराई ।
मानुष ने तुम कीन देवता, यह गुण भूखे जाई । चरण मे नमो गुरु ॥ ३ ॥
निरव विराजो दूर न आवो, था दिन सरसी नाई ।

मान कहे गुरुदेव कृपानिधि, मेरे तो आप सहाई । चरण में नमो गुरु० ॥१॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "चैन के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

नमो जी नमो सतगुरु स्वामी ॥टेरा॥

जीव उबारण जग माँथ आया, सत् उपदेश शिष्याँ ने सुनाया,
मेट दिवी म्हाँरे मनड़े री लामी । नमो जी नमो० ॥१॥

जीव जीव कह सकत बँधाया, असली मारग कोई ना समझाया,
अव के मिल्या हो म्हारा अन्तर्यामी । नमो जी नमो० ॥२॥

ब्रह्म भेद गुरु अवके दीयो, तुम्हरे प्रताप अश्रवण अमी पीयो,
भल आया ओ म्हारा नाथ नर्मामी । नमो जी नमो० ॥३॥

मान कहे म्हारो मन समझायो, असली रूप लक्ष मस्त बनायो,
मिट गई मनड़े री आदत निरामी । नमो जी नमो० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "चैन के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

गुरु माफ करो मैं सेवक थॉरो ॥टेरा॥

जाण बदा थॉरी शाये आयो, भयसागर में अति दुःख पायो ।

धीन जान प्रसु अव तो उवारो । माफ करो मैं सेवक थॉरो ॥१॥

मेरो कसूर कठा तक गाऊँ, जो गाऊँ तो मन शरमाऊँ ।

कीन गुनाह मैं अनन्त अपारो । माफ करो मैं सेवक थॉरो ॥२॥

पीला पन्थ में लूष फँसायो, ध्यातस तत्व किणी न बतवायो ।

जिण पकड़यो जिण मारयो हि मारयो । माफ करो० ॥३॥

अव तो सुनो गुरुदेव गुसाँई, हाथ गण्यो अव छोड़जो नाँई ।

छोड़ दिणे तो वह जाऊँ भवे धारो । माफ करो० ॥४॥

मान कहे हो म्हारा अन्तर्यामी, आप समान कर हो मोहे स्वामी ।

ब्रह्म मिलाय के सरम निवारो । माफ करो० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राम प्रभाती । ताल रूपक ॥

अवगुण गाये हमदि है, प्रसु मुख के ग्राहक आप हो ।

सुख अवगुण मत देखो मेरे, हरो त्रीये ताप हो ॥टेरा॥

आप सेनी करूँ बिनती, जपूँ हरदम जाप हो ।

जान बालक भूल वकसो, गुना कीजै माफ हो ॥१॥

हम जो जीव तो तुमहि ब्रह्म हो, नित्य भाई बाप हो ।
 बाप बेटो एक कर लो, दूर हाथ मन्त्राप हो ॥ २ ॥
 भलो युरा तोई आपकी, अब करो सबदा साफ हो ।
 दोय को अब एक करलो, सयों न जाय कलाप हो ॥ ३ ॥
 देवनाथ का हाथ लीयो, जपन भया अजाप हो ।
 मान कहै मन मान्यो मेरो, जपूँ मेरो जाप हो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "खेलख दो गिणगोर" की । ताल दीपचन्दी ॥

ले चालो उण देश (१), सायब (२) म्होंने ले चालो उण देश ।
 होजी म्हारा दीनबन्धु घनस्थम (३), प्रमुजी म्होंने ले चालो ॥ १ ॥
 भटक भटक दुःख पाय, प्रमुजी म्हे भटक भटक दुःख पाय ।
 होजी म्होंने किण हूँ न दिवी थोरी राय । सायब म्होंने ले चलो ॥ १ ॥
 पथापंथ क्रियाय, प्रमुजी जग पंथापंथ क्रियाय ।
 होजी मैं तो दिया है धोने विसराय । सायब म्हाने ले चालो ॥ २ ॥
 पत्थर पाथर पूज, प्रमुजी मैं तो पत्थर पाथर पूज ।
 होजी मैं तो तोई है तुम्हारी सूफ । सायब म्होंने ले चालो ॥ ३ ॥
 दोऊँ कर जोइ पुकार, प्रमुजी धोने दोऊँ कर जोइ पुकार ।
 होजी म्हाने लेगी इण भव सूँ उधार । सायब म्हाने ले चालो ॥ ४ ॥
 मान कहै मुनो नाथ, अर्ज म्हारी मान कहै मुनो नाथ ।
 होजी म्हारा पकड़यो तो छोड़ो मत हाथ । सायब म्होंने ले चालो ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "खेलख दो गिणगोर" की । ताल दीपचन्दी ॥

मत मन में धरराय, शिष्य तू मन मन में धरराय ।
 हारे थोने देऊला देश दिखाय, शिष्य तू मत मन में ॥ १ ॥
 शूर वीर मन रह, शिष्य तू शूर वीर मन रह ।
 हारे तू तो हिम्मत हार मत बैठ । शिष्य तू मत मन में ॥ १ ॥
 तेरो पिया तुम माँय, शिष्य लख तेरो पिया तुम माँय ।
 हारे शिष्य आत्म रूप लखाय । शिष्य तू मत मन में ॥ २ ॥

जीव ब्रह्म दोऊ एक, शिष्य लख जीव ब्रह्म दोऊ एक ।
 हारे शिष्य कर जोबो आत्म विवेक । शिष्य तू मत मन में ॥ ३ ॥
 हिम्मत हुती सिर लीन, शिष्य मेरी हिम्मत हुती सिर लीन ।
 हारे शिष्य छोड़ण को कौल न कीन । शिष्य तू मत मन में ॥ ४ ॥
 तारण रो प्रण भोय, शिष्य जीव तारण रो प्रण भोय ।
 हारे शिष्य क्यों कर छोड़ूँ ला तोय । शिष्य तू मत मन में ॥ ५ ॥
 मान कहे रंग तोय, नाथ जी मान कहे रंग तोय ।
 हारे लोगों गुरु हो तो ऐसा होय । शिष्य तू मत मन में ॥ ६ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मद (१) छकियाँ ने न छोड़; ए म्हारी सुबड़ कलाली (२),
 हे मतधाली, मांगे जितो मद (३) पाय ॥ टेर ॥
 जो मदधा ने उत्तर देसी, तो मद पीवे नाँय ।
 धरिया रहसी थौरा सगला, फिर पीछे पछताय; ए म्हारी सुबड़ ॥१॥
 धिन मदवा कुण मांगसी ए, हिम्मत कियी री नाँय ।
 मर जीबाँ(४)हो लो ओ मद पीवे, जीबनड़ा(५)मर जाय; ए म्हारी सुबड़ ॥२॥
 और तो कुछ नहीं देवसी रे, काटने दे शिर(६) मोल ।
 शीश लियो पीछे क्या तू मांगे, पाय शरान (७) अतोल; ए म्हारी सुबड़ ॥३॥
 महर करो म्हारी सुबड़ कलाली, और न आवे दाय ।
 मान कहे मैं तेरा रसियाँन, अच वूजो किये ने ध्याय; ए म्हारी सुबड़ ॥४॥
 ॥ गान ॥

॥ उर्ब "कलाली" की । ताल भीमा कैरवा ॥

चालो रे मदवा सोहन शिलर दरबार हो मस्तानां ।
 डठे सुरत कलाली सूँ मदहो(६) पीयलो हो राज ॥ टेर ॥
 पावखो होय तो पर बैठो ने पाय हे कलाली(१०) ।
 म्हे चालो नही नौकर थारे बाप रा हो राज ॥१॥
 मानो रे मदवा (११) हठ ने कर दो दूर हो मस्ताना ।

१—आत्म ज्ञान का जिज्ञासु, २—ज्ञानी सद्गुरु, ३—आत्मज्ञान, ४—देहाभिमान से रहित, ५—देहाभिमानी, ६—देहाभिमानी, ७—आत्मज्ञान, ८—भक्त, ९—आत्मज्ञान, १०—सतगुरु, ११—जिज्ञासु ।

कोई हठ न राखे तो मद नहीं पावसों हो राज ॥२॥
 ओ हठ म्हारो अब तो छूटे नाँय हे कलाली ।
 कोई पावे सो पीयाँ नहीं तो मदड़ा रहण दो हो राज ॥३॥
 लेलो लेलो सोहन शिखर आनन्द हो मस्ताना ।
 कोई गिगन (१) मण्डल रो दुस्तर खेलणो हो राज ॥४॥
 थोड़ो तो मदड़ा घर बैठों ने पाय हे कलाली ।
 कोई आवो लागो तो उख पर चालसों हो राज ॥५॥
 हँसिया हँसिया मतगुरु सैन चलाय हो मस्ताना ।
 कोई हठ तो नहीं छूटे आं राजवी (२) नणो हो राज ॥६॥
 नहीं हे थोसूँ सोहन शिखर कोई दूर हो मस्ताना ।
 कोई नीचाँ सूँ मन ने उपर लँच लो हो राज ॥७॥
 नीचो गिरियो आश्रम बरुँ रे माँव हो मस्ताना ।
 ओ तो अर्म दृष्टि में मनड़ो उलफियो हो राज ॥८॥
 करलो करलो अहं ब्रह्म रो भाव हो मस्ताना ।
 कोई आँई र शिखर मे ऊँचो खेखणो हो राज ॥९॥
 भली बरी म्हाँने दियो जो साच बताय हे कलाली ।
 मैं तो मारग शिखर रो दूत्रो जायतो हो राज ॥१०॥
 अब तू म्हाँने प्याला (३) फितार्ई भर पाय हे कलाली ।
 अब तो तू कहसी जठेई चालसों हो राज ॥११॥
 पग सूँ चलावे तो देवाँ न आगे धँव हे कलाली ।
 कोई बिन पग चलावे फेर चढ़ जावसों हो राज ॥१२॥
 बात मुणी तो हँसी हे मुषड़ कलाल हो मस्ताना ।
 कोई मिलियो मस्तानो मदवो मानसिंह हो राज ॥१३॥
 धोँ सो म्हाँने मिली न और कलाल हे कलाली ।
 म्हाँने बरजत बरजत ने मदड़ा पाय दियो हो राज ॥१४॥
 नहीं भूलें धारो मानसिंह एहमान हे कलाली ।
 कोई ओहूँ मिलजो म्हाँने सतगुरु नाथ जी हो राज ॥१५॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

वाह वाह मद (१) पान तुम्हारा, नाथजी वाह वाह मद पान तुम्हारा है ॥टेर॥
जग पीये सो यह मद नाँही, यह मद जग से न्यारा, नाथजी वाह वाह० ॥१॥
इण मद से तो इज्जत हनन हो, यह मद मव से तार, नाथजी वाव वाह० ॥२॥
इण मद से तो लाखों मर गये, इनसे अनन्त उवार, नाथजी वाह वाह० ॥३॥
इण मद में मिथ्या अहङ्कार हो, सत् अहङ्कार इण धार, नाथजी वाह वाह० ॥४॥
इण मद को तो विभव भी चाहिण, सिर साँटे यह प्यारा, नाथजी वाह वाह० ॥५॥
देवनाथ गुरु मिले मद छकिया, मान जात बलिहारा, नाथजी वाह वाह० ॥६॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध मन से सारङ्ग करे, दिवस पहर मध्यान्ह ।
गुणजन विविध विचार से, करहु राग को ज्ञान ॥
सारङ्ग सुत (२) सारङ्ग (३) रटे, तब ही सारङ्ग (४) आय ।
मानसिंह सारङ्ग (५) बिना, सब रङ्ग (६) निकमा (७) थाय ॥
सारङ्ग (८) रङ्ग (९) सारङ्ग (१०) लखे, और लखे नहिँ कोय ।
मानसिंह सारङ्ग (११) लख्योँ, सारङ्ग (१२) रूप ही होय ॥
स्थाह (१३) रङ्ग को भेट दे, सह (१४) रङ्ग में मिल जाय ।
सह रङ्ग मिलियाँ सब मिले, एकहुँ रहसी नाँय ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लर् । ताल कैरवा ॥

माया बड़ी नखराली, हो नाथ (१५) थोरी भाया बड़ी नखराली ॥टेर॥
सुर जन मुनि जन पकड़न फारन, बहूतक मन में धारी । हो नाथ० ॥१॥
थाने छोड़ नहीं दूजो सूँ पतीजे, कईथोरी शयन विगाड़ी । हो नाथ० ॥२॥
जालम जवर महा छलगीरी, मिलने दे जावे आ तारी । हो नाथ० ॥३॥
इणरो नखरो ओ तो निभे आम सूँ, औरों रे नहीं रेवण वाली । हो नाथ० ॥४॥
मानसिंह कहे नाथ सुनो अब, कीजै सहाय हमारी । हो नाथ० ॥५॥

१-आत्म ज्ञान, २-जीवात्मा, ३-परमात्मा, ४-आत्मज्ञान, ५-आत्मज्ञान,
६-जीवन, ७-निरर्थक, ८-परमात्मा, ९-स्थिति, १०-विरहनी जिज्ञासु वृत्ति रूपी
स्त्री, ११-परमात्मा, १२-परमात्मा, १३-अज्ञान का कला रङ्ग, १४-एकता का
भाव, १५-परमात्मारूपी सहगुरु ।

॥ गान ॥

॥ गग मारङ्ग-लूर । ताल कैरवा ॥

माया ब्रह्म भिन्न कहा माने हो मान अजू, माया ब्रह्म भिन्न कहा माने ।
 नू मो मैं और मैं मोही नू है, माया द्विपी कव छाने । हो मान अजू ० ॥ १ ॥
 किनका नमरो और ठगे यह किनको, दोय दीखन क्यों थाने । हो ० ॥ १ ॥
 मुदा हुता जाने ठग्या और ठगाया, पडिया अविद्या रे पाने । हो ० ॥ २ ॥
 न्यारो रयो ने यह तोही को ठगमी, घान जाहिर जग जाने । हो ० ॥ ३ ॥
 भौदू को ठगन धार नये लागे, बुद्धिचान् न ठगाने । हो ० ॥ ४ ॥
 देवनाथ कहे मानमिह मुन, भेद भरम मत आने । हो ० ॥ ५ ॥

प्रश्न

॥ दोहा ॥

मान रहै ही नाथ जी, जो भौदू जीव ठगाय ।
 नौ ब्रह्म विष्णु मद्देम मे, वे क्यों भौदू रह जाय ॥

उत्तर

॥ दोहा ॥

है नृपति चालाक नू, चानुर चपल प्रीन ।
 कहा की ला कहा पर धरी, नै ममथ न जावन हीन ॥

॥ मवैया ॥

माया ही खेल छे मगरे और माया ही आर्षत आर ठगाई ।
 माया ही विष्णु और माया है ब्रह्मा माया ही राहुर आप बन आई ।
 माया ही ब्रह्म शब्दप बनी फिर ना कोटि टगी न किन्ही से टगाई ।
 देवनाथ कहे मान मुना यो ब्रह्म विभू विच जाय मगाई ॥

॥ दोहा ॥

मानमिह मंगार मे, मुनना निरुना नौदू ।
 भली बरी आ नाथ जी, दिवो अविद्या नौदू ॥

॥ अर्थ ॥

ब्रह्म और विष्णु महादेव नहीं जोते माया, श्रुंगी और परारत माया ह
 चक्राये हें । नारद शुकदेव आदि गोरख से ज्ञानी जन, नाथ मदन्यर नाथ की
 ने संसार हें । मुन मुन यह मोह निरुना हुए हेरान हच दिग्गज ॥

हार बैठा आलसी कहावे हैं । देवनाथ हाथ धरतकरी पहिचान मान, देह अभिमान भंड फोड़ के गिराये हैं ॥

॥ कवित्त ॥

माया न भिन्न भिन्न ब्रह्म कहूँ जान्यो आज, माया हूँ जान्यो हम ब्रह्म को स्वरूप है । माया और जीव ब्रह्म उपाधि तीनों यह, तीन कर देखे तो पड़े भय-कूप है । तीन एक एक तीन एक रस जान्यो सदा, भिन्नता मिटी तो सब मेरो हीज रूप है । कहे राव मानसिंह सुनो संसार सगरी, आप जान लियो निर मिटी त्रिविध भूप है ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

मान वचन

ज्यों कीनो ज्यों बाह बाह, गिरधर ज्यों कीनो ज्यों बाह बाह ॥ टेर ॥

तू ही अनेक एक तू कहिये, फिर न्यारो कहाँ पावा ।

गोपी कौन भोग करे कितने, देखो भरम मुलावा । गिरिधर ज्यों कीनो ॥ १ ॥

नहीं कोई पाएइव कुरु नहीं कोई, तो गीता कौन सुनावा ।

आपहि पढ़े सुने फिर आपहि, तो क्यों परिश्रम उठावा । गिरिधर ज्यों ॥ २ ॥

कर्म कुरुकर्म नहीं हे दोनो, क्यों फिर जुदा बनावा ।

आपहि करे भरे फिर आपही, क्यों ये प्रपन्न चलावा । गिरिधर ॥ ३ ॥

ये तो बात नहीं मन भाई, अरुक्तन बीच फँसावा ।

मान कहे गुरु देवनाथ सुनो, क्यों फिर भरम मुलावा । गिरिधर ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

गुरु वचन

जो कीयो सो कीयो, मान हम जो कीयो सो कीयो ।

जो कुछ कियो मेरी सब इच्छा तोको दुःख कहा दीयो । मान हम ॥ टेर ॥

अपना नाम पहचान ले, मुमरण महज्जों होई जी ॥ १ ॥
 मीठा खार तोसे भिन्न नहीं, तू ही रम ने रमैया ।
 तू ही तो म्याद तू ही लेत है, म्यार क्रिण तोय कहियाजी ॥ १ ॥
 देश ग्राम कोई है नहीं, है तो तुम मोंथ मरिया ।
 रम ने नीरस तू ही आप है, मव रम तोमें घरिया जी ॥ २ ॥
 आनन्द विक्षेप जो भिन्न कहीं, क्यों तै भिन्न कर मान्या ।
 तोही ने आनन्द भयो, दुख तै अपाई ठान्या जी ॥ ३ ॥
 भर्म म्मच नेरो है नूही, जिण विधि है त्यों रहिये ।
 तू ही तो कूप तू ही गिर रछों, इण मे विपत्ति नहीं है जी ॥ ४ ॥
 तू ही तो जीव ईग जगत है, तू ही है खेळ खिलारी ।
 त ही तो खेळ होय खेळनो, तो मे रचना सारी जी ॥ ५ ॥
 जीव ब्रह्म जग चाहे सो, लखले निज मन मोंई ।
 उलटा ने सीधा सीधा उलट हो, माने दु.ख नहीं कोई जी ॥ ६ ॥
 कुण तो सूख ने हरिया होया, क्रिण मे रस नोंई ।
 नाथ बहे मुण मानसिंह, यह क्या पोख चलाई जी ॥ ७ ॥

॥ क्वचित् ॥

मिहनी के गर्भ होने श्वान नहीं पैदा होत, सिंहनी के सुत मदा सिंह ही
 कहाये हैं । मिहनी के जाये को कोई श्वान हू न कहत कभी, चाहे हो कैमा ही
 पर सिंह ही बताये हैं । ऐसे ही जीव जो ईश्वर अंश कहत तुम, ईश्वर हैं
 सिंह तो श्वान कैसे जाये हैं । कहे राव मानसिंह भरम की है वान यह, ईश
 जीव माया यह एक ही कहाये हैं ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंज" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

मन भूल जीव बण, आदि अनादि पूरण ब्रह्म है । आदि अनादि पूरण ब्रह्म है,
 ए हों हों हों हों; मन भूल जीव बण आदि अनादि पूरण ब्रह्म है ॥ १ ॥

जीव कहे कद जनमियो सरे किण दिन भयो अन्वदार;
 हँ हँ जीव कहे कद जनमियो सरे० ।
 जो मरियो तो कहाँ गयो सरे अचरज मोय अपार;
 हँ हँ जो मरियो तो कहाँ गयो सरे० ।
 अस्तंथ जुगाँ सूँ चल रयो सरे, आपही माने हार रे ।
 मत भूल जीव वण० ॥ १ ॥

जो जनम्यो तो सही कहो स थारा कुण है मा और बाप;
 हँ हँ जो जनम्यो तो सही कहो स० ।
 जिण दिन सूँ सृष्टि रची सरे उण सूँ ही पहिला आप;
 हँ ही जिण दिन सूँ सृष्टि रची सरे० ।
 जीव जीव प्रक चावरे स कोई, निकमी सहे संताप रे ।
 मत भूल जीव वण० ॥ २ ॥

जीव जीव वक्तो फिरे स थारी किसड़ी कहिये जात;
 हँ हँ जीव जीव वक्तो फिरे स० ।
 अपणा आप विचार ले स तू क्यों नहीं भेदे रात;
 हँ हँ अपणा आप विचार ले स० ।
 रे मतिहीन क्यों भूलयो सरे, गुड़ गुड़ कह विष खात रे ।
 मत भूल जीव वण० ॥ ३ ॥

तू ही स्वर्ग तू नरक है सरे तू ही इन्द्र तू ही देव;
 हां हां तू ही स्वर्ग तू ही नरक है सरे० ।
 ब्रह्मा विष्णु महेश तू ही सरे तू ही करत है सेव;
 हँ हँ ब्रह्म विष्णु महेश तू ही सरे० ।
 तू ही तुमको जाणले सरे, आत्म अचल अभैव रे ।
 मत भूल जीव वण० ॥ ४ ॥

तू ही जड़ चेतन तू ही सरे स्यावर जङ्गम सोय;

हा हां तू ही जड़ चेतन तू ही सरे० १
तेरे मिश्रण दूजो नहीं सरे होयो न कभी होय;

हां हां तेरे सिवाय दूजो नहीं सरे० १
देव ग्रन्थ ने जोयले सरे, न्यारो कहे न कोय रे ।

मत भूल जीव बण ॥ ५ ॥

देवनाथ ममरथ मिल्ला ॥ जिन द्वीनो नाथ बणाय,
हां हां देवनाथ ममरथ मिल्ला स० ।

महान् नाथ मय भृष्टि को सरे होय अनोध बलाय,

हां हां महान् नाथ सय भृष्टि को सरे०

मानसिंह जब सिंह है सरे, भेड़ संग कुर्य जाय रे ।

मत भूल जीव बण० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंजे" के नीतों की तिल करवा ॥

आ खड़ी रे महल (१) में, मन में हुलसी रे सुरता सुन्दरी ।

मन में हुलसी रे सुरता सुन्दरी, ए हां हां हां । आ खड़ी रे महल में ॥ टेरे ॥

गोल किवाड़ी (२) महल री ॥ आ निखे अनयो पीव (३), हां हां खाल किवाड़ी ॥

कहे सो केवल आग है स क्या आगे काई है जीव; हां हां कहे सो केवल ० ।

जीव जीव भेला हुआ सं कोई न्यारो रहमी पीव; हां हां जीव जीव भेला ० ।

फिर कद मिलसो पीव सू सरे, बां ही रहे जांसी जीव रे । आ खड़ी ० ॥ १ ॥

देखण गई आ पीव ने सो रही पिव सोय मिलाय- हां हां देखण गई आ ॥

हिम गल्यो पाणी, मयो-सरे जब देखे कुर्य आय- हां हां हिम गल्यो पाणी ० ।

ना कोई जीव न मज है म उठे: एको एह कहाय, हां हां, ना कोई जीव न ० ।

अपनो आपही आप है-स उठे, दूजो, नहि-दरसाय रे । आ खड़ी ० ॥ २ ॥

मैं ही जीव मैं ही ब्रह्म हूँ सरे दूजो भरम लियो मान, हां हां मैं ही जीव मैं ही ० ।

मेरी सत्ता सब जगत है सरं दूजो कोई न जान, हां हां मेरी सत्ता सब० ।
 सब में मेरो हि रूप है सरं दीखे नहीं कोई आन, हां हां सब में मेरो रूप० ।
 चार वेद सब पढ़ लिया स मैं पढ़ाया अकारण सुगन रे, आ पखंडी० ॥ १ ॥
 देवनाथ री मेहर सूं स मैं, असली लियो पह जान, हां हां देवनाथ री: मंहर० ।
 क्या करी मंहर नाथजी स म्दान दीनी निज की जान, हां हां कृपा करी मंहर ।
 अपने जान वारियो स गुरु राख्यो सिर अहसान, हां हां अपने जान० ।
 अरविह भूले नही स धारो करे जीवन भरं गान रे, आ खंडी० ॥ ४ ॥

॥ गान-॥

॥ १ ॥ अहंकार तर्जं पुरजे के गीतों की ग तोल करेवा ॥

गुरु वचन

१ अहंकार तर्जं पुरजे के गीतों की ग तोल करेवा ॥
 नृप भयो रे धारो, किनकी अहसानो तू फिर कौन है ।
 किनकी अहसानो तूर्कह कौन है, एही ही हा हा । नृप भयो रे० ॥ १ ॥ १ ॥
 गुरु शिष्य सो अंध तक हुता स तेरे मूर्खो जीव रो भाव, हां हां गुरु शिष्य ता० ।
 अंध भयो गुरु शिष्य नहीं सरं एक तो होत अभाव, हां हां अंध भयो० ।
 जैसे तन तेरो बन्यो सरं ऐसा हि मेरो बनाय, हां हां जैसे तन० ॥
 ए पानो को बुद्धु सरं, इनको कहा बंधाव रे नृप भयो रे० ॥ १ ॥ १ ॥

शिष्य वचन

१ अहंकार तर्जं पुरजे के गीतों की ग तोल करेवा ॥
 गुरुदेव गुसाईं उक्ते नही सिर सूं धारो भार हा ।
 उक्ते नही सिर सूं धारो भार हो, म्दान हां हां हां । गुरुदेव गसाईं० ॥ १ ॥ १ ॥
 जन्म अनेकां मैं कियो स म्दाने कोई सन वियो सताय, हां हां जन्म अनेकां० ।
 जो मैं आपे जाय तो स तो पहिले जाययो, सांभ हां हां जो मैं आपे रानां ।
 आप मिल्या ही जाणयो स म्दाने मार्यो दियो दिखाय, हां हां आप मिल्या० ।
 कते गुणै कैसे मूलियो सरं, मैं सूं मूल्या न जाय ही । गुरुदेव गसाईं० ॥ १ ॥ १ ॥

गुरु वचन

भाव सत्ते, तदेह तो स शिष्य किते तावो उक्ते जाय अन्तःकरण के अन्तःकरण

हाड़ मौम रो पतलो स शिष्य था सूँ न प्रेम बढ़ाय, हों हों हाड़ मौस रो० ।
मैं तू तू मैं एक हों सरे दूजो समके नाँय, हों हों मैं तू तू मैं० ।

दूजो समकयों दु ख हूवे स शिष्य, नहीं तू ब्रह्म कहाय रे । नृप भयो० ॥१॥

शिष्य वचन

जो गुरु तन नहीं होवतो स ओ हान कहों ते आय, हों हों जो गुरु तन० ।

चम दृष्टि मेया कर्म स मैं मिल्यो रहूँ तुम माँय, हों हों चम दृष्टि० ।

प्रथा बनी रहे जगत की सरे गुरु को भाव न जाय, हों हों प्रथा बनी० ।

अन्तस मे दोऊँ एक हों मरे, तत्त्व स्वरूप कहाय हो । गुरु देव गुमाई० ॥२॥

गुरु वचन

सुन नृप तू साची कहे स थामे भूठ रहे कछु नाँय, हों हों सुन नृप० ।

इसी प्रथा ने राखताँ सरे प्रथा बखी बढ़ जाय, हों हों इसी प्रथा ने० ।

धर्म ओट के वीच में स ए चोट घणा सिर त्वाय, हाँ हाँ धर्म ओट के० ।

तू नृप शिष्य परवीण है सरे, कहा तुम्हें समझाय रे । नृप भयो० ॥३॥

शिष्य वचन

नाथ मो माई घाप है सरे गुण अवगुण कछु नाँय, हाँ हाँ नाथ मो माई० ।

अवगुण को देखूँ नहीं स मैं गुणगुण लेऊँ उठाय, हाँ हाँ अवगुण को० ।

अवगुण अपना मुगतसी सरे मोको नहीं मुगताय, हाँ हाँ अवगुण अपना० ।

नाथ कियो सो सही है स मेरे, ये धारण मन माँय हो । गुरुदेव गुमाई० ॥३॥

गुरु वचन

रे नृप तू आछो भयो सरे अजहू रह गयो भूल, हाँ हाँ रे नृप तू० ।

मैं सोनो दियो मोलकों स तू डारे कइर भूल, हाँ हाँ मैं सोनो दियो० ।

माने तो मरजी तेरी स शिष्य अन्धविश्वास न भूल, हाँ हाँ माने तो मरजी०

देवनाथ कहे मानसिंह गुण, सरसी दुख रो शूल ॥ नृप भयो० ॥४॥

शिष्य वचन

दुःख गुन चाहे कुद भी सहो स मैं प्रण कियो छोड़ूँ नाँय, हाँ हाँ दुःख सुम०

प्राण जाय तो जाइये सरे सिंह घास नहीं खाय, हां हां प्राण जाय तो० ।
 मैं सुधर्यो इण भेष सूं सरे सो अब खरूह नांय, हां हां मैं सुधर्यो० ।
 मान कहे हो नाथ जी सरे, रहूं नाथ शरणाय हो । गुरुदेव गुसाईं० ॥४ ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "५जे" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

हे म्हारी सुघड़ बलारी(१)प्याला(२)मस्ताने(३)भर पाय दे ।

प्याला मरताने भर पायदे, ए हां हां हां हां- हे म्हारी० ॥ टेर ॥

इण मन रा महुआ करो सरे ज्ञान लेवो गुड़ गाल, हां हां इण मन रा० ।

तनड़ेरो मटको करो सरे ब्रह्म अगन को जाल, हां हां तनड़े रो० ।

बंकनाल(४) से उलट के सरे या बिधि मद को निकाल, हां हां बंकनाल० ।

प्रेम पियूप हम मद पिये सरे, हैं मस्तों के लाल । हे म्हारी सुघड़० ॥१॥

इण प्याले में छक रया सरे कोईयक महान सुजान, हां हां इण प्याले में० ।

यह प्याला जिन जिन पिया सरे पाया पद निर्वाण, हां हां यह प्याला० ।

ध्रुव प्रह्लाद शुक्रदेव जी सरे गोरख कबीर गुणवान, हां हा ध्रुव प्रह्लाद० ।

पी प्याला लुद मरती का सरे, लिया ब्रह्म रस ज्ञान । हे म्हारी सुघड़० ॥२॥

आवागमन में भटकतां सरे प्याला पिया अनेक, हां हां आवागमन में० ।

अब हम सबको त्याग के सरे पिया जो प्याला एक, हां हां अब हम सबको० ।

निज स्वरूप का मद पिये सरे, गह रुतगुरु की टेक, हां हां निज स्वरूप का० ।

कर बिचार उर में लख्यो स मैं, आप स्वरूप अहेख । हे म्हारी सुघड़० ॥३॥

अगम निगम की वाट से स हम जाने चाहत हैं दूर, हां हां अगम निगम० ।

निज स्वरूप को देख के सरे करें सवन को चूर, हां हां निज स्वरूप को० ।

ब्रह्म रतन को छोड़ के स हम क्यों गहें कंकर धूर, हां हां ब्रह्म रतन को० ।

निज मद में अलमस्त हैं स हम, करें काल का चूर । हे म्हारी सुघड़० ॥४॥

देवनाथ को कर गछो स हम सदा रहें भरपूर, हां हां देवनाथ को० ।

१—उक्ति, २—आत्मज्ञान, ३—विज्ञासु जीवात्मा, ४—अविद्या ।

निर्मल सिद्धो अब मुख भयो म उर उगो ज्ञान को मूर, हां हां तिमिर० ।
जीवन्मुक्ति पायली म अब मुक्ति रहत मजूर, हां हां जीवन मुक्ति० ।
मान महान को रूप है म यह, सब जग मेरो नूर । हे म्हाारी मुघड़० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मल्लार, तर्ज बाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

मान वचन

अरज करूँ हो म्हारा नाथ जी, म्हाारी अरजी सुखिये ।
ब्रह्म ज्ञान कैडो आप रो, उगरी गाथा सुखिये जी ॥ ढेर ॥

गुरु वचन

बाहू रे या शिष्य सूरवां, सनाणी जायो ।
रीत अनादि ना तजी, भल नूँ जग में आपोजी ॥ ढेर ॥
भेद कहूँ मैं निज ब्रह्म रो, पहिला एक मुण भाई ।
ब्रह्म ज्ञान धारख कठिन है, भीठी खीर है नाई जी ॥१॥

मान वचन

दुःख मुख सूँ म्हे नाई हरं, डरता तो सुत्री क्यों होया ।
प्राण रामों निज ह्वाथ मे, अल देख मन रोया जी ॥२॥
रण बंके रजपूत है, नाम मुण अरि चबराये ।
काल सूतो निज आत्रके, जाके नीद न आवे जी ॥३॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

बंकर मोघा ही नहीं, नहीं रामरोर सूँ काम ।
मानसिंह भीषो रहे, तो परसे आतम राम ॥
घो मरखो कुछ और है, यह मरखो कुछ और ।
दण मरणे तो वो मरे, जिण लियो चित चोर ॥
मुख्यो मुखो ब्रह्मज्ञान तै, गुणयो न उर में कोय ।
अब गुरानो मीवाय दूँ, मरव मुन्ही नूँ होय ॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

ऐसी कृपा अब कीजिये, सब सुख मिले घर मांय ।

जप मप मैं कुल ना करूँ, दुख देखूँला नांय ॥

गान का अन्तर

नीरस ज्ञान सुखसूँ नहीं, यह पैला सुख लीजे ।

रस हुवे तो आनन्द आवे, नहि तो चुप कर लीजे जी ॥ ५॥

गुरु वचन

रसना चटोरी है आपरी, नित उठ रस ने आवे ।

श्रवण जबर चाटुक अति, रस बिन और न भावे जी ॥५॥

विष अमृत भेलो हुवे, छांटने न्यारो कीजे ।

हम तो देवगहार हैं, मन भावे सो लीजे जी ॥६॥

मान वचन

विष अमृत भेलो पीयता, आरे पास न्यौँ आता ।

छांट पायण ने तो गुरु किया, ओ तो पेलाई पी जाता जी ॥७॥

गुरु वचन

देख चतुरता मान री, नाथ मन में हँसियाया ।

शिष्य तो बहुत हम मूँडिया, गुरु शिष्य अब ही पाया जी ॥८॥

मान वचन

यह मत कहो मेरे नाथ जी, तुम हो अन्तर्यामी ।

शुत्री पूत हम अड़क हैं, मेढो सब मम खासी जी ॥९॥

गुरु वचन

धीर धरो नर भानसी, व्याकुल नहीं होना ।

गुरु तो होना ऐसे शिष्य क, मूख से गुप्त में रोना जी ॥१०॥

शिष्य तो कड़वे ही होत है, गुरु मीठा कर लेवे ।

इनको फिर नहीं मानमी, भली बुरी सब सहवे जी ॥११॥

मान वचन

साची कडू हो म्हारा नाथ जी, सिंह और नृपति दोई ।

लाय जनन का लीजिये, याने ज्ञान न होई जी ॥१२॥

गुरु वचन

सिंह बुरी मीठा घणा, याने सर कर लेवां ।

नहीं सर होवे तो हम नाथ क्या, अनाथ ही रहेवां जी ॥१३॥

॥ दोहा ॥

मान अनि राजी भयो, मुन मनगुरु के बैन ।

कही मो ये कर छोडसी, अब पावेगे बैन ॥

गुरु वचन

गान का अन्तरा

कहो नृपति क्या चाहत हो, सो मोय लील मुनाबो

कौन कमी तो मे रही, मो अब हममे पावो जी ॥१४॥

मान वचन

जीव ब्रह्म क्यों दोय है, क्यों कर होवे एरुनाई ।

कहां जाय टोनो मिने, ये गम देवो बतार्ई जी ॥१५॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

यह तो जरा सी बात है, या में दुस्तर नाय ।

जीव भाव ने पलट दे, तो वृष्टी ब्रह्म कहाय ॥

मान वचन

॥ राग भैरवी रेसता । ताल कवाली ॥

तुम्हें तो महज दीवना है. हमें नहीं महज आना है ।। डेर ।।

हमें दो ऐमा लगता है, ब्रह्म कोई गॉव है न्यारा ।

आप कहते तूही तो ब्रह्म है, हँसा इसका जो आता है ॥ १ ॥

अगर वो सहज ही होता, तो आप से आप मिल जाता ।

न जाने गुप्त कितना है, खबर मुझको न पाता है ॥ २ ॥

कोई कहे चौथे आसमाँ पर, कोई सतलोक बताते हैं ।

कोई कहे हीर सागर में, मेरा दिल यों गभराता है ॥ ३ ॥

कहाँ को हूँ देने जावें, पता नहीं है कोई उसका ।

कृपा करके बता दोगे, तुमरा क्या भिगड़ता है ॥ ४ ॥

कोई कहे गोकुल के इन में, खड़ा गैयाँ चरावा है ।

चौराखी कोस में हूँ दूँ, अगर वो कहीं न पाता है ॥ ५ ॥

रथाग वैराग्य में कोई कहे, फिरे जङ्गलों में धारे भेप ।

मरे हम भूल के मारे, नजर वो कहीं न आता है ॥ ६ ॥

सुनो अब नाथ जी मेरी, गमावो धक्क न हाथों से ॥

मान अब शरणा में आया, जीव क्यों रह कें जाता है ॥ ७ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

क्यों अकृलाचे मानसिंह, पलटो अपना भाव ।

जीव कहत अब ब्रह्म कहो, है इतनो ही चाव ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

कहने ही मात्र से ब्रह्म बने प्रभु यह तुमतो अब ठीक बताई ।

कहने से ही ब्रह्म बने इनमें कुछ विपत उठावन नाँई ।

कई तीर्थ उपवास किये और नाना भाँति विपत्ति उठाई ।

अब तो सहज बतावत हो यह पहिले ऐसो बतायो क्यों नाँई ।

चात ही बात में छोड़ूँ नहीं ऐसे विश्वास नहीं मन माँई ।

मान कहे महाराज सुनो तुम चूरी के पाने पड़े अब आई ।

गुरु वचन

॥ चौपाई ॥

नन मे पलट पलट मन स ही । वचन पलट ब्रह्म लख उर तेही ॥

तू नो सब कुछ जाने नरेशू । औरन खरड करे अन्देशू ॥

पर उरकार करण के तौई । नुम ये जाण कर गोष्ठी पलाई ॥

॥ दोहा ॥

बान सुनी यह नाथ की, हँस बोले तब राव ।

जैसा कुछ है समझलो, कह दीजे ब्रह्म भाव ॥

॥ गान ॥

॥ राग भिंभोटी, गहरे तबील । ताल नकटा दादरा ॥

गुरु वचन

तू है जो अनादि ब्रह्म सदा, नृप भूत गयो जद जीव भयो ।

नेरो जो स्वरूप सनी जग है, तू तो तोही को तीय भूलाय रयो ॥१॥

तू आप की भूत मिटाय दहे, फिर नों तो आयो और नांय गयो ।

जब आप मे आप समाय गयो, नथ दोय को खोय के एक भयो ॥२॥

मूढ तू ही तो ब्राह्मण कृत्री बन्यो, और तू ही तो वैश्य को भाव कियो ।

फिर तू ही तो शूद्रपनो धरके, और तू ही तो सवहू को दास भयो ॥३॥

तुम मान लखेन रहो मनमे, अब आप में आप दिखाय रहो ।

तेसे नाथ को हाथ गहो चित सूँ, उनके चरणों विच शीश दियो ॥४॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

मैं भूल्यो अब मोयको, तो क्यों कर भुन्यो नाथ ।

आप आपको भूले क्यों, यही हँसी मोये आन ॥

गुरु वचन

जैसे सर्प हो जेवड़ी, सीप ही रूपा होय ।

ऐसे भूल्यो मानसिद्ध, चिन्ता करो न कोय ॥

मान वचन

कलुक गुह कल्लु तेज हो, रज्जू सर्प तव पाय ।
मेरे घोर अन्धेर है, क्यों कर वो दरसाय ॥

गुरु वचन

बिलकुल अन्धकारो नहीं, है जो पदारथ ज्ञान ।
निज स्वरूप को भूल गयो, सर्प ही व्यापे मान ॥

॥ गान ॥

॥ राम किंभोटी, बहरे तबील । ताल नकटा दादरा ॥

मान वचन

अब भरम उड़ाय भली करिये, प्रभु शरण तुम्हारी मैं आय पड़यो ॥ ६८ ॥
कारण कौन यह तिमिर भयो, और शुद्ध स्वरूप को भूल गयो ।
जब नित्य प्रकाशी क्यों भेद भयो, अब शरण तुम्हारी मैं आय पड़यो ॥ ६९ ॥

नित्य अच्युत वो कलंकी क्यों, यह भेद वताय देवो सगरो ।

पहिले ब्रह्म हो तो कैसे जीव भयो, अब शरण तुम्हारी० ॥ ७० ॥

नाथ को साथ कियो अब तो, प्रभु भेद देवो मन को भ्रमरो ।

तुम राम न नेक रखो हमसे, अब शरण तुम्हारी० ॥ ७१ ॥

मान कहे कर जोड़ दोई, जो लुमा करिये जन जान मोई ।

यह जाति स्वभाव न झूटत है, अब शरण तुम्हारी० ॥ ७२ ॥

गुरु वचन

॥ गान ॥

॥ राम किंभोटी, बहरे तबील । ताल नकटा दादरा ॥

मान अजान नहीं अब तू, क्यों जान अजान दिखावत है ॥ ७३ ॥

मेरा हमेशा ही काम यही, कोई शिष्य यहां पूजन आवत है ।

अपनो करखो है जो काम सदा, फिर क्यों मन में धरवावत है ॥ ७४ ॥

काम करे न डरे मन में, चाहे केतिक बार पूजन चाहे ।

साधु हुए समता के लिए, फिर कारण कौन क्रोध आवे ॥ २ ॥
 मेरे जिनसे नहीं पृथक्नहार, तो मेरे जिनसे नहीं बतलावे ।
 डरने की बात कौन नृपति, सब अपने ही काम से दिखलावे ॥ ३ ॥
 देवदुनाथ कहे दिल्ल से, चाहे केतिही वार ले पूज हमे ।
 नृप तू ही है नू ही है तू ही मदा, नृप हम तुम एक स्वरूप मिले ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह कहे नाथजी, अजहूँ भेद दरसाय ।
 यह गूँगे गुड़ कह दियो, मैं तो समझ्यो नाँय ॥
 गुरु कीने मैं जोय के, लीने मृच बजाय ।
 कामी क्रोधी लालची, मैं भी करता नाँय ॥
 क्रोधी तो हम ही मयो, है नाहर की जात ।
 तुम सो दीनदयाल हो, जिनसे लिंगे मिर हाथ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

देव-कियो तोय मानसिंह, यशु वणे क्यों लाल ।
 सब मे एक स्वरूप है, यह कर देलो ख्याल ॥

मान वचन

॥ मवैया ॥

जब एक स्वरूप बताय रहे तब एक हूँ मे और एक क्यों रोवे ।
 एक तो मौज उड़ाय रयो और एक कष्टो करुण क्यों सोवे ।
 एक तो राज करे जग को और एक जो भूख मरत हम जावे ।
 मान कहे किम एक लखे दीखत प्रत्यक्ष यह द्वैतक दो हे ॥

गुरु वचन

॥ गान के अन्तरा ॥

मूल अविद्या री काढ दे, बीच जीव मिटावे ।
 घट तज परगट ओलखौ, तब निज निजरा आवेजी ॥ १६ ॥

मान वचन

दर्द होय जब घट मांही, मांयले ने दुःख काई होवे ॥
घाव लगे तो तन में लगे, मांय बैठो वो क्यों रोवे जी ॥१७॥

गुरु वचन

वो तो रोवे ने हँसे नहीं, सहजे आनन्दरूपा ।
उनकी सत्ता सूँ प्राण यह, ओलखे दुःख को स्वरूपा जी ॥१८॥

मान वचन

जब तक आत्म देह में, तब तक हा हा चिल्लावे ।
देह छोड़ बाहर निकसे, फिर कुछ नांय सुनावे जी ॥१९॥
देह ने प्राण तो पड़या रेवे, आत्मा इकेल्लो जावे ।
फिर क्यों नहीं शोले वो नाथ जी, यह तो स्व योही रह जावे जी ॥२०॥

गुरु वचन

निकेल्यो जिणने पहचानियो, वो है तेरो तू रूपा ।
सगले जिकर ने छोड़दे, केवल शुद्ध स्वरूपा जी ॥२१॥

मान वचन

सूँ तो कणा सूँ नहीं छूटसो, आगे भेद बताओ ।
ओ दुःख सुख कुण भोगवे, अब मत नाथ क्षिपावो जी ॥२२॥

गुरु वचन

सब से तू तुझसे है सवी, सब में है तू रलिया ।
तेरे सिवाय कोई है नहीं, थासूँ कोई नहीं टलिया जी ॥२३॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

मैं हूँ मैं हूँ मैं ही हूँ, यह कई बार कहदीन ।
पण क्यों कर हूँ मैं नाथजी, या की न निश्चय कीन ॥
देह हूँ या प्राण हूँ, या हूँ सूक्ष्म शरीर ।
या अक्षय या लिंग हूँ, समझ कहो गुरु पीर ॥

माधु हुए समता के लिए, फिर काशख कौन कोष आवे ॥ २ ॥

मेरे जिम्मे नहीं पड़नाहार, तो मेरे जिम्मे नहीं बतलावे ।

इने की बात कौन नृपति, सब अपनो है काम सो दिखलावे ॥ ३ ॥

देवदुताथ कहे दिल से, चाहे केतही बार ले पूछ हूँ ।

तू तू ही है नू ही है नू ही सदा, नृप हूँ तुम एक स्वरूप मिले ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह कहे नाथजी, अजहूँ भेद दर्साय ।

यह गूँगे गुड कह दियो, में तों मगमूयें नाँय ॥

गुरु कीने मैं जोय के, लीने मूँव वजाय ।

कामी कोभी लालची, मैं भी करता न्याय ॥

क्रोधी तो हम ही घणे, है जाहर की जात ।

तुम सो धीनदयाल हो, जिनसे लिंगे मिर हाथ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

देव कियो तोय मानसिंह, पशु बणे क्यों लाल ।

सब में एक स्वरूप है, यह कर देखो ख्याल ॥

मान वचन

॥ मवैण ॥

जय एक स्वरूप प्रताप रहे तब एक हूँ से और एक क्यों रावे ।

एक तो मौज उड़ाव रयो और एक कहे कंकर क्यों सोवे ।

एक तो राज कते जग को और एक जो भूख भरत इम जोवे ।

मान कहे किम एक लखे दीधत प्रत्यक्ष यह द्वैतक दो है ॥

गुरु वचन

॥ गान के अन्तरा ॥

सुल अविद्या री काढ दे, जीव जीव मिटावे ।

घट वज परमट ओहखो, तव निज निजर आवेवी ॥ १६ ॥

मान वचन

दर्द होय जब घट मांही, मांयले ने दुःख काई होवे ॥
घाय लगे तो तन में लगे, मांय बैठो वो क्यों रोवे जी ॥१७॥

गुरु वचन

वो तो रोवे ने हँसे नहीं, सहजे आनन्दारूपा ।
उनकी सत्ता सूँ प्राण यह, ओलखे दुःख को स्वरूपा जी ॥१८॥

मान वचन

जब तक आत्म वेद में, तब तक हा हा चिल्लावे ।
वेद छोड़ बाहर नीकसे, फिर कुछ नांय सुनावे जी ॥१९॥
वेद ने प्राण तो पढ़या रेवे, आत्मा इकेलो जावे ।
किर क्यों नहीं बोले वो नाथ जी, यह तो सब बाँधी रह जावे

गुरु वचन

निकेत्यो जिणने पहचानियो, वो है तेरो तू रूपा ।
सगले जिकर ने छोड़दे, केवल शुद्ध स्वरूपा जी ॥२०॥

मान वचन

सूँ तो फणा सूँ नहीं बूटसो, आगे भेद बताओ ।
ओ दुःख सुख कृण भोगवे, अत्र मत नाथ डिपावो जी ॥२१॥

गुरु वचन

सब से तू तुझसे है सथी, सब में है तू रलिया ।
नेरे सिवाय कोई है नहीं, थासूँ कोई नहीं टलिया जी ॥२२॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

मैं हूँ मैं हूँ मैं ही हूँ, यह कई बार कहदीन ।
पण क्यों कर हूँ मैं नाबजी, या की न निश्चय कीन ॥
देह हूँ या प्राण हूँ, या हूँ सूक्ष्म शरीर ।
या अरख या लिंग हूँ, समझ कहो गुरु पीर ॥

सुरती तो पहिचान करावे, वृत्ति नेचे भेद जनाय । वात कहूँ ० ॥१॥
 सुरती वृत्ति दोनो को दृष्टा, उपवृत्ति आनन्द; वाला सुरती० ।
 चौथी अवस्था तुरिये मांही, निशि दिन रहत स्वच्छन्द । वात कहूँ ० ॥३॥
 अब क्या वृत्ते वृत्त नरेणू, विलम्ब करो मत कोय; वाला अब क्या० ।
 न पूजत जो तर्हि अलमावे, आलस न आवे मोय । वात कहूँ ० ॥४॥

मान वचन

शेहा

वृत्तण को जागा नही, अब भेद रयो नही नेक ।
 पक्ष वात कहूँ मैं नाथ जी, मंशय रही मन एक ॥
 एक पक्षनो आत्मा, जिणरे चार मुद्यम ।
 ग्यारो भ्यारो ज्यों कर रहें, कहिये भेद तमाम ॥

गुरु वचन

चारों मांही एक है, एकण मांही चार ।
 दो चारु ही आप है, कीजे मान विचार ॥

मान वचन

ये तो सुम फिर नई कही, उलकन डारी और ।
 एक चार कैसे बने, माने नही मन मोर ॥
 क्या चारन चहुँ टुकड़ें, क्यों कर चारन मांय ।
 कृपा करो यहाँ नाथजी, मंशय देहु मिठाफ ॥

गुरु वचन

जब जाग्रत में रहत है, जाग्रत सुपने आय ।
 सुपत मूँ हो सुपुमि, फिर जाग्रत में जाय ॥
 दोनों को आनन्द कहे, रहे तीमरी माय ।
 चौथी बीच में जायक, आनन्द दुःख दोऊ जांय ॥

मान वचन

क्या चौथी कहीं दूर है, चदखो है आसमान ।
 भो भी हमे बनाटये, अब मत तनो मान ॥

गुरु वचन

नहीं चढ़खे री पैड़ियां, घाटी कहिये न कोय ।
नहीं उड़खो आकाश में, असली निरचय होय ॥

मान वचन

जाग्रत सूँ सुपने गयो, सुपन २ पुनि मांय ।
इन में पाँहले नहीं हुतो, कहां थो कहां से जाय ॥
सुम कहते हो नित्य है, ज्यापक रग रग मांय ।
कहां से आयो कहां गयो, संराय देहु मिटाय ॥

गुरु वचन

॥ गान का अन्तरा ॥

जाली जाल थूके नहीं, निकले तो फँसावे ।
ज्ञान कतरनी हाथ है, काट के दूर हटावे जी ॥२५॥
नहीं तो गयो ने आयो नहीं, है नित एक रस भरिया ।
समय समय परभाव से, खेल न्यारा न्यारा करिया जी ॥२४॥
यों तू ओलख निज रूप ने, सही सही समझायो ।
भरम रयो तो फिर कादले, अबसर ऐसो आयो जी ॥२६॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

कौन भरम अब रहत है, दीनो भरम उडाय ।
मान कहे हो नाथ जी, सही दियो समझाय ॥
सङ्ग कियो जब नाथरो, फिर क्यों रहे अनाथ ।
जिण में ही देव जो नाथ है, लिये देव के हाथ ॥

मान वचन

॥ सबैया ॥

घान कही समझाय समी पख तू मत गुप में राखजे भाई ।
मेरो नो भार उतार दियो अब भार दियो तेरे स्त्रि बाँई ।

मुरती तो पहिचान करावे, वृत्ति लेवे भेद जनाय । घात कहुँ ॥ १० ॥

मुरती वृत्ति दोनों का दृष्टा, उपवृत्ति आनन्द, वाला मुरती० ।

चौथी अवस्था तुरिये मांही, निशि दिन रहत स्वच्छन्द । घात कहुँ ॥ ११ ॥

अथ क्या वृत्ते वृत्त नरेशू, बिलम्ब करो मन कोयः घाला अब क्या० ।

नृ पृष्ठत जो नहिं अलमावे, आलस न आवे मोय । घात कहुँ ॥ १४ ॥

मान वचन

दाहा

वृत्तण को जागा नहीं, अब भेद रथो नहीं नेक ।

एण घात कहुँ मैं नाथ जी, मंशय रही मन एक ॥

एक एरुलो आस्मा, जिनरे चार मुहाम ।

न्यारो न्यारो क्यों कर रहे, कहिये भेद तमाम ॥

गुरु वचन

चारो मांही एक है, एकस्य मांही चार ।

यो चारु ही आप है, कीजे मान विचार ॥

मान वचन

धे तो तुम फिर नई कही, उलभत हारी और ।

एक चार कैसे बने, माने नहीं मन मोर ॥

क्या चारन चहुँ दृकड़े, क्यों कर चारन मांग ।

कृपा करो कजो नाथजी, मंशय देहु भिटाव ॥

गुरु वचन

जब जाग्रत मे रहत है, जाग्रत सुपने आव ।

सुपन मूँ हों सुपुमि, फिर जाग्रत मे जाय ॥

दोनों को आनन्द वहे, रहे तीसरी भांग ।

चौथी घीच में जायके, आनन्द दुःख दौऊ नाथ ॥

मान वचन

क्या चौथी कहीं दूर है, चढ़णो है आसमान ।

भो भी हमें बनाइये, अथ मन राखो मान ॥

गुरु वचन

नहीं चढ़यो री पैड़ियां, पाटी कहिये न कोय ।
नहीं उड़यो आकाश में, अस्सी निश्चय होय ॥

मान वचन

जाग्रत सूँ सुपने गयो, सुपन म् पुमि मांय ।
इन में पहिले नहीं हुतो, कहां थो कहां से जाय ॥
तुम कहते हो नित्य है, व्यापक रग रग मांय ।
कहां से आयो कहां गयो, संशय देहु मिटाय ॥

गुरु वचन

॥ गान का अन्तरा ॥

जाली जाल चूके नहीं, निकले तो फँसावे ।
ज्ञान फतरनी हाथ है, काट के दूर हटावे जी ॥२५॥
नहीं तो गयो ने आयो नहीं, है नित एक रस भरिया ।
समय समय परभाव से, खेल न्यारा न्यार करिया जी ॥२५॥
यो तू ओल्लल निज रूप ने, सही सही समझायो ।
भरम रयो तो फिर काडले, अबसर ऐसो आयो जी ॥२६॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

कौन भरम अब रहत है, दीनो भरम उडाय ।
मान कहे हो नाथ जी, सही दियो समझाय ॥
सङ्ग कियो जब नाथरो, फिर क्यों रहे अनाथ ।
त्रिण में ही देव जो नाथ है, लिये देव के हाथ ॥

मान वचन

॥ सबैया ॥

घात कही समझाय सभी पण तू मत गुप्त में राखजे माई ।
मेरो तो भार उतार दियो अब भार दियो तेरे स्त्रि वार्दे ।

मेरी तो भार दियो नुरूको और तेरो जो भार हम लीन उठाई ।
 मेरे तो भार को प्रगट करे तू तेरो भार जो देऊँ जराई ।
 देण्डु नाथ कहे सुन मान ये याद रखे अपने मन माँई ।
 जो नू गुप्त मे राख दियो बदलो लेऊँ तोहि मे छोडहु नाँई ॥

मान वचन

॥ सबैया ॥

एनी कही तुम काहे को नाथ जो गुप्त रखूँ क्यों पृथ्वीन चाऊँ ।
 यही कारण मैं बार ही बार यह भटके आन तुमारे जो खाऊँ ।
 भटके हूँ नहीं मडके हूँ मेरे उन कारण खावन लाज न लाऊँ ।
 मन मे है मेरे एरुलो न बखूँ मैं माथ मेरे सह जगत ले जाऊँ ॥

॥ कवित्त ॥

प्राणी प्राणी मात्र मे प्रकृ को उपदेशा करूँ, जीव जीव भाव को जग ते
 सोय डाहूँ मैं । मेरो घरा पहुँचे नाथ ब्रह्म रूप करूँ जगत, एरु ही स्वरूप रूप
 मत्र मे निहाहूँ मैं । मृष्टि को नियम सो तोड़ हूँ न सकूँ मैं, मुझते तरे इतने
 जीव पार ताहूँ मैं । कहे राव मानमिह अति तो कहा कडूँ, रति रति कहयो
 सो पन्थ लिख डाहूँ मैं ॥

॥ गान का अन्तरा ॥

मान कहे हो म्हारा नाथ जी, लेऊँ मे आण तुम्हागी ।
 तिरिया जिना तो जीव तारहूँ, यही प्रतिज्ञा हमारी जी ॥ २७ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "भूँदड़ी के डँके की । ताल करवा ॥

भगवत् नारद को समभावे, ये ही निज ज्ञान है रे ॥ २८ ॥
 समझ कर देखो जी ऋषियज, सब है मेरो जग यह मात्र,
 इससे करता हूँ सत्र काज, फिर भी नहीं किमझ मोहतात्र । ये ही० ॥ २९ ॥
 नारद कहीं आय नहीं जाय, मत्र मे रूप मेरो तू पाय,

दिल से देवो भेद मिटाय, जिण सँ जन्म मरण भिट जाय । ये ही० ॥ २ ॥
 नारद माया ब्रह्म न दोय, ब्रह्म और माया एक ही जोय,
 म्यारो रक्षां सरे नहीं कोय, इसड़ी भूल भरमना खोय । ये ही निज० ॥ ३ ॥
 नू मन ब्रह्मा सुत मत मान, मन में दासी पुत्र मत जान,
 ब्रह्मा हुभसे भिन्न नहीं आन, तज दे द्वैत अविद्या टांन । ये ही निज० ॥ ४ ॥
 मन में ब्रह्मा सुत अभिमान, जिनसे हँ यह खँचा तान,
 अब तो करो दूर अज्ञान, जिनसे सहजे हो कल्याण । ये ही निज० ॥ ५ ॥
 धर के देवनाथ अवतार, आये भू पर दूजी बार,
 करणे मान को भव जल पार, लीनी जोवित मोक्ष सुधार । ये ही निज० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मूँ दड़ी के डंके" की । ताल कौरवा ॥

मिलिया सतगुरु समधी मोय, भली करी आय के रे ॥ टेर ॥
 धर कर नाना रूप अनेक, गिनती करूँ कहा नहीं लेल;
 जिण म्हारे मारी रेख पर मेख(१) । भली करी आय के रे ॥ १ ॥
 खोये जन्म कुमारी(२) अनन्त, जिनको गिनत न आवे अन्त;
 हम तो भटके पोल के पन्थ । भली करी आय के रे ॥ २ ॥
 अब के जुइयो असल सँ व्याव (३), म्हारे मन में घरणे उछाव;
 देख्यो दिन दिन दूखो आव । भली करी आय के रे ॥ ३ ॥
 दियो म्हाने कर सँ कर पकड़ाय(४), पिशा खे दीनो रूप बताय;
 मिल गई अपने पिव सँ जाय । भली करी आय के रे ॥ ४ ॥
 रही मैं भटक भटक दिन खोय, मिल्यो नहीं जोड़ी रो चर कोय;
 कहो सत्री कैसे सम्बन्ध होय । भली करी आय के रे ॥ ५ ॥
 मिल गयो जोड़ी रूप ग्यरूप, देख्यो मेरो ही रूप अनूप;

— कर्म बन्धन काटे, २— अज्ञान-स्था, ३— आत्मज्ञान, ४— जीव
 की एकता का ज्ञान ।

मिट गई तीनों ताप की धूप । भली करी आय के रे ॥ ६ ॥

ममधी देवनाथ मस्तान, दीयो जीवन मोह को दान;
ज्यारो रिख भूले नहीं मान । भली करी आय के रे ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे मित्रो सुनो, कही है बीता मोय ।
व्याही सुरत मुहागिनी, अब क्वारी रही न कोय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज " राजन का सूबा रे " की । ताल कँरवा ॥

म्हारी नीद उडाई, नाथ मिलिया सूँ किया सनाथ रे ॥ टेर ॥

दूँ दत दूँ दत म्हे फिरिया स म्हाने मिल्यो नही ब्रह्म ज्ञान ।

ना माचा मतगुरु मिन्या स म्हारे लाग्यो न उर में ज्ञान ।

मठ में डिया मब हेरिया सरे मब ही दीखी दुखन रे । म्हारी नीद ॥१॥

हेरत हेरत हारिया सरे बैठ गया घर सांथ ।

मूतां ने आण जगाविया सरे कर पकड़े ने उठाव ।

में चातक उयो तरसता मरे प्यासों ने पाणी पाय रे । म्हारी नीद ॥२॥

दूजा दावा टूटग्या मरे भयो तत्व रो ज्ञान ।

ब्रह्म रूप म्हाय नाथजी स म्हाने कर लियो आप समान ।

जन्म मरण सब मिट गया स म्हारो लग्यो नाथ से ध्यान रे । म्हारी नीद ॥३॥

देवनाथ के हाथ से ॥ म्हारी विगड़ी गई है सुधार ।

मानमिह निरचय भई स अब सहज हुआ भव पार

मेसो आप से देखियो सरे मोय रूप संसार रे । म्हारी नीद ॥४॥



॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल कैरवा ॥

म्होंने कृष्ण (१) मिल्याहो, नाथ्यो मन मोहन इण मन नाग ने ॥ टेर ॥
 नाग मेरो सबसे बुरो स ज्वारे पाँच नागणी (२)संग ।
 हृदय रो नीर(३) विगाड़ियो सरे कालो कियो है कलंक ।
 सुध जल इणमें कस रहे स वो खेले माँय मुजंग रे । म्हाने कृष्ण मिल्या ॥१॥
 संत सभी संग ग्वालिया स इण दिया सब ने छिटकाय ।
 हृदय कालिंदी में कूदिया सरे पलक जेज नहीं लाय ।
 सूतो नाग जगा लियो सरे मन में डराया नाँय रे । म्होंने कृष्ण ॥ २ ॥
 कुमते नागिनी फड़क के सरे कड़वा वैण सुखाथ ।
 मानी एक नहीं नाथ जी स थाने डाट दिवी पल माँय ।
 पकड़ पूँछ(४) ने नाग जगायो, युद्ध करण री च्चाय रे । म्होंने कृष्ण ॥ ३ ॥
 घणा दिवस थाने भया स थे दीयो नीर विगाड़ ।
 अब तो हृदय तज सजन रो स कोई दुर्जन हृदय जाय ।
 जवरदस्ती सूँ पकड़ ने नाथ्यो परवा कीनी नाँय रे । म्होंने कृष्ण ॥ ४ ॥
 चाग नाथ ने बाहिर आया मीठी वीण सुनाय ।
 कालो मिट आछो भयो स यो निर्मल नीर बहाय ।
 जीव जहर तो गल गथे स अब ब्रह्म अभी प्रगटाय रे । म्होंने कृष्ण ॥ ५ ॥
 देवनाथ गुरु कृष्ण सा सरे मान है दास हमेश ।
 यूँ कर निश्चय जाणली सरे लिया नाग उपदेश ।
 यूँ मन नाग ने नाथ लो स क्या कथा सुखो थे हमेश रे । म्होंने कृष्ण ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

तर्ज "मारवाड़ी हके" की । ताल कैरवा ॥

नाथ शरण में नाथ समान, मेट दियो मन रो अमिमान ॥ टेर ॥

१—सद्गुरु, २—इन्द्रियां, ३—विकेक, ४—वृत्ति ।

सब जग नाथ प्रतीत जो होय, नाथ सिवाय न दूजो कोय ।

दृट गयो मन रो अज्ञान । नाथ शरण में ॥ १ ॥

नाथ आदि और नाथ है अन्त, नाथ गुणिन में है गुणवन्त ।

नाथ रूप को कियो है ज्ञान । नाथ० ॥ २ ॥

जल थल नभ पृथ्वी मे जोय, पवन और अग्नि मे मोय ।

नाथ बिना है म्वाली कौन । नाथ० ॥ ३ ॥

नाथ हाथ धर कियो मनाथ, मेट दिबी तिरगुण की रात ।

अपने रूप को लियो पिछान । नाथ० ॥ ४ ॥

मानसिंह सर्वज्ञ है सोय, नाथ बिना नहीं मृष्टि कोय ।

क्या जाने नर मूढ अज्ञान । नाथ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

मत गुरु मिलिया भयो रे आनन्द, छूट गये सब काल के फन्द ॥ टेर ॥

भेटत भागा भरम अन्धार, जिण सूं भिट गया डूँव विकार ।

बन्ध मिटाय भये निर्वन्ध । छूट गये सब काल के फन्द ॥ १ ॥

रमता ब्रह्म में किरिया अनेक, मत गुरु मिलनां पायो एक ।

उर बिच ऊगो प्रक को चद । छूट गये० ॥ २ ॥

ब्रह्म दरस भयो अन्नर माँय, कुण म्हारे दरमण करवा जाय ।

दूर गये मेरे दुखइन्द । छूट गये० ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु मिले दयाल; दिन मित्रतां मोये कीने निहाल ।

आँख छतों क्यूं मान रहे अन्ध । छूट गये० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

मतगुरु ऐसी कृपा जो कीन; आत्म तत्व की बूटी दीन ॥ टेर ॥

कुण घोटे कुण वाहर जाय; कुण आखन रो कष्ट ठाय ।

नित्य स्वच्छ और साफ दीन भोये, वो बूटी हित चित कर धीन ।

आत्म तत्व की० ॥ १ ॥

सत्य असत्य को कियो विचार; दियो विवेक गलन पर डार ।

साफ भई ऐसी बूटी मेरी, पीताँ भयो जो काल आधीन । आत्म तत्व की० ॥२॥

पीकर बूटी भये मस्तान; नहीं उतरे अब आत्म ज्ञान ।

चाहूँ बरण मेरे एक समान है, बजी अद्वैत की आखी बीन । आत्म० ॥ ३ ॥

जो ऐसी बूटी को पाय; उनको रांमु (१) तुलत मिल जाय ।

काल-को भी महकाल कहाय, मत पीयो यह भंग मलीन । आत्म० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु मिले सुजान; शिवजी प्रसन्न भये कृपा निधान ।

मान कहे मैं लियो है जान, अब नहीं पीऊँ यह भंग मतिहीन । आत्म० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "भारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

। अतीत सय में गोपाल, तन धारी सब ही हैं ग्वाल ॥ डेर ॥

। स रहे और जाने नाँव, तिमिर (२) होप ते पिछाने नाँव ।

दिन दिन फँसे जगत के जाल । तन धारी० ॥ १ ॥

इण तन में जो लियो विचार, मन माँयले ने लीनो मार ।

पलट गये अन्तर के स्याल । तन धारी० ॥ २ ॥

तन में न जोवे बाहर जाय, घाहिर किये व्यँने दीखे नाँव ।

गुन्ड गोल में लुटावे माल । तन धारी० ॥ ३ ॥

मान नाथ जी दियो सुभाय, अब मेरी बाहर जाय बलाय ।

सय में एक ही रूप है लाल । तन धारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "भारवाड़ी डंके की" । ताल कैरवा ॥

। शारा सनगुरु स्वामी, सूतो जगई सुख (३) भर नोद से ॥ डेर ॥

सुख से मोई, निद्रा खोई, जाग के जोई, मूती जगाई सुख भर नोद से ॥ १ ॥
 वैन (१) बजाई, नोद उड़ाई, चढ चेताई, सूती जगाई सुख भर नोद से ॥ २ ॥
 जागी पाया, पीव(२)मिलाया, निकट ही आया: मूती जगाई सुख भर नोद ॥ ३ ॥
 सुपने(३) मॉई, आनि दु ख पाई, अब कं आई, मूती जगाई सुख भर नोद ॥ ४ ॥
 निद्रा सुख मान्यो, यूँ ही हठ ठान्यो, नहिं प्र जान्यो, सूती जगाई ॥ ५ ॥
 टूटी आमा, भ्रम की फामा, महज निवासा: सूती जगाई सुख भर नोद ॥ ६ ॥
 नाथ न आता, जमपुर(४) जाता, यूँ ही दु:ख पाता; मूती जगाई सुख ॥ ७ ॥
 मान आकेला, गुरु न चेला, भेट कमेला; सूती जगाई सुख भर नोद से ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ “तर्ज मारवाड़ी गाली के डङ्के” की । ताल करवा ॥

पिया(५) थोँ मूँ सम्बन्ध आदि मदाई हो ।

भूली जिण सूँ न्यारी मई में(६) दु:ख पाई हो ॥ टेर ॥

जीव जीव को जाल बिछाव्यो, असली तत्त्व मोंयें नोंय वतायो;

हीरां री गाँठ गमाई हो । पिया थोँ मूँ ॥ १ ॥

चाहूँ धामा, प्राम ही प्रामा, भटकी तमामा,

नोई न दरमण पाई हो । पिया ॥ २ ॥

मद्गुरु आया, श दिवाया, फेर मिलाया;

टूटोड़ी जोड़ी है सगाई हो । पिया ॥ ३ ॥

मिलने न नाथा, यूँ ही यह जना, लाज गुमना,

मान गयोड़ी लाज आई हो । पिया ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज “मारवाड़ी गाली के डङ्के” की । ताल करवा ॥

आज म्हारे निज सूँ जुड़ी है मगाई रे ।

नातो पेड़ो अवर जुडयो कभी नाई रे ॥ टेर ॥

१—उपदेश, २—आत्मा, ३—मनोवाच्य, ४—जन्म-मरण का चक्र ।

५—आत्मा, ६—वृत्ति ।

सुरता नारी, भई पिव थारी, सुखिया भारी; अब दुःख सुपने नॉही रे ।

आज म्हारे० ॥ १ ॥

सास हमारी, समता नारी, लागे थारी; जिण म्हाने प्रीतम से मिलार्हे रे ।

आज म्हारे० ॥ २ ॥

सुसर हमारा, ज्ञान है धारा, सब से थारा; जिण म्हाने पार लगाई रे ।

आज म्हारे० ॥ ३ ॥

गयो अज्ञाना, उद्यो अभिमाना, लाग्यो धाना; आप में आप समई रे ।

आज म्हारे० ॥ ४ ॥

व्याह रचायो, यूँ वर पायो, जन्म न आयो; एको ही एक मिलार्हे रे ।

आज म्हारे० ॥ ५ ॥

जिण से जाई(१), उन्हीं को व्याही(२), इचरज आई; वृजो न वर दरसाई रे ।

आज म्हारे० ॥ ६ ॥

सनगुरु वापू, मेट संतापू, आप में आपू; वृजो वीखे नॉई रे ।

आज म्हारे० ॥ ७ ॥

कहे यूँ मानं, अब न अजानं, लियो निज ज्ञानं; देयनाथ में समाई रे० ।

आज म्हारे० ॥ ८ ॥

। गान ।

॥ तर्ज मारवऱ्डी 'पन्ने' की । ताल दीपचन्दी ॥

वा वा हो म्हारा नाथजी, साचो श्याम मिलायो हो ॥ टेर ॥

सूती हती सुत्र(३) नीद में, ज्ञान चंग बजायो हो ।

हेलो (४) कर बतलावियो, पीया नऊरे मिलायो(५) हो । वा वा हो म्हारा० ॥१॥

मैं तो जाययो के दूर है, ओ तो पास में पायो हो ।

चितरो चैत म्हारो सूधरयो, पिया बैन(६)सुनायो हो । वा वा हो म्हारा०॥२॥

काशी मथुरा द्वारिका, फिर फिर सूत्र ठगायो हो ।

१—आत्मा से स्फुना, २—आत्मा में लय होना ।

३—सोह निद्रा, ४—उपदेश देकर, ५—आत्मानुभव, ६—सोहं शब्द

मन गुरु मिल्या ने समझियो, महजे आनन्द आयो हो । वा वा हो० । ३ ॥

चाँगे (१) नगर में पहुँचिया, नहीं पैठो करायो हो ।

मार्ग मुगम दियो जाधजी, महाने सेनो ममकायो हो । वा वा हो श्दारा० ॥ ४ ॥

अमर मुदागिन (२) पुरत भई, जो दुहाग न आयो हो ।

मान कहे श्दारे मुख भयो, पिया ने कलठ(३)लगायो हो । वा वा हो श्दारा० ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ तर्ज डंका "मगीजी ने घरजण आया" की । ताल कैरवा ॥

वा वा नाथ निज रूप तुम्हारो; क्या कहूं मन में लागे प्यारो ।

कहूं मैं किम कर वचन न आवे, बेश थारु गये चारो; अह विरह हमारो ।

वा वा नाथ० ॥ शेर ॥

थाके जहाँ पर वचन विलास । केवल एक रूप विरवाम ।

क्या गुण वरन्यो अनन्य गुणा हो, तेरो है रूप जग सारो; किये नूँ नहो

प्यारो । वा वा नाथ० ॥ १ ॥

गम कह तो अगम है मोद । अगम कहूं महजे गम होय ।

गम और अगम के अन्तर बाहर, मध्य तेरो ही उजगरो- नूँ है इक सारो ।

वा वा नाथ० ॥ २ ॥

धीर लख्यो जइ और बतायो । तुम मे मिल्यो तो कुछ नहीं पायो ।

खोजी मे खोज ममाय गयो उठ- मिट गयो खोजण हारो, मय खोज हमारो ।

वा वा नाथ० ॥ ३ ॥

द्वय नाथ गुरु कियो मनाथ । मानभिह को पकड़यो हाथ ।

हाथ पकड़ के ले लियो निज से, जगत पकी भवमारो, निज मैं मनवारो ।

वा वा नाथ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पपैया" की । ताल कैरवा ॥

नाथ जी ने निज में पाया रे । म्हारो उड़यो तिमिर अज्ञान; आप में आप
समाया रे ॥ १ ॥

करम के फन्द हटाया रे । जन्म और मरण मिटाया रे ।

दियो म्होंने "तत्वमसि" निज ज्ञान । आप में आप समाया रे ॥ १ ॥

मिटी सद्य रात अन्धारी रे । पिये री सुरत निहारी रे ।

म्हारे विल में उगो भाख । आप में आप समाया रे ॥ २ ॥

नाथ अमृत बरसाया रे । जिसे नहीं पीत अघाया रे ।

मैं तो पिये घाष मद् घान । आप में आप समाया रे ॥ ३ ॥

नाथ जी रे रूप हो रहिया रे । मिथ्या को भाव तज दइया रे ।

म्हारे सुल रही अन्तर गान । आप में आप समाया रे ॥ ४ ॥

नाथ ने पल नहीं भूलौंजी । कृपा सूँ सुल में भूलौंजी ।

म्हारे मिटयो मान अभिमान । आप में आप समाया रे । ५ ॥

मिथ्या म्होंने देव स्वरूपी नाथ । दिखायो जीव ब्रह्म एक जात ।

अथ म्हारे मिटयो आन और जान । आप में आप समाया रे ॥ ६ ॥

नाथजी भलो कियो अहसान । मेट दी पोब की खँचा तान ।

म्हारे क्यों गुण भूले मान । आन में आप समाया रे ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पपैया" की । ताल कैरवा ॥

नाथ निज अजर हमारे जी ।

ये तो मरे न जन्में नाँय, जासूँ मोये लागे प्यारे जी ॥ ८ ॥

जाणो मत देह भाव से नाथ । नाथ है पूर्ण ब्रह्म सनाथ ।

जिकारो वेद अनन गुण गात; जाम् म्हाने लागे प्यारे जी ॥१॥
 नात (१) को शब्द यह स्पष्ट वतान । गयो नही तो फिर कैसे आत ।
 चासे नित रहे जगत के मांय; जाम् म्हाने लागे प्यारे जी ॥२॥
 यदि ये जन्म मरण मे आत । कहते फिर इनको क्या ये नात ।
 मोय मन रही प्रनीती आय, जाम् म्हाने लागे प्यारे जी ॥
 मान निज अर्थ को जोयाजी । नाथ के रूप मे मोयाजी ।
 'नहीं' लाथ यान अथ आय; जाम् म्हाने लागे प्यारे जी ॥५॥
 ॥ दोहा ॥

मानसिद्ध संसार मे, मौड़ी(०) पड़ी पिछाय ।
 मत्संगी मिलिया नही, मिल्या स्वार्थी आत ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग मारंग-मलार । ताल तिताला ॥

हमारे मन गुरु पद बहुत मनेह ॥ देख ॥
 गुरु पद नेह अवर नहीं दूजो, बरमन प्रेम को मेह ।
 शील मनेह नीर मे भीग्यो, धुपी करम की त्वह । हमारे ० ॥ १ ॥
 तीन (०) पाद यह भाथा माहि, यां म् वैर न नेह ।
 चौथा पाद गुरु निज कहिये, ता मे मिलके रहे । हमारे ० ॥ २ ॥
 गुरु पद मे जो मिले है छाभी, फिर ना जन्म धरे ।
 मानसिद्ध फिर भय है कौन को, निरा दिन निटर फिरे । हमारे ० ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु तुरिये पद मे, तहां नित शिष्य रहे ।
 मानसिद्ध यह भाच गुरु पद की, पलक न दूर रहे । हमारे ० ॥ ४ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग मांड-मलार, तज मारवाड़ी "सरिये की । ताल दीपचन्दी ॥

मन् गुरु मिलिया आय, मली ए म्हारे आज भावणिये री बीज(५) ॥ देख ॥

सन् गुरु मिलिया प्रेम सूँ रे, वीयो शब्द रो बीज ।

विरह री चादलिया मुक रही रे म्हारे, चमकी ज्ञान के री बीज ।

भली ए म्हारे० ॥ १ ॥

मुता उभी मोखड़े(१) रे, रही विरह विच भीज ।

थर(२) थर कंपे प्रीतम (३) उर(४) लीनी, उर लीनी प्रीतम रीक(५) ।

भली ए म्हारे० ॥ २ ॥

जीव ब्रह्म जद एक कया जद, मन म्हारो गयो पतीज ।

हम प्रीतम दोऊँ भूलिया (६) रे, ज्यूँ चादल(७) में बीज () ।

भली ए म्हारे० ॥ ३ ॥

देवनाथ सा पीव मिल्या रे, जिनको संग हम कीन ।

मान कहे ऐसो सायण(८) आयो, होय रही पिया(९) विच लीन ।

भली ए म्हारे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "धरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

मिली ए म्हाने राम(११)रँगीली कलाल(१२)।मद(१३)पियो कोई हरिजन(१४)ला नः

मिली ए म्हाने० ॥ टैर ॥

ओ मद पीवे कोई मद(१५) छफिया, मन माँहे होय दलाख(१६) ।

शीश(१७)उतारल देर नहीं धरि, नांव सुणयो डरे अल । मिली ए म्हाने० ॥ १ ॥

ओ मद पावे सो मुददा(१८) कहिये, आवे नहीं जब रो जाल(१९) ।

अपणो रूप सूँ पलक न न्यारो, हरदम राखे कयाल । मिली ए म्हाने० ॥ २ ॥

आतो कलाली जालम(२०) घसी रे, पेहलाई मांगे जाल(२१) ।

—जिज्ञासा, २—प्रमातुर ३—उद्गुरु, ४—निज शिष्य-वनाथा, ५—मसख हो कः,

—शंका समाधान ७—अशानांधकार, ८—ज्ञान का प्रकाश, ९—आत्म-ज्ञान, १०—

रवख, ११—आत्मा, १२—आत्मानुभवी, १३—सद्गुरु, १४—आत्मज्ञान, १५—

जैजासु, १६—त्रिपयों से तूम, अपने में संतुष्ट, १७—अन्यस्तक, १८—देहाभिमान

१९—देहाभिमान से रहित, २०—जन्म-मरण का जंजाल, २१—जबरदस्त,

१२—जीवभाव ।

पलक उधार करे नहीं करवहुँ, क्यों कर लेवों चित टाल । मिली ए म्हॉने० ॥३॥
देवनाथ गुरु असल कलाली, भूपन के भूपाल ।

मान गरीब बॉरे द्वारे आयो, अब कृपा कीजे कृपाल । मिली ए म्हॉने० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग मलार, तर्ज "पणियारी" की । ताल कैरवा ॥

चाली म्हारी सुरता गिगन(१) मरडल मे, रात(२) दिक्म गिरणाई(३) रे ॥टेरा॥

सोहन शिखर(४) मे चमकी(५) बीजली, गिगन घटा(६) च० आई रे ।

मधुर मधुर धुन बोले पपैया (७), घैरण नौद (८) उड़ाई रे ॥ १ ॥

चितरे चौक मे भूलो (९) माडयो, भूलें तीज(१०) सवाई (११) रे ।

पाँच (१२) पचीस (१३) तीस मँग सखियों, सुन्दर शोभा पाई रे ॥ २ ॥

गमना रो द्वार पीव (१४) पहरायो, सुनय(१५) भई जग मॉई रे ।

प्रेम पुष्प म्हारा कवहुँ न सूके, नित चौमर हरिवाई रे ॥ ३ ॥

ओहं मोहं लागा भकोर, भूलो चढयो नभ (१६) मॉई रे ।

मैं डरती प्रीतमजी (१७) ने पकड़या, छोडूँ तो गिर जाई रे ॥ ४ ॥

देवनाथ चतुर्मास के रमिया (१८), मैं बालूँ कम नॉई रे ।

मानसिंह कहे आनन्द मॉय रेणो, म्हारे तो मावण (१९) सदाई रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज "पणियारी" की ताल कैरवा ॥

धीमे(२०) बरस(२१) म्हारा मेहा(२२) पानी(२३), म्हॉने(२४) अति डर (२५)

आवे रे ॥ डेर ॥

१-उच्चस्थिति, २-मदा, ३-प्रफुल्लित, ४-बुद्धि, ५-प्रमत्त, ६-आत्मज्ञान,
७-ज्ञानोपदेश देनेवाला, ८-मोहनिद्रा, ९-विचार, शंका समाधान, १०-सुरता,
११-उमङ्ग से, १२-इन्द्रियों, १३-प्रकृतियों, १४-सद्गुरु, १५-सर्वात्म भाव, १६-
त्राणी स्थिति, १७-सद्गुरु, १८-चारों अवस्थाओं का स्वामी भाव से भोक्ता,
१९-आत्मानुभव की तरी, २०-आहिस्ते, २१-उपदेश दो, २२-सद्गुरु, २३-
उपदेश, २४-वृत्ति, २५-घबड़ाहट ।

प्रीतिम (१) तो परदेश (२) बसत है, कुण म्हाँसूँ प्रेम बढावे रे ।
 सारंग (३) मुनत सारंग (४) यो बोल्यो, सारंग (५) मन बढकावे रे ॥ १ ॥
 आधी सारंग (६) मध्य माँच ने, सारंग (७) यूँ सूँसावे रे ।
 इत सारंग (८) निकलत अँखियन ते, सारंग (९) होश भूलावे रे ॥ २ ॥
 सारंगसुत (१०) तो द्विष्यो सारंग (११) में, सारंग (१२) नहीं दरसावे रे ।
 विरहन सारंग (१३) सारंग (१४) धोखे, स्याहरंग (१५) ले मर जावे रे ॥ ३ ॥
 उडरे सारंग (१६) जहाँ मेरो सारंग (१७), सारंग (१८) देने बुलावे रे ।
 मान कहे तेरो तुम में ही सारंग (१९), स्याहरंग क्यों न हटावे रे ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मानसिंहजी का प्रश्न ॥

जो थी पुतली लक्ष्म की, सागर रही मिलाय ।
 पलट सैन केवे नहीं, किम कर ज्ञान मुनाय ॥
 कही यों सन्त कवीर ने, सुनिवे श्री महाराज ।
 संशय सभी मिटाइये, जद यह सरही काज ॥

॥ गान ॥

॥ तज "बाणी" की । राग कैरवा ॥

शिष्य अद, क्यों मुज क्यो बल कावे होजो । बुद्धिमान विचार करो उर,

१—आत्मा, २—अदृश्य-दूर, ३—सद्गुरु उपदेश रूपी गरजना, ४—जिज्ञासु हरी मोर, ५—वृत्ति रूपी स्त्री, ६—अज्ञानान्धकार रूपी रात, ७—काल रूपी सर्प, ८—काजल (रोने का भाव) ९—वृत्ति रूपी स्त्री, १०—जीवात्मा, ११—अज्ञानान्धकार रूपी रात, १२—परमात्मा, १३—वृत्ति रूपी स्त्री, १४—परमात्मा, १५—पात्रसद रूपी अफीम, १६—मन रूपी हंस, १७—परमात्मा, १८—विचार रूपी मोती, १९—परमात्मा ।

उलटो क्यों अर्थ लगावे रे शिष्य अब, क्यों सुनस्यो उलभावे हां जी ॥ टेर ॥
 जीव भावभो पुनली लवण की, जग के कर्म कमावे हो जी ।
 जीव भाव अब धातु में गल गयो, पलट फेर नहीं आवे रे । शिष्य अब ० ॥ १ ॥
 यो न ज्ञान हम मिट गये तन से, मूक रूप होय जावे हो जी ।
 ज्ञान नमुद्र अज्ञान ज्ञान भयो, भाव अभाव मिटावे रे । शिष्य अब ० ॥ २ ॥
 जो वे कधीर मूक होय जाता, तो कुण शब्द सुणावे हां जी ।
 शार्गी बिना शब्द नहीं निकले गुंगा क्यों कर बतावे रे । शिष्य अब ० ॥ ३ ॥
 जग भाँडे गुंगा स्त्रिय बहुर मा उयाने, क्यों नहीं ज्ञानी बतावे हां जी ।
 बोलन नांय मँनी सूँ ममके, मूरख कह बतलावे रे । शिष्य अब ० ॥ ४ ॥
 जीव भाव जिने अलो ही भभके, अभिय शब्द सुणावे हो जी ।
 ब्रह्मरूप हो आत्म मूख बोलें, हां जग रे समझ नहीं आवे रे । शिष्य अब ० ॥ ५ ॥
 जग री समझ तो मिट गयो सगलो, फेर अनम नहीं पावे होजी ।
 देवनाथ कहे फेर पूछ शिष्य, कहत कभी न बचारावं रे । शिष्य अब ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राम मांड । ताल दादरा ॥

मानसिंह जी का प्रश्न

म्हारा नाथजी आवां, शंकर मिठावां, अरब मुखो दीनानाथ ॥ टेर ॥
 राजयोग तो भगलो कहयो, हठयोग ना गाय ।
 राजयोग ही जो जग में होनां, तो क्यों हठयोग बताय जी । म्हारा नाथ ० ॥ १ ॥
 गुरु बचन

नृप ठीक सुनाई, राजी मन माँई, दुःख मोहे ५ छु नांय ॥ टेर ॥
 ई हठयोग करणी जबरई, भूठ नहीं डण मांय ।
 एण हठयोग ने उलटो ले लिखो, जिण सूँ भव दुःख पाय रे । नृप टीक ० ॥ २ ॥
 जबर शशा ष्ट विषय जगत रा, महजे रुकसी नांय ।
 पान अपान एक कर सन्धि, लैच ठिठायो लाय रे । नृप टीक ० ॥ ३ ॥

॥ मान वचन ॥

क्या मैं इडा पिंगला साधूँ, क्या लेऊँ श्वास रुकाय ।

रेचक पूरक कर लूँ कुम्भक, लेऊँ श्वास चढाय जी । म्हारा नाथ जी० ॥ ४ ॥

॥ गुरु वचन ॥

इडा पिंगला श्वासा ने रोक्शां, मन तो स्थिर हो आय ।

रेचक पूरक कुम्भक कीयां, मन स्थिर होसी नांय रे । नृप ठीक० ॥ ४ ॥

पान अपान की जानो सन्धि, कर ब्रह्म जीव ने एक ।

सहजे सूर अभय घर ऊगे, टल जावे स्निग्धिया लेख रे । नृप ठीक० ॥ ६ ॥

मान वचन

क्या मैं मूल अडाण की शान्धूँ, नाभि कमल उलटाय ।

कर कुम्भक बैराट चढाऊँ, दणवें द्वार पै जाय जी । म्हारा नाथ जी० ॥ ७ ॥

॥ गुरु वचन ॥

मूल अडाण सूँ बुद्ध नहीं होसी, कारज सरसी नांय ।

झादरा सूँ दशवें पर जावो, पण मनतो नांय रुकाय रे । नृप ठीक० ॥ ८ ॥

मूल अडाण शान्धो निश्चय रो, आत्म है सब नांय ।

नाभी बिनेक री जोयलो रे, तो सायब मिल जाय रे । नृप ठीक० ॥ ६ ॥

जग सूँ उलट उलटावो दसां ने, मुख्य तूँ ही है द्वार ।

यूँ दश में स्थिर होय ने रहवो, तो सहजे उतरसो पार रे । नृप ठीक० ॥ १० ॥

॥ मान वचन ॥

कुण्डली छेदन काहे को करणो, क्यों मुद्रा को कीन ।

तो यह सत्य बताओ स्वामी, तुम सर्वज्ञ प्रवीन जी म्हारा नाथ । जी० ॥ ११ ॥

॥ गुरु वचन ॥

गांठ अविद्या री तुम छेदो, नागिनी बुद्धि जगाय ।

शब्द श्वासा ने ब्रह्म स्थित करलें, फिर तूँ आवे नांय रे । नृप ठीक० ॥ १२ ॥

त्रैचरी मुद्रा ज्ञान सूँ साधो, ब्रह्मानन्द मद पाय ।

बोमदं तो तन छूटवो सूँ मिटसी, थो मद मिटसी नांय रे । नृप ठीक० ॥ १३ ॥

मान वचन

नेती धोती सब कौड़ें साधे, अन्नःछरण शुद्ध होय ।

सो हम स्वामी कैसे साधे, मही बताओ सोय जी । म्हारा नाथ जी० ॥ १३ ॥

गुरु वचन

जगत विषय में नियत होणो, लेणा पाप धुपाय ।

मनगुरु शब्दों री नेनी धोती, मन धुप मारु हो जाय रे । नृप ठीक० ॥ १४ ॥

मान वचन

अजरी ने बजरी कट मिथ साधे, कर कर मन मे उलाव ।

आप कहाँ तो यही हम साधे, कौन है उनको भाव जी । म्हारा नाथजी० ॥ १५ ॥

गुरु वचन

तू ही अजर है और तू ही बजर है, चाले बजर भी नांय ।

तंसी अजरी बजरी साधो तं, पाल कभी नहीं खाय रे । नृप ठीक० ॥ १६ ॥

तुम तो बृद्धिमान् नरेश, तंसे कमी कुछ नांय ।

परहित कारण पड़त हो तुम, राजी बसो मैं मन सांय रे । नृप ठीक० ॥ १७ ॥

मान वचन

पुत्र चाहे हो रिजनी ही समझू, पितु को पूजन अधिकार ।

साथ बड़े की लाग जाये तं, मान लेवे संसार जी । म्हारा नाथ० ॥ १८ ॥

म्हाने तो गुरु पहिले दीनां, इण विद्या रो दान ।

यह अहसाती फटेई नहीं भूले, जब तक जग मे मान जी । म्हारा नाथ० ॥ १९ ॥

गुरु वचन

अथ तक है अहमानी नृपति, तैं क्यू साधो नांय ।

ओ दूठयोग कियो फिर स्यागं, रह गयो भूल के साय रे । नृप ठीक० ॥ २० ॥

मान वचन

जब तक तन है तब तक स्वामी, सेवरु को है भाव ।

आत्म तुम हम पर है दोनूँ, टग मे नशय क्यू नांय जी । म्हारा नाथ० ॥ २१ ॥

॥ गुरु वचन ॥

माने तो भूपति मौज विहारी, दोष मो में कहु नांय ।
अन्धविश्वास उमर भर रहसी. तो सुने ही नांय लुहाय रे । नृप० ॥ २२ ॥

॥ मान वचन ॥

विषना तो हमें मानुष कीने, आप कियो देव समान ।
देव सँ अणखो रूप कर लीने, तो क्यों का भूले मान जी । नृप० ॥ २३ ॥

॥ गुरु वचन ॥

मनोमय प्राणमय परतीती, तब तक मानुष सोय ।
ज्ञान विज्ञान सँ देव बख्यो तूँ, आनन्द आप ही होय रे । नृप० ॥ २४ ॥
मेरे समान भरजाख्यो नाही, और हठ नहीं तेरे समान ।
देवनाथ कहे गद्दी हठयोग हूँ, देषो योग मिताय रे । नृप ठीक० ॥ २५ ॥

॥ मान वचन ॥

अन्तर को हठ भेट दिखो मैं, करत मेहूँ नांय ।
मान कहे महाग न न करको, राखो चरणों मांयको । नृप० ॥ २६ ॥

॥ गान ॥

॥ राम काशी ॥ ताल दीपत्रन्दी ॥

कृपा कर नाथ धरानो, कौन खो पर उपकार प देर ॥
जग तो भया और मुल की भूखी, कहां से देऊँ मैं खाय ।
दीव दीव के पूखत मोखे, पल एक खोङ्गे नांय । कृपा कर० ॥ १ ॥
गुनिया तूँ दे वचन सिद्ध को, क्यों कर होय विरपास ।
सिद्ध रिद्धि तो पाखवद तुम कहवो, कैसे कहे मैं अख्यांस । कृपा कर० ॥ २ ॥
दुनिया चाहे सब रख भोग्या, कैसे कहे मैं तदवार ।
मैं सव रीत भोग समझावो, जासुँ तरे भव वार । कृपा कर० ॥ ३ ॥
नाथ ये साथ किया नहीं मिलसी, तो मिले कौन के द्वार ।
मानसिद्ध कहे सुनो हो नाथ जी, गूँ नही आमार । कृपा कर० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफ़ी । ताल दीपचन्दी ॥

मान मन व्याकुल होय सुन. पर उरमर की रीत ॥ डेर ॥
 नूँ है राजा ईश रूप अनन, लख मन नीत अनीत ।
 भली बुरी मोच अपने मन, बुरी नूँ रेवो विपरीत । मान मत० ॥ १ ॥
 नीन जनों की सेवा कीजे, सेवा कर शुद्ध नीन ।
 अपनी स्वरूप मरुल विच जानौ, नौ लेवोना जग जीत । मान मत० ॥ २ ॥
 गोरख कबीर सा सन्त मरमा, सुन माया कौन कीत ।
 बाड़ा बन्दी पैर पुजावत, गावन स्वारथ के गीत । मान मत० ॥ ३ ॥
 तेरे सुन ताँय दुःख जब दीनो, कोई मिह्र सुख क्यों न कीत ।
 सुख दुःख सगरे होने मो होवें, मन हो मन भयभीत । मान मत० ॥ ४ ॥
 आत्म निरोध कियो जब हमने, तेरे मन की कह दीत ।
 ऐसा सिद्ध मैं तोका बनाऊँ, ईश करख मग लीत । मान मत० ॥ ५ ॥
 राम और कृष्ण थे पर उपकारी, गावन गुण जो पूनीत ।
 राजा युधिष्ठिर और विक्रम से, वा पुरुषों री लख नीत । मान मत० ॥ ६ ॥
 अयार नांव पूजीजे जगत में, पर उपकार जो कीत ।
 देवनाथ कहे मानसिंह सुन, सह तन उपख रीत । मान मत० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफ़ी । ताल कैरवा ॥

पार भवसिन्धु लगावे रे, अणु गुरु स् कर हेत ॥ डेर ॥
 गुरु में न दोष दोष शिष्य माँहि, हान समक नहीं लेत ।
 अन्धविरवाम त्रास महे जम री, रतन मिलावे रेत । पार भवसिन्धु० ॥ १ ॥
 विना परख के पास क्यूँ जावे, क्यूँ अपराधो सिर देत ।
 पारख परख पछे सिर देवे, सदा सन्त जन कहत । पार भवसिन्धु० ॥ २ ॥
 माचा मिलियाँ सैन देवे साची, खवगुण सत्र हर लेत ।
 देवनाथ कहे मानसिंह सुण, लोय मत फेरार खेत । पार भवसिन्धु० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ धुन “ब्रह्मर्तुजी” की । ताल कैरवा ॥

धरणी त्रिमा म्हारे सतगुरु री बलिहारी रे, अरे हॉ रे मैं बलिहारी रे ।
 जिण् दीनो ब्रह्म विचारी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ १ ॥
 धरणी त्रिमा म्हाँने किया ब्रह्म निर्वाणी रे, अरे हॉ रे किया निर्वाणी रे ।
 नहीं होवे कृतक निशाणी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ २ ॥
 धरणी त्रिमा इण देह रो भाव मिटायो रे, अरे हॉ रे भाव मिटायो रे ।
 म्हाँने ब्रह्म रूप दरसायो रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ३ ॥
 धरणी त्रिमा पथ के निज आनन्द आयो रे, अरे हॉ रे आनन्द आयो रे ।
 मनइ रो भरम मिटायो रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ४ ॥
 धरणी त्रिमा गुरु देवनाथ निज ज्ञानी रे, अरे हॉ रे नाथ निज ज्ञानी रे ।
 वहाँ मूँ सुरत मान री भासी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ धुन “ब्रह्मर्तुजी” की । ताल कैरवा ॥

अगम कूर पर सुरता जल ने आई रे, अरे हॉ रे सुरता आई रे ।
 चठे सतगुरु सैन चल ई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ १ ॥
 तू है गैली इतने दिवस ठगाई रे, अरे हॉ रे दिवस ठगाई रे ।
 अे तो प्रीतम जावयो नाँ ई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ २ ॥
 फिर फिर बाहर नाहक शयन गमाई रे, अरे हॉ रे शयन गमाई रे ।
 ठगन के संग ठगाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ३ ॥
 इण राशि ग्रह के बीच में सोय कँसाई रे, अरे हॉ रे सोय कँसाई रे ।
 मैं सुप्ने न निकलन पाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ४ ॥
 ब्रह्म जनेऊ देवनाथ पहराई रे, अरे हॉ रे नाथ पहराई रे ।
 इण पोल से मोव बचाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ५ ॥
 मानसिह यूँ सही बात कह गाई रे, अरे हॉ रे बात कह गाई रे ।
 जो धीती सो समझाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

अब हम प्रेम पिगाला पिया ॥ टेर ॥

मन गुरु कृपा करी अब हम पर, कर्म बंध हर लीया ।

बंध गये निर्वंध भये हम, फेर जन्म नहीं लीया ॥ १ ॥

पहिले तो चागु बहुत मे मारे, जो मारे सोई महिया ।

जन्म जन्म के दरद मिटाये, मनगुरु बैद जो भईया ॥ २ ॥

पीचत प्याला चढ गई मन्नी, पहिले मुखा फिर लीया ।

मान रुहे गुरुदेव को भेट मे, शीश काट धर दीया ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मया कर्म कर नहीं जानूँ, विनय प्रभु, कथा करूँ कर नहीं जानूँ ।

मैं अज्ञान जान नहीं भोमे, जाने वृथा हठ ठानूँ । विनय प्रभु ॥ टेर ॥

कर्म मैं गुनाह पर माफ़ करो तुम, यह पहासान मन मानूँ ।

घार घार मैं पूछत हूँ तुम्हे, झूठी हठ यूँ ठानूँ । विनय प्रभु ॥ १ ॥

जो दुख रुख अब बहूँ फिर कियाने, तुम मे अवर न जानूँ ।

मुक्त मो कीट ज्ञानी कर्षो तुममो, जिनमे दुर्व बन्धानूँ । विनय प्रभु ॥ २ ॥

रंगड़ के मुत शोली कड़ी मेरी, जाने परवर बरसानूँ ।

तुममे बअ मिले कय हमको, फिर किनमे टकरानूँ । विनय प्रभु ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरुनाथ मान के, आपे मैं पहचानूँ ।

दीन बन्धु तुम मैं हूँ दीन प्रभु, पार करो भगवानूँ । विनय प्रभु ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिलावल । ताल धमाल ॥

मान भला नाथ भेटिया होजी, दीया भरम उदाय ।

पाया विद्याला मायो प्रेम रा होजी, छिह रवा निप्र रे माँय । भाग भला ॥ टेर ॥

नाथ रो माय मुझरियो होजी, दिया मझौने भय मूँ नार ।

अन्तर उजालो होय रखो होजी, सन्मुख भया रे दीदार । भाग भला० ॥ १ ॥
 नाथ मिल्या आनन्द भया होजी, मिट गया द्वैत विकार ।
 एक रूप उर ओलख्यो होजी, सोई निज सबको आधार । भाग भला० ॥ २ ॥
 नाथ साथ नहीं होय तो होजी, भव में यूँ ही बह जात ।
 संग कियो म्हारे नाथ रो होजी, जातौ रो पकड़यो हाथ । भाग भला० ॥ ३ ॥
 कान फट या झूँ मन फड़ियो होजी, आतम रूप समाय ।
 अपणी आतम जाणी जगत में होजी, सोई निज आप केवाय । भाग भला० ॥ ४ ॥
 इसका मिल्या म्होंने नाथजी होजी, मिलिया देव स्वरूप ।
 नाँव जिसाई गुण नीसर-या होजी, महा भूपन के भूप । भाग भला० ॥ ५ ॥
 वाम वाम चित्त में बसे होजी, ऊपर कहे शिव राम ।
 साथ नहीं साकट लग होजी, जासूँ राजी नहीं राम । भाग भला० ॥ ६ ॥
 चेला चेली चित्त अटकिया होजी, के चित्त मठ मन्दिर साँव ।
 प्याग्याँ रो यूँ ही नाम है होजी, गृहियाँ सूँ आगे जाय । भाग भला० ॥ ७ ॥
 साधु असाधु दोऊ क्या होजी, दीना साफ बताय ।
 मानसिंह कहे समझलो होजी, भेटो बजाय बजाय । भाग भला० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिलावल । ताल बमाल ॥

ओल्डी आवे हो म्हारे नाथ री होजी, कद मिलो दीन दयाल ।
 कीळड़ियाँ अय कद मिलो होजी, पल पल आवो म्होंने याद ॥ टेर ॥
 बरसण कियोँ दुःख जावतो होजी, भेटयां भागत अन्धार ।
 याद कळूँ गुण नाथ रा होजी, फिर धर आवो अवतार । ओल्डी ॥ १ ॥
 गुण सिमळूँ दियो ऊमटे होजी, नैयाँ दलकत नीर ।
 धूक् धूक् विघना वावरी होजी, क्यों हरे संत भव पीर । ओल्डी० ॥ २ ॥
 साकट साधु है एक सा होजी, करे एक सो ही काम ।
 साकट मिलताँ दुःख देवे होजी, विळड़ताँ ए लेवे प्राण । ओल्डी० ॥ ३ ॥

इलड़ी जागुं तो प्रीति क्यों करूं होजी, सहे को करूं रे मनेह ।
 जो अडिग ए दुख देवमो होजी, इमडा रो नाम न लेह । श्रीलड़ी ॥४॥
 विधना का चाहिये हता होजी, मुनवे को उपदेश ।
 मान कहें अरुं पधारजो होजी, मुन शिष्य को आदेश । श्रीलड़ी ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल दीपचन्दी ॥

सैथें पैसा हरिजन ध्यायो ए । दरशण कियो दुरमत हर लेवे,
 ऐझा संत बधायो ॥ १ ॥ टंर ॥

धोमी चाल बोल ग्या । धीमा. नीतल कहावो ए ।

नीतल नयन देखत अमी वासे, उवांरा दरशण पावो ए ॥ १ ॥

आंटा चतल काग अरुं करड़ा, अथा मूं दूर रहवो ए ।

इल भरथा बोल नैण बिप भरिया, अथा ने दूर परावो ए ॥ २ ॥

भेप हम तां चाल घुगलों री, अथा रे निकट न जावो ए ।

कनक फटारी कुण वाय कलेजे, अत यूं समझावो ए ॥ ३ ॥

सप गुण हांय ने अबगुण एक होय. तो खोल बतावो ए ।

जो अपलद कां मेट सके नहीं, तो मुंह न लगावो ए ॥ ४ ॥

मन गुण सम्पन्न होवे संत सीधा. वां ने सीस नवावो ए ।

अपणो रूप मरुल मे जाणे, वारे बेन्यां विक जावो ए ॥ ५ ॥

साधु भाय रथां मन अपणे, दर न हटावो ए ।

पारथ कण मे औहरी बण रेवो, फिर धोखो न खावो ए ॥ ६ ॥

देवताथ गुरु लौहरी मेरा, जिन परल बतावो ए ।

मानसिक अथ हीरा विणजूं. घण बोट चटावो ए ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सारंग राग सुदावनी, जिनमे होवे लू ।

बान होय ब्रह्मज्ञान री, तो मन फले मजूर ॥

पांच (१) सखी मेली भई, गावे सारंग लूर ।

चौथे (२) पद पर बैठके, पलक न रेचे दूर ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैवा ॥

हेजी मैं तो नुगणा(३) ही रंत बधाया हे माय;

नुगणा(४) जीवां रो अठे क्या करूँ ॥ टेर ॥

म्हारो तो घर(५) सजनी अजब सांकड़ो(६) ।

हेजी अठे नुगणा धूम मचावे हे माय । नुगणां० ॥ १ ॥

म्हारे तो घर में हेली पांच सहेली(७) ।

हेजी ए तो पांचो सूँ क्लिणी ने भरमावे हे माय । नुगणां० ॥ २ ॥

म्हारे तो घर में हेली रतन(८) खजानो ।

हेजी ए तो नुगणाई भाम बसावे हे माय । नुगणां० ॥ ३ ॥

सन्त सुपातर आवो घोरो ।

हेजी ज्याने वेस्वां ही जीव सुख पावे हे माय । नुगणां ॥ ४ ॥

वेचनाथ जैसा सन्त मुहानी ।

हेजी म्हारो ज्यां सूँ मन हरपावे हे माय । नुगणां० ॥ ५ ॥

मानसिह नित शरण सन्तो री ।

हेजी म्हाने नुगणां-सूँ टर आवे हे माय । नुगणां० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैवा ॥

हेजी म्हाने पिया जी(९) री सैज(१०) मन आवे हे माय,

पीयाजीरी सैज्यां म्हे जास्यां ॥ टेर ॥

मन बुद्धि चित्त अहङ्कार चार संग ।

१—पांच प्रकार की वृत्ति. २—तुरियावस्था. ३—श्रेष्ठपचारो, ४—पाकपट्टो
—पन्तःकरण. ६—सूत्र. ७—इन्द्रियां, ८—विचार. ९—आत्मा, १०—आत्मज्ञान ।

इसड़ी जागु तो प्रीति क्यों करूं होजी; काहे को करूं रे मनेह ।
 वो द्रिड रा ए दुष देवमी होजी, इसडा रो नाम न लेह । ओल्डी ॥१॥
 विधना को चाहिये हता होमी, मुनवे को उपदेश ।
 गान कहे औरूं पधारजो होजी, मुन शिष्य को आदेश । ओल्डी ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल दीपचन्दी ॥

मैथों ऐमा हरिजन ध्यावो ए । दरशण कियो दुरमन हर लेवे,
 ऐडा संत बधार्थो ए ॥ डेर ॥

जीमी चाल बाल ज्यां धीमा, सीतल कहावो ए ।
 सीतल नयन देखत अमी बरसे, ज्यारा दरशण पावो ए ॥ १ ॥
 आंटा चतल काग अयूं करडा, ज्या सूं दूर रहावो ए ।
 छल भरवा योल नैण विप भरिया, ज्यां ने दूर परावो ए ॥ २ ॥
 भेष हम रो चाल बुगलों री, ज्यां रे निकट न जावो ए ।
 रुनक कटारी कुण त्वाय कलेजे, घस यूं समभावो ए ॥ ३ ॥
 सय गुण होय ने अवगुण एक होय, तो ओल बसावो ए ।
 जो अवलज कां भेट सके नहीं, तो मुंह न लगावो ए ॥ ४ ॥
 मय गुण सम्पन्न होवे संत मीधा, बां ने सीस नवावो ए ।
 अपणौ रूप मकल मे जाणे, वारे बेध्यां यिक जावो ए ॥ ५ ॥
 माधू भाव रसो मन अपणे, दूर न इटावो ए ।
 पारम करण मे जाहरी बण रेवो, फिर धौलो न ब्यावो ए ॥ ६ ॥
 भवनाथ गुरु जौहरी मंरा, जिन परल बतावो ए ।
 मानसिंह अत्र डीरा विखजूं, पण चोट चदावो ए ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

सारंग राग मुहावनी, जिगमे होवे लूर ।

बान होय श्रद्धाजान री, नो मन करले मंजूर ॥

पांच (१) सखी भेखी भई, गावे सारंग लूर ।
चौथे (२) पद पर बैठके, पलक न रेवे दूर ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैवा ॥

हेजी मैं तो मुगणा(३) ही छंत बघाया हे माय;

मुगणा(४) जीवां रो अठे क्या कल्ल ॥ टेर ॥

म्हारो तो घर(५) सजनी अजब सांकडो(६) ।

हेजी अठे मुगणा धूम मचावे हे माय । मुगणा० ॥ १ ॥

म्हारे तो घर में हेली पांच सहेली(७) ।

हेजी ए तो पांचो सूँ फिखी ने भरमावे हे माय । मुगणा० ॥ २ ॥

म्हारे तो घर में हेली रतन(८) खजानो ।

हेजी ए तो मुगणाई भरम घसावे हे माय । मुगणा० ॥ ३ ॥

सन्त सुपातर आबो घणेर ।

हेजी ज्याने देखायां ही जीव सुख पावे हे माय । मुगणां ॥ ४ ॥

देवनाथ जैसा सन्त मुहानी ।

हेजी म्हारो ज्यां सूँ मन हरपावे हे माय । मुगणां० ॥ ५ ॥

मानसिंह नित शरण सन्तो री ।

हेजी म्हाने मुगणां-सूँ डर आवे हे माय । मुगणा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैवा ॥

हेजी म्हाने पिया जी(९) री सैज(१०) मन आवे हे माय,

पीयाजीरी सैज्यां म्हे जास्यां ॥ टेर ॥

मन बुद्धि चित्त अहङ्कार चार संग ।

१—पांच प्रकार की शक्ति. २—तुरियावस्था. ३—श्रेष्ठपचारो, ४—पात्ररुची
५—सन्तःकरण. ६—सूक्ष्म. ७—इन्द्रियां, ८—विचार. ९—आत्म, १०—आत्मज्ञान ।

हेजी म्होंने चार बोलाऊ(१) सुहावे हे माय । पिशाजी री० ॥ १ ॥
श्रवण मनन निर्दि यामन करके ।

हेजी म्हे तो मीघे ही माय चल जाश्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ २ ॥
निज निश्चय रो सुमो मारथो ।

हजी म्हे तो एकता रो विलक चढास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ ३ ॥
पूण प्रेम री पाटी पाड़ी ।

हेजी म्हे तो निर्भय नथली लगास्या हे माय । पिशाजी री० ॥ ४ ॥
हित रो हार ने मेहदी द्या री ।

हेजी म्हे तो करुणा रा कंगण धरास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ ५ ॥
जान वैराग वाजूवन्द बोध्या ।

हेजी म्हे तो चूपो निगम जडास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ ६ ॥
चिन फेरी वृड्यां ने बीटी भाव री ।

हेजी म्हे तो पुणची प्रीत पैरास्या हे माय । पिशाजी री० ॥ ७ ॥
अरणा रा भ्रांकर नाम नेवर था ।

हेजी म्हे तो समता गृंगार सजास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ ८ ॥
पहर ओढ कर जास्यां सासरे (२) ।

हेजी फिर पलट पीहर (३) नही आस्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ ९ ॥
काम क्रोध देहरायत उभा ।

हेजी म्हे तो यां सू नांदि डरास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ १० ॥
चौधी (४) नेडी पीव म्हारो पीदे ।

हेजी वाने मूता ने जाय जगास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ ११ ॥
प्रीतम (५) त्यारी (६) और त्यारी ही प्रीतम ।

हेजी उठे एक होय रस जास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ १२ ॥
देवनाथ पिया मानसिंह के ।

हेजी म्हे तो यों पतिव्रत निभास्यां हे माय । पिशाजी री० ॥ १३ ॥

१—साध पहुंचाने वाले, २—आत्मस्थिति, ३—अज्ञानावस्था, ४—तुरियावस्था,
५—आत्मा, ६—वृत्ति ।

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी थे तो कुवजा रे महलां मत जावो रसिया, म्हारे आवो ॥ १ ॥
 कुवध कुवरी कुवध करेला । माल तुम्हारे मुफ्त हरेला ।
 हेजी थे तो इण सूँ दूर रहावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ १ ॥
 ज्ञान गुलाल केसर करुणा री । सम्मुख होय भारो पिचकारी ।
 हेजी म्हारे प्रेम रो रंग बरसावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ २ ॥
 सुमति रुकमणी राह नित जोवे । आप बिना वो अकेली न सोहवे ॥
 हेजी इण चाकर सूँ चित्त मत लावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ ३ ॥
 असली नार महल में ठाडी । अरुं सूँ प्रीत करो मन गाडी ।
 हेजी तुम नाहक लोग हँसावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ ४ ॥
 मान फहे मानो पिथा मेरे । तुम मेरे और हम हँ तेरे ।
 हेजी तुम आदि सनातन लावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी मैं तो वृत्ति री अम्ब पुजाई हे माय ।
 इण विधि पायो म्हारे श्याम ने ॥ १ ॥
 ना कोई देवल पत्थर बसिया ।
 हेजी मैं तो घर बैठों ही गम पाई हे माय । इण विधि० ॥ १ ॥
 'मैं' मद मैंसा आगे दीना ।
 हेजी वांपर ज्ञान की खड्ग चलाई हे माय । इण विधि० ॥ २ ॥
 गीश कमल को फूल चदायो ।
 हेजी ओं तो कवहूँ कुम्हलत नाई हे माय । इण विधि० ॥ ३ ॥
 वृत्ति निरोध कियां पिय पायो ।
 हेजी म्हारे और तो चहिए नाई हे माय । इण विधि० ॥ ४ ॥
 शील सन्तोष निष जोग जैना ।

हेजी जिसे "ब्रह्माग्नि" धुन गाई हे माय । इण विधि० ॥ ४ ॥
"तन्वमसि" मद पायो अम्ब ने ।

हेजी याको पीतों की मन्त बनाई हे माय । इण विधि० ॥ ५ ॥
दाय नगं विच मुश भई अम्बे ।

हेजी म्होंने ब्रह्म तन्व दरसाई हे माय । इण विधि० ॥ ६ ॥
इन्द्रा मय वृत्ति प्रकटी ब्रह्म मे ।

हेजी इण ने त्रिण सूँ में मान यताई हे माय । इण विधि० ॥ ७ ॥
देवनाथ गुरु मुघड़ पुजारी ।

हेजी जिण मान ने जुगति सुणाई हे माय । इण विधि० ॥ ८ ॥
॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के 'लूर' की । ताल कैरवा ॥

हों आनन्द आयो रे, मनगुरु जी म्हारं रङ्ग(१)बरमायो रे; आनन्द आयो •
॥ डेर ॥

पाँच(२)पचीस(३)मिलो मय नारी कौड़ा कौड़ लगायो रे ।

ज्ञान को चङ्ग ध्यान सूँ स्वइक्यो मङ्गल गायो रे । आनन्द आयो रे ॥ १ ॥

मूती नौद (४) जाग गई कईयक बंसी(५) शोर मचायो रे ।

उर्द्ध धह (६) की कुंज गलिन मे खेल रचायो रे । आनन्द आयो रे ॥ २ ॥

काम क्रोध मद लोभ मोह एतौ सुणता ही उठ धायो रे ।

क्या जराणूँ इण कौन गलिन में मुखडो छिपायो रे । आनन्द आयो रे ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु कृपा करी जद ऐसी फग खेलायो रे ।

मान ब्रह्माण्ड चीक मे बैठो गयो न आयो रे । आनन्द आयो रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के 'लूर' की । ताल कैरवा ॥

अरे हों रे दूजो नाई रे आतम है जग में एक गुसाई रे; दूजो नाई रे ॥ टंरा ॥

पद पद भया हैरान बत सब एक ही एक बताई रे ।

१—ज्ञानोपदेश, २—इन्द्रियां, ३—प्रकृतियां, ४—मोह निरा. ५—शब्द, ६—
ब्रह्माकार वृत्ति ।

एक सिवाय कछो नहीं दूजो यह दरसाई रे । दूजो नाई रे० ॥ १ ॥

माया ब्रह्म ब्रह्म है माया माया ब्रह्म ही छाई रे ।

ज्यों प्रतिविध सूरज रो दीखे सूर्य कहाई रे । दूजो नाई रे० ॥ २ ॥

वेद ग्रन्थ उपनिषद् सारा एक उणी ने गाई रे ।

सांख्य योग भी देखो उणी ने सिद्ध बताई रे । दूजो नाई रे० ॥ ३ ॥

जोगी नती अती सन्यासी आत्म ही बतलाई रे ।

भारण जारण और उच्छाटन आत्म माई रे । दूजो नाई रे० ॥ ४ ॥

जन्तर मन्तर और बशीकण चाहे जितना पढ़ाई रे ।

जिनको आत्म निश्चय है उनको डर नाई रे । दूजो नाई रे० ॥ ५ ॥

एक मिलयो दूजो ज्यों ध्यायो सो प्रण मन रे माई रे ।

मानसिद्ध गुरुदेष कृपा कर एक बताई रे । दूजो नाई रे० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राम सारङ्ग, तर्ज फागण के “लूर” की । ताल कैरवा ॥

हारे अजब खिलारी रे, आ खेल रही संग सुरता धारी रे; अजब० ॥ टेर ॥

जगत चौक में खेल भरडयो हे एक पुरुष सब नारी रे ।

एक पुरुष अनेक रूप जग दीखे सारी रे । अजब० ॥ १ ॥

साज जतीस बजे द्रण जग में रुण मुख भुण्य भुण्यकारी रे ।

घाप ही बैठ बजाय रहो ऐसो गुणकारी रे । अजब० ॥ २ ॥

उण रसिये ने बोहीज जाये सही ज्ञान पिथकारी रे ।

संमुख खेले पर फया जाये नार गंवारी रे । अजब० ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु कृपा करी जद बिगड़ी बात सुधारी रे ।

मानसिद्ध को कंद लियो बहतां भवधारी रे । अजब० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राम सारङ्ग, तर्ज फागण के “लूर” की । ताल कैरवा ॥

आ या पिया बुलावे रे,

मन्त्री चाल उणी रे देश पिया तोय फाग (१) खेलावे रे: पिया० ॥ टेर ॥
 देह अभिमान दूर अब मेला जत्र प्रीनम मिल जावे रे ।
 देह नरो अभिमान मर्य क्यूँ श्याम गुमावे रे । पिया बुलावे रे० ॥ १ ॥
 दिन दश रो पीहर (२) मे रेहणो यहाँ क्यूँ रींक रहावे रे ।
 पाँच (३) परा जत्रु रुहिये आँख लड़ावे रे । पिया बुलावे रे० ॥ २ ॥
 यों पर पुरुषों धीनि करो ना भवजल मे बह जावे रे ।
 जो पतिव्रता नार कहीजे पिया मिलावे रे । पिया बुलावे रे० ॥ ३ ॥
 आनम देव अन्नदृष्ट अविनाशी तेरो पिया रुहावे रे ।
 मान रहे अब मान थावनी क्यों नु ठगावे रे । पिया बुलावे रे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तजं "व्रज के रमिया" की । ताल करिया ॥

अब मेरी मानी (४) मरना नार, पिया (५) ने खूब रिझायो हे ॥ टेर ॥
 प्रीतम रींक मेरे घर आयो रे । ज्ञान लगाय अज्ञान मिटायो रे ।
 प्रीतम रींक मेरे घर आयो । ज्ञान लगाय अज्ञान मिटायो ।
 उड़यो दूर अज्ञान प्रेम को खालो पायो रे । अब मेरी मानी० ॥ १ ॥
 प्रीतम रींक के बँन यजायो रे । बउयो बँन सब के मन भायो रे ।
 प्रीतम रींक के बँन यजायो । बउयो बँन सब के मन भायो ।
 झाल फँज गई दूर सहज मे सहज ममायो रे । अब मेरी मानी० ॥ २ ॥
 शोय शोय को दूर भगायो रे । एक रूप सब मे दूरमायो रे ।
 शोय शोय को दूर भगायो । एक रूप सब मे दूरमायो ।
 होय को पडेश दूर गयो जत्र एक लग्यायो रे । अब मेरी मानी० ॥ ३ ॥
 भूल हती जित खूब फिटायो रे । भूल मिटी जद भरम ममायो रे ।
 भूल हती जिते खूब फिटायो । भूल मिटी जद भरम ममायो ।
 ज्ञान भान उर उग गयो तत्र तिमिर मिटायो रे । अब मेरी मानी० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु गोद उत्रायो रे । उख नेणों दीदार दिखायो रे ।

१—आनन्द, २—शरीर भाव, ३—पाँच विषय, ४—मननशील, ५—आत्मा ।

देवनाथ गुरु गोद उठायो । इण नेखाँ दीदार दिखायो ।

मान भयो आनन्द आप में आप समायो रे । अन्न मेरी मानी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

ब्रज में खेल रह्यो गोपाल, भ्वाल संग मंगल गावे रे ॥ टेरे ॥

पाँच पचीस भ्वाल संग माँई रे । गो अतीत गोपाल गोसाँई रे ।

पाँच पचीस भ्वाल संग माँई । गो अतीत गोपाल गोसाँई ।

विश्व रूपी यह ब्रज इसी में वैन बजावे रे । ब्रज में खेल० ॥ १ ॥

नाड़ी नव ने वहत्तर फोटा रे । वंक नाल यह सुन्दर ओटा रे ।

नाड़ी नव ने वहत्तर फोटा । वंक नाल यह सुन्दर ओटा ।

गुप्त नाड़ी की कुंज गलिन में खेल खेलावे रे । ब्रज में खेल० ॥ २ ॥

वृत्ति राधे बलत उर माँई रे । बार बार कर नाच नचाई रे ।

वृत्ति राधे बलत उर माँई । बार बार कर नाच नचाई ।

नाच रह्यो गोपाल प्रेम सूँ तारी बलावे रे । ब्रज में खेल० ॥ ३ ॥

देवनाथ ऐसो कृष्ण बतायो रे । नित है अमर गयो नहीं आयो रे ।

देवनाथ ऐसो कृष्ण बतायो । नित है अमर गयो नहीं आयो ।

मान कृष्ण कहाँ दूँढ्या आवे घर हि मिलावे रे । ब्रज में खेल० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

नरेशू सब में सुन्दर श्याम, बात यह मानी किम जावे ॥ टेरे ॥

मित्र क्यों भूल पड़यो अज्ञान, अजानी जान छटाँ होवे ॥ टेरे ॥

तुम कहते हो सब में व्यापक कैसे चित आवे ।

पृथक पृथक यह दीखत है जग न्यारो दरसावे । नरेशू सब में० ॥ १ ॥

कर विचार तू अपने मन में कौन हँसे रोवे ।

पृथक पृथक यह जिन को दीखे सोह निशा सोवे । मित्र क्यों० ॥ २ ॥

एक ही एक तो दोग भये क्यों अचरज यह आवे ।

दोग होय विस्मय बढ़ायो क्यों यह दुःख पावे । नरेशू सव मे० ॥ ३ ॥

कर तो एक था कव दो हुवा क्या था क्या होवे ।

जैसा है तैसा ही है वह भ्रम क्यों ना सोवे । मित्र क्यों० ॥ ४ ॥

प्रलय महा प्रलय क्यों लिखा मय भूठ कही जावे ।

यदि यह भूठी बात होय तब लिखनो क्यों चावे । नरेशू सव मे० ॥ ५ ॥

खेले खेल मदारी आपे खेलत मन मोहे ।

अपनो खेल जी चाहे समेट ले उन्हें कत्त को है । मित्र क्यों० ॥ ६ ॥

मेरो मदारी फिर है न्यारो न्यारो रह जावे ।

वही मदारी हमे बतावो पकड़ घरां लावे । नरेशू सव मे० ॥ ७ ॥

तू ही खेल और तू ही मदारी तू ही हूँसे रोवे ।

मान कहे कवि धरु मुनो तुम किनको क्या जोवे । मित्र क्यों० ॥ ८ ॥

तुम नरेश हो जाली जचरे जीत्यो किम जावे ।

वेद वक्ता मानो अज ही आयो ऐसे दरसावे । नरेशू सव मे० ॥ ९ ॥

उलट उलट कई बार उलटियो फरक नहीं लावे ।

मानों फाँटे बीच तुली फिर रतियन घट जावे । नरेशू सव मे० ॥ १० ॥

कितनी घेर फेर कर पृथ्वी ना तू भुँझलावे ।

बंरु कहे सुत्राणी पय को नाहिन लजावे । नरेशू सव मे० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज “व्रज के रमिया” की । ताल कैरवा ॥

करलो भक्ति अपने रूप की, जिसमें आनन्द पावोगे ॥ टेर ॥

घार घार को भटक भटकते यों मर जावोगे ।

इममें हाथ कछू नहीं आवे रतन गमावोगे ।

पांचू विषय चोर है संग में माल लुटवोगे । करलो भक्ति० ॥ १ ॥

जो इत मन के रहे आधीन तो श्यान गन्नावोगे ।
 यह मन है लुब्धा जो अबल का घोखा खावोगे ।
 सतगुरु संग रहो नित अपने भौत्र उड़ावोगे । करलो भक्ति० ॥ २ ॥
 ज्ञान अग्नि उर बीच जमा कर लाय चैतावोगे ।
 पांचू बिपय प्रबल यह कहिये इन्हे जज्ञावोगे ।
 पांचू बिपय त्याग जब हुए सहज समावोगे । करलो भक्ति० ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु सही दियो अब क्यों अटकावोगे ।
 मान रतन को जान लियो अब क्या ले जावोगे ।
 ऐसे तुम भी जानों तो सुख से सो जावोगे । करलो भक्ति० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

भक्ति भक्ति सब ही कहे, भक्ति करे न कोय ।
 जो सच्ची भक्ति करे, तो भगवत जुदा न होय ॥
 मानसिंह संसार में, स्वांग से भक्ति न होय ।
 भक्ति करे तो सहज कर, स्वांग न साजो कोय ॥

॥ गान ॥

॥ राम सारङ्ग-नलार, तर्ज वाशी की । ताल दीपचन्दी ॥

नींद उड़ाई म्हारे नाथ जी, ज्ञान रो दोल बजायो ।
 चोर निद्रा सूँ किसो जागतो, फरके दया उठायो जी ॥ १ ॥
 ज्ञान विज्ञान लखाविया, साची बात सुनाई ।
 पोल गली सूँ कादियो, सीधी राह बवाई जी ॥ २ ॥
 ज्ञान ग्रन्थ सुनियो यहूत सा, त्याग ही त्याग बलाएयो ।
 कृपा करी म्हारे नाथजी, अब के त्याग निष्कारयो जी ॥ ३ ॥
 असली आनन्द ने भूलग्या, नकली में भरमायो ।
 सूजे ब्रह्म हो ब्रह्म बक्या, ऊँटी खाड गिरायो जी ॥ ४ ॥
 असली आनन्द की मालुम भई, सहज स्वरूप हमारा ।
 मेरा जग जग में ही तो हूँ, मुझ से जग नहिं न्यारा जी ॥ ५ ॥

मेरा यह सब खेल है, मैं ही भया हूं मडारी ।

मैं ही तो देखणहार हूं, ऐसा अन्न तिल्लारी जी ॥ ५ ॥

उपनिषद एक शत आठ में, यही है गीत सुनायो ।

“तुही है तुही है तुही है”, तुजो ब्रह्म कटों में आयो जी ॥ ६ ॥

आही कही भ्रानि नावजी, घट में खोज लगायो ।

घट खोल परगट देखियो, मान शुद्ध ममायो जी ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग । ताल तिनाला ॥

करी हम मुफल कमाई, देखो पैसी करी हम मुकल कमाई ॥ १ ॥

पूख कर्म के रहना भोगे, तो देता शत गुमाई ।

पूख कर्म सूँ तो मिलग्यो मानुष तनु, कर पुण्यारव पाई ॥ १ ॥

सुण सुण कथा धारयो नही उर में, इवसे मुनी निकलाई ।

वाचनहार की जिह्वा घिस गई, पुस्तक आप घिमाई ॥ २ ॥

वाचन हार तो मिलिया स्वाधी, हम पण समस्त नाई ।

जत उपवास में डमर खाई, असली चीत्र गुमाई ॥ ३ ॥

जत कथा सुन महातम सुणिया, बातों रा विवाण उड़ाई ।

क्रोहा अर्ब तो तिरता घनाया, पर निजरा में एक न आई ॥ ४ ॥

सुन सुन भोक्त रा महल प नेड़ा, कथा जो खूब वचाई ।

धोता ने बक्ता दोनोई डूबा, धनि तारनियो कोई नाई ॥ ५ ॥

महातम अध्याय म्हारे आडा न आया, डूब्या गहरे जल भाई ।

म्हे तो डूब्या ज्यारी परवा नाहीं, गुरु लिए साथ जुनाई ॥ ६ ॥

वहुत जतन सूँ मोछो मिलियो, फेर भी संभल्या नाई ।

नाथ को हाथ धरत ही चेत्या, अनन्त भानु दर्साई ॥ ७ ॥

वरुता ही सूता धोता ही सूता, कदो किम पार तियाई ।

जागतड़ा सूतां ने मिलिया, चाबक चोट चमाई ॥ ८ ॥

भेज्यो तने निज रूप ओलखने, अलुफ्यो अलुमाडे रे माई ।

ऐसी आवाज सुनी कानों सूँ, थर थर रखो कम्पाई ॥ ६ ॥

मान कहे जो पीछे कह आयो, ऐसी कोऊ करजो नाई ।

जागतड़ा गुरु जोय ने कीजो, तारत जेज न लाई ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह या जगत में, और मस्ती सय घूर ।

खुद मस्ती सो भस्ति है, है हमको मंजूर ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैवा ॥

वाह वाह जगे हम वाह वाह जगे, इस मोह(१)से यारो हन वाह वाह जगे ॥ डेर ॥

न किसी ने हमको जगाया था, सब स्वास्थ्य शाकी विलाया था ।

इस मोह मद् में बहकाया था; अब वाह वाह जगे हम० ॥ १ ॥

स्वस्थ शाकी को दूर किया, दिल के परदे को चूर किया ।

अपने आपको हम मंजूर किया; अब वाह वाह जगे हम० ॥ २ ॥

असली मस्तों(२) के पास गये, उस यार(३) की हम तलाश गये ।

तब मन के होरा(४) इबास गये; अब वाह वाह जगे हम० ॥ ३ ॥

मान मिटाया मैल(५) सभी, पहुँचे चेहरे के महल(६) जयी ।

यह छूट गई दुःख गैल तबी; अब वाह वाह जगे हम० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा

खूब मिले जी खूब मिले, अब खूब मिले जी खूब मिले ।

यारों(७) की यारी में खूब मिले, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ डेर ॥

जिस यार (=) को हूँ देने जाते थे, हम जगह जगह भटकाते थे ।

१—मोह निद्रा, २—झानी पुरुष, ३—आत्मा, ४—चपलता, ५—द्वैत विचार,

६—आत्मस्थिति, ७—आत्मझानी लोग, ८—आत्मा ।

हम नाना वस्तु उटाने थे, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ १ ॥
 हम फिर फिर के हिरान हुए, उन्हें ठोकेते हम परेशान हुए।
 अब अपने आप मगताज हुए; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ २ ॥
 रुच दूर ही दूर बताते थे, नहीं बात कोई समझाते थे।
 यों बहुत से सारे जाते थे, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ३ ॥
 दिल का परदा जब दूर हुआ, जुदाई का नाता चूर हुआ।
 मैं अपने आप मजूर (१) हुआ, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ४ ॥
 भाग भले जब नाथ मिले, प्रण पुरणों के साथ मिले।
 रहे मान हम एक ही जान मिले; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ५ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

पाय लिया अब पाय लिया, जिसे ठोकेते थे उसे पाय लिया ॥ टेर ॥
 अब आना और जाना कुछ न रहा, अब बार (२) जुदाई कुछ न रहा।
 मैं तो अपने आपसे आप मिला। अब पाय लिया अब ॥ १ ॥
 पाया दिल के महमाने (३), अब दिल की बात तो दिल जाने।
 हम मान लिया न किमकी माने। अब पाय लिया ॥ २ ॥
 मानोगे तो तुम आवोगे, नहीं तो मेरा क्या ले जावोगे।
 निज स्वयं से दूर रह जावोगे। अब पाय लिया ॥ ३ ॥
 हम अपना हुकम उठावेंगे, नहीं और के हुकम से जावेंगे।
 रहे मान फेर नहीं आवेंगे। अब पाय लिया ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

हम पीते ही प्याला (४) चुपचाप हुए ॥ टेर ॥
 उम प्याले में अजब रस देखा; कि पीते ही दिल में भाक हुए ॥ १ ॥
 मन के उद्धम मिटे अब सब ही, हम अपने जपते अजाप हुए ॥ २ ॥

१—जीव ब्रह्म की एतना, २—परमात्मा, ३—दिल के अन्दर, ४—गुरु उपदेश।

और और का भरम मिटा सब, अब हम अपने आप हुए ॥ ३ ॥

मान कहे गुरु देवनाथ से, नित्य सुखी निर्ताप हुए ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

ताया हुआ घृत (१) नाँय पिया उन छाछ(२) पिवी है ऊमर सारी ।

नाँय पिये कष्ट स्वाद लखे बिन स्वाद लखे बिन जात वृथारी ।

छाछ ही को यह घृत कहे देखो जो भूल पड़ी मन भारी ।

घृत तो देखो घृत रहे और छाछ जो देखो वो छाछ बिचारी ।

घृत की होठ जो छाछ करे जद छाछ ही क्यों न पिये जग सारी ।

मान तो छाछ को नाँय पिये घृत दियो हमें गुरुदेव निकारी ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

हम मस्तान है बाँके; साधो हम मस्तान हैं बाँके ।

हमारी मस्ती हमी से लागी; ना हम राम खुदा के । साधो हम० ॥ १ ॥

हम में जगत जगत में हम हैं, क्यों अब इत उत भाँके ।

सभी विश्व में एक वरावर, तोल लिया बिन काँडे । साधो० ॥ १ ॥

ना कोई गया नहीं कोई आया, ना कोई जाय कहा के ।

अरनी मस्ती आपसे जोई, अवर नहीं क्या भाखे । साधो० ॥ २ ॥

देवनाथ गुरुनाथ मान के, राग द्वेष नहीं राखे ।

मानसिद्ध अब किनक बोझा, है ब्रह्म मद् में पाके । साधो० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

रहा कुछ भी नहीं, अब कुछ भी नहीं ।

हम अपने आप ही आप रहे, रहा कुछ भी नहीं० ॥ १ ॥

जब हम दूँडने जाने थे, तब नई नई बातें लाते थे,
 कुछ घर की होत कह आते थे रहा कुछ० ॥ १ ॥
 औरों की मान हँसान हुवे, हम धान छले अजान हुवे;
 ऐसे फिर फिर मुपत परेशान हुवे । रहा कुछ० ॥ २ ॥
 हम मज को मिटाने आये हैं, हम घर को जलाते आये हैं,
 हम दु.ख सुख पाते आये हैं । रहा कुछ० ॥ ३ ॥
 हम अपने बन्ध का तोड़ा है, बन्धपातों से मुख मोड़ा है;
 यह भरम का भंडा फोड़ा है । रहा कुछ० ॥ ४ ॥
 मान मान मन मान गया, अब मान न कोई अमान रहा;
 जय मान ने अपना मान लिया । रहा कुछ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

खू खुरी जी खू खुरी, अब खू खुरी जी खू खुरी ॥ टेर ॥
 मिटना था वो मिटाय दिया, और मिलना था वो मिलाय दिया
 जिसे देवना था वो दिवाय दिया । अब खू खुरी जी० ॥ १ ॥
 अब ना कोई भेरा रहा, और मैं न किमी अ चेरा रहा,
 अब नहीं फिरना नहीं केरा रहा । अब खू खुरी जी० ॥ २ ॥
 नहीं बुढ़ा नहीं वाला रहा, नहीं कोई पिता नहीं लाला रहा,
 अब नहीं गौरा नहीं काला रहा । अब खू खुरी जी० ॥ ३ ॥
 नाहि किसी का मेला रहा; ना कोई किसी का भमेला रह,
 मैं अपना आउ अलबेला रहा । अब खू खुरी जी० ॥ ४ ॥
 मान नहीं अपमान नहीं, और ना कोई खैचा तान गी,
 तू मान किसी की शान नहीं । अब खू खुरी जी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

जहाँ के हैं हम जहाँ के हैं, क्या पूछो हमे हम जहा के हैं ॥ टेर ॥

सब ही देश हमारा है, हमसे कोई देश न न्यारा है,
हम वहां के हैं हम यहां के हैं । क्या पूछो हमें हम जहां के हैं ॥ १ ॥
कौनसा देश धताऊँ मैं, और कौनसा भेय ठहराऊँ मैं,
हम सहजे रूप खुदा के हैं । क्या पूछो ॥ २ ॥
सब में हम भर पूरा हैं, हैं निकट के निकट न दूर हैं,
हम ना तिरछे ना बाँके हैं । क्या पूछो ॥ ३ ॥
हम ही राम खुदा ही हैं, हमसे इतर कोई नांही है,
हम रहते आदि सदा के हैं । क्या पूछो ॥ ४ ॥
कबीर ने हमको पूछलिया, वन आई सो हमने उत्तर दिया,
हम भेद न रखें छिपा के हैं । क्या पूछो ॥ ५ ॥
फिर संशय हो तो कह दीजे, कहुँ जामें शंक मती कीजे,
तुम पूछो हम कहें समझा के हैं । क्या पूछो ॥ ६ ॥
गुरु देवसाथ समझाया है, कहे मान सभी में समाया है,
हम तोके हैं न तहां के हैं । क्या ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग औनपुरी टोडी । ताल तिताला ॥

रसिक(१) होय सोई पावे, यह रस रसिक होय सोई पावे ।
बिना रसिक यह हाथ न ध्यावे, यों ही पड़े रह जावें । यह रस ॥ १ ॥
घड़े घड़े उपनिषद् पढ़ पढ़, काली खेत रहावे ।
घेद के सूत्र घे नित सुरभावे; लुद अरुके रह जावें । यह रस ॥ १ ॥
दिन में चार चार भोग लगावत, उलटे ही जाल फंसावें ।
जीमणहार तो ध्याप कहीजे, झूठे ही और धतावे । यह रस ॥ २ ॥
इच्छा में जगत् जगत् भे इच्छा, इच्छा ही अल कहावे ।

१—बिरब-प्रेमी ।

ब्रह्म न होय तो इच्छा कदम की, रवि दिन नेत्र न आवे । यह रम० ॥३॥
 रसिया होय मो मम वाक्यो को, मुन्नत मस्त हो जावे ।
 दिन रसियों को लगत अटपटे, पत्थरों ही शीश नमावे । यह रम० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु कृपा करी जद, विगड़ चो स्वाग सुधरावे ।
 मानसिह इन पोल पन्थ में, भूल स्वान नहीं जावे । यह रम० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती गरवे फी । ताल कचाली ॥

कोई रसिया(१) होवे सो अग रम पी मके रे जी ।
 दु खियां(२) रे आवे नहीं काम । कोई रसिया० ॥ टेर ॥
 कोई रसियां रे भेला तो रसिया आ निले रे जी ।
 रसियां ने मिले विधाम । कोई० ॥ १ ॥
 कोई मूरख क्या जाने रम वापडा रे जी ।
 प तो विषयां तणां रे गुलाम कोई० ॥ २ ॥
 कोई रसियां रे विना तो ओ मद(३) कूण पिये रे जी ।
 काट ने देखो सिर(४) दान । कोई० ॥ ३ ॥
 कोई मूवा स्वर्ग ने मैं तो क्या रुके रे जी ।
 महारो जीवत स्वर्ग मांहे धाम । कोई० ॥ ४ ॥
 कोई मान केवे साची सही रे जी । मेरो तो मैं ही हूं निज श्याम । कोई० ॥५॥
 ॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाही "जले" की । ताल कैरवा ॥

महारे मेन में मदाई आनन्द सुख जोया रे, दुःख रतियन होय ।
 महारे मन में मदाई आनन्द सुख जोया रे लाल ॥ १ ॥
 घट्टन जन्म तक मरम जोद मांय सोया रे, अब सोवे न कोय, वजुत० ॥ २ ॥
 कोटि मान उज-घारा (५) अन्दर होया रे, जामूँ मारुष्ट(६) पोय, कोटि० ॥३॥

१- विरव प्रेमी, २-जगत से द्वेष करने वाले, ३-आत्मज्ञान, ४-देहाभिमान,
 ५-ज्ञान का प्रकाश, ६-सल अस्तु का विवेक ।

पांच(१)चा(२)ने पड्ड पकड ने मोया(३)रे, निज घर(४) अब जोय; पांच० ॥१॥
 देवनाथ गुरु हाथ गड लिया मोय रे, सब भ्रम दिया खोय, देवनाथ० ॥ ५ ॥
 गनसिंह अब नांय हंसे नहीं रोय रे, निज में निज जोय, भानसिंह० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

सइयां ए म्हारी धिन आजूगो धिन भाग, राम म्हारे हर प्रकटायो ए ॥ १ ॥
 दशरथ प्रेम अयो-या तुरिये ए, सइयां ए म्हारी ब्रह्म ह्यन तहां कीन,
 सतगुरु म्हारा आव ने करायो हे ॥ १ ॥
 सम सुमित्रा सुमति कौशल्या ए, सइयां ए म्हारी कुमति कैकई नार,
 तोनोई मिन वर ऐसो पायो हे ॥ २ ॥
 सतगुरु अत्रि हवन ऐसो किनो ए, सइयां ए म्हारी शब्द हवी म्हाने पाय,
 पीतां ही मदमस्त बणायो हे ॥ ३ ॥
 ज्ञान भरत ने वैराग्य लक्ष्मण हे ए, सइयां ए म्हारी शत्रु धन हे विवेक,
 विचार सो राम कहायो हे ॥ ४ ॥
 ब्रह्म पुत्र यूँ विचार राम हे ए, सइयां ए म्हारी जीव जीव ने छोड,
 असल निज रूप बनायो हे ॥ ५ ॥
 देवनाथ ऐल राम मिलाया ए, सइयां ए म्हारी मान मिल्यो हरि मांय,
 कहीं में गयो नहीं आयो हे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

सइयां ए म्हारी वर बैठां आयो बतरयाम, बुतावण कुण म्हारे जावे ए ॥ १ ॥
 निरी मैं बुलावण उद नहीं आयो ए, सइयां ए म्हारी खोव्यो मैं ध्यातपराम,
 दूजो म्हारे निजर न आयो ए ॥ २ ॥
 बाहर श्याम रो मने काँई करनो ए, सइयां ए म्हारी आसी घर रो काम,

१—इन्द्रियां, २—अन्तःकरण, ३—वश किया, ४—अपना स्वरूप ।

वाहिरु म्हारे कुण मटकावे ॥ २ ॥

कुटुम्ब(१) म्हारो कलो नही माने ए, सडया ए म्हारी करे न भौलायो(२) छम,
याने अथ कौन भौलावे(३) ए ॥ ३ ॥

नेचनाथ गुरु श्याम स्वरूपी ए, सडया ए म्हारी मान कियो उर मे धाम,
काटयो ही नही बाहर जाये ॥ ४ ॥

॥ सबैया ॥

जो निज को जिन जान लियो निज जान लियो फिर ना भटकाये ।
म्यारो रयो निज से जन मूरख म्यारे ही म्यारे मे म्यान गमावे ।
म्यारो नही नूनेठ कही सब जगत निहारो हि रूप कहावे ।
मान कहे अभिमान तजो नव महान रूप मे जाय समाये ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

हृये नौकर के हम ठाकुर; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ १ ॥
धे हम तो पहिले ही ठाकुर, मगर नौकर बने बैठे ।
मिला जद रूप निज मेरा, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ २ ॥
बजाये बहून से घण्टे, करी थी सेवा उमर भर
तने जव अपनी सेवा मे; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ३ ॥
उषाड़े पाट मन्दिर के, जो अपने रूप को देखा ।
मधी जग मे मैं श्यापक हूँ, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ४ ॥
न धे हम ठाकुर के नौकर, बने नौकर पुजारी के ।
संभाला आप अपने को, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ५ ॥
पुजारी थे वो माया के, पुजारी भी न मन्चे थे ।

१—भजनमार्हित इन्द्रियों का समूह २—प्रत्मानुभव की अयोग्यता- ३—इ-
पर निर्भर रहना ।

मिले सच्चे पुजारी तो, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ५ ॥
 देव गुरु नाथ हैं मेरे, पुजारी आत्म ठाकुर के ।
 मिला है मान उन ही में, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मौरवी रेखता । ताल कवाली ॥

उगाथा तूर अपने में; मिटाया हूँ त चन्द्रा है ॥ १ ॥
 साया की ओट से देखा, उजाला चन्द्र सा दीखा ।
 खोल जोया जो परदे को, मिटाया हूँ त चन्द्रा है ॥ २ ॥
 निशा मोह जाल की मेटी, भरम को दूर जा पटका ।
 निकल गई गन्दगी दिल से, मिटाया हूँ त चन्द्रा है ॥ ३ ॥
 रूप था सूर्य ही मेरा, मगर मैं चन्द्र हो दीखा ।
 अविद्या शैल था विच में, मिटाया हूँ त चन्द्रा है ॥ ४ ॥
 किया जब चूर शैलों को, तो अरने आप सार्पाया ।
 मैं ही था रूप वो मेरा, मिटाया हूँ त चन्द्रा है ॥ ५ ॥
 मिले जब नाथजी हमको, अनाथ फिर किस लिये रहना ।
 मान सब आप अपना है, मिटाया हूँ त चन्द्रा है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी-टोड़ी । ताल तिताला ॥

जो देखूँ सो मेरा, मित्रो जो देखूँ सो मेरा ।
 शत्रु मित्र होय फिर कितके, दोय न रखे निवेस ॥ १ ॥
 मैं ही तो स्वामी सेवक मैं ही हूँ, मेरा सबही तमासा ।
 मैं मुझ को जब भूल गया तब, गढ़े अन्धविश्वासा । मित्रो जो देखूँ ॥ २ ॥
 राज करूँ और लेप न लागे, ये सब खेल हमारा ।
 हमरी खेत त्रिबारी हम हैं, विश्व हमही आधार । मित्रो जो देखूँ ॥ ३ ॥

मोने विषय भिन्न कव कहिये, भिन्न कहे सो कूडा ।

मेरी गम को जो जन पावे, काहे शीघ्र धरे दूर । मित्रो जो देख्यो ॥ ३ ॥

जत्र जाय कहा मेरो लेवे, लेवे तो कहा दूटे ।

देवनाथ दिया अमर खजाना, मान कभी नहीं खूटे । मित्रो जो देख्यो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

मूरत मरु हमारी साधो, मूरत मरु हमारी रे ॥ टेर ॥

सभी विश्व मे मूरत मेरी, ना कोई धरी न धारी रे ।

नहीं कोड त्वाली मन्दिर पे, सो ना कोड मिले पुजारी रे । मूरत० ॥ १ ॥

मेरा घडिया मे क्या प्रजू, मैं ही हू घडनेहारी रे ।

जी चाहे ना घड़ दिव्यलाड, वे सब नुशी हमारी रे । मूरत० ॥ २ ॥

मैं ही जीव प्रकृत मैं हूँ, मैं ही गुरु और नारी रे ।

मैं ही मेरा खुला और बंधा, दूजो नाहि निहारी रे । मूरत० ॥ ३ ॥

मेरा दशन फरू मैं हि निल, मैं ही देव अवतारी रे ।

चर और अचर सभी मे मैं हूँ, मैं ही मरुत सुखकारी रे । मूरत० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु कृपा करी जद, भरम पूड को भाड़ी रे ।

मान महान रूप जब होयो तो, निट गई द्वैत विहारी रे । मूरत० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

लीला सभी हम री मनो, लीला सभी हमारी रे ॥ टेर ॥

लीला करूँ रहूँ फिर न्यारो, तेमो खेज खिलारी रे ।

भोग् भोग महज मे सबही, फिर भी रहूँ ब्रह्मचारी रे । लीला सभी० ॥ १ ॥

हम ही देव देव्य हम कहिये, हम मृष्टि आधारी रे ।

मृष्टि रूप हम ही फिर कहिये, हे तरंग जग मारी रे । लीला सभी० ॥ २ ॥

चेनन हम हम ही जड़ कहिये, त्यागे द्वैत विहारी रे ।

उंच ने नीच गुरु नरो मेरे, नदी पुष्प नदो नारी रे । लीला सभी० ॥ ३ ॥

ईश्वर जीव प्रकृति ये तीनों, मूठे ही भगड़ा डारी रे ।

दोनो छोड़ एक कर दीना, नहीं प्रीतम नहीं प्यारी रे । लीला० ॥ ४ ॥

नाथ स्वरूप सकल जग कहिये, वेद और ग्रन्थ पुकारी रे ।

मान कहे कोई नाथ से न्यारो, ताहि समझ मति हारी रे । लीला० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की । ताल करवा ।

मन धर्म अधर्म विचार जद सुख पावे रे ॥ टेर ॥

धर्म बोच अधर्म बने, सो कुकरम कर्म निवार । जद सुख पावे रे ॥ १ ॥

धर्म अधर्म विचार करे, कहे नीति शास्त्र पुकार । जद० ॥ २ ॥

मुनि वशिष्ठ और मनु कह्यो; को कोई देखो स्मृति उधार । जद० ॥ ३ ॥

पुन्य किये कहीं पाप बने, कहीं पाप से पुन्य अपार । जद० ॥ ४ ॥

अन्ध रूप में नहि पड़ो, नहीं छाओ जम री भार । जद० ॥ ५ ॥

स्वार्थी अर्थ निगाड़ दियो, कुछ कीजे विवेक विचार । जद० ॥ ६ ॥

मान कहे यह नीति सही, यों चलिये खौंटा धार । जद० ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

दुम हो नरेश और देत कष्ट सब ही को, कौनसा धर्म यह नीति कहा
विचारी है । एत दिवस देखूं मैं सोच कर बात यही, समझ में न आई कुछ
नीति यह तुम्हारी है । दोषी को दण्ड देत बने रहो ज्ञानी फिर, उनको भी देखो
एक आत्मा निहारी है । कहे कवि बांकीवास मेटो हो संशय की प्यास, कौन
शास्त्र ग्रन्थ की जो नीति यह धारी है ॥

॥ कवित्त ॥

रे रे सुन बंक कुछ ख्याल तो करो मन, नीति ग्रन्थ देख बात समझ में न आई
है । नीति यों साक कहत दुष्ट को दीजे दण्ड, सोई नीति कृष्णचन्द्र पारथ
समनाई है । उनसे न लोपूँ पैड कृष्णचन्द्र कहीं सो मरूँ, गीताने सत्य
नीति भोव दरसाई है । सब कुछ करें और रहत नित अकली उय

कर्तव्य कर्म अपना पञ्चन को चाई है । कहे राव मानसिंह ब्रह्मन को कहने मान, जैसी कृष्ण कदी नैमी राह में बनाई है । बड़न को लोपे कदनों नाभी दुर्गति होत, वेद और ग्रन्थ शास्त्र सही ममभाई है ॥

॥ कविच ॥

सञ्जन को देहे दृष्ट और शेर को छोड़ दे, हिंसक वो जीव कई जीवन को मरेगो । ताने यह काम है उजाड़ दे पहिले उनका, उन्हें छोड़यो जीवतो तो नगर का उजारेगो । धार्मिक की रीति यदी स्थिति नित पढ़ रहे, नीति और अदीति हर वकन जो विचारेंगो । कहे राव मानसिंह फर्क हू न आय जाये, ऐसी ज्ञानी आप तरे औरन को नारेगो ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "बाणी" की । ताल करवा ॥

नाथो भाई साचे ज्ञानी मांई हो जी ।

करत व्यवहार लाचार न होवे, नही हूमे नहीं रोई ॥ १ ॥

मत्र कुल करे कर्तव्य लक्ष अपना, जिण सूँ दुख नहीं होई हो नी ।

उठत बैठत जागन सोयत, सुए आप सांय पोई ॥ १ ॥

सुख बाचाल धानां बहु भागे, निज आनम नहीं जोई हो जी ।

धार्तां करे भरम नाह सोयो, इवत नाव जुओई ॥ २ ॥

भेष न धरे जगन नहीं छोटे, दुःख दुविधा ने सोई हो जी ।

मानसिंह मोई मित्र हमारा, भीख न मांगे कोई ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहास, तर्ज बाणी की । ताल करवा ॥

नाथो भाई विगड़ी (१) लैन हमारी रे ।

मवसे अलग लैन है मेरी, सबसे ही करत क्रिमारी रे ॥ १ ॥

१—अज्ञानी लोगों की ममक से बाहर ।

मुड़कों(१) से बोलूँ जिन्दों (२) से नाहीं, यह उलटी मति धारी रे ।
 मुड़दे ही समझो मित्र हमारे, जिन्दे हैं दुश्मन भारी रे ॥ १ ॥
 चोरों(३)से प्रेम अरु शाह(४)से लड़ाई, इस में ही आनन्द अपारी रे ।
 चोर नगर (५) में निवास हमारो; वहां न चले साहूकारी (६) रे ॥ २ ॥
 शत्रु (७) जिनको मित्र जो कीना, मित्र(८) दिया ललकारी रे ।
 राजा (९) को पकड़ कैद मांहि मेल्यो, देखो सुमति विचारी रे ॥ ३ ॥
 बाप(१०) ने भ्रान(१०) सभी ने मारया, रोने लगी महतारी (१२) रे ।
 हाहाकार ओ मोय न सुहायो, उनको भी पकड़ निकारी रे ॥ ४ ॥
 बिगड़यां(१३)के पास बिगड़या ही बैठे, सुधरयां(१४)री कौन चिकारी(१५) रे ।
 देवनाथ गुरु बिगड़े मिलिया, मानसिंह स्त्रिया धारी रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग, तर्ज बाणी की । ताल करवा ॥

साधो मेरे बिगड़(१६) सो योगी(१७) होईरे ।
 बिगड़ यिगड़ कर ऐसा बिगड़े, पास न (१८)बैठे कोई रे ॥ टेर ॥
 भेष ने दरशन धरूँ नहीं सिर पर, यह सब बन्धन सोई रे ।
 होय निर्वन्ध आनन्द सूँ विचरे, अलमस्ताना होई रे ॥ १ ॥
 जोगी होवयो और रहयो सुधरियो(१६), वात बयो नहीं बोई रे ।

१—देहाभिमान से रहित, २—देहाभिमानी, ३—आसुरी सम्पत्ति हरने वाले सन्तगुरु, ४—आसुरी सम्पत्ति वाले, ५—विवेक, ६—आसुरी सम्पत्ति, ७—ज्ञान, ८—द्वैत विकार, ९—अहंकार, १०—अज्ञान, ११—मान, मोह, लोभ आदि, १२—आशा, १३—लौकिक बन्धनों से स्वतन्त्र, १४—लौकिक मर्यादाओं के बंधनों में रहने वाले; १५—साकल्य, १६—अज्ञानी लोगों के माने हुए अन्ध-विश्वासों की मर्यादाओं के बंधनों से स्वतन्त्र, १७—आत्म ज्ञानी; १८—अज्ञानी जन समुदाय का परदेज, १९—लौकिक मर्यादाओं और अन्धविश्वासों में अलमस्त रहने वाला ।

या तो विगड़ो या योगी न होईये, बात कहें शुद्ध मोई रे ॥ २ ॥
 नहीं कोई कर्म किया ने धरम कोई, एक आचार ने जोई रे ।
 नवसे अष्ट(१) कनिष्ठ(२) रहे वह, भेदाभेद न कोई रे ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु मवसे विगड़या, उनही विगाड़यो मोई रे ।
 मानसिद्ध कहे देश(३) विगाड़यो रे, सुधरया वमे(४) नहीं कोई रे ॥ ४ ॥

॥ मयैया ॥

॥ शंकर वचन ॥

शंकर कहे नृप मान मुनो अयतो कर यह चुप बात तुम्हारी ।
 भग शराथ पिशो विन आवरे बैसे मये नृप होमी यह भारी ।
 प्राई वको वरजे न रहो यह मही न जावन शब्द कटारी ।
 एक कहे हे नरेरा मुनो अम बात कहो सुधरे जग सारी ॥

॥ मयैया ॥

॥ मान वचन ॥

जग है ही नहीं सुधरे फिर को विगड़यो हि नहीं सुधरे कहा भाई ।
 यह विगड़यो सुधरयो तोहि वीचन मेरी तो दृष्टि मे आवत नोई ।
 जेरो हि रूप यह जगत सभी और मैं ही रहूँडम जगत के मोई ।
 ताल(५) के देखे तो जगत मैं ही हूँ जगत मो तं कहु भिन्न है नोई ।
 मान कहे मैं विगाड़ी नहीं और नोहि सुधारन को दुःख पाई ।
 है विगाड़ी सुधरी मव कहन की ये जग ब्रह्म को रूप मदाई ॥

॥ गान ॥

॥ तज वाणी की । ताल करवा ॥

साधो भाई धोड़े मे मत चक्रवावो होजी ।

इनने ही डरिया तो आगे क्या मिलमी, ज्यूँ के ज्यूँ रह जावो ॥टेरा॥

सूर धोर चले सिंह को मारण, घाक ही से डर जावो हो जी ।
 होय न शिकार आवो धर खाली, जग में हॉसी करनाचो ॥ १ ॥
 सिंह शिकार तो जव ही होसी, मारो धौर मर जावो होली ।
 जिन्दा रखा तो सिंह घर लावो, मरिया तो धीर कहावो ॥ २ ॥
 सिंह(१) शिकार बोही नर खेले, सिंह(२) होय अड़ जावो हो जी ।
 भाक(३) सूँ डरो कृनह क्या करसो, स्वाँगी साब कहावो ॥ ३ ॥
 वाचक ब्रह्म करो मत चार्ताँ, नाहक रयान गमावो हो जी ।
 मानसिंह कौई सिंह बनो तो, बिकट जङ्गल (४) बिच धावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावारी । ताल दीपचन्दी ॥

मत कहो न्यारो न्यारो, इण जोगिये (५) ने मत कहो न्यारो न्यारो ॥ टेद ॥
 न्यारो कह्यो तो मिलसो नाँहि, जोगी आधार तिहारो ।
 इण जोगिये बिना कुछ भी नहीं है, जोगी जगत उजियारो ॥ १ ॥
 इण जोगिये रे जोगण(६) अनादि, फिर जोगी है अलखड कँवारो(७) ।
 जोगण रंग में जुगत सूँ रहये, जगत रचायो है सारो ॥ २ ॥
 जोगी कुमारो और जोगण कुमारी (८), कभी न करत व्यभिचारो (९) ।
 भेला(१०) रहे और भीटत(११) नाँहि, जोगी वडो छन्दगारो (१२) ॥ ३ ॥
 जो जोगी ने देखे न जोगण, चैन न पात लिगारो ।
 एक पत्रक भर पत्रटे नाँहि, दोताँ में प्रेम अपारो ॥ ४ ॥
 जोगण जोगी में प्रेम अग्रदिदत, कवहुँ न टूटे तारो ।
 जो यह प्रेम टूट अग्रदिदत होवे, तो खेल बिखर जावे सारो ॥ ५ ॥

१-देहाङ्कार, २-निर्मय ३-विधि निषेध के रोचक भयानक वाक्य, ४-निन्दा
 मुक्ति से अर्धचलित स्थिति, ५-आत्मा, ६-इच्छा या प्रकृति, ७-निर्लिप्त,
 ८-शुद्धप्रकृति, ९-अन्यथा भाव, १०-अतन्त्र भाव, ११-निर्लिप्त, १२-योगेश्वर्य्य
 अधीन, लगन रचना का कौशल ।

या तो विगड़ो या योगी न होईये, वान कहें शुद्ध मोई रे ॥ २ ॥
 नहीं फोर्ट कर्म क्रिया ने धरम कोई, एऊ आचार ने जोर्ट रे ।
 नवसे ध्रष्ट(१) कनिष्ट(२) रहे यह, भेदाभेद न फोई रे ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु सबसे विगड-या, उनही विगाड-यो मोई रे ।
 मानमिद कहें देश(३) विगाड-यो रे, सुधर-या बसे(४) नहीं कोई रे ॥ ४ ॥

॥ मथैया ॥

॥ वंक वचन ॥

वंक कहे नृप मान मुनो अचरो कर यह चुप वान मुन्हारी ।
 भग शराव पियो दिन वावरे कैमे भये नृप हॉमो यह भारी ।
 आई वको घरजे न रहो यह सही न जावन शब्द कटारी ।
 बरु कहे हे नरेश मुनो अस वान कहे मुखरे जग मारी ॥

॥ मथैया ॥

॥ मान वचन ॥

जग है ही नहीं सुधरे फिर को विगड़-यो हि नहीं सुधरे कहा भाई ।
 यत्र विगड-यो सुधर-यो तोहि हीम्वत मेरी तो टाष्ट्र मे आवत नॉई ।
 नेरो हि रूप यह जगत मभी और मैं ही रहूँडम जगत के नॉई ।
 तोल(५) के देवे तो जगत में ही हूँ जगत मो ते कजु भिन्न है नॉई ।
 मान कहे मैं विगाड़ी नहीं और नॉहि सुधारन को दुःख पाई ।
 है विगड़ी सुगरी सब कहत की ये जग ब्रह्म को रूप सदाई ॥

॥ गान ॥

॥ तजं वाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई थोड़े मे मत धरवावो होजी ।
 इतने ही दरिया तो आगे क्या मिलसी, ज्यूँ के त्यूँ रह जावो ॥टेरा॥

न्यायवहारिक आत्म ज्ञान

सूर धीर चले सिंह को भारण, धाक ही से डर जावो होजी ।
 होय न शिंहर आवो घर म्वालो, जग में हाँसी करवावो ॥ १ ॥
 सिंह शिकार तो जव ही होसी, मारो और मर जावो होजी ।
 जिन्दा रखा तो सिंह घर लावो, मरिया तो धीर कहावो ॥ २ ॥
 सिंह(१) शिकार बोही नर खेले, सिंह(२) होय अड़ जावो होजी ।
 धाक(३) सूँ डरो कतह क्या करसो, स्वाँगी साज कड़ावो ॥ ३ ॥
 वाचक ब्रह्म करो मत दाताँ, नाहक रयान नमावो होजी ।
 मानसिंह कोई सिंह बनो तो, बिफट जङ्गल (४) बिच धावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राम आसावारी । ताल दीपचन्दी ॥

मत कहो न्यारो न्यारो, इण जोगिये (५) ने मत कहो न्यारो न्यारो ॥ टेर ॥
 न्यारो कह्यो तो मिलसी नाँहि, जोगी आधार तिहारो ।
 जग जोगिये बिना कुछ भी नहीं है, जोगी जगत उजियरो ॥ १ ॥
 एण जोगिये रे जोगण(६) अनादि, फिर जोगी है अखण्ड कँवारो(७) ।
 जोगण रंग में जुगत सूँ रहवे, जगत रचायो है तारो ॥ २ ॥
 जोगी कुमारो और जोगण कुमारी (८), कभी न करत व्यवहारो (९) ।
 भेला(१०) रहे और भीटत(११) नाँहि, जोगी बड़ो छन्दगारो (१२) ॥ ३ ॥
 जो जोगी ने देखे न जोगण, चैन न पात लिगारो ।
 एक पत्रर भर पत्रटे नाँहि, दोनों में प्रेम अपारो ॥ ४ ॥
 जोगण जोगी में प्रेम अखण्डित, कबहुँ न टूटे तारो ।
 जो यह प्रेम टूट खण्डित होवे, तो खेल बिखर जावे सारो ॥ ५ ॥

१-देहाङ्कार, २-निर्मय ३-विधि निषेध के रोचक भयानक वाक्य, ४-नि-
 स्तुति से अर्चयलित स्थिति, ५-आत्मा, ६-इच्छा या प्रकृति, ७-निलिप्त,
 ८-युद्धप्रकृति, ९-अभ्यथा भाव, १०-अनन्य भाव, ११-निलिप्त, १२-योगेश्वर्य
 अर्थात् जगत रचना का कौशल ।

जो जोगी ने देखणों होवे, मनोयोग चित धारो ।

योन जुडयां विना जोगी न मिलीया, मिटसी न भरम अन्धारो ॥ ६ ॥

देवनाथ गुरु देख जोगी ने, पकड़यो हाथ हमारो ।

मानसिंह जद जोगी मे मिल गये, जोगी रूप जग सारो ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग असावारी । ताल दीपचन्दी ॥

नही त्यागी घरवारी, जोगी नही त्यागी घरवारी ।

फट्टं घरवारी तो घर कहे नही, त्यागी कहे तो जग सारी ॥ १ ॥

त्यागी रहे और गृहस्थ सब भोगे, जोगी जबर बिलारी ।

पह वधन मे अवि न जोगी, जोगिये री कुदरत न्यारी ॥ २ ॥

पहन सुतन तो कष्ट न धने ओ, जालम जुलमी अपारी ।

पर मे बैठो काम करे सगला, फेर रहे ब्रह्मचारी ॥ ३ ॥

नित नवयौवन रहे ओ जोगी, कबहुँ न बुद्धपन धारी ।

सबसे रसियो सुन्दर जोगी, सबसे ही सुन्दर नारी ॥ ४ ॥

नही हे आलसी और काम करे नही, यह गति अगम अपारी ।

सुत अरु सुता अगणित है इनके, गृहस्थ बडो बलकारी ॥ ५ ॥

देवनाथ मोहे जोगी बनायो, उए जोगिये री बलिहारी ।

मानसिंह जद जोगी जायो, मिट गई भ्रमना सारी ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

बंरु वचन

बंरु कहे भूपति सुनो, वो जोगी है कौन ।

न्यारो खोल बताइये, मत रहिये तुम मौन ॥

को फिर उनकी जोगिनी, गृहस्थ कौन से कीन ।

ब्रह्मचारी कैसे एयो, भूपति कहे प्रवीन ॥

कौन सुता और कौन सुत, कहां है भवन निवास ।
भूपति भेद उचारि कहो, भगे अंधविश्वास ॥
गुप्त गुप्त कह जावोगे, तो करही अर्थ अनेक ।
असली अलगो रेवसी, बढसी नकली भेष ॥

मान वचन

बंक यह बात है वांकही, सभी खबर है तोय ।
तो फिर तू पूछे हमें, गुप्त रही है कोय ॥

बंक वचन

बंक कहे भूपति सुनो, हमें खबर जो होय ।
तो भी तुम कह दीजिये, दाम न लागे कोय ॥
जाणूँ राज रईस तुम, कहत परिभ्रम होय ।
भली होय सत्र जगत की, भरम भूत दो खोय ॥
गोरख और कवीर ने, यह उलझी रख दीन ।
मति न्यारी खंचन लगे, खंच रहे मतिहीन ॥
न्यारी न्यारी बीच में, असली खबर नहीं होय ।
को नकली असली कवन, जीव रहे सब सोय ॥
कृपा भवन करके कृपा, कर हो कृपा को रूप ।
को न्यारो भेलो कवन, भेद कहो भू भूप ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

भेद कहुँ तन् सारो, ज्ञानी भेद कहुँ तत् सारो ॥ डेर ॥
नूहम इच्छा आदि ब्रह्म की, है जिनको पिय प्यारो ।
इनले ही उठत समावत इनमें, यह है खेल अपारो । ज्ञानी भेद ॥ १ ॥
बंगन परे तो यह पुत्री है इनकी, होवे बहुत चिगारो ।
भेद न किये छोड़े नही पादो, जिण सूँ रहने न्यारो । ज्ञानी भेद ॥ २ ॥

आदि प्रेम सो किम कर दूटे कर उर गहन विचारो ।

यह ग्रह बन्धन जग को रचता, खेलत खेल मिलारो । जानी भेद ॥ ३ ॥

जह चेतन मध पुत्र और पुत्री, आप पिता बलकारो ।

यथायोग्य सब ही को देवे, अपणो नेज उजारो । जानी भेद ॥ ४ ॥

निन है तयो वो नॉहि पुराणो, जन्मे न मरणे हाथे ।

एकजा नई है न होत पुराणी, जोड मिलो हृद भारो । जानी भेद ॥ ५ ॥

ऐसो गृहस्थ क्रियो इण जोगी, फिर वो रह गथे क्यारो ।

जोगण दुमारी कटो कय परणी, वेद कहे यूँ चारो । जानी भेद ॥ ६ ॥

नहां जग बिनस्थो नही जग उपस्थो, अस्थेड चने डक धारो ।

करणु हार मौभूद लड़ो है, इण जग को आधारो । जानी भेद ॥ ७ ॥

मानकहे कवि गुणि जानी, मिट गथे भरम निहारो ।

रां न रविंयं खोल कर पूछो हम और घतावन न्यारो । जानी भेद ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राम कानड़ा । ताल दीपचर्दी ॥

है कहतों तो लाज भाने आवे । नही जो कहूँ तो कह्यो नही जावे ॥ १ ॥

है कहूँ तो पतो नहीं भाई । रूप रंग कछु खोजहूँ नॉई ।

याही तै कहतों लजन लगवे ॥ १ ॥

नही जो कहूँ तो जग मिट जावे । जो नहीं है तो पुण खेल रचावे ।

जिण रो आदि अन्त नहीं पावे ॥ २ ॥

है जद कहूँ म्हॉने न्यागे दिखावे । नहीं है कहूँ जद नहीं दरमावे ।

याक मध्य अब चुप ही रखावे ॥ ३ ॥

है नहीं है यह दोनों मिटावे । टगके बीच मे हम हँ यह पावे ।

अपने आपको क्या दरसावे ॥ ४ ॥

वेदव्याम भाष्य जद कीनो । नेत कहे मुख चुप कर लीनो ।

इण रे भरम मूँ जगत थही जावे ॥ ५ ॥

ता पर कृष्ण ऐसो सहायक आयो । सर्व भूतात्मक तत्त्व बतायो ।

जिण ने खोव्यां सूँ भरम मिट जावे ॥ ६ ॥

नहीं जो हांचे तो सर्वभूतात्म नाई । है तो जब नहीं है कइयो किम जाई ।

कृष्ण वाक्य कोई मिटे न मिटावे ॥ ७ ॥

देवनाथ गुरु घर अबतारा । भेटयो सकल दुःख दुन्दुह हमार ।

मान अभय पद धीच समावे ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

क्यूँ बन जाऊँ और रहूँ मैं उदासी । आठों पहर रूप अविनाशी ॥ टेर ॥

गुन वितु बन्धु छोड़ क्यों रेऊँ । इनमें दुःख क्या क्यों दुःख लेऊँ ।

सब ही तो यह मेरी राशी । क्यों बन ॥ १ ॥

घर घर भील काहे को मांगू । भिन्नक हो क्यों जग को जाँधूँ ।

गृहस्थ छूते हूँ शुब सन्यासी । क्यों बन ॥ २ ॥

मेरे कर्म करम तो मैं हूँ । मैं ही कलूँ ने फल मैं मेरा लेऊँ ।

काहे को रखूँ दिल दुविधा फाँसी । क्यों बन ॥ ३ ॥

सब में मैं और सब मेरे भाँही । बन पहाड़ में मैं खाली नाही ।

दृथा ही अरि मुन करे यह हाँसी । क्यों बन ॥ ४ ॥

मान कहे ऐसा योग मिलाथा । कृष्ण कृप कर्मयोगी बनाथा ।

स्वतः तेज हूँ सब में प्रकारी । क्यों बन ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज बाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

निश्च आनन्द रहूँ सदा, क्यों मैं रहूँ रे उदासी ।

कर्म काट कोयला किया, ऐसो सदुत्र सन्यासी जो ॥ टेर ॥

कर्म कलूँ और लागे नहीं, दुःख सुत्र व्यापे न मोई ।

सदुत्र समाधी में हुय रयो, आत्म सख होई ॥ ० ॥

प्यास प्रदूषण मेरे है नदी, है सो है निर मेरा ।

आणु जाण फिर कौन सो, सब मे मैं नित्र देण जो ॥ २ ॥

काम मची कर्ता बनूँ, फिर भी रड मैं अकरता ।

आप आपनो काम है, किनको दुःख भरता जी ॥ ३ ॥

बाहर दृढ'यो क्या ईमने, मिचमी घर मॉई ।

घर मे खोजे जिफे क्यों किये, पायो नित्र मॉई जी ॥ ४ ॥

कष्टू राम कय कृपा कहे, कष्टू नद्या महेरा ।

वेश्या मृत यो वे रेवमी, दिनको थाप भनेरा जी ॥ ५ ॥

कष्टू बदरी और डारका, रामेश्वर आगो ।

वेश्या क पति कौन है, पैसो हाथ हो जामो जी ॥ ६ ॥

कष्टू गंगा जमुना नद्यो, अडमठ नीरय धावे ।

मरु मरु की आश मे, घर को देण रमावे जी ॥ ७ ॥

गोकुल गयो मधुरा गयो, किरियो कोम चौतमी ।

जन्म मरण तो ना मिट्'यो, लागी जमडे री कॅपी जी ॥ ८ ॥

चार धाम अडमठ तीर्थो, मय में टाँट कूटाई ।

आगे मूँ आगे कठना रमा, आगो कियो ना मिटाई जी ॥ ९ ॥

मय में धरु हर म्बाविया, कर कर जन उपासी ।

देवनाथ नमरथ मिल्या, देग्यो ब्रह्म प्रकृमी जी ॥ १० ॥

मानसिह जद आनखयो, उडडी मन हॉसी ।

गडग कियो दुःख पावियो, मेरो मैं सुख रामी जी ॥ ११ ॥

बंकर वचन

॥ दोहा ॥

बंकर कहे मुन'भानमी, मत कर 'मैं' अहंकार ।

हरिद्विपकानु और रावण ये, गये थे उग मे मार ॥

मान वचन

॥ कवित्त ॥

भूलो रे भूलो वंक नाम को लजावे थार, बाँकी बात सोच क्यों तू बात करे गैली है। रावण और हरिण्यकशपु देह अभिमानी थे, उनकी और भेरी देख एक कहा शैली है। कृष्ण कणो "भैं हूँ मैं" उनको न मारे कोई, मैं तो वही कृष्णचन्द्र थी मत ले ली है। कहे राव मानसिंह बाँकि विचार देख, तैने जो कही यह तो बात रही पहली है ॥

॥ दोहा ॥

नाश करण सो ना कियो, कियो आपनो नाश ।
मानसिंह सुख बेच के, दुःख में कियो निवास ॥

॥ दोहा ॥

लेख लेख सबही कहे, पण लिखियां मिन्या न कोय ।
किण लिखिया किण वाचिया, याकी संशय भोय ॥

॥ कवित्त ॥

कैत-मतिमंद अन्ध ऐसी बनाय कहत, कुंदुम के अक्षर जो लिलाट में लिखाये हैं । पर काहू न वाच जोयो कहन ही कहन कहत, गण्य को चलान और बात कुछ बनाये हैं । अजब सी भाषा अटपटी न जात पदी, ऐसी कह कह करके पोल को छिपाये हैं । कहे राव मानसिंह लिखिया न पदिया कोऊ, पुरुपार्थ से करे जो कुछ भी बन जावे हैं ।

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

उड़ाये वन्ध सब दिल के, हुवे निर्वन्ध सब लायक ॥ टेर ॥

पूर्व कर्मों के बन्धन को, पद पद के हार दी हिम्मत ।

सुना कि भेट सकता है, मिटा के हुवे सब लायक ॥ ६ ॥

पंच के आसरे रहते, तो कुछ भी कर न सके थे ।
 दिखाया काम कर अपना, दिग्वा के हुवे सब लायक ॥ २ ॥
 मुना है वेद शास्त्रों में, पूरव कर्मों की कर ज्वाला ।
 जला के ग्वा कर दीया, जला के हुवे सब लायक ॥ ३ ॥
 लिखा है भान में अपने, पूर्व कर्मों का कुछ लेखन ।
 मिटाया धोखा मय येही, मिटा कर हुवे मय लायक ॥ ४ ॥
 इधर तो कर्म करते हैं, उधर वो पुर्ष होता है ।
 लिखेगे अब क्या होकर वो, मिटाकर हुवे सब लायक ॥ ५ ॥
 अभी जो चोरी करते हैं, करी और हो चुकी पूरव ।
 कंद क्यों आज जाता है, मिटा कर हुए सब लायक ॥ ६ ॥
 अंगर संशय रही है तो, देख लो आज ही करके ।
 इधर विष ग्वाय और भर जाय, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ७ ॥
 अंगर जो पुर्ष में होता, जहर विष का ही क्यों आता ।
 मिटाए धन्द सब दुःख के, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ८ ॥
 मान यह जान ले दिल में, लिखा नहीं लिखते हैं कहीं पै ।
 मर्ष में है प्रभू व्यापन, देख के हुवे सब लायक ॥ ९ ॥

ब'क वचन

॥ सबैया ॥

ब'क कहे नर राज मुनो तुम पूर्व काल में क्या मतलाई ।
 रोम ही रोम अब ननो मुन के फिर राम को अंकित कैसे लिखाई
 लिखे पढ़े तुम मिला करो तब भूठ है बात यह कैसे सुनाई ।
 हमको भरम फसावन हो यह जाली ने जाल जो कैसे बिछाई ॥

मान वचन

॥ सबैया ॥

मेरी संग करी तुमने कवि गहरे पानी में पैठ न न्हायो ।
 उपर अर्ध को देख लियो तै अंतर नाय कछु मरजायो ।

शस्त्र से चीरो नहीं हृदय नहीं रोम उखाड़ के रूप दिखायो ।
मान कहे कवि बंक सुनो उन बुद्धि-प्रकाश-से तेज दिखायो ॥

मान वचन

। कवित्त ॥

हृदय में संकुचित हतो कह्यो न प्रकट उन; आज सबे विस्मित जान
रगत सुनायो है । कह्यो हनुमान समर्थन कियो रामचन्द्र, बन्दर और
भरत आदि सबको समजायो है । पेसो मत जान बंक हनुमान चीर-पो हृदय,
धरे हृदय जो चीरत तो प्राण कस रहायो है । कहे राव मानसिंह सिंहन की
फटी संग, भारी तै जुलूम कीने भेड़ सो रहायो है ॥

शिक्षा और चेतावनी

॥ दोहा ॥

मान(१) मान सखी मान कहे, मान(२) करो मत कोय ।
इसी मान के बीच में, दीन्ह रोक्का(३) खोय ॥

॥ कुण्डलियां ॥

मान मान को मेट के, मान मान कुछ मान ।
मानसिंह मान्यो नहीं, तो होसी मोटी हान ।
होसी मोटी हान, खबर करलो घर मांही ।
कहाँ खोजणाने आय, खोज्यां कद बाहर पई ।
अजहू मन में मान ले, मत तू करंडी तान ।
मान मान को मेट के, मान मान कुछ मान ॥

॥ सबैया ॥

मान(४) में आधरुं चंरी वन्यो और मान-में-बैश्य और शूद्र कहायो ।
मान में आप जो ऊँचो चंर्यो और मान हि मान में नीचो गिरायो ।

१—समक, २—अभिमान; ३—आत्मानुभव, ४—देहाभिमान ।

जो इण मान को दूर करे तो मान(१) महान(२) को रूप लखाये ।
मान मिटने तो महान् भयो फिर मान (३) कहीं नृ गयो नहीं आये ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

अव अभिमान निवारो ग्यारी(५), अव अभिमान निवारो ॥ टेर ॥
मूठे ग्यान(५) होयगी स्वांटी, कोई भाव(६) न पूछे तिहारो ।
रुच की बड़ी थो गरज(७) करे हम(८), उतरे न मान(९) असारो । ग्यारी० ॥ १॥
मान मान में महान (१०) हारसी(११), पड़त जन्म में अगो ।
तात नृ अभिमान छोड़ दे, परम लहे पिव ग्यारो । ग्यारी० ॥ २ ॥
तेरे मान में मान(१२) उतरसी, बरले ममक विचारो ।
उतरो मान काम को नो हि, लागत अवगुन करो ॥ ग्यारी० ॥ ३ ॥

ननगुरु कृष्ण मान को पाये, अब धूल मान पै डारो ।
जानमिह निर्मान होय के, महान रूप निहारो । ग्यारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

मूठके मान(१३) तिहारो राधे(१४), मूठके मान तिहारो ए ॥ टेर ॥
मान मान में कही न मानी, काम विगाडथो मारो ए ।
अह तेरो मान काम क्या आवे, रुस(१५) गयो पिव ग्यारो ए । मूठके० ॥ १ ॥
जा दिन से नै मान न छोड़थो, मान उतर (१६) गयो सारो ॥ ।
माधव(१७)तो मधुर(१८) को धाये, क्या अब हाल हमारो(१९)ए । मूठके० ॥ २ ॥

१—निश्चय मान कर, २—आत्मा, ३—कविताकार, ४—मान की वृत्ति, ५—आत्म विमुखता, ६—सत्ता, ७—ममकार्य, ८—बुद्धि, ९—देहाभिमान, १०—आत्मा
११—विमुख होगी, १२—सतअहङ्कार, १३—दूसरों से पृथक् सत्त व्यक्तित्व का अभिमान, १४—वृत्ति, १५—आत्म विमुख हो गई, १६—अधोगति हो गई, १७—आत्मा, १८—अज्ञान अवस्था, १९—मन और इन्द्रिय आदि मूढम शरीर के अवयव ।

वहून जतन से पावे गिरधर(१), फिर वह काम त्रिगारो(२) ए।
 प्रेम(३) हार सो टूट-बो मजनी, विश्वर गयो रत्न(४) न्यारो ए। खटके० ॥ ३ ॥
 ऐसों मान कभी नहीं कीजे, देखो समझ विचारो ए।
 ऐसो पीव फेर कब मिलसी, हाल सुने को थारो ए। खटके० ॥ ४ ॥
 नाम तेरो घुपभानु सुता(५) है, तो पण रखो अन्धारो ए।
 प्रेम छोड़ तँ मान गहो क्यों, पड़ी अकल में छारो ए। खटके० ॥ ५ ॥
 वह तो बधत(६) मान में खोई, अब न मिले पिब प्यारो ए।
 अब पछताये क्या हो प्यारी, काम उलट गयो सारो ए। खटके० ॥ ६ ॥
 देवनाथ गुरु हाथ गहो जब, परगट कीन उजियारो ए।
 मान कहे अथ धूल मान पर, महान(७) मिल्यो हमारो ए। खटके० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

उठ सखी (=) क्या सोचे आली, घर आवे गिरधारी (६) रे । डेर ॥
 क्या वृन्दावन के वन इंदे, यहां ही लड़े विहारी रे।
 नीन्द(१०) उड़ाव मिलो गिरधर से, लेबहु झुबी निहारी रे । उठ सखी० ॥ १ ॥
 जय तू जाये (११) वह नहीं आवे, रद न्यारी की न्यारी रे।
 अब वह (१२) आये तू नहीं उठे, कैसी भूल तुम्हारी रे । उठ सखी० ॥ २ ॥
 या अबसर(१३) में जो नहीं मिलनी, विकट पन्व है भारी रे।
 और तो अबसर कोई न-दीले, फिर वहनी भवधारी (१४) रे । उठ सखी० ॥ ३ ॥
 इतना मान(१५) करे तू काहे, देखले समझ विचारी रे।

१-ज्ञान के साधनों से परमात्मा को जानना, २-देहाभिमान के कारण फिर से गिरावट, ३-सर्वात्म भाव, ४-आत्मानन्द, ५-आत्मा रूपी सूर्य की इच्छा रूप पुत्री, ६-ज्ञान प्राप्त करने की अवस्था, ७-आत्मा, ८-वृत्ति, ९-आत्मानन्द, १०-मोह निन्दा, ११-विषयों की तरफ दौड़ना, १२-आत्मज्ञान देने वाले सद्गुरु, १३-समुप्य जन्म, १४-बार बार जन्म मरण के चक्कर, १५-देहाभिमान ।

अपने पीव(१) मे मान क्या सजनी(२), पीव मिल्यो ब्रह्मचारी(३) रे ॥ ४ ॥
 नान मान मै महान(४) गमास, कोई बूझ न करे निहारी रे ।
 नान कहे री मान मुन्दरी, देवो मान निवारी रे ॥ चट सन्धी ० ॥ ४ ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

हरि तो जागे नै ही सोवे, जिखे सँ दुखे पावे । ॥ १ ॥

आप हू न जाने मूढ, भूल मे रहावे ॥ टेर ॥

अपनी नींद नांय खुले, घण्टा कहा बजावे ।

अपनी नीन्द उड़ाय दे तो, प्रगट दररा पावे । हरि० ॥ १ ॥

औरों दोष मुफ्त देत, अपनो छिपावे ।

विरवपति व्यापक मुद्रा, तुम्हे कहा जगावे । हृदि० ॥ २ ॥

अन्तरपट खोल जरा, दूर ना रहावे ।

मन के मन्वर मुन्दर श्याम, छाँ हँडण जावे । हरि० । ३ ॥

देवनाथ हाथ गहे, भूल को मिटावे ।

मान कहे मान जरा, भूल के विप ग्रावे । हरि० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

घूँघट(५) पट खोल राधे(६), मोहन(७) मन्दिर (८) आयो ॥ टेर ॥

बाहिर मन्दिर खोज हारी, कड्डु न थाह पायो ।

मन्दिर के पट(९) खुले पडे, फालो दे बुझायो । घूँघट पट० ॥ १ ॥

वृत्ति मेरी राधे बनी, धम सब भगायो ।

मान यूँ आनन्द भयो, कृष्ण को रिझायो । घूँघट पट० ॥ २ ॥

१—आत्मा, २—वृत्ति, ३—निलिप्त, ४—आत्मा का आनन्द, ५—अज्ञान का पड़दा, ६—वृत्ति, ७—आत्मा, ८—चट मे, ९—शरीर के नव दरवाजे ।

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती ताल दादरा ॥

बाह बाह प्रेम (१) तेरो रावे (२), बाह बाह प्रेम तेरो ॥ टेर ॥
 भलो प्रेम कीन थारी, पीव (३) अपना हेरो ।
 पिया पाय करो न जाय, मिट यो सब यह फेरो (४) । बाह बाह ॥ १ ॥
 राखे पिया को जतन करके, नैनन (५) के नेदो ।
 आठूँ पहर पास रहे, अन्तर्गत (६) हेरो । बाह बाह ॥ २ ॥
 मह (७) ब्रजनारी मिली थारी, पीव के संग (८) चेरों ।
 गान (९) रागिनी सुन्दर गावे, स्वर है चहुँ फेरो । बाह बाह ॥ ३ ॥
 दयनाथ हाथ गहो, मान चरखे चेरों ।
 दरसख दुःख दूर कीन, मित्यो कृष्ण (१०) मेरो । बाह बाह ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

लाज (११) तगो साज सजनी, साँबरे (१२) निभायो ॥ टेर ॥
 घखा दिखस लाज खोई, कछु न हाथ आयो ।
 सावय बिहारी (१३) मिले, दुःख यह मिटायो । लाज तखो ॥ १ ॥
 मैं तो जान्यो दूर मिलहि, बहुत निकट पायो ।
 भूल करके नहीं जोयो, पास में गमायो । लाज तखो ॥ २ ॥
 मैं कुमारी (१४) वह ब्रजचारी (१५), योग क्या मिलायो ।
 ऐसो योग (१६) अथके मिल्यो, जियण सुख पायो । लाज तखो ॥ ३ ॥

१—सर्वात्म भाव, २—वृत्ति, ३—आत्मा, ४—बार बार जन्म मरण, ५—
 बिचार रूपी नेत्र, ६—प्रपने में, ७—इन्द्रियों का समूह, ८—निजानन्द में
 मग्न होना, ९—सोहंशब्द, १०—अपना स्वरूप, ११—देहाभिमान की फजीहत
 में बचना, १२—आत्म स्थिति, १३—सर्वव्यापक आत्मा, १४—ब्रज की आदि
 दन्व, १५—निर्लिप्त, १६—एकत्व भाव में जुड़ना ।

बहुत बहुत जन्म धरे, यौवन (१) यों गुमायो ।

मिले मो व्यभिचारी(२) मिले, पीव ना बनायो । लाज तखो ० ॥ ४ ॥

देवनाथ हाथ गह, पीव को पछड़ायो ।

मान रुडे मान्यो मन, मान(३) को मिटायो । लाज तखो ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आमावरी । ताल कैरवा ॥

घट के कस्ट पट तोड़ो ०, म्हारी मुरना प्यारी; घट के कस्ट पट तोड़ो ० ॥ टेर

यह जो कपट पट दूर न कराहो, कडेव न मिजमी थारो जंझो (४) ० । म्हारी ० ॥ १

जो गिरधर सूँ मिलखो हुवेनो, पांच(५)पचीमो(६) सूँ सुख मोड़ो ० । म्हारी ० ॥ २

घट पट टूट मैदान होयकर, सब मिट जावेला फोड़ो ० । म्हारी ० ॥ ३ ॥

मान कहे घर मे लख गौविन्द, इन उन काहे को दौड़ो ० । म्हारी ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग श्याम-कल्याण । ताल तिताला ॥

काहे को मोती राधे (७) गोरी, अब घर खोल (८) ॥ टेर ॥

मूती तोय अब नीद (९) कैसे आवे, बाज रधो हे बोल(१) । काहे को ० ॥ १ ॥

हेरो थारो मान (११) ठिंगे क्यों, हँन गिरवर से शोन (१२) । काहे को ० ॥ २ ॥

यों सोते तेरो मान घटन हे, निकल जायगी पाल । काहे को ० ॥ ३ ॥

मानमिदू कहे प्रेम रम गेमो, क्यों नहीं पीवन अनोल । काहे को ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग श्याम-कल्याण । ताल तिताला ॥

गिरधारी थारे थारी तोपे, वारी घनश्याम ॥ टेर ॥

१—मान प्राप्त करने की अवस्था, २—भेद भाव के साम्प्रदायिक लोग, ३—देहा-
भिमान, ४—आत्मा, ५—विषय, ६—प्रकृतियों, ७—वृत्ति, ८—विचार का,
९—मोह-निद्रा, १०—आत्मज्ञानी पुरुषों के मरःउपदेश, ११—उपस्तिव का
अद्वय, १२—पकता का अनुभव वर ।

वारी बेद श्याम को वारी सुखदेव को, जिन लियो है तत्वज्ञान । गिर० ॥ १ ॥
 विश्वगिरी हम म्बाल और गोपी, तुम ही वचाये तमाम । गिरवारी० ॥ २ ॥
 ।।दि इन्द्रा वृत्ति राधिका, व्यसक सुन्दर श्याम । गिरवारी० ॥ ३ ॥
 ।।सिंह लाल भाव जो ऐसो, कर प्रमु में विश्राम । गिरवारी० ॥ ४ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग खम्माच । ताल दादरा ॥

गाग एरी जाग सली(१), सोचाँ पिया(२) जान(३) है ॥ डेर ॥
 ।।से मौके नाँय सोय, देगी रतन(४) हाथ लोय ।
 ।।छे ही मिर घुत के रोय, आठ नहीं पिया हाथ है । जाग एरी० ॥ १ ॥
 ।।दल दिवस चढ़(५) आय, चानी रही लिटाय(६) ।
 ।।पोल धीच रही सेसाय, उठ न अत्र तो राव(७) है । जाग एरी० ॥ २ ॥
 ।।जिनको अपने समके सैन(८), वो न तुम्हे-दंग चैन ।
 ।।सुफ्त में लगामें नैन (९), वे ठमके तुमथे खाव है । जाग एरी० ॥ ३ ॥
 ।।कहतं तुमको जगत त्याग, इनकी मत सील ज्ञान ।
 ।।खेलें ये तो स्वार्थ फाग, तू ही मारी जाव (१०) है । जाग एरी० ॥ ४ ॥
 ।।देवनाथ हाथ गहे, तेरो रूप तोत्र दहे ।
 ।।मान हुल कथों न लहे, जान जहर खाव है । जाग एरी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खम्माच । ताल दादरा ॥

वेसो हाथ (११) हाथ धीच, दार (१२) हू को खोय (१३) बैठे ।

भूल के भरम जाल, ज्योयो सय अपनो भाल (१४) ।

१-मन की वृत्ति, २-आत्मा, ३-आत्मज्ञान शून्य रहना, ४-उपर,
 ५-मनुष्य-जगत्, ६-मोह-निद्रा में पड़े रहना, ७-पहु-पकी आदि मूठ बोलि
 ८-सांप्रदायिक उपदेश देकर श्रमविभक्त बनने वाले स्वार्थी लोग, ९-प्रेम
 किया, १०-अज्ञान में जीवन सुभाना, ११-हँचतानी, १२-आत्मा, १३-
 भूल गये, १४-उपर ।

भूल गई घर को ख्याल (१) । यार हूँ को खोयः ॥ टेर ॥

जोवे जाको जोयो नाँय, भोती (२) मेरो पायो नाँय ।

विश्राम हूँ जो होयो नाँय । यार हूँ को खोय बैठे । देखो हाय हायः ॥ १ ॥

उन हे जग की हाय हाय, यामे सुणने देहे नाँय ।

उन हाय स्वार्थी यह । यार हूँ को खोय बैठे । देखो हाय हायः ॥ २ ॥

मान को अज्ञान दूर, होयो जव उगो सूर (३) ।

मिने जव अपनो नूर । यार हूँ को खोय बैठे । देखो हाय हायः ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज " लाल केस्य" की । नाल धीमा करवा ॥

म्हारी सुरत सुहावण जाग जाग अब जान हे ।

१ म्हारी सुरता प्यारी, पीयोजी बुलावे अमर (५) महल मे हे ॥ टेर ॥

सैयो (५) म्हारी नही जाखो म्हे प्रीतम करो गाथ हे । हे सैयो म्हारी,

किसडे मारग सू उण घर जावमाँ हे ॥ १ ॥

सुरता प्यारी अगम (६) निगम(७) हे प्रीतम करो देरा हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,

चाले तो ले चालू उण देरा मेँ हे ॥ २ ॥

सैयो म्हारी कितनो चलणो कोम एक दम कोम हे । हे सैयो म्हारी,

किती रे मजलाँ पर उण रो गाँव हे हे ॥ ३ ॥

सुरता प्यारी नहिँ कोई कहिये कोस एक दम कोस हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,

खोजे तो मिलमी आँ प्रीतम पाम मेँ हे ॥ ४ ॥

सैयो म्हारी दिन जाययो म्हे कैसे करमो प्रीत हे । हे सैयो म्हारी,

म्होने कोई ने मिलावे अमर पीव(८) सू हे ५ ॥

सुरता प्यारी चाले तो ले चालू म्हारे साथ हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,

पबदो तोड़ ने भेटो पीव सू हे ॥ ६ ॥

१—अज्ञान स्वरूप, २—विचार, ३—ज्ञान, ४—आत्म स्थिति, ५—

निश्चयात्मिका बुद्धि, ६-७—इन्द्रियाँ और मनकी पहुँच से परे, ८—आन्ध्र ।

सुरता प्यारी पहुँची पहुँची सन् गुरुजी रे पास हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
योली तो किवाही अमर महल री हे ॥ ७ ॥

सैय्यो म्हारी मिलिया मिलिया देवनाथ गुरुदेव हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
मान जो निरखे रे अरणे पीव ने हे ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज " लाल केस्या " की । ताल धीमा कैरवा ॥

सुरता प्यारी मत डरपो थे अरणे मन नाँय हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
आवो ती आवो थे अमर (१) महल में हे ॥ १ ॥

लाल केस्या [२] थॉसू म्हारे कडो कडरी आ प्रीत रे । हो म्हारा लाल केस्या,
साधुडॉ (६) साथे थे इण घर आबीया हो ॥ १ ॥

सुरता प्यारी थारे म्हारे घणा दिना सूँ प्रीत हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
तू ही तो छोड़ने मिल गई जगत में हे ॥ २ ॥

लाल केस्या न्हे तो थाने सुपन जागो नाय रे । हो म्हारा लाल केस्या,
किसकी जाग में दोई आपों मिल्या हो ॥ ३ ॥

सुरता प्यारी प्रांत आपणी आज काल री नाँय हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
अनन्ता जन्माँ सूँ थारे साथ में हे ॥ ४ ॥

लाल केस्या दल्या साथ सूँ आपां कडो किय कान रे । हो म्हारा लाल केस्या,
कियाने छुड़या आपों ने संग सूँ हो ॥ ५ ॥

सुरता प्यारी कियो कियो थे विषय भोग सूँ प्यार हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
इसहे रे शरभ सूँ थाने छोड़ दी हे ॥ ६ ॥

लाल केस्या अथ मैं थॉ सूँ प्रीत लगाऊँ नाँय रे । हो म्हारा लाल केस्या,
प्रीत करूँ ने फिर थे छोड़ दो हो ॥ ७ ॥

सुरता प्यारी आव आव अब थॉ ने छोड़ूँ नाँय हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
आदि प्रीत ने पाखी जोड़सो हे ॥ ८ ॥

लाल केरिया कुण् अब थोरों मानेला इतवार रे । हो म्हारा लाल केरिया;
पुरुषों तू प्रीत में करती डर रही हो ॥ ६ ॥

सुरता प्यारी पेड़ा म्होंने पुरुष मूढ मत ज्ञाण हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
में ही तों रचायो सारे जगत न हे ॥ १० ॥

लाल केरिया थोरों म्होंने नहीं आवे विश्वास रे । हो म्हारा लाल केरिया,
पहला छोड़ी व्यूँ फिर म्होंने छोड़ दो हो ॥ ११ ॥

सुरता प्यारी नहीं में छोड़ी फिर भी छोड़ूँ नोंय हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
तू ही नें अलूजी जाय ने जगत में हे ॥ १२ ॥

लाल केरिया जद म्होंने धारो होवे इतवार रे । हो म्हारा लाल केरिया,
सन्गुरु आवे ने देवे साकरा(१) हो ॥ १३ ॥

सुरता प्यारी सन्गुरु मिल गया आय ने म्हारे मोंय हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
म्यारा तो नहीं फिर किरण री माकरा हे ॥ १४ ॥

लाल केरिया कौई है आ थारी आदू जात रे । हो म्हारा लाल केरिया;
किमडो रे गडों रा थे हो राजकी हो ॥ १५ ॥

सुरता प्यारी आदि अनादि ब्रह्म है म्हारी जात हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
अखिल ब्रह्मण्ड रा म्हे तो राजकी हे ॥ १६ ॥

लाल केरिया कुण् है थारा माच बाप भाई बन्धु रे । हो म्हारा लाल केरिया,
किमडो म्याती रा कहीजो सारसा(२) हो ॥ १७ ॥

सुरता प्यारी माच बाप सब जग है भाई बन्धु हे । हे म्हारी सुरता प्यारी,
अखिल जगत तो म्हारी म्यात है हे ॥ १८ ॥

लाल केरिया इसडो वर म्हारे मन में दाय न आवे रे । हो म्हारा लाल केरिया;
जाति पांति सूँ हीण ने क्या करों हो ॥ १९ ॥

सुरता प्यारी विश्व जिणे है सगली म्हारी जात हे । हे म्हारी सुरता प्यारी;

आवे तो मिलाऊँ म्हारी जात में हे ॥ २० ॥

लाल केसिया साच कहो म्हांने सार सार समभाव रे। हो म्हारा लाल केसिया;
थारी बोली में मैं समझी नहीं हो ॥ २१ ॥

सुरता प्यारी आत्म है ओ सवी जगत रे माँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
आत्म तो केवे सो म्हांने जाणले हे ॥ २२ ॥

सुरता प्यारी भेद वतायो देवनाथ मस्तान हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
ओई रे अमरपुर रो महल है हे ॥ २३ ॥

लाल केसिया जाणी जाणी असल आपरी जात रे। हो म्हारा लाल केसिया;
बाहर जायत ने घर में आ, मिल्या हो ॥ २४ ॥

लाल केसिया अब नहीं है थाने बाहर हूँटण रो काम रे। हो म्हारा लाल केसिया;
घर में मिलिया अब बाहिर कुण फिरे हो ॥ २५ ॥

सन्तो म्हारा छोडो छोडो जग री मूठ दुकान (१) रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
सूको (२) ने ओ ब्रह्म थारो फेंक दो हो ॥ २६ ॥

सन्तो म्हारा लाल केसियो प्राणों रो आधार रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
नीरस ब्रह्म थारो अलगो राखजो हो ॥ २७ ॥

सन्तो म्हारा काल केसियो रसमय (३) जगरो आधार रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
सूके लकड़े रो म्हे तो क्या करुँ हो ॥ २८ ॥

सन्तो म्हारा नहीं ओ भावे लकड़ (४) सो वेदान्त रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
म्हारो तो ब्रह्म ओ जग में खेल रयो हो ॥ २९ ॥

सन्तो म्हारा मिलिया मिलिया देवनाथ मस्तान (५) रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
जिण ने मिलाया असली पीव ने हो ॥ ३० ॥

१—वाचक ब्रह्म की सम्प्रदाय, २—जगत से अलग निगुंण, ३—सगुण अथवा
सब रसों और गुणों का भोक्ता पुरुष, ४—सूखा, नीरस जगत का त्याग कराने
वाला, ५—आत्मघानी।

सन्तो म्द्वारा गावे गावे मानमिह राहठौड़ (१) रे । कौट मन्तो म्द्वारा,
राह (२) ने लम्बिया (३) म्हे 'रद्दाठौड़ी' (४) भगा हो ॥ ३१ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज " लाल केस्या " की । ताल थीमा कैरवा ॥

लाल (५) केस्या ममभ ममभ नृ अपणो मन रे मोंग रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, ममभे जिकेट नर मूरवों रे ॥ १ ॥

लाल केस्या अणसमभयो ने होसी कष्ट अपार रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, ममभया जिंके तो पार नो जायमी रे ॥ २ ॥

लाल केस्या अदस्था मो नर रह गया अधविच भोंग रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, अपखे तो भीधे मग सूँ चालणो रे ॥ ३ ॥

लाल केस्या समभे ज्याँ ने देवा मही समभाय रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, नहीं तो ममभे ज्याने अलग जाणुदे रे । ४ ॥

लाल केस्या जब तक रहणो इण जगड़े रे माथ रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, चाले जिंको ने मंग ले चालणो रे ॥ ५ ॥

लाल केस्या हर दम रहणो मन मे लाल गुलाल रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, काले ने करमों रे नेडो न जावणो रे ॥ ६ ॥

लाल केस्या ब्राह्मण लत्री वैश्य शूद्र कोई होय रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, आवे जिंको ने तो करलो आपम्य रे ॥ ७ ॥

लाल केस्या करदों करदों असल गाय रो मिह रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, शस्त्र बाँधे रे जम रे वारणो रे ॥ ८ ॥

लाल केस्या कदे न आवे जम दूतों सूँ हार रे ।

हो म्द्वारा लाल केस्या, शीश उतार ने लड़े चौक में रे ॥ ९ ॥

१—राठौड़ राजपूत अथवा सत्य मारग को जानने वाला, २—सत्य मारग
३—जाना, ४—सत्य मारग में स्थित, ५—जिघामु मन ।

लाल केस्य लडिया लडिया जनक और शुक्रदेव रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, मोरल लडिया ने लडिया भरथरी रे ॥ ६ ॥

लाल केस्य लडिया ल डिया कचोर और रविदास रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, पीपे मारयो रे पैजो मोरयो रे ॥ १० ॥

लाल केस्य आई आई अक्के अपणी वार रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, अक्के हारया तो फिर नहीं जीतणों रे ॥ ११ ॥

लाल केस्य ऊमा ऊमा आपां मोरु रे द्वार रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, अक्के चूका तो फिर कव आवसाँ रे ॥ १२ ॥

लाल केस्य तोड़ो तोड़ो हृद चेहव रो सोइ रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, चढ ने शिखर गढ ने भेल दो रे ॥ १३ ॥

लाल केस्य फाताँ फाताँ हुई मोकली वार रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, अक्के आया रे असलो मोरवे रे ॥ १४ ॥

लाल केस्य काम क्रोध मद लोभ ने राखो त्यार रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, ज्ञान होली में द्रवने वाल दो रे ॥ १५ ॥

लाल केस्य ऊगे ऊगे राम समता रो सुर रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, जिणने जाणो होली परभाव सो रे ॥ १६ ॥

लाल केस्य पायो पायो देवनाथ सँ ज्ञान रे ।

हो म्हाय लाल केस्य, नाथ न मिलता तो यूँ ही रह जावता रे ॥ १७ ॥

लाल केस्य मानसिह यूँ हरदम ल ल सुरंग रे ।

हो म्हारा लाल केस्य, फिर कोई आवे तो करलूँ म्हाँ जिसा रे ॥ १८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाही " गूजर " की । लाल केस्य ॥

हाँ ए सुरता सुताँ सरसी नाँय, अत्र उठ जाग ए ॥ देर ॥

सुती रही तू जन्म अनेक । अब तो कीजे समस्त विवेक ।

हाँ ए सुरता भरम कूप ने त्याग; अब उठ जागो ए ॥ १ ॥

मनुष्य देह मो यद् आनन्द । इनमे रह्यो होय निर्बन्ध ।
 हौं ए सुरता बन्ध ने तोड़ वगाय, अब उठ० ॥ २ ॥
 बहुत जन्म तैं लीजी नीद । अब क्या सोवे मुद मति हीन ।
 हौं ए सुरता भोज अमोल ना गुमाय, अब उठ० ॥ ३ ॥
 देवनाथ मन् गुरु समझाय । मनुष्य तन के मोरखे आय ।
 हौं ए सुरता भाग हीन मोई लाय, अब उठ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज भारवाड़ी “गूजर की । ताल करवा ॥

हौं ए सुरता भल भल जानी(१) तू नो आन, पिया भल पायो ए ॥ देर ॥
 हौं ए सुरता भेद भय ने भाग, पिया भल पायो ए ।
 हौं ए सुरता रही रे भलाई तू जान, पिया भल पायो ए ॥ १ ॥
 हौं ए सुरता प्रेम पियालो मस्तान, पिया भल पायो ए ।
 हौं ए सुरता पीने ही पिया जियो जान, पिया भल पायो ए ॥ २ ॥
 हौं ए सुरता तांज्यो मोज्यो द्वैत विचार पिया भल पायो ए ।
 हौं ए सुरता उरउगे मझ विचार, पिया भल पायो ए ॥ ३ ॥
 हौं ए सुरता दूर गयो द्वै अभिमान, पिया भल पायो ए ।
 हौं ए सुरता जद भयो उर निज ज्ञान, पिया भल पायो ए ॥ ४ ॥
 हौं ए सुरता गावे नृपति यू मान, पिया भल पायो ए ।
 हौं ए सुरता दिवो अमो(२) खूब ज्ञान, पिया भल पायो ए ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भारवाड़ी “गूजर” की । ताल करवा ॥

हौं ए सुरता निज आत्म थारो पीव, ज्यो ने क्यूं भूली ए ॥ देर ॥
 हौं ए सुरता गावे ज्योने वेद पुराण, ज्यो ने क्यूं भूली ए ।

- हॉ ए सुरता रट रथो गुखीजन महान, ज्यॉ ने क्यूँ भूली ए ॥ १ ॥
 हॉ ए सुरता अरघ(१) उरघ(२) विच जोय, ज्यॉने क्यूँ भूली ए ।
 हॉ ए सुरता मन भमता ने परी खोय, ज्यॉने क्यूँ भूली ए ॥ २ ॥
 हॉ ए सुरता अष्ट कमल(३) को छेद; ज्यॉने क्यूँ भूली ए ।
 हॉ ए सुरता निज मन करले भेद, यॉने क्यूँ भूली ए ॥ ३ ॥
 हॉ ए सुरता बाहर क्यूँ भटकाय, ज्यॉने क्यूँ भूली ए ।
 हॉ ए सुरता घर में ओलख मिल जाय, ज्यॉने क्यूँ भूली ए ॥ ४ ॥
 हॉ ए सुरता दिशे सन्गुरु ध्यालो पाय, ज्यॉने क्यूँ भूली ए ।
 हॉ ए सुरता सिर क्यूँ रहो उतकाय; ज्यॉने क्यूँ भूली ए ॥ ५ ॥
 हॉ ए सुरता मिल्या गुरुदेव मस्तान; ज्यॉने क्यूँ भूली ए ।
 हॉ ए सुरता निमय ओजख पद मान; ज्यॉने क्यूँ भूली ए ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राम सारम, तर्ज “बीजा सोरठ” की । ताल दीपचन्दी ॥

- भई है सुरता धावरी(४) रे इणने निज पिया(५) सूक्त नाँय ॥ डेर ॥
 मद(६) में छकी(७) सुरता सुन्दरी रे बाला निज पिया दिशे बिसराय ।
 आवरॉ ने पूछत फिरे रे न्हारो कोईयक पीव बताय । भई है ० ॥ १ ॥
 एक अविद्या छाकटी(८) रे इणने बातॉ(९) में लिबी बिलमाय ।
 पाँच(१०) पचीसॉ(११) रे मेल सूँ रे आतो छक रही मदड़े रे माँय । भई है ० ॥ २ ॥
 मददो विपय रो पावियो रे इणने दिशे रे होरा बिसराय ।
 मीत करी मनहें तखी आतो दिन दिन कर्म कमाय । भई है ० ॥ ३ ॥
 मनवे रे सँग सैलॉ(१२) करे रे अतां पड़ी पल ठहरे नाँय ।
 इण साकट(१३) रे पाने(१४) पड़ी रे अबनो दिशे है रतन(१५) जुटाय । भई ० ॥ ४ ॥

१-२—ऊपर, नीचे सर्वत्र, ३—अष्ट प्रचर को प्रकृति, ४—मोहित, ५—
 आत्मा, ६—विषय, ७—भरी, ८—चालाक, ९—रोचक, अर्थान्तक वचने, १०—
 इन्द्रियों, ११—प्रकृतियों, १२—दौड़ती रटे, १३—वदमाश, १४—सज्ज किधा,
 १५—उत्तर ।

जावन (१) थकौं तो मुरता नहीं लखी रे आतो रही रे विषय में लिपटाय ।
 पित्र (२) हो गया जोजरा (३) रे इखने तोई मन छोड़े नाँय । भई है० ॥ ४ ॥
 मरे जनमे और फिर मरे र आबों भटक भटक दुख पाय ।
 नागट रे पाने पड़ी रे इखने मुखजो कटा सूँ आय । भई है० ॥ ५ ॥
 जन्म अतर्को भोगिया रे इखने कजडूँ तृप्ती नहि पाय ।
 किंगसू ही कटकी ना रहे रे आनो दौड़ी विषय बिच जाय । भई है० ॥ ७ ॥
 शान पिता ने छोड़ियो उणनो चारों भात (४) छिदराय ।
 दिया उर मे है नहीं रे इखने किण विध श्याम मिलाय । भई है० ॥ ८ ॥
 मन गुहू मिलिया मूरमा रे इखने कर ललकार बुलाय ।
 बात (५) कहे दौरी लगे इणगे घान समक नहीं आय । भई है० ॥ ९ ॥
 भिन्न भिन्न कर समका राख रे इखने कई परमाण सुणाय ।
 लाय जगन किया मान रे रे धौं तो लिखी है मुरन समकाय । भई है० ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ तज भारवाडी " रुण भुणिये " की । तान् इंगरा ॥

प्यारी(६) सूतों सरसी नाँय, नींद(७) उड़ाव परी ।
 प्यारी सूतों दूर(८) रह जाय, नींद उड़ाव परी ॥ १ ॥
 प्यारी रही घणा दिन नींद में तैं मानी नहीं ।
 तू अचे ही समक मन मोंय, नीन्द उड़ाव परी ॥ २ ॥
 प्यारी एक बार तने क्या कहेँ कहेँ पड़ी घड़ी ।
 ओ वरत अमोख ॥ जाय, नींद उड़ाव परी ॥ ३ ॥
 प्यारी अर्थे विष खाने वावरी तज अमर(९) उड़ी ।
 खाने नेन अमर होय जाय, नींद उड़ाव परी ॥ ४ ॥

प्यारी आँख (१) खोल के देख जरा क्या खदी खड़ी ।
 तू प्रीतम रूप समाय, नीन्द उड़ाव परी ॥ ४ ॥
 प्यारी देवनाथ को रुझ कियो नित हरी हरी ।
 तू कबहुँ सूखे नाँय, नीन्द उड़ाव परी ॥ ५ ॥
 प्यारी मान कहे री वाचरी अभिमान भरी ।
 तने फिर क्रोड़ मिलनी नाँय, नीन्द उड़ाव परी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारघाड़ी “रुख मुखिये” की । ताल कैंश ॥

आओ आओ शहरी सुरता नार; पिया से मिल रह्यो ।
 आव करो चौगयो प्यार; पिया से मिल रह्यो ॥ १ ॥
 प्यारी स्वाधियों (२) दे फुन्द में अब क्यों देख्यो ।
 धौने वूर करो दिरकार (३); पिया से मिल ॥ २ ॥
 प्यारी मारग मिलियो आछो (४) उचड़ (५) क्यों बह्यो ।
 क्यों बहो काँटा री धार; पिया से मिल ॥ ३ ॥
 प्यारी ओ दुःलड़ी स्वरथ तणो सिर क्यों सह्यो ।
 अथ तुरत जतारो भार; पिया से मिल ॥ ४ ॥
 प्यारी पन्धापन्ध री पोल में सिर क्यों देख्यो ।
 प्यारी क्यों डूचे समथार; पिया से मिल ॥ ५ ॥
 प्यारी भलो समानम नाध रो सो क्या कह्यो ।
 ए तो मिन्या कृपण अवतार; पिया से ॥ ६ ॥
 प्यारी मान कहे एरी मान परी चित्त में लेख्यो ।
 फिर मरे व दूनी वार; पिया से ॥ ७ ॥

१—विचार रूपी नेत्र, २—भेदवादी साम्प्रदायिक लोग, ३—विकार;
 ४—मान मान, ५—साम्प्रदायिक अन्वविश्वास ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "रुण भुणिये" की । ताल कैम्बा ॥

प्यारी(१) अत्र तो पीहर(२) ने त्याग, चाचो मार्ग्ये(३) ॥ टेर ॥

प्रेम प्याला यहाँ ना मिले; मिले सासरिये ।

प्यारी धर उर में बैराग, चालो सासरिये ॥ १ ॥

वैच ताण में बहुत रुथा, चालो सासरिये ।

उठे बबहु न होय दुहाग(४); चालो सामरिये ॥ २ ॥

पर पुरुषों(५) प्रीति नाँय करो, चालो सामरिये ।

उठे होये अमर मुहाग(६); चालो सामरिये ॥ ३ ॥

करम करम नू क्या रोवे; चालो सामरिये ।

अत्र भेट करम रो दाग(७), च लो सासरिये ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु ज्ञान मिल्या; चालो सासरिये ।

अत्र जगे मान के भाग, चालो सामरिये ॥ ५ ॥

। गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "रुण भुणिये" की । ताल कैम्बा ॥

मन भावे मदनगोपाल, गिरधर बनवारी ॥ टेर ॥

मद्य धन मोंये खेल रयो ओ बनवारी । ओ कर रयो खेल अपार, गि० ॥ १ ॥

अन्धविद्यामी मुल न जाणे बनवारी । ओ मद्यको हूँ करतार, गि० ॥ २ ॥

विश्व गिरि कर पै धरयो टन बनवारी । ओ गिज रयो संभार, गि० ॥ ३ ॥

मुल भरम मुँ न्यारो रटे आ बनवारी । ओ मद्य मे मेरो लाल, गि० ॥ ४ ॥

। मद्य धमीचा वाय रयो ओ बनवारी । ज्या मे क्यार मुन्या अपार, गि० ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु माँची धष्टी मिलो बनवारी । अत्र मान एक आधार, गि० ॥ ६ ॥

१—मन की वृत्ति, २—देहाध्याय, ३—प्राणज्ञान, ४—दुःख, ५—भेदभा-

रु कर्मवादी लोग, ६—निश्चयानन्द, ७—धर्मों का खेल ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की । ताल कैरवा ॥

मान मान म्हारी सुरत सुहानख मती विपय विच भूज,

उण घर चाल परी ॥ टेर ॥

तीन लोक में किरी अटकती किय ही न तोय मिलायो हरी ।

जो तू म्हारे कइयो करले ती जेज न एक बड़ो । उण घर चाल परी ॥ १ ॥

जिण जिण पास गई तू सुरता, उण उण यों में कुवथ करी ।

म्हारे साथ अग्र आवे तो आँने पाऊँ अमर जड़ी । उण घर चाल परी ॥ २ ॥

नहीं तो स.चा सत्गुरु मिलिया, नहीं वृत्ति नारी सुधरो ।

तापयों बिना कैसे भारग पावे, फिर रही गली गली । उण घर चाल परी ॥ ३ ॥

खान विपय रो पान विपय रो, चाल विपय रो मान परी ।

सत्गुरु बिना अत्र कौन छुड़ावे, उलटीबँधी पड़ी । उण घर चाल परी ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु सज्जन मिलिया, बात सुधार दिवी विगरी ।

मान रुड़े कोई आचो तो तारुँ, देऊँ प्रेम डगरी । उण घर चाल परी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

.. ॥ राग सारंग-मलार तर्ज "बाणी" की । ताल दीपचन्दी ॥

चाल सुवागण सुन्दरी(१), आँने पीव(२) बुलावे ।

रही तू घणा दिन वाप(३) रे, अत्र क्यूँ रथान गुमावे जी ॥ टेर ॥

चंचल चपलता ने छोड़ दे, नार थय आ तू सैखी ।

फटु(४) बचनों ने परहरो, होय तू कोकिल(५) वैशी की । चाल० ॥ १ ॥

असली आनन्द उण देश(६) में, अठे थारो प्रीतम प्यारो ।

पोहर(७) रयाँ सूँ मिलसी नहीं, रहसी यों सूँ न्यारो जी । चाल० ॥ २ ॥

चेहद मन्नल होय रया; तू क्योँ आनन्द खोवे ।

१—मन की वृत्ति, २—आत्मा, ३—अज्ञान में, ४—राग-द्वेष, ५—प्रेम में पगी हुई, ६—आत्म-ज्ञान, ७—अनार्य की उपाय ।

चाज पीयात्री री मैत्र(१) मे, क्यों तू अकेली(२) सोवे जी । चाल० ॥ ३ ॥
देवनाथ मिलिषा पारखी, धोने निज परखावे(३) ।

पर एण रो तो हिम्मत नहीं, परख्योड़ा(४) नोंध उठावे जी । चाल० ॥ ४ ॥
म न रुड़े रो मान वावरी, फेर मौको नहो आवे ।

आयाइो अतर जो चूकसी, भवजज गहरो कहावे जी । चाल० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सजनी(५) ए प्यारी समता रो प्यालो पीव, त्रिके सूँ थों ने आनन्द आवे ह ॥ टेर
झै न बिहार घणा दिन पीयो ए । सजनी ए थोरो दुःख पापो जामूँ जीव,
करमों सूँ कोई न छुटावे हे ॥ १ ॥

हरप शोक सब सम कर जाणो ए । सजनी ए म्हारो जइ मित्रमी थोरो पीव(६),
विया बीच गहज ममावे हे ॥ २ ॥

थारो तहर(७) तन्व मे नू हे ए । सजनी ए म्हारी होय जावो तन्व के रूप,
काल फिर तोंध ममावे हे ॥ ३ ॥

नारी न पुरुष पुरुष नहीं नारी ए । सजनी ए म्हारी देह तयो तज भाव,
एक रस मधने खेलावे हे ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु म.प.(८) रसिया ए । सजनी ए म्हारी मान के मन घणो चाव,
गान ने दूर हटावे हे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सईयो ए म्हारी चालो चालो जमना रे तीर, माधवजी सूँ प्रेम लगास्यो ए ॥ टेर ॥
गम केरी मोहुल सुरधनी मथुय ए । सईयो ए म्हारी खलत श्याम शरीर,
निकों रो धोने दरम दिवास्यो ए ॥ १ ॥

१—पुरुष का ज्ञान, २—पुरुषता का भाव, ३—अनुभव करावे, ४—
आरतानुभव की ज्ञानी पुरुषों के वचन, ५—मन की वृत्ति, ६—आत्मा, ७—आत्मा
८—आत्मशास्त्रकीमद पिलाने वाला ।

मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ग्वाञ्जिया ए । सईयाँ ए म्हारी श्याम हरे भव पीए,
 जिक्का थाने थैल सुखास्योँ ए ॥ २ ॥
 जरणा केरी जमना नदी है ए । सईयाँ ए म्हारी; बेवे बेवे समता रो नीर,
 माधव सङ्ग हिल मिल न्हास्था ए ॥ ३ ॥
 सन्गुरु चतुर मिल्या मोवे पेसा ए । सईयाँ ए म्हारी पल्लट पल्लट करौं वात,
 ज्ञान रत माल उडास्योँ ए ॥ ४ ॥
 मान केवे म्हारो कहणो मानो ए । सईयाँ ए म्हारी पाऊँ मैं ब्रह्म रस खीर,
 पोत से पृथक बचास्योँ ए ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज “ निहालदे ” की । ताल दीपचन्दी ॥

सुरता गोरी अब तो जगाले (१) थारे पीव (२) ने हो राज ॥ टेर ॥
 क्या जोवे सुरता सुन्दरी ए, थारो पिया सूतो (३) वर माँय ।
 तू तो करे बाहर भटकती ए, थारे कहो किम निजराँ आय ।
 कहो किम निजराँ आय; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ १ ॥
 पन्थापन्थ री झोड़ में ए, रही निज पिवा ने भूज ।
 आनन्द हिन्बोरो छोड़ियो ए, दुःख भूजे रही भूज ।
 दुःख भूजे रही भूल; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ २ ॥
 जो तू चाहे ब्रह्म भूतखो ए, तो साचो सन्गुरु भेट ।
 पन्थापन्थी थाने मारसी ए, प कदे न ले जावे थाने ठेट ।
 कदे न ले जावे थाने ठेट; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ ३ ॥
 देवनाथ निगस हँ ए, म्हारो कर पकड़थो मजबूत ।
 मान बुरी नहीं तो होवती ए, पकड़ लेता जमदूत (४) ।
 पकड़ लेता जमदूत, सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ ४ ॥

१—जानले, २—आत्मा, ३—अदृश्य, ४—कर्मों के बन्धन ।

चाल पीयाजी गी मैत्र(१) में, क्यों तू अकेली(२) मोदे जी । चाल० ॥ ३ ॥
देवनाथ मिलिग पाग्वी, थोने निज परभावे(३) ।

परबण रो नो टिम्पन नदी, परखोड़ा(४) नॉथ उठावे जी । चाल० ॥ ४ ॥

म'त रुहे रो मान बावरी, फेर मौंको नही आवे ।

आयोड़ो अस्मर जो चूरुसी, भवजल गहरो कहावे जी । चाल० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राम मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सजनी(५) ए शारी ममता रो प्थानो पीव, जिके सूँ थों ने आनन्द आवे हे ॥ डेर
द्वैत विहार घणा दिन पीयो ए । सजनी ए थारो दु ख पायो जासूँ जीव,
करमों सूँ कोई न छुडावे हे ॥ १ ॥

हरप शोक सय मम कर जाणो ए । सजनी ए म्हारो जद मिजनी थारो पीव(६),
रिया बीच सहज ममावे हे ॥ २ ॥

थारो तन्व(७) तन्व मे नू है ए । सजनी ए म्हारी होय आयो तन्व के रूप,
काल फिर नॉथ सतावे हे ॥ ३ ॥

नारी न पुरुष पुरुष नहीं नारी ए । सजनी ए म्हारी देह तखो तज भाव,
एक रस सभने खेलावे हे ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु म'धः(८) रसिया ए । सजनी ए म्हारी मान के मन घणो चाव,
मान ने दूर हटावे हे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राम मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सईयो ए म्हारी चालो चालो जमना रे तीर, माधवजी सूँ प्रेम लगास्यो ए ॥ डेर ॥
गम फेरी गोठुल मुरघनी मधुण ए । सईयो ए म्हारी खलत श्याम रारीए,
त्रिकों रो थोने दास दिखास्यो ए ॥ १ ॥

१—एकता का ज्ञान, २—पृथक्ता का भाव, ३—अनुभव करावे, ४—
आत्मानुमती ज्ञानी पुरुषों के वचन, ५—मन की वृत्ति, ६—आत्मा, ७—आत्मा
८—आत्मज्ञानरूपीमद् पिलाने वाला ।

मन बुद्धि चित्त अहङ्कार म्वाङ्गिया ए । सईयाँ ए म्हारी श्याम हरे भव पीर,
जिकरी थाने बैण सुखास्वाँ ए ॥ २ ॥

जरणा केरी जमना नदी है ए । सईयाँ ए म्हारी, बेवे बेवे समता रो नीर,
साधव सङ्ग हिल मिल न्हास्वा ए ॥ ३ ॥

सत्गुरु चतुर मिल्या मोये ऐसा ए । सईयाँ ए म्हारी पलट पलट कराँ वात,
ज्ञान रस माल उडास्वाँ ए ॥ ४ ॥

मान केवे म्हारो कहणो मानो ए । सईयाँ ए म्हारी पाऊँ मैं ब्रह्म रस खीर,
पोल से पृथक बचास्वाँ ए ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज “ निहालदे ” की । ताल दीपचन्दी ॥

सुरता गोरी अब तो जगाले(१) थारे पीव(२) ने हो राज ॥ डेर ॥

कना जोवे सुरता सुन्दरी ए, थारो पिवा सूतो(३) घर साँय ।

तू तो किये बाहर भटकती ए, थारे कहो किम निजराँ आय ।

कहो किम निजराँ आय; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ १ ॥

पन्थापन्थ री भौड़ में ए, रही निज पिवा ने भूल ।

आनन्द हिन्दोरो छोड़ियो ए, दुःख भूजे रही भूज ।

दुःख भूजे रही भूल; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ २ ॥

जो तू चाहे ब्रह्म भूतणो ए, तो साचो सत्गुरु भेट ।

पन्थापन्थी थाने मारसी ए, ए कदे न ले जावे थाने ठेठ ।

कदे न ले जावे थाने ठेठ; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ ३ ॥

देवनाथ निदरत है ए, म्हारो कर पकड़यो मजवूत ।

मान बुरी नहीं तो होयती ए, पकड़ लेता जमदूत(४) ।

पकड़ लेता जमदूत, सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ ४ ॥

१—जगाले, २—आत्मा, ३—अदृश्य, ४—कर्मों के बन्धन ।

गाधो श्कारी भैया, ब्रह्म आनन्द गुण गाधो रे ॥ टेर ॥
 मन सुख पावे, प्रीतम आवे, गले (१) लगावे,
 जन्म मरण मूँ दूट जावो रे । आवो श्कारी० ॥ १ ॥
 सब मे बोले, हँसता (२) बोले, पढ़े ने ग्योने,
 गुरुमुख होय मिल जावो रे । आवो श्कारी० ॥ २ ॥
 पिथा रमीली, अन्नव रँगोली, सब गुण शीली,
 सबही के भोय ममावो रे । आवो श्कारी० ॥ ३ ॥
 भाटी (३) गावो, राम रिझावो, पिथा मिलावो,
 अजर अमर हुय जावो रे । आवो श्कारी० ॥ ४ ॥
 वेवहनाधा, पनइयो कृधा, कियो सनाथा (५),
 राग्या बहजाना गुण गावो रे । आवो श्कारी० ॥ ५ ॥
 मान नवेली (५), रही न अकेली (६), निन अलवेली (७),
 अमर सुहाग (८) सजावो रे । आवो श्कारी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी माली के डंके" की । तल करवा ॥

रे मन मेरा, आतम तत्त्व पछायो रे ।
 जिण मूँ, मिट जाय आणो ने जाणो रे ॥ टेर ॥
 आतम पावो, भरम मिटावो, मौज उड़ावो;
 मिट जावे जम तो धीगाणो (६) रे । मन मेरा० ॥ १ ॥
 निर्भय हो जावो, जन्म न पावो, सहज ममावो,
 अपना ही रूप जग जाणो रे । मन मेरा० ॥ २ ॥
 यह संसार, रूप तुमारा, नहीं कोई न्यारा,

१—पूजना का अनुभव करना, २—आनन्द-स्वरूप, ३—धे-युस्त, ४—
 अपना आप, अंत-करण आदि का स्वामी, ५—नित्य शुद्ध, ६—जलग, ७—
 मस्त, ८—आत्माकार, ९—जवरदस्ती ।

मूल के झूठी हठ ठाणो रे । मन मेरा० ॥ ३ ॥
 मल मन भोगो, दुविधा खोवो, ब्रह्म में सोवो;
 जब निज रूप ओलखानो रे । मन मेरा० ॥ ४ ॥
 सत्गुरु साधा, भयो सनाथा (१), पकड़यो हाथा;
 भय बल बहत बचानो रे । मन मेरा० ॥ ५ ॥
 कहे यो मानं, उड़यो अभिमानं, भयो विद्वानं;
 पियो ज्ञानी (२) नित ज्ञानो (३) रे । मन मेरा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के डंके “सगीजी ने बरजण आया” की ॥

॥ ताल कैरवा ॥

हाँ चलो सखी देश हमारे । जहाँ मिले निज प्रीतम प्यारे ।
 घखा दिवस रही दूर पिदा से, माल मुफ्त में हारे; बल्ल देश हमारे ॥ डेर ॥
 पार पकोर ले अपने साथ । सत्गुरु अपने सिर धर हाथ ।
 पार करे था मैं संशय न करनो, लाओ ही पार उतारे; करदे भय पारे । हाँ० ॥ १ ॥
 अजब खिलारी है बनशाय । सब में पूरण आत्मगम ।
 पास रहो पण्य मूल गई तू, बाहर पड़ी मल्ल मारे; सिर मार तुम्हारे । हाँ० ॥ २ ॥
 झुको करे तू देह अहंकार । तुमसी है को मूढ़ गँवार ।
 जीवन रतन ने लोय विषयन में, पीछे कहा सिर मारे; माणिक को हारे हाँ० ॥ ३ ॥
 फरो सत्गुरु शब्दों विश्वास । तजदे प्यारी विषय की आत्त ।
 मान कहे री मान वाचरी, क्यों नहीं नैव निहारे; ब्रह्म नैहि विचारे । हाँ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के डंके “सगीजी ने बरजण आया” की ॥

॥ ताल कैरवा ॥

हाँ निरल निज रूप तिहारो । सब घट सुन्दर श्याम पिहारो ।
 भरम नीद देवो खोय वाचरी, जनम मुफल होवे थारो । निज रूप ति० ॥ डेर ॥
 आदि अमर अचिन्ताशी देव । जिखरी करत जगत सब सेव ।

१—अपना आप, अंतःकरण आदि का स्वामी, २—ज्ञानामृत, ३—विचार पूर्वक ।

डमड़ी घान धे क्या केचो म वाला म्होंने अचरज आय हों हों इमड़ी घान धे० ।
 नेडो घणो घनाघियो स वाला पहने जाणयो नाँय, हों हों नेडो घणो० ।
 भटक भटक मैं हारणी मरे, जिण सूँ दर मन आय, हो नही चालूँ० ॥ ४ ॥
 अत्र समन्तो तो उट चलो म प्यारी जानी जमी परभाव, हों हों अत्र सम० ।
 अत्र तो तोय जगाय हीम प्यारी फिर क्यों वस्न गमान, हों हों अत्र तो तोय० ।
 अत्र जागन मुनी रही तो धाने, ओ आनन्द नहीं आत, हे अत्र मान० ॥ ५ ॥
 चट से मुरता जाग गो मरे जागन ही मानोन; हों हों चट से सुता जाग० ।
 पीव देव राजी भई स उण प्रेम पियालो पीन, हों हों पीव देव राजी० ।
 देवन ही आनन्द भया स उटे, धाजी अनन्द (१) बीन, हे अत्र गान० ॥ ६ ॥
 देव पिया रं हर ने म इण दियो होश (२) विमलय, हों हों देव पिया रे० ।
 पीव प्यारी की गम नहीं सरे रगी प्रेम रग मीय, हों हों पीव प्यारी की० ।
 पीव जीव भया एकसा स वहाँ, दूतो दीखे नाँय हे अत्र मान० ॥ ७ ॥
 देवनाथ सा गुरु मिले म जद देवे पीव मिलाय, हों हों देवनाथ सा० ।
 इण विध देखे पीव ने स अँरे फाल निरुट नहिँ आय, हों हों इण विध० ।
 मानमिह निर्भय भयो स म्हारे, भरम रयो कहु नाँय; हे अत्र मान वावरी० ॥ ८ ॥

॥ द्वाहा ॥

मानमिह वो रट (३) रटि सो टण्पारी होय ।
 उण रट ने जो कोई रटे, मौ रट (४) देवे खाँय ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

मिले धाने रगो तो (५) जतो (६) चाजो (७) गो अ. लो (८) मिले बाने रंगो लो जतो । देर
 तू तो किरे चाजो विपया रस मे । पियो थारो रडे एरुजा (९) । चालो तो० । १ ॥

१—सोह धनि, २—भेद भा-रहित ३—आत्मज्ञान की जिज्ञास, ४—अन्वय
 सब उपासना कर्मरूपादि, ५—जगन का खिलारी, ६—आत्मा, ७—विचार कर,
 ८—मन की वृत्ति, ९—ईन्द्रियातीत ।

उण तो विषय में आती दुःख पावेती । नहीं याते होवेती भन्ती । चालो ० ॥ २॥
 भूल मन बाधरी प्रीतम मिलसो । देवी देवो त्रिज त्रंगसो(१) । चालो ० ॥ ३ ॥
 मानसिह गुरु देवनाथ कहे । अब तुम एक हो मिलो । चालो तो आती ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

प्यारी ए चाल सन्धी उण देश(२), अठे तू क्या करे ।
 प्यारी ए कर सतगुरुजी रो साथ, जगत सूँ क्या डरे ॥ टंर ॥
 प्यारी ए नहीं कोई काम दम कोस, मजल पर चालखो ।
 प्यारी ए मन सीधो कर लेय, पिया(३) संग मालखां(४) ॥ १ ॥
 प्यारी ए कहे तांहे जग ने छोड़, आँती मानो मनी ।
 प्यारी ए घर ही में घर डेर, जीवल करले गतो(५) ॥ २ ॥
 प्यारी ए दिन पग चलखो हे पथ, देह विना(६) मिल रहो ।
 प्यारी ए जब प्रीतम(७) मिल जाय, यात मन री कहो ॥ ३ ॥
 प्यारी ए नहीं धरखो संभ्यास, भंष करखो नहीं ।
 प्यारी ए गृहस्थ अताँ संभ्यास, जम सूँ डरखो नहीं ॥ ४ ॥
 प्यारी ए पग सूँ चलाय ले जाय, अ्याँने गुरु ना मानिये ।
 प्यारी ए देवे त्याग उपदेश, पाखरडी जानिये ॥ ५ ॥
 प्यारी ए देवनाथ को साथ, संभ्यास ऐसो लियो ।
 प्यारी ए मान लखी गम(८) गुंज, पियाजी सूँ मिल रयो ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

प्यारी ए अवर ॥ दूजा कोय, विनय अपनी आप से ।
 प्यारी ए अपखो ही आप विचार, बचो तिहूँ ताप से ॥ टंर ॥

१—अन्तमु ख वृत्त, २—आत्म-स्थिति, ३—आत्मा, ४—एकता का अनुभव,

५—जीवन-मुक्ति, ६—सूक्ष्म-विचार से, ७—आत्मज्ञानी गुरु, ८—गुप्त रहस्य ।

थारी ए अपणो आप गटे भूल, अमंगल होन है ।
 थारी ए मुख तो रह नयो दूर दुःख मे रोत है ॥ १ ॥
 थारी ए अपणो आपको जोय के मंगल गाटये ।
 थारी ए कभी न अमंगल होय, मोटे मुख पाडये ॥ २ ॥
 थारी ए यह जग मंगल रूप, अमंगल ना कोट ।
 थारी ए आप अमंगल होय, नींद मोडे नु मोडे ॥ ३ ॥
 थारी ए अब परी नीन्द उठाय, पिया ने देखिये ।
 थारी ए करम देखे ने मेट, अलग्ग अ पेखिये ॥ ४ ॥
 थारी ए मानमिह कहे नार, भूल नत्र कीजिये ।
 थारी ए सब घट आनमदेव, पूजा यही कीजिये ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ 'जं 'राजन का मूआ रे' की । ताल कैरवा ॥

आपो आपो थारी सुरता, पिशाजी (१) बुजाये अमर मरत (२) मे ॥ टेर ।
 घाटी पैट चढणो नही मरे नहि उडणो आसरा ।
 जो तुम मिलणो पीव मूँ मरे तांड अन्धविश्वास ।
 अपणो रूप विचारसी म ऊह मिटसी जग गी आम रे । आबो आबो ॥ १ ॥
 एक ज्ञान बैराग दूसरो तीजो रुमक विचार ।
 चौथो जेवो बिदेक ने मरे नीकर कहिये थार ।
 मोल आप मे आपगी मरे वह भ्रम दूर निवार रे । आबो आबो ॥ २ ॥
 वो प्रीतम टमडो नही स जगसे मिल थारी रह जाय ।
 जं मिलसी तू पीव मूँ स जद एकोएक समय ।
 जीव मरु दोऊ एक हुवा जद दूजो दीखे नैय रे । आबो आबो ॥ ३ ॥
 अबतो पडदा तोडदे सरे दूर करो अज्ञान ।

इस अज्ञान के बीच में स तुम खोचो रतन(१) महान्(२) ।

सबही जग में भटवली सरे नही पाशो कल्याण रे । आबो पाबो ॥ १ ॥

देवनाथ गुरुदेव ने सरे मोक्ष मोय विच दीन ।

मान बधी मन मानियो स जब वृत्ति को स्थिर कीन ।

ज्ञानम् जब मोको भयो सरे भयो काल आबोन रे । आबो आबो ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल करवा ॥

क्यों भई बाबरी(३), पी(४) पा(५) पां पी(६) सो पापी(७) हान है ॥ टेर ।

पापी(८) हूँ दूत मैं फिरयो स कोई पापी(९) मिल्यो न कोय ।

पापी(१०) सूँ मिलनो मुझे स कोई पाप(११) करम ने जोय ।

बन पापी(१२) बोलूँ नहीं स कोई मुँह न लगऊँ कोय रे । क्यों भई बाबरी ॥ ११ ॥

सब जग यूँ पापी(१३) कहे सरे म्हाँने अचरज आय ।

पाप(१४) सूँ फ्हारे प्रीत यणो सरे पापी(१५) मिले जो नाँय ।

जो कोई पापी(१६) मिले तो मोये पाप(१७) करखँ समझाय रे । क्यों भई बाबरी ॥ ११ ॥

जो कोई पापी(१८) मिलाय दे स मैं गुल बोरों भूलूँ नाँय ।

पाप(१९) माँहि वे पुन(२०) करे सरे ऐसे बीर मिलाय ।

हैं बीरों सूँ जा मिले सम्हाँने असली पाप(२१) कराय(२२) रे । क्यों भई बाबरी ॥ ११ ॥

गरी (२३) गोरल कबीर है सरे पापी(२४) भरथरी होय ।

देवनाथ पापी(२५) मिल्या सरे कीनो पापी(२६) मोय ।

नानसिंह पापी(२७) भयो स जइ जीवत स्वर्ग में सोय रे । क्यों भई बाबरी ॥ ११ ॥

१—मनुष्य जन्म, २—उत्तम, ३—मन की वृत्ति, ४—ज्ञानामृत स्वयं पी, ५—दूसरों को भी पिला, ६—ज्ञानामृत प्राप्त कर के, ७—८—९—१०—११—१२—१३—१४—१५—

अज्ञान का नाश करने रूपी पाप करने वाला अथवा ज्ञानामृत दूसरों को पाकर स्वयं पीने वाला, ११—अज्ञान का नाश करना, १२—बुरे कर्म करने वाला,

१३—अज्ञान का नाश करना, १४—१५—१६—१७—१८—अज्ञान का नाश करने रूपी पाप करने वाला अथवा ज्ञानामृत दूसरों को पाकर स्वयं पीने वाला, १९—दूसरों के

अज्ञान का नाश करके, २०—हित करना, २१—परमात्मा, २२—अनुभव करना ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल कैरवा ॥

म्हाने कोण जगाई रे, मृती होती मैं मारंग[१] नोद मे ॥ डेर ॥
 मृती मारंग नीद मे सरे मारंग[२] दिवी जगाय ।
 मारंग[३] सू मारंग [४] मुणो परे मारंग[५] निजर न आय ।
 मारंग [६] हूँद सारंग[७] थकीम म्होने सारंग[८] कोई मिनाय रे । म्होने ॥
 मारंग[९] भ्वनि सारंग[१०] मुणो परे दिवो हृदय[११] ने तोड़ ।
 मारंग[१२] सू मोय मारके मरे[१३] मारंग गयो मुख मोड़ ।
 अथ कोई मारंग[१४] मिजाय दे मरे सारंग[१५] कह कर जोब [१६] रे । म्होने ॥
 इण सारंग[१७] के प्रेम मे म सखी मोय स्याहरंग कीन ।
 ओ सारंग[१८] कैसे मिले मरे मारंग[१९] ने तज दीन ।
 मज के सारंग[२०] गात है स ओ मधुर बजावे बीन रे । म्होने ॥३॥
 मारंग[२१] की सुन चीनती म पिया मारंग[२२] मिलिये आय ।
 बिडङ्गयो मारंग[२३] सुख नहीं म म्होमू मिलकर मारंग[२४] गाथ ।
 मानसिह कहे आप बिना म्होने जग ओ नौय मुहाय रे । म्होने ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारपाड़ी "पन्ने" की । ताल दीपचन्दी ॥

चालो ए सुरता सुन्दरी, पिया सू प्रेम लगस्यो ए ॥ डेर ॥
 काल फीज आवे नहीं, निर्भय मौन उहास्यो ए ।
 अमर पियाजी ने पावस्यो, नित मगल गास्यो ए । चालो ए ॥ १ ॥
 जीव जीव मे मटास्यो, अब जीव मिटास्यो ए ।

१—अज्ञान रूपी रात, २-३—सद्गुरु रूपी ईश्वर, ४—सद्गुरु के उपदेश रूपी,
 सारंग राग, ५-६-७-१३-१४-१७-१८-२२-२३—परमात्मा, ७-१०-१५-१६-२१—
 वृत्ति रूपी रानी, ६—ओकार रूपी शंख-ध्वनि, ११—दिल, १२—शब्द रूपी बाण
 १६—अति लज्जा, २०—ओकार रूपी शब्द २४—मोह शब्द रूपी शक्ति-शक्ति ।

रूप देख निज आपरो, सहजे हि सहज नमास्याँ ए । चालो ए८ ॥ २ ॥
 जीव ब्रह्म जब एक भया, फिर आस्याँ न जास्याँ ए ।
 प्रीतम न्यारी न्यारी नहीं, जल में अरंग रलास्याँ ए । चालो ए८ ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरुदेव है, उहाँ ने अर्ज सुखास्याँ ए ।
 मान मिल्या निज रूप में, ऐसो नेह दिखास्याँ ए । चालो ए८ ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "पन्ने" की । ताल दीयचन्दी ॥

सुरता म्हारी बाबरी, पिया(१) पुत्र[२] कैसे कीनो ए ॥ टेर ॥
 उपजी आदि तू ब्रह्म सँ, ब्रह्म अजहू न चीनो ए ।
 जीव जीव के भौड़ में, ब्रह्म खोय कैसे दीनो ए । सुरता म्हारी० ॥ १ ॥
 सुनो सत्गुरु सोहना, नहीं म्होंने भेद बतायो हो ॥ टेर ॥
 मैं जिण जिण ने पूछियो, जीव हि जीव सुनायो हो ।
 ईश्वर थाँ तू दूर है, येही भेद जनायो हो । सुनो सत्गुरु० ॥ २ ॥
 तू ही जीव तू ही ब्रह्म है, और तू ही है माया ए ।
 थाँ सँ ब्रह्म कोई भिन्न नहीं, यह वेदों में गाया ए । सुरता म्हारी० ॥ ३ ॥
 मो ईश्वर में भेद हैं, क्यों कर एक कहावे हो ।
 एक है तो फिर न्यारो क्यूँ, म्हानि हाँसी ये आवे हो । सुनो सत्गुरु० ॥ ४ ॥
 अपने भरम सँ न्यारो कहे, थाँने अवर ब्रह्मकाई ए ।
 जीव समभ पुत्र आपणो, इण सँ बात गमाई ए । सुरता म्हारी० ॥ ५ ॥
 जीव तो म्हारे साथ में, ईश्वर म्हों सँ न्यारो हो ।
 थे कहो दोनों एक है, कैसे होय उजारो हो । सुणो सत्गुरु० ॥ ६ ॥
 गीता भागवत् सब सुणी, ईश्वर ही गायो हो ।
 आप मिल्या म्होंने इसा, ईश्वर एक बतायो हो । सुणो सत्गुरु० ॥ ७ ॥
 जीव और ब्रह्म जो कृष्णजी, सब एक बतायो ए ।

१ ब्रह्म, २—जीव ।

अर्थ बिताइयो इण म्भारथियो, मगलो जगन हुवायो ए । सुरता म्हारी० ॥२॥

गीता मूँ पहिले बशिष्ठजी, जिन नित्य ही माथो ए ।

एक नू एक तू एक है, नही दोय बतायो ए । सुरता म्हारी० ॥६॥

ब्रह्म वाक्य चारो कहे, तेरो तू ही कहायो ए ।

शकर लिख्यो निज भाष्य में, अपने आप बतायो ए । सुरता म्हारी० ॥६॥

जनक लख्यो शुकमुनि लख्यो, और ब्यास लख लीनो ए ।

गोरक्ष कथोर और भरथरी, जिन ब्रह्म मद् पीनो ए । सुरता म्हारी० ॥११॥

साथ कहें सुण बालका, यह भ्रम दूर भगावो हो ।

तोइ अमान की भोत को, मैदान में आवा हो । सुरता म्हारी० ॥१२॥

उनो कयो ने मान चमकियो, ब्रह्म प्रगिन जागी हो ।

ब्रह्म तेज उर जागियो, भ्रमना सब ही भागो हो । सुरता म्हारी० ॥१३॥

॥ गन ॥

॥ तर्ज "एली" की । ताल कैग्वा ॥

रावल (१) रम (२) रयो माँय, खोज्यो (३) जिना कैसे मिले म्हारी एली ॥६॥

साहर रावल फिरें पूढती, घर (४) मे जावे नाँय ।

जो तू अपने घर में जायले, साहर क्यूँ भटकाय । खोज्यो जिना० ॥१॥

इण रावल ने जगत (५) मूँ जावे, ती घर मे ही मिल जाय ।

जो एबलियो सब मूँ जवरो, सरगट में नही आय । खोज्यो जिना० ॥२॥

गहरा तंघूर मंत्रीर बजावे, रावल मिले न काय ।

दिन रावल री निरचय कीया, चाई तो गाय चाहे रोय । खोज्यो जिना० ॥३॥

सारी रात भर जुमा जगावे, चूरभियो ए चोर ।

विषय वासना गई न मन से, कर रया पाप करोइ । खोज्यो जिना० ॥४॥

सुन्दर नारी देखत प्यारी, गावन गला मरोइ ।

यूँ गाथो मूँ नफो न होसी, मिलसी नरकपुर टोइ । खोज्यो जिना० ॥५॥

१—छाया, २—व्याप रहा, ३—जिज्ञासा, ४—अपने आप मे, ५—विचार से ।

देवनाथ गुरु दया करी जद, मन समझायो मोर ।

मानसिंह मन भान गयो रे, पिव पायो एक ही ठौड़ । श्लो० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "एली" की । ताल कैरवा ॥

श्री रावल (१) अनन्त अपार, सकल घट रम रयो रे जाला ॥ टेर ॥

अन्दर रावल बाहिर रावल, रावल सब घट सोय ।

इण रावल ने जो नर परखे, रावल रूप ही होय । सकल घट रम रयो ॥१॥

दपर (२) रावल उर नहि रावल, किम कर रावल पाय ।

रावल (३) होय रावल ने खोजे, रावल में मिल जाय । सकल घट ॥२॥

हम भी रावल तुम भी रावल, रावल विश्व स्वरूप ।

इण रावल सूँ ग्यारो कोई, दीलत है तही रूप । सकल घट ॥३॥

देवनाथ गुरु पूरा रावल, रावल बियो दिखाय ।

नात मीन अभिमान गयो जद, रावल बीच समाय (४) । सकल घट ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग सिन्धु, तर्ज "हेली" की । ताल कैरवा ॥

छाँण छाँण (५) अमी (६) पीवयो; अण छाँणयो (५) मत पीव; म्हारी हेली ए ।

छाँण छाँण ॥ टेर ॥

गोरख कवीरा संत सो; छाँण ने दियो है पिलाय; म्हारी हेली ए ।

भान्य हीन सो नही पिये; अण छाँणयो पर जाय; म्हारी हेली ए । छाँण ॥१॥

जनक पियो अमी छाँण के; सुखदेव छाँण के पाय; म्हारी हेली ए ।

पियो बशिष्ठ मुनि छाँण के; रामचन्द्र को पाय; म्हारी हेली ए । छाँण ॥२॥

व्यास जुगती (२) कर छाँणयो; कचरो (६) रती न रहाय; म्हारी हेली ए ।

कृष्ण पायो अर्जुन पियो; साफ पियो मल नाँय; म्हारी हेली ए । छाँण ॥३॥

१—आत्मा, २—स्वांगी साधु, ३—ज्ञानवान्, ४—स्वरूप की एकता, ५—गहरे
चिन्तार पूर्वक, ६—ज्ञानामृत, ७—अन्ध-विश्वास, ८—अच्छी तरह, ९—हैं तथाय ।

उस मनवादी ऋद्धिजियो(१), कड़दो(२) हियो निघट्ट(३), म्हारी हेली ए ।

जोड असंग्य हुयोईया, पायो कीच अघट्ट(४) म्हारी हेली ए । छाण० ॥ ४ ॥

कट्ट विष्णु मन चालिया, कंता देवी मन जान, म्हारी हेली ग ।

कंताक जैन और धौड है, कर कर खैचा तान; म्हारी हेली ग । छाण० ॥ ५ ॥

देवनाथ मर्यज है, रियो मर्यज बनाय, म्हारी हेली ए ।

मान जगत् जग मान मं, पड़दो दोखे नांय; म्हारी हेली ए । छाण० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सिन्धुवा, तर्ज 'हंली' की । ताल कैरवा ॥

छाण(४) अमी(६) जुगती डेड; वेदो उवन बनाय, म्हारी हेली ए । छाण अमी० ॥१॥

तन केरी प्रटकी करो, सुद्धि गलना होय; म्हारी हेली ग ।

प्रेम अमीरम छाण लो मल(७) फिर आय न कोय, म्हारी हेली ग । छाण० ॥१॥

आत्म भाव जक छाणयो; प्रेम री होमो तलाश, म्हारी हेली ए ।

वृत्ति परिहारी भर रही, कर कर समझ प्रहारा, म्हारी हेली ए । छाण० ॥ २ ॥

जगत् ताल मरुवर भन्था, कमी है नीर की नांय; म्हारी हेली ग ।

अन्धविश्रामी जाणे नहीं, भूल के खाली आय, म्हारी हेली ए । छाण० ॥३॥

अमी अमी पिये मोई अमर है, जिरके यम डर नाय, म्हारी हेली ग ।

नित्य अमर फिर क्या मरे, कर निश्चय मन मांय, म्हारी हेली ए । छाण० ॥४॥

देवनाथ गुरु भंठिया, समझ ने दियो है छाणाय; म्हारी हेली ए ।

मान पिये अमी छाण के, कंचरो(८) पिये दे बलाय, म्हारी हेली ए । छाण० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग काकी । ताल दीपचन्द्रा ॥

अब तुम मौज करो री(६) । काहु के डर तांहि डरो री; अब तुम० ॥ टेर ॥

नाथ(१०) को माय कियो है सुन्दर(११), दूर गई भकभोरी(१२) ।

१—मैला किया, २—भेदवाद की सम्प्रदायों के पदों का एक, ३—अत्यंत, ४—महारा;

५—६—पूर्ण विचार पूर्वक ज्ञान प्राप्त कर, ७—द्वैत भाव, ८—भेदवाद के साम्प्रदायिक कर्मकाण्ड, ९—मुग्धा को उपदेश, १०—सद्गुरु, ११—सुरता, १२—जन्म-मरण ।

और रंग अब कलु न चढ़े गो; पक्के (१) रंग बिच घोरी,
 करे अब कौन ठठोरी । अब० ॥१॥
 रुचें (२) रंग से अब गई सुन्दर, बिन घिन सूर (३) उगो री ।
 अब तो रंग असल आय लागो; पिया (४) प्रेम बिच घोरी,
 मची जग (५) सूँ वरजोरी । अब० ॥२॥
 लव नादानी (६) समझी नाही, होती अज्ञान में छोरी ।
 अब पतिव्रता नार भई सैली; जैसे चन्द्र चकोरी;
 असल प्रीतम की गोरी । अब० ॥३॥
 देवनाथ को साथ कियो तब, मिट गई दुविधा (७) मोरी ।
 हम ही पीव हभी अब नारी; दूजो भाव मिट्योरी,
 मान अस होरी (८) होरी । अब० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥
 देख्यो जोगीड़े (६) रो रूप; बिलमी (१०) ए पुरता, देख्यो जोगीड़े रो रूप (११) ॥ टेर ॥
 ओ जोगी सब जग सूँई न्यारो, सगले जग रो स्वरूप ।
 चारू वेद ही शक्तिा रे बाला, ओ है भूपन को भूप । बिलमी ए० ॥१॥
 इण जोगीड़े रो देश [१२] तिरालो, नही छाया नहीं भूप ।
 जो जावे सोई अमृत [१३] पीवे, भरिया अमी [१४] रा कूप । बिलमी ए० ॥२॥
 महिमा अनंत अगत कव आवे, महिमा ही अजव अनूप ।
 मानसिह ऐसो जोगियो रे बाला, मिल-गयो उनके स्वरूप । बिलमी ए० ॥३॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥
 अब तुम उठो उठो रे लाल; सीदइली [१५] सूँ, उठो उठो रे स्धरा लाल ।

१-स्वरूप की एकता, २-देहाभिमान, ३-ज्ञान, ४-आत्मा, ५-कमेक-धन,
 ६-अज्ञानावरथा, ७-अविद्या, ८-स्वरूप में स्थित, ९-आत्मा, १०-अनामिद, ११-
 जगत्-बल की एकता, १२-स्थिति, १३-आत्मनन्द, १४-आनन्दामृत, १५-मोह निद्रा ।

थोरे मिर पर नाचे त्रैरी झल, नीदइली सूँ उठो उठो रे लाल ॥ टेर ॥
 पुरुपारथ ने हारियो रे, नहीं मिलमी गोपाल ।
 जो भली चाहो आपखी थे, रावो निज रो ख्याल । नीदइली सूँ ० ॥ १ ॥
 दीन जनौरी सेवा कीजे, छाँड़ो मन सूँ कुचाल ।
 मन्दिर् जाय धूर्ति विषय बिच, पडेला जम रा भाल । नीदइली सूँ ० ॥ २ ॥
 जड सेवा मे जड होय उचक्या, कड़ी बजाई ताल ।
 चेतन सेवा कीन नहीं नुम, पड़मो ऊँड़ो गाल(१) । नीदइली सूँ ० ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु महर करी यह, मोको कियो निहाल ।
 मानमिह कोई आऊ दिन थाया, योँ मूँ दियो चित टाल । नीदइली सूँ ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड-मलार, तज मारचाड़ी "सूरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥
 अब मन होय मचेत; मना रे मेरा पालएक पणे ने छोड़ ॥ टेर ॥
 बहोत दिवस यामे शीश फुटायो, अब इण मूँ सुख मोंड ।
 नही तो इण में मारयो जामी, लूटेला कान मरोड । मना रे मेरा ० ॥ १ ॥
 बार बार इण संग मे भटकयो, रहो नित दौड़ादौड़ ।
 अब तो इणमे दूर कर न्यारे, भरम हँडिया ने फोंड़ । मना रे मेरा ० ॥ २ ॥
 अप तप संत्र बहुत मा जपिया, अब दूर ही मूँ कर जोड़ ।
 मान कहे रे बहुत दिन लूण्यो, अब कोई पकड़ो और । मना रे मेरा ० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

राग आनावरी जब करे, वरीय रूप अब होय ।

भ्रम अरि अपनो मारले, सुख सज्या मे मोय ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

आस(२) दूर कर कीजे; आसावरी आस(२) दूर कर कीजे ।

१—खाट, २—अपने आपसे भिन्न दूसरों पर निर्भर रहना ।

जो वह आसा माने नहीं तो, चोट(१)छान(२)कर पीजे । आसावरी आस० ॥ १ ॥
 चूर चूर आसा को होवे, फिर न कभी उलमीजे ।
 आस मिटी निरास भये जब, निर्भय पिया सँ मिल लीजे । आसावरी० ॥ २ ॥
 आसा मद् को उलट(३) कर पीजे, सुख भर सदा रहीजे ।
 डट्टी आस सीधी कर लेवे, सब दुःख दूर हरीजे । आसावरी० ॥ २ ॥
 कोमल तीव्र छाँट कर न्यारे, समझ समझ स्वर दीजे ।
 अर्ध तीव्र मधु स्वर करके, तार बजे मुन लीजे । आसावरी० ॥ ३ ॥
 फिनकी आस कौन रह्यो न्यारो, जग मम रूप लखीजे ।
 मानसिंह यह सुन्दर रागिनी, ज्ञान प्रभात उचरीजे । आसावरी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी । तालं दीपचन्दी ॥

आसावरी गाय न जाने कोई ।

जो आसा(४)को अरि(५) बन गावे, वह नर सुख से सोई(६) । आसावरी ॥ १ ॥

घिन अरि भयाँ विन अरि(७) नहीं डटसी, कर बुद्ध देखो कोई ।

मारे अरि और आप न मारे, जड़ा मूल देवे खोई । आसावरी० ॥ १ ॥

कोई जोगिया कोई माँड कर, आस किणी नहीं खोई ।

स्वर तारन बिच अर्थ भूल गये, गाय गाय उमर बिगोई । आसावरी० ॥ २ ॥

जो आसा को अरि बन जावे, फिर आसा नहीं होई ।

मानसिंह मैं मेरा हूँ नित, जड़ चेतन रह्यो पोई । आसावरी० ॥ ३ ॥

१—घुद्धि रूपी शिला पर घोटना, २—विचार रूपी गलने से ज्ञानना, ३—
 अपने आपको परिपूर्ण समझ कर आत्म-निर्भर होना, ४—अपने से भिन्न दूसरों
 पर निर्भर रहना व दूसरों की आस करना, ५—आत्म-निर्भर, ६—आनन्द माने,
 ७—छाम कोषादि विकार ।

॥ गान ॥

॥ राम आमावरी । ताल दीपचन्दी ॥

मायो मंत्रोने नार (१) मिथी अलवेली (२) ।

पाम पिवा (३) पञ्चिचाएषा नाही, भोडू रही है अहेलो (४) ॥ १ ॥

भोडू आप मनी (५) मनलत्रिया, भूल लुटाई है थैलो (६) ।

धरजो बहुत धरजो नरो माने, हांय ररो मड (७) भोहे गैवो । मायो ० ॥ १ ॥

खावे मार नही पण चेतने, दूखी मार सहेली ।

यहां भी मार मार पड़े यहाँ भी, पीछे ही गेवेलो । मायो ० ॥ २ ॥

मान समवरा (८) म्वाय मौज सूँ, ऐसी कौन मिलेली ।

भरन भोग मे लपर पड़े नही, पीछे लपर पड़ेलो । मायो ० ॥ ३ ॥

देवनाथ मनभाई माथी, अजह ना समकेली ।

मान कडे री मान वावरी, पीछे बिगत पड़ेवो । मायो ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ गजल । ताल रूपक ॥

पाम जिनको हडना, कैसी हँसी की बात है ।

जागते सोयें पड़े, कैसी हँसी की बात है ॥ १ ॥

जो फोर्ट सोते पड़े, उनको जगावे आय कर ।

जागते घुरा रहे, कैसी हँसी की बात है ॥ २ ॥

रात दिन पढ़ने पढ़ाने, "ब्रह्मास्मि" मंत्र को ।

सोते उगे पढ़ कर रहे, कैसी हँसी की बात है ॥ ३ ॥

कहते जो करते नही, सब ही मिलावे भूल मे ।

निहरी भावे म्वाजा कडूर, क्या हँसी की बात है ॥ ४ ॥

इम नरह काजी भी कहते, मुदा है सबके जिम्म मे ।

१—घुट्टि, २—चेतमक, ३—आत्मा, ४—अलग, ५—बाबलडो मस्की

६—आयु, ७—विषय-सुख, ८—पाखण्डी गुरु ।

स्त्रि वताते चौथे आरमाँ, क्या हँसी की बात है ॥ ५ ॥

मान कहे अत्र तक भी मानो, कहदो अनलहक मुँह से तुम ।

दीपक ज्यते रहना अन्धेरे, क्या हँसी की बात है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सुआ रे" की । ताल कैरवा ॥

म्हँने घणी सुहावे रे, बाजे मोहन (१) री मीठी बंसुरी (२) ॥ टेर ॥

राग द्दतीम् गग रगो स ज्यारो न्यारी न्यारी तान ।

कव तक कहें हम थक गये सरे थक गये वेद पुरान ।

पार कोई पात्रे नहीं सरे खोज रह्यो गुणवान रे । म्हँने घणी सुहावे ॥ १ ॥

मालकोरा और दीपक भैरव गत राग हिंडोर ।

श्री राग स्वर सब में बोले मेघ राग मुख जोर ।

आप बजावे गा रगो सरे तान उपज कर शोर रे । म्हँने घणी सुहावे ॥ २ ॥

दुण गोकुल री नलियाँ भटके कुण म्हारे सशुग जाय ।

इन्द्रावन की कुँज गली में कुण म्हारे गोता खाय ।

सभी रूप गिरधारी दीखे सब ही वैन यजाय रे । म्हँने घणी ॥ ३ ॥

पंच धातु (३) की बंसुरी सरे दश (४) स्वर हैं इण मौय ।

समझ होय तो परस लो सरे नहीं तर भल भटकाय ।

भटक भटक टु ख पावसो सरे कृष्ण मिलेला नाँव रे । म्हँने घणी ॥ ४ ॥

वाँ तो मिट गये कृष्णजी स वो रास भी गयो मिटाय ।

कृष्ण ब्रह्म को रूप है सरे अखण्ड रयो जग मौय ।

खेले खेल खिला रयो स कोई न्यारो ना दरसाय रे । म्हँने घणी ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु मेहर करी मैं मूखूँ नहो अह्वान ।

भर्म सँ बाहर निकालियो सरे कहे भूप यूँ मान ।

मनड़े रा धोवा (५) मिट्या स कोई लियो रूप पहचान रे । म्हँने घणी ॥ ६ ॥

१—आत्मा, २—शरीर, ३—पाँच तत्त्व, ४—दश इन्द्रियाँरूपी द्वार, ५—भ्रम ।

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

मना रे मेरा अथ तो जूने घर चाल, उठे गयो आनन्द आवे रे ॥१॥
 नू जाने जग घर है मेरो रे, मना रे मेरा कबल परो होय जाय,
 घडी एक रहन न पावे रे । मना रे० ॥ १ ॥

उधोने नू अपना मगी जाणे रे, मना रे मेरा कोइयन करमी माध,
 पेनाई योने क्यों न छिटकावे रे । मना रे० ॥ २ ॥

शत्रु ने मित्र दोनों ने तज दे रे, मना रे मेरा झग मय आनम रूप,
 ओलावियो दुख मिट जावे रे । मना रे० ॥ ३ ॥

शत्रु मित्र हर दिन दिन बेधियो रे, मना रे मेरा बन गयो ब्रह्म सू जीव,
 दिनो दिन नीचा जावे रे । मना रे० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु कर तेरो पकड़यो रे, मना रे मेरा मान त्याग अज्ञान,
 नाथ जी नित ममभावे रे । मना रे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

मनारे मेरा मग(१) लूटे ठगनी पांच(२), जिन्हो मू अपनी माल बचावो रे ॥१॥
 मोह सारंग(३) बन अजन कीनो रे, मना रे मेरा मारंग(४) सुन्दर होय,
 मान(५) मू मुख्यहो गलावो रे । मना रे० ॥ १ ॥

तीन गुणों की नथनी पैरी रे, मना रे मेरा दग्भ दधि मुत(६) नथ मय
 देखने मती लुभावो रे । मना रे० ॥ २ ॥

करप मुत(७) दधि मुत(८) मय द्वारवा रे, मना रे मेरा रवि सुतापति(९) गयो हाँ,
 तेरी अथ कौन कहावो रे । मना रे० ॥ ३ ॥

हिमसुना पाति(१०) द्वारवा इतसे रे; मना रे मेरा जक(११) रयो जो मुलाय,

१—मारग, २—इन्द्रियो, ३—अजन, ४—इन्द्रिय रूपी मती

५—परमात्मा, ६—मोती, ७—सूत्र, ८—चन्द्रमा, ९—शरण, १०—महादेव ११—

इन्द्र ।

त्रिको इनसूँ ऊँचो न आधो रे । मना रे० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु शर(१) मोवे झीनो रे: मना रे मेरा पाणि(२) जो सारंग(३)

पकड़, मान यूँ तीर चलावो रे : मना रे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज "वाणी"की । ताल दीपचन्दी ॥

सोच समझ मन धारो, निज सात्विक गुण धारो ।

दुगुण दूर निवारिये, केवल ब्रह्म निचारो जी ॥ १ ॥

वातों तज्ञो रे परब्रह्म री, कण्ठो सोई कीजे ।

वातों सँ आनन्द नहीं ऊभजे, साची सुन लीजे जी ॥ १ ॥

कौन करे कुछ भोगवे, खेल वार्ता रो नाँही ।

करणी रा फल त्यार है, समझो मन रे माँही जी ॥ २ ॥

कुर्मों सँ वंचित रहे, शुभ कर्म करावे ।

सो ज्ञानी साचा जाणिये, सुवने दुःख नहि पावे जी ॥ ३ ॥

इसड़े आनन्द ने छोड़ियो, जद भारत दुःख पावे ।

पौल पुराण में पच रया, देश रसातल आवे जी ॥ ४ ॥

मान कहे अत्रहूँ मान लो, दूधत नैया ने तारो ।

मृत जंजोवती(४) पीयलो, मरता प्राण ववारो जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "भूँदड़ी के डंके" की । ताल कैरवा ॥

कर मन दुःखर्मों को त्याग, यही निज त्याग है रे ॥ १ ॥

पहिले कर्म कुर्मों को ज्ञान, इनमें सत्य असत्य है कौन;

जो कुछ सत्य दिखे सोई मान । यही निज त्याग है रे ॥ १ ॥

मेटो बिषय वास की राग, करले कुर्मों सँ वैराग;

१—शब्द रूपी तीर, २—निश्चय रूपी हाथ, ३—विचार रूपी धनुष, ४—आत्म-ज्ञान ।

मिट जावे जन्म मरण को दाग । यही निज० ॥ ० ॥
 जाणो बन पहाड नहीं कोय, त्याग यह घर वैठौं होय,
 सहज मे बांध के मोती पाय । यही निज० ॥ ३ ॥
 जो कोई यूँ सन्यासी होय, उनको कर्म लगे नहीं कोय,
 बाँ तो नहीं हमे ना रोय । यही निज० ॥ ४ ॥
 पहिले हम भी लेन सन्यास, करते मूढ़ जगत की हास,
 देखत दुश्मन मूढ़ तमाम । यही निज० ॥ ५ ॥
 मिले गुरु देवनाथ भगवान, दिया मोय अमली ज्ञानम ज्ञान,
 जीव लिया सहजे पद निर्वाण । यही निज० ॥ ६ ॥
 गुरु से ज्ञान अमीरस पाय, दियो है मन को भरम मिश्रय;
 मान था महान के बीच सभाय । यही निज० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

प्रश्न

बंध कहे हो मानमी, कैसी बही यह बात ।
 ज्ञानी के अरि मित्र को, यह मोहे होंमी आत ॥

उत्तर

कृष्ण जिसे ज्ञानी नहीं, शिष्य न पारथ समान ।
 अरि न हिसन के कारणे, हरी दियो तत्त्व ज्ञान ॥
 अर्जुन तो तैयार था, लेने को संश्याम ।
 कृष्ण नहीं लेने दियो, फेर बटायो भाहम ॥
 शत्रु मित्र नहींमानने, तो किये क्यों अटारह अध्याय ।
 मगज पचाई क्यों करी, क्यों दियो जगत बदलाय ॥
 पापे मो है अरि मक्ष, मास्यवादी है मिल ।
 बंध तजो बंधाई अब, राहु दगो भव निज ॥

मैं ऐसा भोंदू नहीं, कि कुछ कह कुछ कह देय ।
 कृष्ण वाक्य ही जानिये, उनमें ना सन्देह ॥

॥ गान ५

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल बैरवा ॥

साधो भाई हिम अहिम निहारो होजी ।

प्रहिमा विच होम हे दिमा, तिनको दूर निवारो रे । साधो भाई० ॥ १ ॥

इन विच पाप पाप विच पुन हूँ, करलो समझ विचारो होजी ।

तुन और पाप एक मन जाखो, विलग विलग कर डारो रे । साधो भाई० ॥ १ ॥

पर मर भूख ताप देवो तन को, बढ़ रयो पाप अपारो होजी ।

तुझत करण मनुष्य नन लीनो, लुधा लूपा विच हारो रे । साधो भाई० ॥ २ ॥

इन्दी धम रुके नहीं रोक्य, इनकी गर्दन मागे होजी ।

तिम रोम विच हूँ निज आतम, सूत्र ही लोख निहारो रे । साधो भाई० ॥ ३ ॥

रागो मीन क्राण जत्र पीयो, मन साँवलो न गवारो होजी ।

पत्तापक मिटी नहीं मन में, मिष्टियो न भर्म अन्वारो रे । साधो भाई० ॥ ४ ॥

हेतु विचार काज करे जग में, होये पुन अपागे होजी ।

जीव अन्त उमर भर तागे, सद् उपदेश प्रचारो रे । साधो भाई० ॥ ५ ॥

जुगति सूँ जोय जैन मत म्हीणो, मत आडम्बर धारो होजी ।

बिन जोयो बिन यो ही रह गये, रतन जन्म नै हारो रे । साधो भाई० ॥ ६ ॥

मेरे तो सब ही बरोबर कहिये, नही मीठो नही खारो होजी ।

पत्तापक में यह जावोगे, जिनसे फिर लुम्हारो रे । साधो भाई० ॥ ७ ॥

सय ही मत में मैं हूँ अथापक, सब ही मत है हमारो होजी ।

मःनासिह सर्वज्ञ सवी में, जड़ चेतन इक सारो रे । साधो भाई० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राम सारंग, तर्ज "वाणी" की । ताल बैरवा ॥

वीण म्हार, वाँ सू नरम क्यूँ रहिये ।

निचे जिधौ मूँ दृष्टो निदखो, दुष्टौ नै दख दृश्ये । वीरा म्हार० ॥ १ ॥

परहित करे डरे थी हरि सूँ, ज्योंने दुख नहीं दर्दये ।
 अन्तर त्रिगुण सुखारे अपनो, उबारो विरवाम न लईये ॥ १ ॥
 आप तो मेरे बजर सूँ कड़वा, कड़वा वचन कहीये ।
 मूरख अन्ध कवेई नहीं माने, ज्यारो दुख क्यों महिरे ॥ २ ॥
 हरिण्योक्त हरिण्यकथय रावण कमा, दुष्ट आत्मा बहिये ।
 ज्ञाने हरि देव मुठ दीयो, अकल ठिकाने भई है ॥ ३ ॥
 राम और कृष्ण दुख नहीं सहियो, आपे क्या दुख सहिये ।
 दूष्टों ने इण्ड सेवा सज्जनों री, इण मे दोष नहीं है ॥ ४ ॥
 पर दुख हर्ष शोक होय सुख मे, कामी ने कौधी कथिये ।
 मानमिह उमड़ा दुष्टों ने, माली न जादगु वईये ॥ ५ ॥

॥ सबैया ॥

बल जित्त जन भुक्त रहे पर अन्त मे और ही और कथाये ।
 वे निवता मघही सूँ युग ज्यारे अन्तर का कोई भेद न पाये ।
 यों निवतो मूँ ऐसा निबो कि जाय उन्ही के मोंय मिलावे ।
 मान कहे जम काम पड़े है मरद वही करके दिवलावे ॥

॥ सबैया ॥

वक्त पड़े जय खूब निवे और फेर इमी मन में करवाई ।
 थो नर यमको मरद नहीं जितके मन मे हो इमी शिटलाई ।
 देव लेवो उनको दिल मे कोई काम पड़े उनसे जय भाई ।
 मान कहें रे मरदन की तो पारख हो एक बोल के भाई ॥

॥ गान ॥

॥ राग गौरी । ताल कैरवा ॥

मानो गृहस्थ संभावो, समझ करु माचो गृहस्थ संभावो ॥ डेर ॥
 गिरह बन्धी छोट मगरुती, निज घर अपने आवो ।
 पर धन धूल पाप पर नारी, बोल पन्थ मत जावो । समझः ॥ १ ॥

पर पीड़ा अपनी मी जानो, बस कष्ट रहे तो भिटावो ।
 पैर तो भरे जो खर कूकर भी, ऐसे मत रह जावो । समस्त ० ॥ २ ॥
 खर और श्वान विषय यही भोगत, तुम कहा अधिक कहावो ।
 एक नारी और धन दोऊँ में, मत तुम श्यान गमावो । समस्त ० ॥ ३ ॥
 अन्नगर मगर भजूरी करे कहा, पड़े पड़े अन्न पावो ।
 अन्नगर मगर में कौन कसर है, क्यों नहीं सुकृत कमावो । समस्त ० ॥ ४ ॥
 पर पर में सहयोग योग रहे, जीतं ही स्वर्ग कमावो ।
 मानमिह मैं गृहस्थ कष्टों साचो, मरजी होय तो आवो । समस्त ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

सेवा से जो मिले अमर फल सब कोई पावो रे; करन सेवा चित चावो ॥ टेर ॥
 सेवा ज़र की थी हनुमान । उसने पाया उत्तम ज्ञान ।
 ऐसी सेवा कर करके भव से तिर जावो रे । करन सेवा चित चावो ० ॥ १ ॥
 सेवा मैं अर्जुन था सुजान । जिनके कृष्ण बन गये रथधान ।
 मत सोवो अन्न जान के सेवा सुकृत कमावो रे । करन सेवा ० ॥ २ ॥
 या सेवा ज्ञानिन की होय । पोल पन्थिन की करी न कोय ।
 सेवा सेवा के माँव मुफ्त मत माल लुटावो रे । करन सेवा ० ॥ ३ ॥
 मन्दिर मन्दिर में भिर मार । हो जावोगे तुम लाचार ।
 चाहे ऊपर भर पड़े यूँ ही तुम घण्टे बजावो रे । करन सेवा ० ॥ ४ ॥
 गो विप्रों की सेवा होय । ऋषि निष्ठा लो विप्र कोई जोय ।
 मीन मेख नक कुंभ बतावे उन्हें दूर हटावो रे । करन सेवा ० ॥ ५ ॥
 देवताध गुरु मिले गुरुवान । जिनने दिया सेवा का विधान ।
 मान मान को छोड़ सच्चे सेवक बन जावो रे । करन सेवा ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राम मालकोग्र । ताल तिताला ॥

मन सुमरन कर धित म्वर रे ।

स्वर वाणी से होय परे निध, तो तू रहत निधर रे ॥ टेर ॥

जहाँ देखो मैं वारावार । नाम रटे० ॥ ८ ॥
 कोई रटते हैं शंभु महेश । सब भूषों में सम हूँ हृमेश ।
 यूँ कल्याण स्वरूप निहार । नाम रटे० ॥ ९ ॥
 कई दत्त गोरख धरते ध्यान । गो अतीत मैं हूँ गुणवान ।
 दशचित्त को हूँ प्रेरणहार । नाम रटे० ॥ १० ॥
 कई रटते हैं नाम अरिहन्त । मन अरि जाको लखे न पंश ।
 मन बुद्धि चित्त पर है असचार । नाम रटे० ॥ ११ ॥
 देवनाथ को कीनो साथ । अर्थ बतायो हायो (१) हाथ ।
 मान निकल भगड़े से वार । नाम रटे० ॥ १२ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी ढंके" की । ताल कैरवा ॥

दूर करो दिल दूँत विकार । जद पावो दिल में शीवार (२) ॥ डेर ॥
 दौड़ दौड़ मत बाहर जाय । दिल को पकड़ ठिकाने जाय ।
 मिट जाये कर्मों से मार । जद पावो० ॥ १ ॥
 माला हजार चाहे फेर लो लाज । इण सूँ न मिलसी आत्म साज ।
 आत्तर फेरत बैठोला द्वार । जद पावो० ॥ २ ॥
 निज में वृत्ती देवो लगाय । वो माला फिर छूटे नाँव ।
 मिट जावे सगलोई घोर अन्धार (३) । जद पावो० ॥ ३ ॥
 निज वृत्ती का धगा होय । श्रुति स्मृति मणका पोय ।
 सत्यमसि यह शब्द उचार । जद पावो० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु कीन सहाय । जिन निज माला दिखी बताय ।
 मान यह फेर रक्षी हर वार । जद पावो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की । ताल कैरवा ॥

२८ गो रत्न (४) गोपाल, किसको ध्याने रे ॥ डेर ॥

१—साक्षात्कार, २—आत्म-दर्शन, ३—अज्ञान, ४—इन्द्रियों का स्वामी ।

छोटा बड़ा नहीं कोई सब ही रूप एक होई ।

यह त्याग भूट को जान । किमको ध्यावे रे ॥ १ ॥

मधुग वृन्दावन भटक्यो, तो भी मन यह न हटक्यो ।

पर स्वरच नूँ भयो वंगान्ध । किमको ध्यावे रे ॥ २ ॥

नेरो मैं जोयो नहीं जब नूँ नेरो होयो नहीं ।

नेँ तो खोटे मुफ्त में लाल (?) । किमको ध्यावे रे ॥ ३ ॥

गो टन्त्रिय में व्यापक है पर फलक नहीं दर र ।

ओ परं मवन की पाल । किमको ध्यावे रे ॥ ४ ॥

गान अज्ञान को डर कगे, गुण्डन गोल में मनी भरो ।

ओ शौह शो आवे काल । किमको ध्यावे रे ॥ ५ ॥

॥ सर्वथा ॥

कोई कहे यह गौवन की ओर ग्वाचन की प्रतिपाल करावे ।

गन्य कता कोई भुव मनुष्य कह । उनसे कुछ वैर कमावे ।

दोषन को वह महाय करे तो टंशर को क्यों नाम करावे ।

ईश पगो तो निभे जब ही भामान्य सभी को महायक आवे ।

बहा तो गाय और अश्व कता चींटी परयत जो एक दिखावे ।

मान कहे तू ही हम माने वरना ईश हमो नदी भावे ॥

॥ गान ॥

॥ तत्र "कोरे काञ्चलिये" की । नाल करिया ॥

बंद वचन

नृप द्वाह्ये वान मेंभार, नहीं तो अटकोगे ॥ डेर ॥

पार साह में एक रखा, क्यों स्वाय चोर है भार । नहीं तो ॥ १ ॥

पार करे पारी जमी; जब पकड़े क्यों स्तुकार । नहीं तो ॥ २ ॥

फल दीपन के क्यों है जुटा, यह अचरज आय अक्षर । नहीं तो ॥ ३ ॥

हम सिद्ध हैं जीव इसा; फिर दरसे क्यों द्वैकार । नहीं तो० ॥ ४ ॥

इस सोई मोती चुंग; सिंह स्वाय जीव क्यों मार । नहीं तो० ॥ ५ ॥

यक कहें हों नराधिपति; हम क्यों नेरे भिन्नधार । नहीं तो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये की" । ताल कैरवा ॥

मान बचन

कवि चातुर अपल प्रवीन, कब तक हम कहें ॥ टेर ॥

देह के ही व्यवहार यही; मुझ में लेश विकार नहीं ।

यूँ मूरख होत आधीन कब तक० ॥ १ ॥

ब्रह्म सुप्र यह नहीं कजो; कार्य कर्ता कह दियो ।

शस राज बही तम वीन । कब तक० ॥ २ ॥

ठाम ठाम तस भयो गुण है; या में ब्रह्म को दोष कृण है ।

यह नहिं थाने मति हीन । कब तक० ॥ ३ ॥

यह तो बात बत्रही बने; अपने स्वरूप को रूप ठने ।

हो एकता बीच में लीन । कब तक० ॥ ४ ॥

देवनाथ को साथ कियो; उण अपने समान सनाथ कियो ।

लियो मान सत्य निश थीन । कब तक० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये की" । ताल कैरवा ॥

मन चेत चेत अत्र चेत, दिन पड़ा जावे ॥ टेर ॥

मनुष्य अन्ध सो दिन उगो; ओ लेश नहीं उगो पूगो ।

ओ खाली रहसी खेत । दिन पड़ा जावे ॥ १ ॥

आतम दरसण कर भाई; ऐसो अवसर फिर नाई ।

भत नाँव केसर में रेत । दिन पड़ा जावे ॥ २ ॥

अपनी भल्ली को तू चावे; ले आतम तत्त्व क्यों नहीं पावे ।

कर अपणे आप सूँ डेत । दिन पड़ा जावे ॥ ३ ॥

मन मगत रुग् मुष पावे. साची वान हिरदे लावे ।
 अंत माने जद मन प्रेत । दिन पड़ा जावे ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु कु. करी दुन्दु जगत की दूर हरी ।
 अब मान भयो रग म्वेन । दिन पड़ा जावे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ नर्ज माग्वाडी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

मन मोर्वा रे भरम केरी नीद (१); अब उठ जागो रे ॥ टेर ॥
 नीद नीद में ऊसर खोई, जाण ने जाल शिक्षायो रे ।
 रतन (२) हाथ में आयोजो खोयो, नुम सम मूर्ख न पायो रे ।
 तौ रतन ने दियो गमाय । तौ अब फिर वो कैमै पाय ।
 अजह भूल ने त्याग, अब उठ जागो रे ॥ १ ॥
 वानां ब्रह्म हाथ नहीं आवे, कर निश्चय जद पावो रे ।
 निश्चय कीकी भरम मय भागा, मन गॉबले ने समझावो रे ।
 मन समझाय ने आत्म पाय । भेद भरम ने देवो मिटाय ।
 अपने आप भूँ लाग; अब उठ जागो रे ॥ २ ॥
 घर बन मॉय एक मो दीसे, इतर नजर नहीं आवे रे ।
 गृहस्थ मयस्त भेद नहीं जाये, वे नर ब्रह्म पद पावे रे ।
 जिन ब्रह्मपद ने लियो है पाय । नित्र स्वरूप खोलखयो इर मॉय ।
 उनको है अमर मुहाग; अब उठ जागो रे ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु हाथ परुव के, सूतौ मोय उगायो रे ।
 प्यारी प्रीतम प्रीतम प्यारी, एहो एक लखायो रे ।
 नित्र प्यारी दोऊँ एक मिलाय । मान भर्म सब दियो है भगाय ।
 खल रतो है नख फग; अब उठ जागो रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

पियो पियो रे अमीरस (१) आय; फेर कद पीसो रे ॥ १ ॥
 भाग लगे कोर्टे हरिजन पाय । निस्येही होय अमी पिलाय ।
 अब तुम होवो रे अवाय (२); फेर कद पीसो रे ॥ १ ॥
 मधसे ऊँचो आनम ज्ञान । जिनको धरो सभी जन ध्यान ।
 असर होय अथ पाय; फेर कद पीसो रे ॥ २ ॥
 जग में जीलो है दिन चार । मत तुम आवो विषय की मार ।
 इय मौहो इयान गमाय; फेर कद पीसो रे ॥ ३ ॥
 खर कूकर में पियो न जाय । ऐसी स्वतन्त्रता वहाँ न पाय ।
 परबश मार जो आय; फेर कद पीसो रे ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु तोय पिलाय । फिट है मूल्य पियो न जाय ।
 मान अजहू शर्मय; फेर कद पीसो रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

धरदो धरदो भरम ने दूर; पीया निज पावोगे ॥ १ ॥
 भरम कूप में एकको नाँय । इनमें दलभया नहीं मुख पाय ।
 पहिले से रहिये आसे दूर; पीया निज पावोगे ॥ १ ॥
 पोल पन्ध को अन्न भी नाँय । दुगुना तिगुना जाल विद्वय ।
 द्विप जावं अरनो मूर; पीया निज पावोगे ॥ २ ॥
 जतर मतर तंतर भाँय । अहू गोचर और राशी दिलाय ।
 पहल ही करवे मय दूर; पीया निज पावोगे ॥ ३ ॥
 मुनि वाशिष्ठ और व्यास महान् । शुक्मुनि से पूजो मुख्यान् ।
 कर्पटन के डारो दूर से धूर; पीया निज पावोगे ॥ ४ ॥

१—आत्म-ज्ञान, २—अमता से रहित ।

देवनाथ गुरु मंत्र मुजान । पाये ब्रह्मनिष्ठा गुण खान ।
मान लख्यो है हाल हजूर, पीया निज पावोगे ॥ ५ ॥

। गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी “डंके” की । ताल कैरवा ॥

तोड़ो तोड़ो रे भरमना गे बन्ध, निज प्रभु ध्यावो रे ॥ टेर ॥
ज्यो काशी मथुरा मे जाय । दिल मे देखो देव मिलाय ।
अपने आप बिच खोज, सहजे दि पावो रे । तोड़ो तोड़ो ० ॥ १ ॥
बन्ध तोड़ प्रह्लाद चुनायो । आत्म रूप खंभ मे आयो ।
अन्धविश्वास ने छोड़, प्रकट दिखावो रे । तोड़ो तोड़ो ० ॥ २ ॥
निर्वन्ध होय रटे केई माध । जिनके भिट गये बाद बिवाद ।
हो गये आत्म रूप, महज समावो रे । तोड़ो तोड़ो ० ॥ ३ ॥
मानसिंह निर्बन्ध फल जान । देवनाथ मिले कृष्ण समान ।
जीवन मोक्ष पहिचान; आश नहीं जावो रे । तोड़ो तोड़ो ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी “डंके” की । ताल कैरवा ॥

बालो बालो अमर घर आय, दरसन पाव्यो ० ॥ टेर ॥
स्वर्ग मृत्यु पानाल मे नोहि । अमरपुरी है अपने मोहि ।
प्रद्व पर मोहि कीजे वास; दरसन ॥ १ ॥
कोई कहे हीर सागर के मोय । कोई तीजे चौथे बतलाय ।
ए तो भूठो देवे विश्वास; दरसन ० ॥ २ ॥
जगन्नाथ रामेश्वर जाय । यद्रीनाथ द्वारिका धाय ।
भटक बहुत देखी त्रास; दरसन ० ॥ ३ ॥
माची निश्चय जिनके होय । इत उत को भटके नहि कोय ।
दूट जाय सब आस; दरसन ० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिले मुजान । ध्यान गंगा न्हाये निर्वाण ।
मान निज रूप प्रमदरा; दरसन ० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पी प्याला नित प्रेम का, पियो न प्याला भंग ।
 उण सूँ तो मस्तान हो, इण से आवरो भंग ॥
 शिष बूँटी मुन् से कहो, कदनाँ शरम न आय ।
 नहीं बूँटी कल्याण की, बूँटी है दुःखदाय ॥
 शिष(१) बूँटी सज्जन पिये, जो मरे न जन्मे कोय ।
 थे सो चास बन को पियो, भूढ़ मति दी खोय ॥
 मानसिह कहे मानसो, शिव बूँटी दूँ पाय ।
 फेर जन्म धरसो नहीं, शिष(२) में शुद्ध समाय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चौती रसिये" की । वाल दीपचन्दी ॥

काँई रे जहर(३) रस पीओ रसिया(४) ॥ देर ॥
 हो रसियाजी गहारे(५) संग अब चालो ।
 गुरु राम(६) भगत होय मग(७) फालो । काँई रे० ॥ १ ॥
 हो रसियाजी धोने प्रह्न रस पाऊँ ।
 विपया रस सूँ मरत बचाऊँ । काँई रे० ॥ २ ॥
 विप ने अमी रस दोई घर माँही ।
 विप रस पीयो अमी जेइ घो ही नाँही । काँई रे० ॥ ३ ॥
 अमृत रस री तो कूँची(८) गमाई ।
 जहर पियो मौत सिर पर आई । काँई रे० ॥ ४ ॥
 कूँची ना मिले तो अय नाज्ञा(९) तोड़ावो ।
 धूर्ता अमी जहर मत खावो । काँई रे० ॥ ५ ॥
 देवनाथ गुरु ताला खुलाया । मानसिह रस री मुख पाया । काँई रे० ॥ ६ ॥

१—आत्मज्ञान, २—आत्मा, ३—विषय, ४—जीव, ५—निश्चयात्मिका बुद्धि
 ६—उपदेश, ७—ज्ञान-भान, ८—पहिचान, ९—साम्प्रदायिक हठधर्मी ।

॥ गान ॥

॥ नज "चैत के रमिये" की । ताल दीपचन्द्रा ॥

मँट रे कुपन्थ पन्थ जावो रमिया ॥ डेर ॥

पन्थ कुपन्थ ने डर हटावो । मोवन सिखर री पैडी आवो ।

कुमता रे घर कोई नित जावो । कोई रे कुपन्थ० ॥ १ ॥

कुमता नारी कदेई नही धोरी । बालम मानो रुडी अब थारी ।

नागो कही तो महज तिर जावो । कोई रे कुपन्थ = ॥ २ ॥

पुमता नार कहे पतिवर्ता । तोड़ दिवी थे कुमन सू डरता ।

नेही तो बालम फिर जोड़ मिचावो । कोई रे कुपन्थ० ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु चतुर विज्ञानी । मान कहे पिया जो नही मानी ।

हमके चूना तो केर विज्ञतावो । कोई रे कुपन्थ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ नज "चैत के रमिये" की । ताल दीपचन्द्रा ॥

मँट रे ईसो हठ लियो रमिया ॥ डेर ॥

हठ हठ मे तो सकल गुमाई । मन खान धारे हाथ न आई ।

मुख ने तबो दुःख लियो जी रमिया । कोई रे इनो० ॥ १ ॥

भ्रजू हठ छोड़ो तो भव तिर जावो । अन्न आनन्द मे महजे समायो ।

रात दिवस जहर पीगोजी रमिया । कोई रे० ॥ २ ॥

अनुप जन्म भोंय थे अब आया । जीवन अजहू वृथा ही गवाया ।

बुल जिसो जग मे जीयोजी रसिया । कोई रे० ॥ ३ ॥

पथापत्त को दूर परावो । अपनो आनन्द आप भोंय पावो ।

मुख तज दुःख क्यों सीयोजी रसिया । कोई रे० ॥ ४ ॥

मानमिह आनन्द निज मेरो । नाथ कृपा सू अंतः करण हेरो ।

मान अभय पद लीयोजी रसिया । कोई रे० ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिन्या ॥

धीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय ।
 वक्त विचारन की यही, अवर न मिलसी कोय ।
 अवर न मिलसी कोय जन्म सब नीचा पावे ।
 इन्द्र सुरेन्द्र ही होय, सभी यह मुक्त नहि आवे ।
 बीज भयूके देखने, भट पट मोती पोय ।
 कीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े जोल" की । ताल कैरवा ॥

पया जतन सँ मिल्यो है मौको(१) भूल न जावो रे; ह्य निज पावो रे ॥टे॥
 जगत विषय तो बहुत दिन भोगे तत्त्व(२) विषय शरसात्रो रे ।
 जगन विषय ने जग कर राखो निज में आवो रे । रूप० ॥ १ ॥
 जगत विषय तो फिर भी त्यार है तर कूकर उहाँ जावो रे ।
 मनुष्य जन्म देवाँ ने दुर्लभ मती गमावो रे । रूप० ॥ २ ॥
 और सन्तों री दे दे ओपमा अपखो माल गुमावो रे ।
 दूजा कमावो ज्यारो धोने कोई थे ही कमावो रे । रूप० ॥ ३ ॥
 वे तो सगत हुशियार रया ने थे क्यूँ घर(३) ने लुटावो रे ।
 वाँ मोचोरों(४)ने पकड़ कूटिया थे शस्त्र संभावो रे । रूप० ॥ ४ ॥
 और सन्तों री जीवन पढ़ पढ़ भोला मत रह जावो रे ।
 वाँ जो कमाया मुख सँ खाया थे भूखा रहावो रे । रूप० ॥ ५ ॥
 स्वर्ग और अपवर्ग फिरो चाहे देवलोक फिर आवो रे ।
 मनुष्य जन्म में तत्त्वज्ञान ऐसो कहीं न पावो रे । रूप० ॥ ६ ॥
 मान कहे अब कही मानलो सदा मुखी बन जावो रे ।
 इण पर भी रूपण री भरजी तो शिला बन्धावो रे । रूप० ॥ ७ ॥

१—मनुष्य-जन्म, २—आत्मा, ३—आत्मानन्द, ४—काम-क्रोध आदि ।

॥ गान ॥

॥ नज "चैन के रमिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

५' ४ र ह्यन्ध पन्ध जावो रमिया ॥ देर ॥

रन्ध ह्यन्ध ने दर हटावो । मोचन शिखर री पैसी आवो ।

हुमता रे घर काँटे निच जावो । काँटे रे कुरन्ध ० ॥ १ ॥

हुमता नारी कनेई नही धाँगी । बालन मानो रुदी अइ म्हारी ।

नानो कही तो महज निर जावो । काँटे रे कुरन्ध ० ॥ २ ॥

पुमता नार कहे पतिवता । नोइ दिवी थे कुमन सूँ डरता ।

मेही तो बालन निर जोइ मिचावो । काँटे रे कुरन्ध ० ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु चतुर विज्ञानी । मान कहे पिया जो नही मानी ।

हमके चूरा तो केर पिछतावो । काँटे रे कुरन्ध ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ नज "चैन के रमिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँटे रे ईसो हठ लियो रसिया ॥ देर ॥

इस हठ में तो सकल गुमाई । रतन खान थारे हाथ न आई ।

मुख ने तयो दुःख लियो जी रसिया । काँटे रे इमो ० ॥ १ ॥

अजू हठ धोइ तो भय तिर जावो । प्रथ आनन्द मे महजे समायो ।

रात दिवस जहर पीयोजी रमिया । काँटे रे ० ॥ २ ॥

भुन्ध्य जन्म मोंय थे अब आया । जीवन अजू छया ही गमाया ।

दूल जिसो जग में लियोजी रसिया । काँटे रे ० ॥ ३ ॥

पशापत्त को दूर परावो । अपनो आनन्द आप मोंय पावो ।

मुख तज दुःख क्यों पीयोजी रसिया । काँटे रे ० ॥ ४ ॥

५ मानमिह आनन्द निज मेरो । नाम कृपा सूँ अंतः करण हेरो ।

मान अभय पद लियोजी रसिया । काँटे रे ० ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

कीजे मान विचार नित, पलक न गाली खोय ।
 वक्त विचारन की यही, अवर न मिलसी कोय ।
 अवर न मिलसी कोय जन्म सब नीचा पावे ।
 इन्द्र सुरेन्द्र ही होय, तभी यह सुख नहि आवे ।
 बीज भ्रूके देखने, फट पट मोती पोय ।
 कीजे मान विचार नित, पलक न गाली खोय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखदे बोल" की । ताल करवा ॥

पया जतन सूँ मिलयो है मौको(१) भूल न जावो रे; रूप निज पावो रे ॥ १ ॥
 जगत विषय तो बहुत दिन भोगे तस्व(२) विषय दरसावो रे ।
 जगत विषय ने जग कर राखो निज में आवो रे । रूप० ॥ १ ॥
 जगत विषय तो फिर भी तयार है खर कूकर नहीं जावो रे ।
 मनुष्य जन्म देशों ने दुर्लभ मती गमावो रे । रूप० ॥ २ ॥
 और सन्तों री दे दे ओपमा अपणो माल गुमावो रे ।
 दूजा कमावो ज्यारो धोने कोई थे ही कमावो रे । रूप० ॥ ३ ॥
 वे तो सग्त हुशियार रया ने थे क्यूँ घर(३) ने लुटावो रे ।
 वाँ तो चोरों(४) ने पकड़ कूटिया ये शस्त्र संभावो रे । रूप० ॥ ४ ॥
 और सन्तों री जीवन पढ़ पढ़ भोला मत रह जावो रे ।
 पाँ जो कमाया सुख सूँ खाया थे भूखा रहावो रे । रूप० ॥ ५ ॥
 स्वर्ग और अपवर्ग फिरो चाहे देवलोक फिर आवो रे ।
 मनुष्य जन्म में तत्त्वज्ञान पेसो कहीं न पावो रे । रूप० ॥ ६ ॥
 मान कहे अब कही मानलो सदा सुखी बन जावो रे ।
 इस पर भी हूवण री भरजी तो शिला बन्धावो रे । रूप० ॥ ७ ॥

१—मनुष्य-जन्म, २—आत्मा, ३—आत्मानन्द, ४—अम-क्रोध आदि ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की । ताल कैरवा ॥

मोय मती मन मूढ नीन्द(१) अब चालो आत्म देश, चुपके चाल परो ॥ १ ॥
 पन(२) दिन पन्ध(३) माग(४) दिन मारग विना पंख दिन उडगो(५) रे ।
 धर(६) दिन अधर आकाश नही जहाँ निर्मल मुन्दर अेष(७) । चुपके ० ॥ १ ॥
 माग मे हे डाकू(८) चगोरा लूट लूट धन (९) खावे रे ।
 वों रे जाल फँसो वयो मरख ले मनगुरु उपदेश । चुपके चाल ० ॥ २ ॥
 हरदम राग बैराग बोलाऊ (१०) जिगसू चार न आवे रे ।
 थो धर(११) अपरो कदे न समको थो मगलो परदेश(१२) । चुपके चाल ० ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के निज घर मोय बतायो रे ।
 मानमिह निज रूप मिल्यो जय मिष्ट मयो राग और द्वेष । चुपके चाल ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मैन म्हारा रे" की । ताल कैरवा ॥

मजनो म्हारा रे चालो रे चालो निज देश(१३) मे रे ।
 मजनो म्हारा रे सुतों सुतों मरमी नौथ, लाल म्हारा रे,
 समझ लेवा नी मन भौखने रे ॥ १ ॥
 मजनो म्हारा रे समभय जिकेई नर मूर्खों रे ।
 मजनो म्हारा रे पौच(१४) पचीम(१५) किय चुर, लाल म्हारा रे समझ ० ॥ १ ॥
 मजनो म्हारा रे पछिम(१६) पुरी मूँ घांठो(१७) खोडियो रे ।

१—मोह-निन्द्रा, २—स्थूल कर्म-काण्ड, ३—ज्ञान मारग मे चलना, ४—पन-
 डडी रूप माग्प्रदायिक रीति-स्वाज, ५—स्थूल इन्द्रियो को पट्टे से परे, (देवल)
 सूक्ष्म त्रेत करण का विषय, ६—किसी प्रमाण पर निर्भर न रहने वाला-स्वयं /
 स्वदेश, ७—सन्निवृत्तानन्द स्वरूप, ८—द्वैत भाव के विचार, ९—आयु, १०—रग-
 वाला, ११—अज्ञानावस्था, १२—आत्म-विमुखता, १३—आत्म-स्थिति, १४—
 विषय, १५—प्रकृतियों, १६—अज्ञानावस्था, १७—मन ।

- मज्जतो म्हाारा रे मारी मारी प्रारब्धौ री सेन(१), लाल म्हाारा रे; समझ० ॥ २ ॥
 मज्जतो म्हाारा रे चालोनी पृथ्वी(२) पुर रे गाँव में रे ।
 मज्जतो म्हाारा रे रेवेनी पूर्विका(३) होय, लाल म्हाारा रे; समझ० ॥ ३ ॥
 मज्जतो म्हाारा रे ज्ञान उजालो घट में फट्टे रे ।
 मज्जतो म्हाारा रे करदो करदो सचित(४) ज्यौरो नारा, लाल म्हाारा रे; समझ० ॥ ४ ॥
 मज्जतो म्हाारा रे मन मज्जयूनी ने भेलिये रे ।
 मज्जतो म्हाारा रे कीजे कीजे शुद्ध किबमाख (५), लाल म्हाारा रे; समझ० ॥ ५ ॥
 मज्जतो म्हाारा रे नहीं तो करो नहीं भोगवो रे ।
 मज्जतो म्हाारा रे रहखो रहखो कर्म अकर्म सँ बार, लाल म्हाारा रे; समझ० ॥ ६ ॥
 मज्जतो म्हाारा रे देवनाथ गति देवसा रे ।
 मज्जतो म्हाारा रे अँरे संग मान भयो देव, लाल म्हाारा रे; समझ० ॥ ७ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग पूरवी । ताल तिताला ॥

- मत हो तू जग ते हीरान ॥ टेर ॥
 तेरो कहा विगारत जग यह, अपनो रूप सब जगत जान । मत० ॥ १ ॥
 जग ते हार कहाँ जायगो, ठौर न बीखत कोई और आन । मत० ॥ २ ॥
 मिथ्या ही मिथ्या कहे उहँ पृथ्वी, तुम जगते क्य बार जान । मत० ॥ ३ ॥
 भिन्न कहे तो अलग क्यों न जावे, बसे आय क्यूँ जग में ठान । मत० ॥ ४ ॥
 मानसिंह तू आप जगत है, तेरे सिवा फिर जगत कौन । मत० ॥ ५ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग मुलतानी । ताल ध्रुपद ॥

- गुनि जन गुन गाय गाय, गाय नाँय रहिये;
 गाय रहे दुःख होय, दुर्मति त्याग रहिये ॥ टेर ॥
 आदि सिंह वनत गाय, सोच तो यही है;

१—प्रारब्धों के भोग, २—आत्म-ज्ञान, ३—आत्म-ज्ञानी, ४—पिड़ले किये हुए संचित कर्म, ५—वर्तमान में होने वाले कर्म ।

जान बूझ दुःख ज्ञेय, मोचन नहीं है। गुनि जनः ॥ १ ॥

मानमिद गाय न्याय, एक रय मटज लाग,

गुट नीट येति जाग, मुलभे होय रहिये । गुनि जनः ॥ २ ॥

माने मन जीव होय, ब्रह्म मान जीव सोय,

मान न महान ज्ञेय, भीषे भग रहिये । गुनि जनः ॥ ३ ॥

॥ कृष्णलिया ॥

मान कहे अथ मान मन, बिन माने मुख नाँय ।

मन माने निज मन बने, फेर काल नहीं भाय ।

फेर काल नहीं भाय, काल को काल ज्ञाये ।

काल विचारो कौन, जिको फिर न्यायन आये ।

मरण मारण मे रहे परे, सो निज रूप नभाय ।

मान कहे अथ मान मन, बिन मान्यो मुख नाँय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज चैत के गीत " रामण का नन्दलाला " की । ताल कैरया ।

कही भानो रे कही भानो, अपने रूप ने आप जानो । १ ॥

बहुतक बेर कही ममकाय । फेर कहीं जो बुद्धि मे आय ।

ज्ञान ज्ञान के फेर जानो । अपने रूप ने आप जानो ॥ २ ॥

दीनन मात्र यह है संसार । इनको जग बुद्ध करो विचार ।

तन्व दृष्टि मन मे आना । अपने रूपः ॥ ३ ॥

एवमे मिल कर करो व्यवहार । एक रूप लख आरोधार ।

तूभा ही बात हठ मन ठानो । अपने रूपः ॥ ४ ॥

तन्व दृष्टि से बरलो ध्यान । उद उग दीये आप समान ।

ज्ञान हरो तो अन्तर जानो । अपने रूपः ॥ ५ ॥

इधनाय गुरु कही सुजान । मान सही कर लीवी मान ।

जाटे है जैसे वेद पुस्त । अपने रूपः ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज चैत के गीत "वामण का नन्दलाला" की । ताल कैरवा ॥

हृद रंग आयो रे हृद रंग आयो । खुद मस्ती प्यालो पायो ॥ १ ॥

मदश सतगुरु मिल गया नाथ । भलो जियो मदवाँ रो साथ ।

प्रेम राग सूँ सदाई गायो । खुद मस्ती प्यालो पायो ॥ १ ॥

समझी वृत्ति सुरत कलार । शब्द छँख मद् करत तैयार ।

पीताँ ही अखण्ड तत्त्व दरसायो । खुद मस्ती० ॥ २ ॥

पहिले प्याले पड़ी पिछाण । धरबो पावड़ी पर फग जाण ।

गुण प्रीतम रो हृद गायो । खुद मस्ती० ॥ ३ ॥

दूजे प्याले उगो चन्द । तत्त्व शब्द रो सित्यो आनन्द ।

जग रो रंग सब बिसरायो । खुद मस्ती० ॥ ४ ॥

तीजे प्याले लपच्यो मार । प्यारी कीन पिया सूँ प्यार ।

आनन्द बाँगखो सो दरसायो । खुद मस्ती० ॥ ५ ॥

चौथे प्याले मान्या ज्यार । खोर जिके हो गया साहूकार ।

शुभ गयो धन अब पायो । खुद मस्ती० ॥ ६ ॥

प्याले पाँचवें निर्भय कीन । पाँच पचीस मया आचीन ।

बेकदके डर बिसरायो । खुद मस्ती० ॥ ७ ॥

शुद्धे प्याले मद् छक होय । राँक काल री रही न कोय ।

आल बिचारो मुक्त से बनरायो । खुद मस्ती० ॥ ८ ॥

प्याला सातवाँ पोयत सोय । त्रिणसूँ पिये य दरस्थ होय ।

जो-तो अवसर अब के ही आयो । खुद मस्ती० ॥ ९ ॥

प्याले आठवें पियाजी रे हाथ । भलो बख्यो है अधिको साथ ।

सङ्को आनन्द छिम जाय गायो । खुद मस्ती० ॥ १० ॥

पीते ही प्याला हुवा नलतान । नहीं मान और नहीं अपमान ।

पिय प्यारी मद् रूप ध्यायो । खुद मस्ती० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भिभोटी । ताल तिताला ॥

जिसे दूँ देने को गये वही हम पाया है ॥ १ ॥
 कागी केदार गये, गया दरद्वार गये ।
 बाह धाम किये पर कहीं न मिलाया है ॥ १ ॥
 पाण्डवन को खूब बूझा, तो भी नर्दा मारग मूझा ।
 स्वाधे के लिये हमे और ही बतया है ॥ २ ॥
 प्रेन जो दिला मराई, ब्रह्म कपाली मराई ।
 पोल के विप्रन को खूब दान जो दिलाया है ॥ ३ ॥
 जैसे हैं विप्र यह, तैसे ही सन्यासी मोई ।
 त्याग त्याग कहके लावों भिलुक बनाया है ॥ ४ ॥
 सन्यासी न समझो इन्हें, समझो सत्यानासी तुम ।
 एक दो नहीं ये लावों घर, जो बुझाया है ॥ ५ ॥
 देवनाथ कृष्ण मिले, हुए हम पारथ के रूप ।
 मान करौं के जो बदले, प्रेन को रंगाया है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भिभोटी । ताल तिताला ॥

अब न ठगावेंगे हम, सुन कृष्णाणी के ॥ १ ॥
 पहिले नहीं जानते थे, तब हम इनकी मानते थे ।
 अब तो हुए है हम पूरव राजधानी के ॥ १ ॥
 मला है अच्छा है यह, पास में न आवो मेरे ।
 अब न चलेंगे तुमारे चक्र यह दिवानी के ॥ २ ॥
 उन्टे अर्थ वेदों के, और सूत्र अर्थ उल्टे करो ।
 अब रही चुन करना करे जिन जुवानी के ॥ ३ ॥
 जितनी चत्री में चली, अब न चलेगी यहाँ ।

हम भी तो आगे हैं कोई सिद्धनी लगानी के ॥ ४ ॥

चाहे हठो देवी या, देवता भी हठो तुम ।

अब न देने वाले हैं हम आत्म कुरबानी के ॥ ५ ॥

नाथ हूँ को साथ कियो, आप सो सनाथ कियो ।

मान छोड़ पोला पन्थ छाता वेद बानी के ॥ ६ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मानसिह संसार में, सत्पुरुषों रो संग ।

भेगत करले आपसों, पलट देत है रंग ।

पलट देत है रंग, अंग ज्यों त्यों ही रहावे ।

बदल जात है भाव, जबे वे भृङ्ग कहावे ।

परम पाठ सबही जले, जैसे जले परतंग ।

मानसिह संसार में, सत्पुरुषों रो संग ॥

॥ दोहा ॥

मानसिह संसार में, हंस स्वरूपी सन्त ।

इस हंसन के भेष में, युगला बसत अनन्त ॥

॥ कवित्त ॥

ज्ञान और विचारशील अन्तर विवेक भर-यो, मिथ्या विषयन को नि-
करत रहत त्याग है । मरने को डर न कोय कर्तव्य आरुह होय, उषोंरो संसार
बीच सत्य वैराग है । आत्म स्वरूप सोय अवर नहीं जाने कोय, देह अभिमान
ताओ कियो सत्य त्याग है । ज्ञान यूँ विचार करे ऐसे सही पार करे, ज्योंरे
आत्म तत्त्व वीच साओ अनुराग है ॥

॥ गान ॥

॥ राम गोरी । ताल करवा ॥

लीजे अमर फल लीजे, मत्संग माँव लीजे अमर फल लीजे ॥ डेर ॥

नीरय जल को तो गुम ही रुठ है, आ सूँ मन न प्रतीजे ।

मनस फल ओ मन्मग देवे, कर हिम्मत ले लीजे । मन्मंगल० ॥ १ ॥
 पीरों रो कही कही नहीं सुनिये, तर्क आपनी कीजे ।
 देवे जगज प्रकाश सहित जो, सेवा तिसौरी कीजे । मन्मंगल० ॥ २ ॥
 न मन्मग कुमंग त्याग दे, मन समता हर लीजे ।
 एक रग सू रहे निन रंगिया, ज्ञान अमीरम पीजे । मन्मंगल० ॥ ३ ॥
 न मन्मग लाली मन रहीजो, कने जिननी समझीजे ।
 हरक बिचार धार उर अन्दर, जीवन मोक्ष कर लीजे । मन्मंगल० ॥ ४ ॥
 पीधे भग और चरम चौगुणो, भूषो धार मचीजे ।
 ते तां वापड़ा आप जलत है, थॉने शीतल हिम कीजे । मन्मंगल० ॥ ५ ॥
 भग तमासू और मुलफ पलीता, दोय दोय हाथ उठीजे ।
 आपनी तो वृद्धि उण आग मे होमदी, उयोरो संग नही कीजे । मन्मंगल० ॥ ६ ॥
 जीवन मदा हृदय उयोरे समता, उयो सू राम पतीजे ।
 मन्मग कामनी मे लम्पट लोभी, उयो सू राम नही रीके । मन्मंगल० ॥ ७ ॥
 ऐबनाग को साथ कियो जह, सम्मुख दर्शन कीजे ।
 जगत ब्रह्म और ब्रह्म जगत है, मान आन तज नीजे । मन्मंगल० ॥ ८ ॥

॥ सबैया ॥

लोक कहे मन्मङ्ग करो मन्सङ्ग को दङ्ग तो और है भाई ।
 मन्मङ्ग के रंग मे आन कने तब छूट पडे मचही चतुराई ।
 मन्मङ्ग को रंग तो बहुत कङ्गे यह महजहू मे तो लागे ही नौही ।
 जो यह कदाचित् लाग गयो तो सोच गयो फिर जागे ही नौही ।
 मान अज्ञान ने आयो मैं मेरे लागो मना अब भागे ही नौही ।
 मन्मङ्ग के रम को चाख लियो अब और रसादि को चाखे ही नौही ।

॥ सोरठ ॥

नर कर के सत्सङ्ग, जो रङ्ग उर लाग्यो नही ।
 माली गयो निम्बङ्ग, पाहन कूड़े मारियो ॥

नृषु करी सत्सङ्ग, ऊमर सब भटकत फिरयो ।

लगयो न शब्द को रङ्ग, शब्द विदूषा रह गया ॥

कर सत्सङ्ग मन अट्ट, जाति बरण की रह गई ।

चुपड़े पड़े जो अट्ट, सुपने न लागे मानसी ॥

नहीं पारस में दोष, दोष पड़यो लोहे मँड़ी ।

दूधा करे क्यूँ रोप, फर्म काठ काट्यां नहीं ॥

जितनो फट गयो काठ, तितनो सध कंचन भयो ।

रह गयो लोह निराठ, काठ जठा सूँ ना कट्यो ॥

इष्ट मूँ जन्म अनेक, धार धार फिरता फिरयो ।

मित्तो न आतंम एक, मति शुद्ध विन मानसी ॥

तनी ज्ञान की घेल, जंझा मूल जावे नहीं ।

कोई दिन देसी पेल, ज्ञान रूप आ मानसी ॥

ज्ञान बीज दियो शाय, प्रेम नीर सूँ सींच दी ।

आ जन्म ज्ञानन्तीं न जाय, फल तो लागे यक्त पर ॥

यो तत्त्व फल लाग, चाकत चित्त में चेतिया ।

लगी करम पर आग, कौन बुझायें मानसी ॥

ज्ञान बीज दे शाय, मत डर रे मन माँयला ।

प्रेम नीर सूँ पाय, धूप पड़्यो जलसी नहीं ॥

सगलों री जड़ आय, इष्टारी जड़ जावे नहीं ।

धौसो री देत गमाय, आ मन मूँ करले मानसी ॥

मान मान रे जान, विन मान्याँ फिर मारसी ।

अब तो शुभ फल जान, मिथ्या फल तत्र मानसी ॥

ठठ मॉमल शत, आप अवषा सब डी करे ।

फेरख स्वर्ग पर हाथ, जो मॉग्यो मिले न मानसी ॥

अँरो मन रल होय, तो स्वर्ग विचारो कौन है ।

हने न चहिए कोय, म्हारी कल्पना माननी ॥

आज है कल मिट जाय, इसे स्वर्ग रो क्या करौ ।

धिर तो रहवे नॉय, धिर निज मेरो रूप है ॥

स्वर्ग और अपस्वर्ग, जेता सब मन मॉय है ।

मय को करो विमर्ग, मिथ्या नञ्ज मत्र माननी ॥

निन्दु न थन्दू कोय, चाहे मो जाबो स्वर्ग मे ।

आन्धिर रहमो रोय, बहौ पर स्थिरता है नही ॥

बॅारो ताम और रूप, बां तो अवरय ही निखरनी ।

मेरो शुद्ध स्वरूप, अमर हमेशा माननी ॥

॥ मारठा ॥

मरे न लामो वात, प्रेम पय पीवण लय्यो ।

उगे ज्ञान प्रभात, मिटे अन्धारो माननी ॥

पद-या अन्धारी गत, माथ कियो धू धू तणो ।

पकड़ अन्ध को हाथ, धॅारो मरनी माननी ॥

॥ दोहा ॥

कहने को ब्रह्मज्ञान मो, कीनां नही विश्वास ।

कागद फी मी नाय है, हूबेगी मरुधार ॥

जो कह बह कर जात है, मो सेवे ब्रह्मज्ञान ।

आप निरे और तारले. साथे पञ्च महान ॥

उन मनों की सेव से, नही हूबे मरुधार ।

आप स्वयंइया है त्वरा, स्वके करदे वार ॥

॥ सवैया ॥

नाम को डोंड इटायो नही कर घुर खेबैये की बातें बनाये ।

उनको कछु न भरोमो मेरे मन जहाज कहीं 'अर्थभीष' हुवाये ।

मान पिदान करो उर में यदि कोई स्वनेया हाथ पराये ।

पहिले परिचा करो धित मे यह कहीं तरु हमको पार लगावे ॥

मिले खेपे का अर्थ नाव को लो जाने खेप, देरी न लगात तुरत करत किनारे हे ।
 आप गये पार अत्र औरन को पार लेत, क्या है मजाल कोई हूवे मम्भारे हें ।
 कोनो प्रकाश त्रिना दीप अन्तरगत ऐसो, जिनके प्रकाश भये कष्टु न। अन्धारे हें ।
 कहे राव मानसिह अर्थ है डर कौन यार, नाथजी तो साथ हर वक्व जो हमारे हें ॥

॥ दोहा ॥

आये वन्ध छुड़ावने, शौध दिये चहुँ ओर ।
 ना कोई गया न आविया, रहे ठौर के ठोर ॥

॥ सोरठा ॥

जिन्हें न पूरो भाव पोला पन्थ वातें करे ।
 मन में रति न चाव, ए चित हीना थोर स ।
 पण्डिताई रे पाण, ए सय ही सूँ करवा रहे ।
 पड़े न उर में निशाण, करवा बजर अयूँ मानसी ॥
 पोथी पदी अनेक, कई शिष्य और पढ़ाविया ।
 पण पढ़यो न उर में छेक, मन माने त्रिन मानसी ॥
 रोय फल री रेल, करम अजू छूटो नहीं ।
 अलगो रह गयो एक, मन मान्यौ दिन मानसी ॥
 व्यौरो हिरदो छेक, कोमल होय कागद जिसो ।
 व्यौर उलटा पढ़ गया लेख, मन मान्यौ यूँ मानसी ॥
 हृदय बज्र सो होय, फलम विचारी क्या करे ।
 वे यूँ रहसी रोय, मन मान्यौ दिन मानसी ॥
 वातें रा वाचाल, श्रुति स्मृति छेड़दे ।
 निरख सके नहि लाल, पढ़ पोथा थोथा रया ॥
 आवे आखर सौध, समभया जिके तो समझया ।
 चाहूँ नेत धरम्य नयन जेने जेने ॥

हंस रुहे नहीं बैन, मुक्ता लेन अमोलमा ।

कौवा पडे न चैन, जिचे शौच धरे विष्टा मँही ॥

रजो न राग समान, काग पलट हसा वनो ।

मटो शब्द के बाण, कहे अयू कीजे मानमी ॥

तज नोते री चाल, लाल लखो घट बीच मे ।

माल त्तो कँगाल, हंसी जिकारी गानमी ॥

गुप्त लजानो मोय, देश विदेशां क्या किये ।

गुप्त ही गुप्त रह जाय, मन मान्यो दिन मानमी ॥

दण दित ने का मार, उजलो कर अगद जिमो ।

नां नू अपणो आप, ब्रह्म लेख लिये मानमी ॥

कूड़ी शकिया वान, हाथ कुलु दावे नहीं ।

मिटे न तिरगुण रात' मयि लख्यो दिन मानसी ॥

बुकरम करे अपार, उपर सूँ धातों करे ।

दृष्टी पड़मी मार, जाण जहर लियो मानमी ॥

वाये अट्टर अजाण, बैरा औपधी कर दहे ।

पण जिण नर खायो जाण, मरयो तेषइ मानसी ॥

धरु गण ज्ञान अट्टट, धरु बक चुगले अयूरया ।

अयो जङ्गल रो ठूँठ, काम न आवे मानमी ॥

॥ धेक वचन ॥

यो मन कहो महाराज, ठूँठ भी आवे काम मे ।

कहं सरत हे काज, निकमो तो वो भी नहीं ॥

जिनने कष्ट को काम, ओ मंगलो ठूँठा मूँ बरयो ।

क्यों नर कहो निग्रम, लोच विचारो भ्रवति ॥

॥ मानसिद्ध जी वचन ॥

मंगलो ले निशे काम, केवल जड़ वाची रही ।

वा आवे नहीं किछु काम, दण मे रुही कविराज जी ॥

ज्ञान रहे सब वाँटे, आप तो कोय ही रया ।

निकली न मन री आँट, जिण सूँ ठूँठे सा कया ॥

॥ दोहा ॥

को नहीं जीते भूपति, चातुर चपल प्रवीण ।

हमें उच्चारण कारणे, भू तन विधि धर लीन ॥

॥ सारठा ॥

ना कथनी लूँ काम, और कविता मूँ राजी नहीं ।

वह आतम जिज्ञ धाम, मन समभयाँ मिले मानसी ॥

कविता करो अनेक, शब्द कोप के जोड़ कर ।

पण पड़े न दर में छेक, मन सुलभयाँ विन मानसी ॥

कविता री नहीं जोड़, छन्द मात्रा देखी नहीं ।

फरी न किरारी होड़, मिली सो भाग्री मानसी ॥

कय गया कवि अनेक, काली केराव सूरसा ।

जामें कसर न नेक, मन अनुभव सो ना रुक्यो ॥

अजब रंगीली रात, जग में सब मुड़दा किये ।

जीव पयो नहीं जात, मन सूँ ज्यौरे मानसी ॥

भया जीव लूँ त्रस, कोई कोई दीखे जीवता ।

ज्यौरे वचन है रम्य, लख महारम तित मानसी ॥

नहीं रह्यो मतिहीन, मन मायलो समझायलो ।

वजे प्रेम की बीण, मन सूँ समभयाँ मानसी ॥

पाँच तरव गुण तीन, दस ले तार चढ़ाविया ।

लिया सरस्वती बीण, मधु गुण गावे मानसी ॥

श्रुति सरस्वती नार, तार और तुरप मिलाय के ।

बल विया दरवार, यूँ मधु गुण गावे मानसी ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड । ताल दादरा ॥

- । मन समझ विचारो, साची धारो, कर मन पुरुषो रो मझ ॥ डेर ॥
 पेसा जन उथोरी मझन कीजे, क्रोध न व्यापे अझ ।
 स्वत मिट्टाई होय जिक्कोरे, झल भी होवे तझ रे, मन समझः ॥ १ ॥
 जन्तर ने मन्तर ने तन्तर मिट्टाया, ये मव जाणो पाखरड ।
 छातम निट्टा मदाई मुखी रहे, निशि दिन उडन आनन्द रे, मन समझः ॥ २ ॥
 जन्तर लिखे और मन्तर माधे, जगत जमाई रा रझ ।
 माल सुपन मे ग्यात मसखरा, जाना विधि कर डझ रे, मन समझः ३ ॥
 गोरख कधीर न मन्तर माध्या, कीनी मदा सन्मझ ।
 मान रहे म्फोने वे ही मुहाया, थोरो लाग्यो म्फोने रझ रे; मन समझः ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड । ताल दादरा ॥

- जिक्को छातम पाई, क्लत मिट्टाई, वॉ पुरुषो रे पाँव ॥ डेर ॥
 आनम शक्ति मे थह बल देसो, अगिल ब्रह्माण्ड समाय ।
 अष्ट सिद्धि मव हाथ जो जोडे, पण वो न करे वॉरी चाग रे, जिक्को ॥ १ ॥
 कोण सईका ने कोण हजारी, कृण वारे लाग्ज अपाय ।
 आबम इष्ट जो एक ही पम्डयो, मव होय उथुरे माँय रे; जिक्को ॥ २ ॥
 म तर ने जन्तर करे सिद्ध नोही, जगत ठगाई रो भाव ।
 स्थत सिद्धि थ्यागे महा मन्तर है, देस्यो मूँ दु म जाय रे, जिक्को ॥ ३ ॥
 गोरख कधीर गिदाम जिमा रे, नहि कोई मन्त्र पदाय ।
 धरता ही हाथ कई शिष्य वारया, उथोरी दृष्टि मूँ भूतक जिवाय रे, जिक्को ॥ ४ ॥
 देवदुनाथ कृग कर हमको, दीनो भेद वनाय ।
 मान रहे तुम जावो परे अत्र, सोऊ चहिये नाँय रे; जिक्को ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मैं हूँ वीर सयाना (१), सिंह (२) समान, भेड़ों (३) सूँ भिड़कूँ (४) नाँय ॥ ६२ ॥
 भेड़ों सूँ वे ही भिड़कमी रे, चास (५) जिके जन स्वाय ।
 सिंह को प्रण वह मरी (६) नहीं खावे, सो किम कर वो (७) आय रे; मैं हूँ ० ॥ १ ॥
 सिंह की सी मेरी गाज (८) है रे, भेड़ी देख भगाय ।
 सिंह से सिंह होवे सोई अइसी, भेड़ की ताकत नाँय रे; मैं हूँ ० ॥ २ ॥
 जन्त्र ने मन्त्र ने कंकरी तुम्हारी, मुझ पे देखो चलाय ।
 मन निर्यल ज्यारे मूठ जो लागे, म्हारे तो नेड़ी न आय रे; मैं हूँ ० ॥ ३ ॥
 आत्म मूठ (९) मैं आप चलाऊँ, लाखों को देखूँ गिराय (१०) ।
 मैं हूँ मुइदा (११) जो ऐसा ही करलूँ, क्या मोपे जादू आय रे; मैं हूँ ० ॥ ४ ॥
 जिनना मंतर जंतर संतर, मुझ बिना कोई नाँय ।
 ओऽहं (१२) सत्र निफल देखो तो, फिर तुम देखो चलाय रे; मैं हूँ ० ॥ ५ ॥
 देवदुनाथ जभी मोहे छोड़यो, पूरो सिंह (१३) बनय ।
 मान कहे कोई सिंह हो आवे तो, देखूँ मैं हाथ चलाय (१४) रे; मैं हूँ ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

सय (१५) भेड़ी (१६) डरावे, थाने वहकावे, सिहाँ (१७) रे पास न आय ॥ ६२ ॥

१—बुद्धिमान, २—स्वतन्त्र, निडर ३—अंधविश्वासी डरपोक लोग, ४—चमकूँ
 या डकूँ, ५—पशुपथ या साम्प्रदायिक अंधविश्वास, ६—दूमरों पर निर्भर रहना,
 ७—अंधविश्वास रूपी चास, ८—संशय रहित निडर होकर बोलना, ९—आत्मज्ञान,
 १०—दस देना, ११—देहाभिमान से रहित, १२—सय का आचार बीजमंत्र, १३—
 दुर्गलानी, निडर, १४—विचार विनिमय, ज्ञानचर्चा, १५—मजहबी पोला पन्थी
 धूर्त लोग, १६—विचारहीन अन्धविश्वासी जनता, १७—विचारवान ज्ञानी लोग ।

जो वे मिह्रा के पाम में आवे तो, तालू मे जीभ(१) रह जाय ।

मिह्रा की धारु(२) कुरी है सबसे, सुणता मन घबराय रे: सब भेड़ी: ॥ १ ॥

मिह्रां रे पाम तो बोही ज आवे. मिहनी(३) को सुत पाय ।

नाटरी को दूध(४) पियो सोई आवत, ज्यारे कलेजो(५) नाय रे. सब भेड़ी: ॥ २ ॥

मतर ने ततर मूठ चलाये, देवे जतर बनाय ।

मिहनी के सुत एक न माने, मिह्रा ने काल न त्वाय रे. सब भेड़ी: ॥ ३ ॥

गौरव कबीर रविदास मन्सूरा, याने कोई मारुय जाय ।

जो वे मतर साचा ही होता, तो बाँ पर क्यो न चलाय रे. सब भेड़ी: ॥ ४ ॥

बैबनुनाथ है मिह्र हमारे, उनके सुत कहलाय ।

मान कहे मिह्र के सुत मिह्र है, भेड़ मूं क्यो घबराय रे सब भेड़: ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिलावल, तर्ज "सत्गुरु मायब एक है" की । तालू श्रीमा कैरवा ॥

पत्रक परचो देखियो होजी; परचे मूं क्या कामा ।

परचे परचे मे फल रया होजी, दूर रयो निज धामा ॥ १ ॥

तन श्म मन श्म कर रया होजी. परचों मे उलभाया ।

इतने परचो आवे काल रो हांजी. सब रुज जावे मिह्रायो ॥ १ ॥

गौरव परचा ना दिया होजी; नहीं श्म कीन मिह्रायो ।

वामण से दुःख भेटना होजी; मन निपही बेवाया ॥ २ ॥

भन सुत कारख दौडता होजी, जगत मिह्रापर जावे ।

जो वे सिद्ध साचा हुवे होजी. तो क्यो नहीं जगत रचावे ॥ ३ ॥

जो वे मिह्रायो सूँ सुत रचे होजी, हयको कष्ट क्यो आवे ।

क्यो ब्रह्मचर्य खण्डन करे होजी, क्यो ब्रह्म तेज घटावे ॥ ४ ॥

जो वे किणी ने सुन दे सके होजी, तो और रा सुन क्यो दुँडे ।

१—बोल भी नहीं सकते, २—आत्मज्ञान चर्चा रूगी गर्जना, ३—निरचयात्मिक बुद्धि, ४—सत्य विवेक, ५—देहभाव से रहित ।

परतक पाचो देखलो होजी; पकड़ परायो ने मूँडे ॥४॥
 मञ्जुन्दर किणी ए सुत हता होजी; जौने गुरु शिष्य कर लाया ।
 गोरखनाथजी ने मूँडे लिया होजी; क्यों नहीं परचा दिन्नाया ॥६॥
 मारण जारण लबादनी होजी; मोहनी कशीकरण होवे ।
 तो दुष्ट क्यूँ जग में होवता होजी; धर्म मूल क्यूँ खोवे ॥१॥
 मानसिंह मन मानव्यो होजी; पाई मैं असल सिद्धाई ।
 बसली धोखल नकली तय्या होजी; दिखे सब रोग मिटाई ॥२॥

चंक्र बचन

॥ दोहा ॥

चंक्र कहे भूपति सुनो, करो अन्याय की बात ।
 पूज्य भया जो लगत में, झूठ कहे किम् जात ॥
 जो वे सिद्ध होता नहीं, परचा देता नैथ ।
 सो जग में क्यूँ मानता, सो रही देहुँ बताने ॥

मान बचन

मान कहे कविराज सुन, हूँके कान को खोल ।
 बात कहुँ चित में धरो, माणक मणी अमोल ॥
 सिद्ध हुता साधक हुः॥, पर तू जाणो क्यूँ लाय ।
 जीवत मेल दिखावता, जद वे सुतक जीवस्य ॥
 देवताय भी सिद्ध है, पार आपांने कीन ।
 भव सागर सँ तारिक, धन सुत कहे न दीन ॥
 मोह मौत सँ म्हे मरथा, तत्त्वज्ञान दे प्राण ।
 मूँश फिर जिन्द्र किथ, ए साचा सिद्ध जाण ॥

॥ मान ॥

॥ तर्ज “वाणी” की १ ताल कैरदा ॥

आधो मैं तो हण विध मूक्तक जिवत्या रे होजी ।

रिपव मौत में पच पच मरिवा, ज्ञान का मन्त्र सुणाया रे । साधो मैं ने १ । ६

वे जीया तो फिर मर जावे, ए नित अमर केवाया रे होजी ।
 यों जीयता सूँ काल नित डरपे, काल रे पेच न आया रे । माधोः ॥ १ ॥
 शील मन्तोप रे हृदय कमण्डल सूँ, लेकर नीर छिड़काया रे होजी ।
 लागत टाट करपट पट उघडथा, मौत के मुख नही आया रे । माधोः ॥ २ ॥
 महारा जियाथा फेर मर जावे तो, फिटफिट है वे जियाया रे होजी ।
 प्रगट सिद्ध ई छिपी नही किये सूँ, देऊँ दोल बजाया रे । माधोः ॥ ३ ॥
 यो ही गोरख कथोर जियाया, तुलसी यो ही जियाया रे होजी ।
 मनहीना डलटे मग हाले, फिर फिर जगन बहकाया रे । माधोः ॥ ४ ॥
 थे केवाँ ड्यूँ मुडद जियाया तो वे, मौत चक्र क्यूँ आया रे होजी ।
 जो वे अमर तो आज मित्तारो, पोल ही पोल चचाया रे । माधोः ॥ ५ ॥
 खोटी हुण्डी फिता दिन चलमी, कोई खरा निजर नही आया रे होजी ।
 मरग मिन्याँ तो टको नही बटसी, ड्यूँ का स्यूँ ही रहाया रे । माधोः ॥ ६ ॥
 देवनाथ गुरु शाह अडवपनि, हुसिड साब सिरुकाया रे ह जी ।
 मान विचार समझ कर कीनो, सुपने न धाटा खाया रे । माधोः ॥ ७ ॥

॥ मोरठा ॥

मत कोई धालो हाथ, हिम्मत विन अड़जो मती ।
 अडियाँ दुख हो जात, मरियाँ न छूटो मानसी ॥
 ज्ञान लड़ग पर हाथ, मरगो तेबड़ ने धरे ।
 भडे सथी तन पात, वे जिन्दा रेवे न मानसी ॥
 जो मरणो मंजूर, पास हमारे आइये ।
 नही तर रहिये दूर, मन मे समझो मानगी ॥
 कोई कहे मरियाँ भूत, होवे या होवे नहीं ।
 मान यूँ जीवत भूत, ब्रह्महानी ने जानिये ॥
 वो लाग्यो हट जाय, ए लाग्यो हटसी नहीं ।
 जिये सूँ निकट न आय, ए मरियाँ छोड़े मानसी ॥

इशुं पर मन्त्र अनेक, इशु पर एक चलसी नहीं ।

ए लाग्या करसी छेक, लेने जासी मानसी ॥

वे देवे जान गमाय, पण वाकी ए राखे नहीं ।

जीवत मुद्ध वनाय, जीव पण्ये ने कंठ दे ॥

मन भावे रा भूत, इहारे तो नित मानसी ।

ए हरदम रहे मजबूत, वाँ भूताँ सुँ ना डरे ॥

संग दस जवरा भूत, ज्यौने वरिया कैद में ।

मार जमाँ सिर जूत, मारग लीनो मानसी ॥

वाँ भूताँ वधराय, लाखों डर डर मर गया ।

पण यौं रे पास न आय, मार करे फिर जीवता ॥

निले तो ऐसा भूत, भंज भंज मिलजो नाथजी ।

भयो मान मजबूत, यौं भूताँ सुँ क्या डरे ॥

भायेली ही भूत, भूताँ भेला नित रेवाँ ।

डरता रहे जमदूत, यौं भूताँ सुँ मानसी ॥

छुण वताया भूत, वे तो भूत भेला रहे ।

ए पकड़ लिया मजबूत, जद दुःख पाया मानसी ॥

ए सब ने लाग्या भूत, एक ही ने छोड़यो नहीं ।

इल्टा खावे जूत, मरम विहूणा मानसी ॥

कानी पडे कुरान, पण्डित वाचे वेद ने ।

पण यौं भूताँ री जाण, करी किली नहीं मानसी ॥

काजी पाजी सोय, पागल है पण्डित सभी ।

मन्त्र पडे पद रोय, मरम लखे नहीं मानसी ॥

कानी पण्डित दोष, पिवी मरम री मांग ने ।

भत न जाने कोय, ए मरम विहूणा मानसी ॥

देनवो एक खईस, बहुत शीर और शिर नहीं ।

वो जगरो जगदीश, पण कोर्ट कोर्ट जाणे जुगन मूँ ॥
धड मूँ न्यारो शोश, जो कोर्ट करणे जोयने ।

तो मिले जो असल वर्डम, मंशय नही कुञ्ज मानमी ॥
बांध्या पोंचू प्रेन, दम भूतों ने बाधिया ।

जगदीशवर मूँ हेन, जदे हुयो यूँ मानसी ॥
मरघट विश्व ग्बहप, भून प्रेन भेला भया ।

लक्यो नहीं कुल्ल मूल, जद ग्हे डरिया मानमी ॥
जो वृजा हो भूत, तो उच्छा मूँ मब कुल्ल करे ।

तो क्यों खावे मिर जून, मन्त्र विधी मूँ मानमी ॥
पहले ही निनर जाय, दिव्य दृष्टि मूँ देव कर ।

हाथ मे खावे नाँय, तो मन्त्रवादी क्या मारली ॥
जिए मूँ अपणी भूल, पृथक पही मामी दिवे ।

नाल अज्ञान की भूत, ज्ञान माग लख मानमी ॥

बंका बचन

१। मोरठा ॥

तुलमी मिलिया भूत, भूतों मूँ हनुमत मिल्यो ।
कया यह कहानी भूठ, मरी जनावो मानमी ॥

मान बचन

॥ कवित्त ॥

छानों न छिपे कवि तरक कोर्टे छोट लेत, ताइ रह जगमी क्या अजह
रहाई है । एतो समझयो पर ज्ञान हू न आयो तोय, अजह तरक तांमे कैमे
उठ आई है । छहने ही पकड़ लेत नरक कोर्टे काइ देत, हम भी निदुर बोले
दिना ना रहाई है । कहे राय मानसिद बाँको मे वात बाँको, विवना संयोग
प्रीत तेरी जो मिलाई है ॥

बंकर वचन

॥ कविता ॥

रतने न इरो नाथ सही होय कहौ घात, ब्रह्मभङ्गुर तन यह तो काल
मिट जायगो । कही हू न मिटे वार जगत बीच अमर रहे, दीप को दजालो
होय फेर कोई आयगो । हम तां कहोगे नाथ चुप भी हो जायेंगे, अन्यविद्वान
यह योही रह जायगो । आयं तुम जगत वारण बचरावो कौन कारण, तुम्हें
छेड़ यश कुछ बहू भी ले जायगो ॥

मान वचन

॥ सचैया ॥

गोस्वामी गये अत ही अत में रघुनाथ के चरण में ध्यान लगायो ।
गुरुदेव मिले एक भूत उन्हें हनुमान ले ज्ञान को वहाँ प्रगटायो ।
उन ज्ञान विचार लियो उर में अपने चित के चित्रकूट में आयो ।
ब्रह्मानन्द मिलयो यह बंकर कहे मान तुम्हें सही समझायो ॥

बंकर वचन

॥ दोहा ॥

शौच क्रिया के नीर से, तुलसी लीन्वो टाक ।
सो यह टाक है कौन सो, भूपति चौड़े भाए ॥

मान वचन

॥ सचैया ॥

प्रेम को नीर लियो सङ्ग में मल आवरण को जिन शौच करयो ।
निश्चय को टाक जो सींच दिओ गुरुदेव ही आयके दरस दिवायो ।
भू मिले गुरुदेव उन्हें हनुमान जो ज्ञान जवी दरसायो ।
ब्रह्मानन्द मिलयो तुलसी सुन बंकर यही कह मान वतायो ॥

॥ गान ॥

॥ राम-नारंग-मलार "नर्ज वाणी" की । ताच दीपचन्द्री ॥

पावो रे आरो काजी पडियो, पेवो मन्त्र पडाई ।
 कुण्ड पडावो पात्य पति, सो में सरी ममकाऊ जी ॥ १ ॥
 नन प्रंत और जिन्व थे, औरा रा निकवावो ।
 थां में तो मश भेला ब्रमे, पर घर क्युं जावो जी । आरो० ॥ १ ॥
 पांच प्राण पांचू जिन्य, दण भूत है माई ।
 एक एक रे दोय नार है, लागो रहन मदाई जी । आरो० ॥ २ ॥
 पांच विना परलोक रा, उथोने सरी ममकावो ।
 लनभ्यां सँ भुव होखो, तही तर सोना थावो जी । आरो० ॥ ३ ॥
 सो परलोक अलमो नष्टो, पितर नरी आगा ।
 नेणा रे नरीक है देखलो, कियो मन भागा भागा जी । आरो० ॥ ४ ॥
 लय लय भूतों मे आत्मा, यही मन्त्र है भाई ।
 तन्त्रमसि तू साकी है, दूतां है कोई नोई जी । आरो० ॥ ५ ॥
 कुण्ड अठारह अध्याय मे, भूत न प्रंत बताया ।
 आदू विनू अपणां आप है, परापरी मे आया जी । आरो० ॥ ६ ॥
 अभी तो पाँच पुजायचो, वाजां जग मे सैणा ।
 बुंडा पडेला दोरा घणा, जैडा नेणां जैडा देणा जी । आरो० ॥ ७ ॥
 उथोने ममकाया नाथ जी, दया भां पर आवे ।
 मनुज जन्म आय बापडा, साकी क्यो जावे जी । आरो० ॥ ८ ॥
 मानसिंह कहे रे मान लो, तो निज देरा ले जाऊँ ।
 भेड पणे ने पाडवो, मुक्ता सिद्ध बणाऊँ जी । आरो० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राम गीरी । ताल कैरवा ॥

मन्त्रो से मुक्त नहीं होवे, ममका देवो मन्त्रो से मुक्त नहीं होवे ॥ १२ ॥

- जां मन्त्रों से वंश बढ़े तो, राज वीरज क्यों भोजे ।
 पूरव अन्ध गन्ध नहीं काढ़े, दीपक तिन क्या जोवे । समस्तः ॥ १ ॥
 कुम्भ आदि के मन्त्र सुन उपजे, यह अचरज सो होवे ।
 मन्त्रों सुत होय फिर क्या कहनो, बौन नारी दुःख टोवे । समस्तः ॥ २ ॥
 अर्धावश्यास को दूर करो सब, तत्र ही उजास्ता होवे ।
 नारी पुरुष होय क्यों कोया, क्या ईश्वर गैलो है । समस्तः ॥ ३ ॥
 नारी सशही पढ़ लो मन्त्र, जो मन्त्र कुम्भ पढ़यो है ।
 वही तो मन्त्र वही तुम नारी, वेशों में लिख के धरयो है । समस्तः ॥ ४ ॥
 पढ़ पढ़ के सब पानल हूवे, असजो क्या है नहीं जोवे ।
 मालसिंह नहीं अफल किणी में, मन्त्र मन्त्र पढ़या रोवे । समस्तः ॥ ५ ॥

॥ सबैया ॥

भूल परे वपुरे सगरे और मन्त्रन से ही वंश बढ़ावे ।
 बहुत बढ़े बढ़े ग्रन्थ रचे हैं बात कहा यह कोई नहीं पावे ।
 दशरथ के सुत चार हुवे पर मन्त्र ते बख हूवी जो मँगावे ।
 वही तो मन्त्र और यह वही फिर क्यों इतनी बन्ध्या रह जावे ।
 मान कहे कहा करक पढ़यो तिनते अब क्यों नहीं वंश बढ़ावे ।
 बात बिना ही विचारे करे ये लाज जरा नहीं चित्त में लावे ।

॥ कवित्त ॥

धर्म मन्त्र पढ़ के कुम्भ युधिष्ठिर पैदा कियो, वही मन्त्र पढ़ के फिर
 युधिष्ठिर बनाइये । सूर्य मन्त्र साध के कर्ण अरज कियो, ऐसा ही कर्ण फिर
 मन्त्र से लाइये । पवन मंत्र पढ़ के जिन भीम को कियो पैदा, उसी मंत्र से
 फिर भीम जन्माइये । शक्र सुन कियो पैदा इन्द्र को मंत्र पढ़, ऐसा ही अर्जुन
 फिर करके दिलाइये । कहे राव मानसिंह ग्रन्थविश्वास छोड़, सीधे जो राह
 होके सीधे तुम आइये । लिखी हू न वाचो यार नहरे उतर राचो इनमें, कैसे
 सुत पैदा कियो समस्त विच लाइये ॥

॥ सर्वथा ॥

मंत्र के बीच में तन्त्र लिखे उन तन्त्र को जान हम करने दवाई ।
दवाई में खाय नुं मक मड हो मो फिर उनसे हो यंत्र शुद्धाई ।
यंत्र दुआ शुद्ध बंध बढा फिर ऐसे करे तो वष वा रहे नॉटे ।
मान न माने कोई मत्र में अब मांग गया रहे लोक कुटाई ॥

॥ सर्वथा ॥

पॉच हू तन्त्र और पॉचो ही मंत्र हू म्यारे ही म्यारे चहं सुन लीजे ।
मंत्र व अर्थ में तत्र करो और तन्त्र जिमो जम यंत्र हो लीजे ।
मान कहे नहि मंत्र है भूठे ये भूठे तो पदणे शर कहीजे ।
स्वारथ आग लगी इनमें यह आग बृभे धिन कैसे लगीजे ॥

॥ कविन ॥

कौशल्या कुन्ति और माद्री है यज्ञवेशी, केरुई सुमित्रा ताही कर मानिये ।
अशिशु और वृष्णम दादि मंत्र के तंत्र किये, वशरथ और पाण्डु इन्हे यज्ञ
कर जानिये । तन मन से सेवा कीन मन चाहे पुत्र लीन, सही है धान पारो
अच्छाज न आनिये । मंत्र हू न भूठे भूठे वेर के न करनहार, धिना अर्थ
जाने बके भूठे इन्हे जानिये ॥

॥ कविन ॥

प्रथम वेदाचार्य कोई द्वितीय वेदाचार्य बने, कांडक तृतीय वेदाचार्य जा
वहाते है । कई चतुर्वेदान्धार्य आचार्य बने बैठे, आवड् बहक और जग के
उपकाते है । आपही मल्लके नाथ केने मनुभावे औरन, आप तो आचार्य
वीव अचार बन जाते है । कहे राव मानमिह आप से फक पड़यो, आपरो
परक महा पुष्टन में बताते है ॥

॥ गान ॥

॥ राम गोरी । ताल करवा ॥

यूँ मंत्रन सुत लीजे, लेना हो तो यूँ मंत्रन सुत लीजे ॥ देर ॥

भैरव भूत प्रेत कर पूजा, मुपत न जूत सहीजे ।
 मन्त्र से तन्त्र कर यन्त्र करो शुद्ध, जूत इन्हीं के शिर दीजे । लेना हो ॥ १ ॥
 विगड़यो यन्त्र और तन्त्र कियो नहीं, मन्त्र किता पढ़ लीजे ।
 तूँ मंत्रों से कभी न सुत होवे, चाहे जितो दुःख सहीजे । लेना हो ॥ २ ॥
 मन्त्र मात्र से ही सुत होवत, तो एक एक दूर रहीजे ।
 कितके पति और नारी कि कितकी, लेना जिता सुत लीजे । लेना हो ॥ ३ ॥
 पारों वेद को भाष्य हम देखो, देख के दुःख ना सहीजे ।
 है तो कुछ और यह क्या कहवे, जिण सूँ मन ना पतीजे । लेना हो ॥ ४ ॥
 वेदनाथ गुरु मिले दिव्य दृष्टि, अन्ध होय क्यों रहीजे ।
 मान ज्ञान कर साक कहेंगे, चाहे माने न मानीजे । लेना हो ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह जीवये(?) चले, जगत निरुन्मी सोय ।
 हम, तो धार्ये(२) आर्यगे, धके न सार्वे कोच ॥
 मानसिंह में बल होवे, तो जग धार्ये ले जाय ।
 जो जग में बल होयगा, तो जीवया ले लैचाय ॥
 मैं दृष्टा हूँ जगत का, जगत दृश्य है मोर ।
 लैवे दृश्य जो दृष्टा को, तो दृष्टा अमजोर ॥
 दृष्टा पक्ष जग ही निभे, जग लेह दृष्टा बनय ।
 जो नू दृश्य ही बख गयो, तो लेसी जगत दृषाय ॥
 जग लैवन को बल नहीं, तो लहे न दृष्टा नाम ।
 दृष्टा तो जगही बने, कि ले ले जगत तमाम ॥
 रे योगी सीधे रहे, कहा धरे त्रिपुटी ध्यान ।

१—परम्परा की दृष्टिवाद का सीधा मार्ग, २—दृष्टिवाद परम्परा का तोड़
 पर आधारित करने का उलटा मार्ग ।

जाता ध्येय और धारणा, मद् मेरे एक ममान ॥
 टडा विगला सुखमणा, रेचक पृच्छ छोड़ ।
 विश्व मनी निज रूप है, कुम्भक से मन नोड़ ॥

॥ गान ॥

॥ गग माँड । नाल टादग ॥

मुन पंडित ज्ञानी, मन हो अभिनानी, कर गट्टिबानी जान ।
 नू क्या पद वेद पुगण रे मुन पंडित ॥ १ ॥
 पञ्चा कावे प्रेम मूँ रे, लेवे नित रां दान ।
 जाको धंश नारेलो धारा, उठे छुड़ावेला रान रे । मुन पंडित ॥ १ ॥
 पठ तो लेवे और मरम्भ नू देवे, मुन्यां कजानो रान ।
 माह ही हुरडी तो निकरे बरोबर, दृगा देवे ना जान रे । मुन पंडित ॥ २ ॥
 जैमा लेवणिया नैमा देवणिया, रानो ही पठ ममान ।
 सोडे कतां में मान हुर देवे, उरा मूँ जो रट्टिचे रान रे । मुन पंडित ॥ ३ ॥
 ध्यान बशिष्ट पराशर विम ज्योनि, कोट्टियन वीनो दान ।
 उन्न मारी कान कियो शो, जद् शाय्या गुणधान रे । मुन पंडित ॥ ४ ॥
 आगे पंडित रां वे मौदी न रत्तर, देता वे नुन सुमान ।
 धन और मुन बारे हाथ मे होना, वे होना ब्रह्म ममान रे । मुन पंडित ॥ ५ ॥
 दृश्या ने मुन परगट्ट होना, गाथे वेद पुगण ।
 वीमी कुट्टि ने जो घे ही ज पडोण्या, धीरी ने मागे अजान रे । मुन ॥ ६ ॥
 वे नुग हांथे और होथे या विशा, तो नन ही कर दा दान ।
 तेमे मुन वृक्ष टाट्ट हुराथे, कहे पूँ वृत्त मान रे । मुन ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ गग न्यमाच. नर्ज "माछली" की । नाल दीपचन्दी ॥

पंडित किमडो नू वेद सुगावे । मेरे विचार सोचो नै नोडो,
 नही साथे नहीं जावे रे । पंडित किमडो नू ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

कौण जपे ने जाप फेर किये रो, म्हाँ सूँ जप्यो नहीं जावे ।
 आत्म जाप मांयलोड़े ने कियो, म्हारे और जाप नहीं भावे रे । पण्डित० ॥ १ ॥
 देव हे एक सकल जग मँही. सो निज मोमें सभावे ।
 'दूजे देव मूँ काम मरे नहीं, कुण जो वृथा भटकावे रे । पण्डित० ॥ २ ॥
 आनन्द स्वरूपी तो में निज मेरो, मोहे क्यों त्रिसरावे ।
 माला मंत्र जपूँ श्रय किये रो, दूजों निजरा नहीं आवे रे । पण्डित० ॥ ३ ॥
 "तत्त्वमसि" यूँ वेद तेरो गावे, सोही हम "असि" जो कहायें ।
 तन् एवम् श्लोक असि ने जग्य जद, पूर्ण पण्डितता आवे रे । पण्डित० ॥ ४ ॥
 इसही केवाँ जद थे नहीं मानो, बँने जो समरथ बतावे ।
 अपणी गरज ने खुद समरथ बगो, मन में लाज नहीं आवे रे । पण्डित० ॥ ५ ॥
 तुम नहीं समरथ तुम्हें क्यों पूजाँ, समरथ त्रिकॉने पुजायें ।
 मिह श्लोक भेड़ाँ ने पुजाँ, म्हारे हाथ काँड़े आवे रे । पण्डित० ॥ ६ ॥
 देवनाथ गुरु समरथ मेरे, हम भी समरथ कहलावें ।
 मानसिह हम टोली सिद्धन की, भेड़ाँने शिर क्यों नमावें रे । पण्डित० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

अब चुप रहो मत मोहे बतलावो; अब चुप रहो मत मोहे बतलावो ॥ देर ॥
 मेरी तरफ नहीं तुम देखो; तुमको अपनी अपनी गावो । अब चुप रहो० ॥ १ ॥
 स्वरथ आग मिटे नहीं तुमरी; जाधो जावो तुम परे जावो । अब० ॥ २ ॥
 तुम्हरे तो यज्ञ हवन मिटे नहीं, जीव फसाव लूटो खावो । अब० ॥ ३ ॥
 तुम्हरे तो दान पान भोजन के; गीत उमर भर यही गावो । अब० ॥ ४ ॥
 अपनी मुक्ति कालो पहले; फिर मेरी करने आवो । अब० ॥ ५ ॥
 सुद तो कैसे जाल माया के; हमें मोक्ष कैसे ले जावो । अब० ॥ ६ ॥
 नयम तुम्हारे लगेंगे तुमको; हमें मिश्र मत्त डरपावो । अब० ॥ ७ ॥
 थोड़े बार तिथी सब तुम्हरे; तुम्हो काल के मुक्त जावो । अब० ॥ ८ ॥

नित हूँ अजर अमर ना मरूँ मैं, डारये भरम मत चहकवो । अब० ॥ ६ ॥

जीवित पिंड लैऊँ त्रय वक्त मे, बाद भरे ना देने आवो । अब० ॥ १० ॥

कथा अत्र हम खाने न आवे, चाहे नरक पुरख भल जावो । अब० ॥ ११ ॥

जाधे नाक तो तुम्हे क्या इसकी, हमको छुडाने मत आवो । अब० ॥ १२ ॥

कथा यमराज थाप है तुम्हरो, देवर मात्य कैसे छुडवावो । अब० ॥ १३ ॥

शोथी बात हाथ नहीं आवे, जोरे कागद क्या चलवावो । अब० ॥ १४ ॥

देवनाथ गुरु सहज भोज दिवी; मान फंद में कथो आवो । अब० ॥ १५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी माली के डंके "समीर्जी ने बरजण आधा" की । ताल
करवा ॥

हो ब्रह्मविद्या नहीं जाणे, ये सब अपनी अपनी ताणे ।

ब्रह्म विद्या रही दूर हाथ नहीं, आवे ये कडा चवाणे ।

विद्या नहीं जाणे । ये सब अपनी अपनी ताणे ॥ देर ॥

श्राम गुणी और बशिष्ठ प्रवीन । जिनके काल भयो आधीन ।

ये नर उत्तम जानी हुए मो, ज्योने सकल जग जाणे । विद्या नहीं० ॥ १ ॥

ब्रह्म विद्या सहजे नहीं कोय । रचना रची आदि जिन सोय ।

उण विद्या ने गुण करी यह, भूल कभी नहीं छाणे । विद्या नहीं० ॥ २ ॥

मनु आदि रिपि महर्षि जोय । उयोरा पश्य मन्य श्री होय ।

स्वर्ग पाताल और मृत मरुडल मे, जीव मात्र सब जाणे । विद्या नहीं० ॥ ३ ॥

क्रमल भोग दिवी निकल मिलाय । सो पण दानी रेवे नोप ।

परमारथ तज स्वारथ केरे, पडिया ए रुध पाने । विद्या नहीं० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु गड कर हाथ । भेट दिवी स्वारथ की रात ।

मानमिद आत्म परमानम, मत्र घट दीखत होने । विद्या नहीं० ॥ ५ ॥

॥ कवित ॥ ३

अपने करने मे आरुट तुम आप रहत, हम भी हमारा कहना, कहने कह
जावगे । मानो न मानो यह भरजी तुम्हारी मित्रो, वाट जो हमारी यह हमी

वह जायेंगे । आवोगे नहीं तो तुम ही दुःख पावोगे, यदि साथ चलो तो साथ ले जायेंगे । कड़े रात्र मार्च-नद अविमान दूर कर, याहा अभिमान शीघ्र खाली रह जायेंगे ॥

॥ दोहा ॥

ए कीर्त्यां विन ना रहे, कहता मैं रेहऊँ भौंय ।

मानसिह करते हो, क्य तरु करते जाँय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी, "कोरे कागदियो" की । ताल कीरा ॥

द्विज लिख मन में निज ज्ञान, कोरो कागदियो ॥ १ ॥

नित्य कर्म ऊपर करो; ब्रह्म भेद से मती हरो ।

जो देखो ब्रह्म समान; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ १ ॥

अपनी अपनी शैल मती; आत्म लाल निज पाय मती ।

यूँ गावे वेद पुराण; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ २ ॥

पद-वाँ पद-वाँ ब्रह्म नाहि मिले; गायीं सूँ जन नाहि दले ।

कर उर में कछु पहचान; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ ३ ॥

सत्यता री स्थाही भरो; आत्म एक विचार करो ।

जद उगे निज भान; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ ४ ॥

ब्योतिष देखीं नहीं सगे; धरुँ गेँ मरणा नहीं दले ।

जो देखयो ब्रह्म समान; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ ५ ॥

पाती लिखतो प्रेम तछो; सीधा चालो धार अछो ।

धे ओड़ो पोल पुराण; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ ६ ॥

अपि महर्षि जन साफ कही; इनमें समझो मूठ नहीं ।

जो आत्म रूप जहार; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ ७ ॥

पोल आत्म ने फाड़ देवो; आत्म-चत्त उषाई नेवो ।

दा में इवे भारत सन्तान; कोरो कागदियो । द्विज लिख ० ॥ ८ ॥

देवनाथ गुरु रही कही, मान बात निज मान जही ।
ये बात बड़ी आसान कोरी वागदियो । द्विज लिख्ये ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग वसन्त, तर्ज "बाजे-बाजे रे वृन्दावन मॉय, खेलन फाग मुहावनो"

ताल कैरवा ॥

पही मानो, हॉरे कही मानो रे:

द्विज कुल और मग्न, स्वारथ पयो ने मन सूँ व्यागो ॥ ६१ ॥

धे तो मन उपदेश छोडो मनी रे । धाने वेवे, हॉरे धाने वेवे रे;

जैसे वेद और ग्रन्थ । स्वारथ पयो ने मन सूँ व्यागो ॥ १ ॥

धे तो मन उपदेश में चिन्म जोडो । मुख मोडो रे, हॉरे मुख मोडो रे;

जाँ है पाप रों पन्थ । स्वारथ पयो ने ॥ २ ॥

धे तो ब्रह्म उपदेश विचारलो रे । धोने रटमी, हॉरे धोने रटमी रे

जग जहाँ अन्त । स्वारथ पयो ने ॥ ३ ॥

धे तो ब्रह्म विद्या ने भूल गया रे । जिण सूँ लाजे, हॉरे जिण सूँ लाजे रे,

रिपि कुण कुणवन्त । स्वारथ पयो ने ॥ ४ ॥

मान कहे द्विज घर मुनलो । बण जावो, हॉरे बण जावो रे,

वेद विद्या गुणवन्त । स्वारथ पयो ने ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग वसन्त, तर्ज "बाजे बाजे रे वृन्दावन मॉय, खेलन फाग मुहावनो"

ताल कैरवा ॥

कही मानो, हॉरे कही मानो रे; सच मन्त समाज, प्रेम पन्थ जोडो मनी रे ॥ ६२ ॥

गोरख कबीर जैसे सन्त भया । देवो जनक भीष्म मा केना भया ।

जिण बान्धी, हॉरे जिण बान्धी रे; सन धर्म री पाज । प्रेम पन्थ ॥ १ ॥

व्याम वणिष्ठ गुणी कहिये । जैसे मन्तो री मनि लउये ।

ज्याँ सूँ रेवे, हॉरे ज्याँ सूँ रेवे रे, यॉरो जग मॉदि लाज । प्रेम पन्थ ॥ २ ॥

बॉरो मॉई कौट गावयो । जा गावो नो उर घर आवयो ।

बण जावो हॉरे बण जावो रे; जग री निरनाज । प्रेम पन्थ ॥ ३ ॥

कहें गान इमो मत म्हालियो । मैं तो मन भाँवले ने पालियो ।
जद जोयो, हीरे जद जोयो रे; मेरो मैं ही महाराज । प्रेम पन्थः ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "बाग्गी" की । ताल वैरवा ॥

किय ने चात बताऊँ मेरे सन्तो; किय ने चात बताऊँ होजी ।
वालाऊ(१)तो चोर(२)से मिलिया, किय ने साथ ले जाऊँ । मेरे सन्तोः ॥ १ ॥
कही सुणी ये कुछ नहीं माने, किम करके समझाऊँ होजी ।
देऊँ सैन सैन नहीं माने, कहो कैसे मुलझाऊँ । मेरे सन्तोः ॥ १ ॥
नाड़े एक और दोष विछावे, क्यों कर जीव बचाऊ होजी ।
पन्नापक की गलिशाँ साँकड़ी, फयो किय मारग लाऊँ । मेरे सन्तोः ॥ २ ॥
देयनाथ गुरु नाथ मान के, मन मान्योँ पर आऊँ होजी ।
पन्नापक को दूर निवेही, गुरु गम भोज लगाऊँ । मेरे सन्तोः ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कैरवा ॥

समझलो अपने मन में तुम, दोष धारों को क्या देना ॥ १ ॥
कोई कुछ भी कहे तुमको, धरो मत ध्यान तुम बनका ।
करो धन आय सो तुमसे, करो मत और का कदना ॥ १ ॥
पृथा है दोष देना भी, किसी के शिर पे ऐसा ही ।
समझतो दोष प्रपने का, भले नहीं घर की तुम सैना ॥ २ ॥
करं क्या साधु और ब्राह्मण, जबरदस्ती नहीं किसकी ।
थाप दौड़े ही जा जा कर, चरण में मुफ्त शिर देना ॥ ३ ॥
कदा गुरुदेव ने कुछ तो, समझ लिया घर से कुछ हमने ।
मान निज रूप को यमों, किसी का लेना ना देना ॥ ४ ॥

१—पहरेदार=गुरु आचार्य लोग, २—अन्वविश्वास ।

॥ गान ॥

॥ राग आमावरी । ताल दीपचन्दी ॥

अब मोहे. अपनेो हि दोंप दिखायो । दोंप कोरे अर निजर नहो थायो ॥ १ ॥
 पावएडी पावएड ॥ जो कीतो, में ही भरम मुलायो ।
 अपनी तरफ कौनगाहे-योदी, नै ही ज भौदू कयायो । अब मोहे ॥ २ ॥
 घर की दान जरा नही सोची, औरन के बहुकायो ।
 दौड़ दौड़ के गयो में इनमे, जद अधिकार जमायो । अब मोहे ॥ ३ ॥
 आछा थुरा मह में पूछया. जद इन बाँच सुनायो ।
 जत्र मंत्र तंत्र इन कोना, इनमे ही भोय मुलायो । अब मोहे ॥ ४ ॥
 इनको दोंप रती नही मित्रो, मेरो ही दोंप कयायो ।
 दिन विश्वास फिरयो में यहकन, हाथे ही माल लुटायो । अब मोहे ॥ ५ ॥
 ग्यातों माल बना मुख कणरो, में ही खचायो या खायो ।
 में अपने पर की नही सोची, जब नर वृथा लुटायो । अब मोहे ॥ ६ ॥
 देवनाथ गुरु हाथ पकड वे, ले एकान्त बैठायो ।
 बात करी पर की जा होती, यिबि-विधि भोय समझायो । अब मोहे ॥ ७ ॥
 कुछ गुरु कही कुछ मन की सोची, दोनों हि मेज भिलायो ।
 हाथे कियो दोंप अर फिलने, करके फिर बहतायो । अब मोहे ॥ ८ ॥
 उनको दोंप दतो ही कहिए, भाव हुो ना बतायो ।
 अपने पर सो आप वृण वाले, यह मन मे मयझायो । अब मोहे ॥ ९ ॥
 माधु न बुरे और बिप्र बुरे नही, में ही बुरो जो कहायो ।
 मान करे अब ही मन मान्यो, मानत अलग होय आयो । अब मोहे ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल दीपचन्दी ॥

वृथा विवाद न कीजे, मित्रो वृथा विवाद न कीजे ।
 जो बुद्ध करे अपनी मन आई, दूम अपने मग लीजे । मित्रो वृथा ॥

तुमरो जीव तो जीव रहन दो, नाहक भगज पचीजे ।
 मेरो तो रूप सकल जग दीखे, तुमते मन न पतीजे । मित्रो वृथा० ॥ १ ॥
 मैं अभी अपनी ज्ञान के पीऊँ, क्यों तुम रेत नखीजे ।
 अलग रहे तुम निकट न आबो, भावे तुम कीच हि पीजे । मित्रो वृथा० ॥ २ ॥
 तुम करो अपनी और मैं कलु अपनी, इनमें न मंगल कीजे ।
 मेरी माने खो मेरी मानसी, तुम से अन्ध पतीजे । मित्रो वृथा० ॥ ३ ॥
 तुमरे वेदान्त सिद्धान्त पड़े रहो, हमको यह न चहीजे ।
 मेरो वेदान्त जगत से न्यारो, जग इन माँय रहीजे । मित्रो वृथा० ॥ ४ ॥
 नर्क घितके बुनर्क करो तुम, वक्त वृथा यों छीजे ।
 मान कहै अथ जावो परे तुम, और कोई पकड़ीजे । मित्रो वृथा० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिह संसार में, मण्यो मोक्ष को शोर ।
 मोक्ष माँव न्यारो रखो, मारग वही कठोर ॥
 मोक्ष मोक्ष की हाकते, यहक्यो जगत तमाम ।
 बाबालू बाताँ करे, भावा तथा गुलाम ॥

॥ गान ।

॥ राम भैरवी । त'ल कैरवा ॥

नहीं कहिये अस मोई, मोक्ष साधो नहीं कहिये अस मोई ॥ टंर ॥
 दूर ते दूर बसायत जाये, साच न आवत कोई ।
 पैसी मोक्ष ते थो ही मले हम, होय निरांकित सोई । मोक्ष साधो० ॥ १ ॥
 मोक्ष के डोल बजाय बजाय के, सारी जगत सुधोई ।
 आव तरक में मोक्ष औरन दे, कहो किम कर पत होई । मोक्ष साधो० ॥ २ ॥
 इतनी लार धार बहे काली, मत जावो तुम कोई ।
 इनकी मोक्ष इन्हें ही जेन दो, मूल्य जन मति, खोई । मोक्ष साधो० ॥ ३ ॥
 देवनाथ की साथ कियो जद, मेरी मोक्ष मैं जोई ।
 मोक्ष स्वरूप इमी तो कहिये, दूखी मोक्ष न कोई । मोक्ष साधो० ॥ ४ ॥

॥ सर्वैया ॥

भूल पर वो मगरो जग यह जिन वेद कहे पर एक न माने
 नॉय तजे अपनी यह आदत जावन पन्थ पुताने पुताने
 भटकत आये सदा जिममे फिर तर्हि ज पन्थ की राह उठाने
 मोक्ष की पंथ के दोल प्रजे जिममे भय बहरे मुने नदी काने
 मोक्ष को गॉय किनो अलगा कई साध चले फिर कौऊ न आने
 केतोक लभ्यो और चौडा किनो जिममे सब जाय के जगन समाने
 देत प्रमाण न कोई हमे यह मोक्ष हि मोक्ष की हाक मवाने
 मान कहे परमाणु बिना हम मोक्ष की बात कभी नरो माने ।

॥ सर्वैया ॥

कवीर कवे जिन र्वांग भरयो अरु जनक कवे भगवां जो रंगायो ॥
 व्यास कवे जिन भीख हू जॉची कव शुद्धदेव जो भांग के ग्यायो ।
 गान कहे पुरुषारथ कोन उहे हरि आप मे सृज विनायो ।
 जो पुरुषार । होन हुए जन बोधि किरे ओर जनर हंशरो ।

॥ गान ॥

॥ नरं मारवाड़ी "डंके" की । नाल करवा ॥

हारे सन्तो करो अपनी व्यवहार, हिम्मत मत हारो रे ॥ १ ॥
 उन व्यवहार मे क्या दुःख होय, इनको देख कर नू स्यो रोय ।
 हारे सन्तो कर लौनी अपनी विचार । हिम्मत मत हारो रे ॥ १ ॥
 जगन जले सेरो कश लक्ष नू इनके पीछे क्या बहे ।
 हारे सन्तो रहे निर्लेख निराधार । हिम्मत मत हारो रे ॥ २ ॥
 त्याग प्रहण क्यों न्यारो दिखाय, त्याग में जाय नरु क्या पाय ।
 हारे सन्तो क्या है घर विच हार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ३ ॥
 क्यों सन्यस्त ले किरे उशामी; प्रीनम पायो सर्वज अविनाशी ।
 हारे सन्तो सब को है प्राण आधार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ४ ॥

॥ मर्षया ॥

भूल परयो मगरो जग यह निन वेद कहे पर एक न माने ।
 नोप तजे अपनी यद आदत जावन पन्थ पुताने पुताने ।
 भठकन आये मदा जिममे सि नार्दि ज एन्थ की राह उताने ।
 मोक्ष की फोल के डोल यजे जिममे भय बहरे मुने नही काने ।
 मोक्ष को गॉम कियो अलगा कइ लाड चले कि कौऊ न आने ।
 केतोक लम्बो और चौडा कियो जिपमे सब जाय के जगत समाने ।
 देन प्रमाख न कोइ हमे यह मोक्ष हि मोक्ष की हाक मवाने ।
 मान कहे परमाणु बिना हम मोक्ष की बात कभी नही माने ॥

॥ मर्षया ॥

रुचीर कवे जिन र्थाग धरयो अरु जनक कवे भगवा जो रमायो ॥
 व्यास कवे जिन भीख दू जाँची कव शुक्देव जो मोंग के ग्वायो ।
 भान रहे पुरुषार्थ कोन उन्हे हरि आप मे मरुज भिजायो ।
 जो पुरुषार होन हुए अरु चोहि किये और जगत होनायो ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज माग्वाडी "उंके" की । ताल कैश्वा ॥

रारे मन्तो करो अपनी व्यवहार, हिम्मत मत हारो रे ॥ १ ॥
 उन व्यवहार मे क्या दुख होय इनको देख कर तू क्यों रोय ।
 रारे मन्तो कर लोनी अपनी विचार । हिम्मत मत हारो रे ॥ १ ॥
 जगत जले तेरो क्या लड; तू इतके पीछे क्यों बडे ।
 रारे मन्तो रहे निर्लेख निराधार । हिम्मत मत हारो रे ॥ २ ॥
 त्याग प्रकण क्यों न्यारो दिलाय, त्याग मे जाय नका क्या पाय ।
 रारे मन्तो कश है घर विच हार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ३ ॥
 क्यों मन्यस्त ले किये उदासी; प्रीतम पायो सर्वज्ञ अविनाशी ।
 रारे मन्तो सब को है प्राण आधार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ४ ॥

धे उल्टी मोचे हाँसी आवे; जहाँ जावे निकमो न रहावे ।
 हॉरे सन्तो कर रहो अपना कर । हिम्मत मत हारो रे ॥ ५ ॥
 देवनाथ गुरु घर में बताने; मेरी बलाय बाहर अब जावे ।
 हॉरे सन्तो मान सभी अपना दीदार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राम भैरवी । ताल तिताला ॥

वक्ता ज्ञान न कीजे; ज्ञानी वक्ता ज्ञान न कीजे ।
 हित अहित को कर विचार मन, साचो ब्रह्म रस पीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ १ ॥
 ब्रह्म ब्रह्म कहे भ्रम न राखो, अनर्थ चित मत दीजे ।
 साँड कर्षो मुख मीठो न होवे, साच फहूँ सुन लीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ १ ॥
 जग को कहे खल्विदं ब्रह्म है, उर में विषय बरतीजे ।
 यह तेरो ब्रह्म काम नहीं आसी, रलटो मार सहीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ २ ॥
 भूल से किये तो माफ भी होवे, बोड़े में भोगीजे ।
 जाय के करे जूत लगे दूखा, कोहू न महाय करीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु हाथ पकड़ कहे, वाक्य हृदय धर लिजे ।
 मानसिह मत जान अजान होय, काँटों में पाँव न दीजे । ज्ञानी वक्ता० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राम भैरवी । ताल तिताला ॥

धो बाचो ज्यों ही राचो; ज्ञानी ज्यों पाचो ज्यों ही राचो ।
 पाचो और करों कुड़ और ही, काम रहे सब काचो । ज्ञानी ज्यों० ॥ १ ॥
 वाच विचार धार हिरदे विचं; क्या कुहो क्या साचो ।
 कुड़ कुड़ को दूर निवारो, ज्यों लेवो जो है आचो । ज्ञानी ज्यों० ॥ १ ॥
 नाँही विचार कियो, उर अन्दर; ऊपर वाचो ही वाचो ।
 आप पद ज्यो और कईयन पढ़ावे, नाँहि रचायो नहि राचो । ज्ञानी० ॥ २ ॥
 औरन को ब्रह्मज्ञान बतानो, आउ धरो पग पाछो ।
 मान कहे हम साथी कहेंगे, चाहे तम लाल होय नाचो । ज्ञानी ज्यों० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मैगवी । ताल कैरवा ॥

राच रही अय्य लाली, हिना(१) विच राच रही अय्य लाली(२) ॥ टेर ॥
 गड्ड गिला पर मनगुरु घोटी, कवहू न दरमे काली ।
 अय्य घोटी अय्य रङ्ग है चौगुणो, रङ्ग मुरङ्ग सुराली । हिना विच ० ॥ १ ॥
 बाटी जुगत सू गुरु कृपा कर, मिट गई मन बघहाली ।
 घोटत घोटत मेमी घोटी, फिर ऊगण से टाली । हिना विच ०
 पाच(३) पचीम(४) हिना कर घोट, होय रडो लाल गुलाली ।
 या हिना को बोहो लगावे, पिन रंग(५) मे मतवाली । हिना विच ० ॥ ३ ॥
 देवनाथ को साथ कियो जद, मिट गई और की स्याली ।
 मानमिहू जब योग भयो हलको, छूटी हूँत हमाली । हिना विच ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई वाचक ज्ञान नज धीजे रे ।
 वाचक ज्ञान आनन्द नही उवजे, आयु घटे तन छीजे रे ॥ टेर ॥
 बातों कियो ब्रह्म नही मिलनी, भरम भरम न रहीजे रे ।
 ब्रह्म विचार धार हर अन्दर, तत्त्व अमी रस पीजे रे ॥ १ ॥
 जाग्रत होय नीद ने त्यागो, निज असली ओलखीजे रे ।
 अपने ही रूप आप में लखतू, भरम भूत भागीजे रे ॥ २ ॥
 देवनाथ श्री साथ कियो जद, निज आत्म ओलखावे रे ।
 मानमिहू अद मरे न जन्मे, विश्व विभू मे समाया रे ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई जाग्रत काहे जगावो रे ।

१—संसारिक व्यवहार रूपी मेहदी, २—आत्मज्ञान, ३—उन्मिर्त्या ४—प्रकृति
 ५—विश्व-प्रेम ।

नित चेतन चेतें क्या अब हम, भूल भ्रम नहीं भावो रे ॥ टेरे ॥
 नहीं मैं जाग्या नहीं मैं सूता, अपनी आ भूल मिटावो रे ।
 अपनी भूल हुआवे आपने, ब्रह्म तत्त्व दरसावो रे ॥ १ ॥
 जाग्रत बीच जाग्रत निज मेरी, ऐसी सैन समावो रे ।
 जाग्रत सुपन सुपोपति तुरिया, एक स्वरूप लखावो रे ॥ २ ॥
 देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मवेत्ता, दर्शन कर सुख पावो रे ।
 मानसिंह जद एक रूप भयो, देव में दृष्टा समावो रे ॥ ३ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

ब्रह्मज्ञानी अभिमान में, रह जावेला तार ।
 व्यूँ खाले व्यूँ ऊषके, अन्तर अमी अपार ।
 अन्तर अमी अपार, पार इनको नहीं पावे ।
 अमी ह्रम हो जाव, नहीं जग के दुःख आवे ।
 तू ही जगत तू ही ब्रह्म है, निराकार साकार ।
 ब्रह्मज्ञानी अभिमान में, रह जावेला तार ।

॥ सर्वथा ॥

औरन को ब्रह्मज्ञान दहे और आप पढ़े भ्रम कूप के माँई ।
 औरन को ब्रह्म रूप करे और आप बन्धो जग रूप रदाई ।
 आप स्वरूप को जाने नहीं जग को कल रूप स्वरूप बताई ।
 मान कहे यह भ्रम जो तीव्र है देख अती मन में हँसी आई ॥

॥ सर्वथा ॥

ऐक सौ आठ पढ़े उपनिषद् और वेदान्त के सूत्र संभारे ।
 अपने निज सूत्र को भूल गयो यह औरन को कर ज्ञान प्रचारे ।
 कहे मान विचार सदा निज सूत्र यह एकदू एक को देखले न्यारे ।
 सद् सूत्र (१) मिलाय के एक किये तब आपही आपनो होत रजारे ॥

१—धृतियों की ब्रह्म में एस्ता ।

॥ कवित्त ॥

बुद्धि को विवेक कर अन्तरगत छेक (१) कर, अन्तरगत छेक बुद्धि ब्रह्म (२) नू बनाडये । किये हैं चार (३) ठाको डार अत्र दूर (४) जानी, धारन के बीच कर (५) एक दरसाडये । एक न रखो न रहे चार तहाँ देख अब, अपने स्वप्न-तु आप ही कहाडये । कहे राव मानसिंह नू ही है जगन, आर जगन को प्रेरक नित माही नू मशई है ॥

॥ गान ॥

।। राग खमाच, तर्ज “माझली घर जोय मसुडा मॉही” की । ताल दीपचन्डी
माधो भाई दूर करो रे अजाना ।

जान विचार धर उर मॉहि, मेट वृथा अभिमाना रे । माधो भाई० ॥ १ ॥
करम करन मध जगन पुजारे, कर्म कौन नहि जाना ।

करम करे और रहत अकर्मा, मो कर्म नाहि पिछाना रे । माधो भाई० ॥ १ ॥
स्वप्न धारन माधे मित्रार्था, रिक्त फिर जगन बहसना ।

अपणी भूल मेट नही जाणे, देसो अन्व दीवाना रे । माधो भाई० ॥ २ ॥
पच पच करत मत्र केई माधन, माथा के अभिमाना ।

कर कर धार जगन के रुप, अपने ही स्वार्थ दिखाना रे । माधो भाई० ॥ ३ ॥
पर उपकारी मो र्तत माधव रा, प्रादि अनादि बखाना ।

किनको शाप देवे नर किनको, मध उयारे एक समागा रे । माधो भाई० ॥ ४ ॥
एक पर क्रोध खुरी दूजे पर, वो हम माधु न जाना ।

मानसिंह वो कुट्ट न रुगेगा, ले शिष्य माध दुवाना रे । माधो भाई० ॥ ५ ॥

॥ सर्वथा ॥

भूठ ही भूठ कहे जग को फिर आप कहे पच मन्व बहायो ।

आप नहीं जन होवन तो जग कहे को ये फिर नाम बगयो ।

जिनमे स्वप्न उनको ही निन्दत बूठ है उनको जो छोड़न चायो ।

१—शविद्या को तोड़ना, २—शुद्ध ब्रह्मकार, ३—अन्न दृग्, ४—चागे को

तुम से कदो कर जगन भिन्न है तेरे अन्दर यह जगत समायो ।
मरुधर पति मान कहे सब से कुछ गहे नहीं क्या त्यागन धायो ।
जो जग भूठ तो भूठ तुम्हीं हो जग है सत्य तो सत्य कदायो ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे मन्तो सुखो, यह अचरज मोंय आय ।
त्रिण सूँ थे सब ऊपक्या, छोटी क्यों बतलाय ॥
ग्योटी तो क्यों ऊपक्या, पढ़िया क्यों न आक्याश ।
जो पड़ता आसमान सूँ, तो करता विश्वास ॥
गन्दी गन्दी कहत हो, क्यों रह गयें नौ मास ।
जब क्या गन्दी ना हुती, अब क्यों करो धिनास ॥
सैमी है सो रहख ढो, है यह तर की खान ।
चपजे जिहरी निम्दा करो, थे मनुष्य हो या ईवान ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ॥

साधो मत नारी वंश बहकावो ।

मिथ्या ही मिथ्या बको मत मुख से, इनको संकुचित ना बनावो रे ॥ १ ॥

आप पवित्र देव उयूँ बने नित, देखो अकल चौपाई ।

आदि की घात कोई नहीं जाने, अपनी तान चलाई रे । साधो मतः ॥ १ ॥

बुरी बुरी कह लूँ तो इनको, जावो परे क्यों न जावो ।

मान पान सब लेवो इनसे, बुरी न कस्त शर्माओरे । साधो मतः ॥ २ ॥

अक्षर एक न पढ़े विचारी, ध्यान हाथ नीचे रखी जावो ।

गार्गी अनसूया जैमी नारी, जवरयाँ ने सती कह बतवावो रे । साधो मतः ॥ ३ ॥

सनी क्या थीं वे गुरु थीं तुम्हारी, जिनसे पहलाई बचवावो ।

ज्योत रच्यो कई सूत्र श्लोक हैं, ज्योतों अर्थ थेई नहीं पावो रे । साधो मतः ॥ ४ ॥

अब नो कहेन अधिकार नहीं इनको, जिनसे न विश्वास पढ़ावो ।

तब नाथ और मित्र चौरामरे, नारी विना कैसे आवे ।
 मर ना मुनि मत्र नारी मे उपजे, फिर ज्यो युग बनावे । देखो मेमे० ॥ २ ॥
 पन्थ शम्भु पुरुषन मत्र कीना, नारी न एक बनावे ।
 एक कोई पन्थ नारी जो करनी, तो पुरुषन की पोल उडावे । देखो मेमे० ॥ ३ ॥
 मार्ग और अनम्या जैमी, नारी मे ही पावे ।
 जिनमे पुरुष हाग हर बैठे, फिर कहते शर्षे न आवे । देखो मेमे० ॥ ४ ॥
 नारी वृती तां पुरुष भले नव, यह मोड़े हॉमी आवे ।
 नारी मे लाज पुरुष नहीं इननी, कैसे यहे बन जावे । देखो मेमे० ॥ ५ ॥
 जो यह वृती तो क्यों फिर बनावे, दोष ईश मे आवे ।
 नारी विना ही नर क्यों न क्रिये, मगरां दुख सिट जावे । देखो मेमे० ॥ ६ ॥
 नारी ही नारी कर कर इनको, इनम देरी हुआवे ।
 नारी को अन्न नहरी कर के, तो मगरी सुभरावे । देखो मेमे० ॥ ७ ॥
 जब तक नाहरी करे नहीं इनको, तब तक हन दुख पावे ।
 धर्मी विधर्मी शान समावन, यह दुख सभो न जावे । देखो मेमे० ॥ ८ ॥
 गोख्य कथीर भरधरी आठिक, तुलसी गूर रहावे ।
 राजभ गकर जेते कहिये, नारी तज कहां भावे । देखो मेमे० ॥ ९ ॥
 देवनाथ गुरु कृपा करी जब, हाथ पकड ममभावे ।
 मान नारी को नाहरी कर अब, न्यारी रबी नगे जावे । देखो मेमे० ॥ १० ॥

॥ मान ॥

॥ नर "दासी" को । नाम कंठवा ॥

मायो मेरे नारी पुरुष नहीं कोट रे होजी ।
 नारी पुरुष भाय द्योय गोया, परमानन्द सुख हांटे रे । मायो मेरे नारी० ॥ देर ॥
 पांच तत्त्व रो धामो भूठो, सब यामे माला पांडे रे होजी ।
 देह अभिमान मतलक कथा इणसे, आनन एक रम जोई रे । मायो० ॥ १ ॥
 आनन एक पुरुष नारी मे, जियुने सगल्लो खोई रे होजी ।

प्रत्यक्ष चेतन ख्याल करे नहीं, फिकर है इणरो भोई रे । साधो० ॥२॥
 देवनाथ को साथ कियोँ सूँ, ज्ञान रयो नहीं गोई रे होजी ।
 गद्दूँ पहर घड़ी नित चौसठ, मान मगन सुख सोई रे । साधो० ॥३॥

॥ सोरठा ॥

नारी पुरुष न कोय; बालक बूढो है नहीं ।
 जीवत मुक्ति होय, माँय लख्यौँ सूँ मानसी ॥
 नारी होय न ज्ञान, यह खरने मानें नहीं ।
 वो थी नारी कौन, अनुसूया मन्दालसा ॥
 गारगी आदि नार, चार वेद भाषण किया ।
 १ जाणे जग संसार, छाने छिपी न मानसी ॥
 नहीं यहाँ देह रो काम, काम है ज्ञान विवेक रो ।
 भूली नार तमाम, पड़ी बखेड़े मानसी ॥
 मल मूत्र की है नार, तो मरद कदे मलयागिरी ।
 सब में यूँ ही विकार, जो तन धारी मानसी ॥
 नारी में दुर्गन्ध, मुगन्ध मरद में आवती ।
 तो जाणत निश्कन्द, नारी मलीन है मानसी ॥
 नारिन और स्वभाव, मरद ही और स्वभाव के ।
 यह अपणोईअ भाव, मन सूँ हटाओ मानसी ॥
 लाज लाज में लाज, खोई लाज समाज की ।
 भारत को सिरताज, सो ज्ञान न दीनो मानसी ॥
 नारी में नहीं ज्ञान, दोष सभी मरदों तणो ।
 कर कर खँचा ताख, न्यारी राखी मानसी ॥
 दे दे खन्धविश्वास, सब ही लूटण में रया ।
 बाँध भरम री फँस, नारी मौत दिन मानसी ॥
 मरदों रो उपदेश, कर टीका पोया भरचा ।

नारी रो उपदेश, राख्यो श्लेष में मानसी ॥

जो होना निष्पत्त, तो अंग बरोबर रखता ।

एक अंग का भक्त, वे क्यों जीवे मानसी ॥

विधि क्रिया दो अंग, एक बाप के लाल दोऊ ।

क्यों कर होवे अंग, राम रूखाओ मानसी ॥

पतन देश का होय, अंग धरोपर दिन रख्यो ।

पीछे रहमी रोय, भारत धससी भूमि में ॥

अज्ञेय देहु तत्त्वज्ञान, करो गारगी मन्दासना ।

प्रसन्न होय भगवान्, हूवी नश्या नारदो ॥

विधिमियो तू मार, एक अंग रेयाँ तू पड़ी ।

दोऊ अंग होता तैयार, तो कदे न मरता मानसी ॥

पकी पह अंग मार, एक अंग देखत रवो ।

शक्ति दिन लाचार, मदद करे किम मानसी ॥

त्रिण अंग क्रियो तैयार, जाने प्रत्यक्ष देखलां ।

करने उठी लम्कार, जग जाणत है मानसी ॥

॥ सर्वैय ॥

हुय फकीर फिर फिनको जां फिर होवे नयू फकीर कहायो ।

कहा अंगले और मफल में सोबत कहा कोई जो खाऊ लेटायो ।

कहा अतर और चन्दन चराबत कंगु बोई मट्टी में लिपटायो ।

पाका क्रिया जो फिर सञ्जत तव होय फकीर जवे उठ धायो ।

रंग कपाय रंगयो मन है तो वस्त्र रंगाय भले न रंगायो ।

घर ही ममान ममान ही घर लख जगत शहर सो एक दिवायो ।

मान कहै वैकिक भये तव मोहो फकीर फनेपुर पायो ।

भांड से डोड फिरे बकुने ये भेष धराय के भूँडो दिवायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफ़ी । ताल कैरवा ॥

तोड़े फिर कोई न सतावे रे, वन जा तू मस्त फकीर ॥ डेर ॥

स्वानवन् फक्कड़ नहीं होना, सुन लेना मेरे वीर ।
 भेख धार फिर निकमो न रहिये, जब लग रहे शरीर । तोहे फिर० ॥ १ ॥
 मेह धृक् संत है पर उपकारी, केवे जग समरीर ।
 पर उपकार उमर भर करिये, उर भर उँडी धीर । तोहे फिर० ॥ २ ॥
 पर उपकार दिन साध न कहिये, वृथा न करिये भीर ।
 साध पन्थ यह बहुत कड़ो है, सन्मुख संवे तीर । तोहे फिर० ॥ ३ ॥
 चाहे तुम पाँचों कपड़ा पहिनो, चाहे नंगे चाहे धीर ।
 इन में भलाई नेक न कहिये, साध नहीं छुचगीर । तोहे फिर० ॥ ४ ॥
 चाहे लूके परवान मिठाई, चाहे हलजा और खीर ।
 अन्धे घुरे की कुब्ज नहीं परवा, वो जीते ही जानो पीर । तोहे फिर० ॥ ५ ॥
 लोकहित काज शीघ्र धर देवे, नहीं होवे दिलगीर ।
 देवनाथ कहे असल फकीर वो, माम छनो ऐसा बीर । तोहे फिर० ॥ ६ ॥

॥ सबैया ॥

मस्तान पिये मद यह जब ही दिन दूखी चढ़े उनको मस्ताई ।
 धूम रहे दिन रात सदा बेखयाल उधो बूमव है गजराई ।
 तीनों ही लोक डरे उनसे पर वे कनके डर नौहि डराई ।
 मान कहे उन मस्तन को भगवान् भी आन के शीश नँवाई ॥

॥ गान ॥

॥ रग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई कइ मिटसी अग्निचारो रे ।
 दीपक त्रिना जोय रहे आतम, भूल गयो जग सारो रे । साधो भाई० ॥ देर ॥
 असली तत्व नहीं ये जाने, नहि होवे उर उजियारो रे ।
 भूल पड़े ये जानत नौहीं, खावत मार अपारो रे ॥ १ ॥
 पन्थ अनेक विद्वान्त अनेकों, कव सक गिन गिन हारो रे ।
 साध और दन्ध अनेकों कहिये, थक गयो शेष विचारो रे ॥ २ ॥

धर्म अनेक और दृष्ट अनेकों, कर्म अनेक पुकारों रे ।
 किनको रुं न्याम दे किनको, खोज खोज मति हारो रे ॥ ३ ॥
 ममता शील सहनता छोड़ी, आत्म भाव निवारो रे ।
 पक्षापत्त में जीवन मत्र भयो, लख्यो न सार असारो रे ॥ ४ ॥
 इण अनिश्चारे में हम दुख पावें, रूख्यो कृष्ण हमारो रे ।
 अमी को छेड़ जहर हम पीयो, मरण मतो उर धारो रे ॥ ५ ॥
 देवनाथ गुरु गीता अमृत, ज्ञान के खूब निहारो रे ।
 कृष्ण मध्याँ रँभो हमको पिलायो, जीवत मोक्ष निहारो रे ॥ ६ ॥
 दीपक की क्या देऊँ आपमा, कोइ भानु उजियारो रे ।
 मान कहे कोई मानो न मानो, मानो तो जीवन सुधारो रे ॥ ७ ॥

॥ गन ॥

॥ राग त्रिभाञ्ज, तर्ज "मछली घर जोय समुदा मँहो" की । ताल दीपचन्द्र

नाथ म्होंने मारट साध न कहिये ।
 धर के म्योग करे सजटादे, उर्यो सँ दूर कर दश्ये हो । नाथ म्हाने ॥ १ ॥
 स्यागी नाम और मभपति संग्रह, उर्यो सँ दूर ही रहिये ।
 आपणो स्वारथ स्वारथ नहिं जग रो, उर्योने कहो क्या कहिये हो । नाथ ॥ १ ॥
 चेली चेली पुत्र सम अपणा, उर्योने घोसा दश्ये ।
 आये विचारे तरण के तौई, बाँय नकड़ डूबइये हो । नाथ ॥ २ ॥
 होय पिता और राम करे पति को, उर्योने मुख न देखइये ।
 साधू नाम मोधा होय रहवे, यारे सीधा पण निकट नहीं है हो । नाथ ॥ ३ ॥
 साधन सहित सदा हितकारी, ये म्हों सँ दूर न रहिये ।
 वाहे होय भेष गृहस्थ क्यों न होवे, टण रो बन्धन नहीं है हो । नाथ ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुन गृहस्थ संन्यासी, जिय सँ में इच्छा लई है ।
 मानसिद्ध ऐसे दो बार होवे, तो भारत सदा विरइये हो । नाथ ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

बंक वचन

बंक कहे सुन मानसिंह, मत कर तू अन्याय ।
पट दरशन है जगत में, आँकी शीश नमाय ॥

मान वचन

एक शीश सतगुरु लियो, धड़ पर रखो न कोय ।
एक शीश कृप्री तखो, यह अग्र नीचो न होय ॥

बंक वचन

वाने से लियो ज्ञान तुम, उनकी काटो बात ।
सुकुट मखी मानो जरा, नमकहृदय कह्यत ॥

मान वचन

जिनसे लीनो ज्ञान हम, वो घाना मिल जाय ।
शीश नमाऊँ तुरत ही, इण में संशय नाँय ॥
मर्यादा रखूँ सदा, सो मैं तोहूँ, नाँय ।
दृष्ट शीश तो फिर नमे, मन फिर नमे न काय ।
मनवो मस्तौँ सूँ मिले, जो मन इकता होय ।
देहवादी चे हैं सभी, मनवो मिले न कोय ॥

बंक वचन

बंक कहे सुन मानसिंह, करे संन्यास को नाश ।
चेद कहे संन्यास को, क्या भयो वावरो व्यास ॥
जो संन्यास होतो नहीं, तो व्यास काहे को कह्यत ।
तुम तो खरद्वन कर रहे, करो कौन के हेत ॥

मान वचन

मान कहे कविराज सुन, कछो असल वन्यास ।
चेद कछो मैं सो कछो, नहीं वावरो व्यास ॥

देखा देखी कदेई नही कीजे; पन्थ लण्डे री धार । फकीरा० ॥ ३ ॥
 नगन होय क्या किये जगत में, बैठा शरम उतार ।
 काम ने क्रोध पहरिया कपड़ा; योने देवो जार । फकीरा० ॥ ४ ॥
 ष तो कपड़ा बन्या सूत रा; नू पहर भलोई थार ।
 कफनी क्रोध डार दे तन सूँ, जद तोहै रग अपार । फकीरा० ॥ ५ ॥
 देवनाथ गुरु मन रंग हीनो, ओ रँग्यो रहत हर धार ।
 मानसिंह अन्दर रंग लागो; कौख रगे म्हारे चार । फकीरा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल दीपचन्दी ॥

भेद फकीरी न भाय, सन्तो मोहे भेद फकीरी न भाय ।
 कहे कुल और करे कुल अवर ही, सि० गीं ही स्वॉत सत्राय; सन्तो० ॥ टेर ॥
 औरों ने तो ब्रह्म बतावे, खुद की खर न पाय ।
 पर रं जीव भाव नही आवे, औरों रो कैसे मिटाय । सन्तो मोहे० ॥ १ ॥
 पिछले कुटुम्ब ने छोड़ने आया, और अगले में लिपटाय ।
 दणने त्याग नको क्या काह्ये, दियो आ ब्रह्मज बुवाय । सन्तो मोहे० ॥ २ ॥
 देह का भाव धरावर दरसे; बातों ही ब्रह्म बणाय ।
 हुकम अदुली कोई शिष्य करदे, अट अग्नि भङ्काय । सन्तो मोहे० ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु ना० कियो मोहे; अब न अनाथ रहाय ।
 मानसिंह जग रूप मेरो मव, कहूँ मैं दोल बजाय । सन्तो मोहे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल दीपचन्दी ॥

नही ज्यारे चाय अनाथ, फकीरा ममत्पि दरमय ॥ टेर ॥
 कहा धनवान् गरीब कहा है; दूजो भिजर नहीं आय ।
 मत्र पर छुग रहे नहीं कोई खाली; आतम रूप लखाय । फकीरा० ॥ १ ॥
 कहा धालक और बृद्ध कहा है; क्या पशु पक्षी कहा

अपनो रूप सकल में द्रसे; भिन्न बतावे नाँय । फकीरा० ॥ २ ॥
 जब लग देह भाव रहे न्यारो; तब लग ही दुःख पाय ।
 मरे और जन्मे जन्मे फेर मरखो; उल्टा ने सीधा जाय । फकीरा० ॥ ३ ॥
 भगवाँ भेष सफेद कड़ा ज्यौरे; एकहि भाव दिखाय ।
 घर ही बन और बन ही घर है; सो घर तज कहाँ जाय । फकीरा० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु कियो मोहे समर्थ; अब असमर्थ कौन रहाय ।
 मानसिंह जग मेरो रूप है; न्यारो दोसत नाँय । फकीरा० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

होय निडर ज्यौरो काम; फकीरा, ज्यौसूँ ही रीभे राम ॥ डेर ॥
 निरस होय नहीं बैठे जग में; करता रहे सब काम ।
 बोले बाले उठे बैठे; आत्म में विश्राम । फकीरा होय० ॥ १ ॥
 धारे भेज अलेख न चीन्हे; मन ज्यौरे कवन काम ।
 भाग सन्यस्त पृथा ही लजावे; खावने करत दराम । फकीरा० ॥ २ ॥
 धरके भेज टेक नहीं राखे; अजगर होसी तमाम ।
 ऊपर धूप धूल जले नीचे; कभी न मिले आराम । फकीरा० ॥ ३ ॥
 असल फकीरी वे नर पावे; जल्थो देश आशाम ।
 मानसिंह काम मरदाँ रो; क्या करे विषयी गुलाम । फकीरा० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

साधो ऐसो देखो मैं हूँ मस्त फकीर ।
 खूँ मैं फकीर और काम करूँ सब; फिर भी अजब अमीर । साधो० ॥ डेर ॥
 राज करे और दुःख नहीं हमको; कबहु न हो दिलगीर ।
 दुःख को दुःख नहीं सुख को सुख नहीं; ऐसी अमर जागीर । साधोः ॥ १ ॥
 शाही का शाह फकीर फकीरों का; क्या करे -

बंक वचन

बंक कहे हो मानसी, मिले अनन्द जो सन्त ।
 हमको कुछ लागी नहीं, नहीं पायो कुछ तंत ॥
 जिनको आप सराहत हो, वे ही मिले केई पार ।
 तदपि आनन्द ना मिल्यो, भयो शब्द नहीं पार ॥

मान वचन

या में कसूर न सन्त को, कसर आप में होय ।
 भँवरें तयो कसूर कहा, शब्द सुणे नहीं कोय ॥
 तू नहीं लट उण जाति को, कि जिनसे भँवरा होय ।
 मान कहे सुनिये कवि, सन्तज दोष न कोय ॥

॥ सचैया ॥

नाम बैरागी घरयो अपनो और राग अपार जो पार नहीं है ।
 क्रोध की माल उठे तन में जिन नेकहू ज्ञान विचार नहीं है ।
 नाम तो सन्त धरे पुनि आपने सन्तपने को संचार नहीं है ।
 मान कहे हम साची कहे इनमें कुछ भूठ लिगार नहीं है ॥

॥ दोहा ॥

बैरागी मुख से कहे, देखो अर्थ विचार ।
 गृहस्थी हुते तो कम हुती, अब भई राग अपार ॥
 पहिले खात कमाय के, पुरसत मिली न कोय ।
 अब तो बैठे खात हैं, काम बही तत्र होय ॥
 वेद गिनो चाहे शास्त्र तुम, रामायण है एक ।
 इनके सिवा जाणे नहीं, उसको भी नहीं विवेक ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "बाणी" की । ताल कैरवा ॥
 देखो ब्याँरो मन न भयो है बैरागी होजी ।

राग ने द्रोप रती नहीं निकम्पा, भया है चौगुणा रागी रे । देखो उयारो० ॥ १ ॥
 ऊपर है त्याग आडम्बर धारे, आशा उर नहीं त्यागी होजी ।
 भुव मिटावगु भेष धरयो शिर, जवद चोट नहीं लागी रे । देखो० ॥ १ ॥
 मूरख को कहे म्वाई भोग वर्युं, यहाँ नो प्रत्यक्ष ही फाकी होजी ।
 नाम ही भोग भरम कैसे भागे, चलती अफल ने भोगी रे । देखो० ॥ २ ॥
 गोला रा गोला चरस धरत है, जोन चिलम पर जागी होजी ।
 यों मे अकल जो आये कठे सूँ, आग अफल ने लागी रे । देखो० ॥ ३ ॥
 मुख आये ए वरुं बनयो उर्युं, साथ नहीं है र्वोगी होजी ।
 ऊपर अन्ध अन्ध उयारो द्विधो, जहज्जोन नहीं जागी रे । देखो० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु कृपा करी जद, मन री भरमना भागी होजी ।
 मानसिंह पायी सूँ पग राक्या, जद मैं अमच भयो पागी रे । देखो० ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

सीताराम कहत मुख जोर जोर हाक करत, मानो लगूर सो भोग धे
 दिखावे है । भग्नी रमाय देह चन्दन को नाश करत, सैंठो आडम्ब ले
 फर जो फलावे है । करत लगीटी गाड़ी मन्लम को खेप करत, मालाग रूप
 जाये प्रेत सां दिखावे है । धाक से डरावे जगत क्रोध मानो शेष जैसो,
 समता को भाव जाक ेश दूँ न आये है । राग कां न पार जहाँ नाम कं
 वैरागी कहत, कुडी मिवाई क्षीष जगत ठग थावे है । कहे राव मानसिंह ऐनो
 नहीं भाय मोको, ऐमे सन्तो से मोहे राम ही बचावे है ॥

॥ कवित्त ॥

मेर मेर पीये भग लडर रहे कुरडी घोटा, लाल लाल अँख करत जगत
 को डर धे है । कहत फिर दाउदयाल रहत अयोध्या के लाल, आप तो डूवे
 नाम बड़ी के हुवावे है । जादू और टोना करत भाल मता सकल हरत, सेर
 मेर चरम भद्र गौजो मँगवावे है । कहे राव मानसिंह ऐसे नहीं भावे सन्त,
 देश को हुवावे यां कां काल दूँ न थावे है ॥

॥ सवैया ॥

आवे जिसी घस मारत है ये अर्थ कहा इन को न चिचारे ।
अर्थ करे कोई जेइत है तवही ये लेके चिममट मारे ।
जाते हरे सब बोलै नहीं कोई चोरन आगे है डोर ही सारे ।
मान कहे कहु नाँव हरे हम सिंह के मुत है कौन के सारे ॥

॥ सवैया ॥

नाँव रहे इतने ही में सीधे ये और नई नई बातें बनावें ।
लोहे को सुवर्ण ताम्बे को लगे रसायन को विश्वास दिलावें ।
भोंदू है जीब भूले वपुरे जिनते इन गुरुहन हाथ ठगावें ।
लोहा न सोसा न ताम्बा न रूपा है अपनी भूठी दुकान जमावें ।
मान कहे मैं तो मानूँ नहीं विश्वास हमें इनको नहीं आवे ।
दूर से शीश नभावत हूँ मैं तो पहिले ही ते नहीं मुँह लगावे ॥

॥ कवित्त ॥

राम रत्ना के सिधा दूसरो न मन्त्र कोई, तामें भी शुद्ध मंत्र पढ़नो न
आवे है । तुलसीकृत रामचरित्र सिधा नहीं मन्त्र पढ़्यो, घसी हए करे तो
शालभीक गावे है । जैसे गुरु मूर्ख तैसे शिष्य भी मिले मूर्ख, भूले सिधाई के
दौड़ दौड़ जावे है । द्रव्य को उतार लेत आप से बनाय देत, भंग गाँजा
चरस पीनो साथ में सिखावे है । लकड़ को जलाय देत द्रव्य हू फी करे रेत,
देखो जगत गैलो कैसे मूढ़ गुरु ध्यावे है । कहे राव मानसिह इनमें जो
सिधाई होय, बँटे क्यी न रहे काहे भाँग भाँग खावे है ॥

॥ शोहा ॥

मान कहे हो नाथ जी, कीजे ब्रह्म विचार ।
विन सिद्ध ब्रह्म विचारियाँ, दूखी पड़सी मार ॥

॥ सवैया ॥

स्वाँग धरयो सिर नाथ पने को नाथ पनो छर नाँव निभायो ।

मायब मांगे जवाब जबे तब देनो तुम्हें जो कठिन रहायो ।
नाथ को हाथ लियो सिर पे हमने तो नाथ पने को निभायो ।
मान कहे गुरुदेव कृपा कर मोहि तो नाथ सही जो बनायो ॥

॥ मधैया ॥

भेष दियो नहीं कान जो फारे ना हमको इन भौल मंगाई ।
आपही पूरण नाथ हुते थस ही हमको निज घूटी पिलाई ।
भेट दियो सब ताप मेरी उन आपके बीच में दीन लखाई ।
मान कहे जब जान परी तब जाय मिले हम नाथ के भाँई ॥

॥ मधैया ॥

चाहे रहो तुम जायके वन में चाहे रहो तुम शहर निवासी ।
चाहे रहो तुम गृहस्थ बीच में चाहे धनी वन जाय संन्यासी ।
चाहे सुशी और खेल करो तुम चाहे रहो सब ही से उदासी ।
मान कहे मन स्थिर न होंवे तब तक तुमको नहीं सुल आसी ॥

॥ मधैया ॥

ना उतते कुल जोग सबो शीर ना उतते कुल भोग भोगायो ।
ना उतते जो भैरव दुबो और ना उतते ते गृहस्थ कमायो ।
ना उतते त्रिवेणी को देखी दत्त चन्द्र-मुखी को गले न लगायो ।
मान कहे धृक् स्वामन में ते तो स्वाम धरयो योही जीवन धिनायो ॥

॥ दोहा ॥

माला फेरत मसखरा, तिलक करत वेईमान ।
जिन अन्तःकरण मोजियो, सोही मन्त सुजान ॥

॥ कुण्डलिया ॥

स्वामी सरडा सेवडा, संन्यासी दरवेश ।
भलो विगाड़यो भेष ने, कर स्वारथिया भेष ।

कर स्वारथिया भेष, बात हित री नहीं जाणे ।
 करत हें वाद विवाद, नहीं वे असल पिछाणे ।
 निज पैराम आगो रयो, आगो रह गयो देश ।
 स्वामी सरडा सेवडा, संन्यासी दरवेश ॥

गीता व हिंसा

॥ सर्वैया ॥

बारों हि वेद तो गाय बनी एकदश उपनिषद् पय पाये ।
 ज्ञान का बन्दा भया तिनते उरनिषद् का पय पान कराये ।
 ताहि को कृष्ण ने ताया अति पट शास्त्र की छात्र सबी छिटकाये ।
 गीता सो घृत निकाल लियो जो निकाल के पारथ को नै पिलाये ।
 देहुनाथ कृपा करके, उस घृत को स्वाद हमें जो चलाये ।
 मान दो पीते ही मस्त हुए जब मस्त हुए तब सहज समाये ॥

॥ सर्वैया ॥

दश और एक पदे उपनिषद् चारों हि ब्रह्म के वाक्य सुनाये ।
 और पट शास्त्र के मंत्र पदे तदपि तृप्ति उर में नहिं आये ।
 पुराण अठारह को वाँच लिये कहु औरहि और जो और बताये ।
 मंत्र हजारों हि शब्द किये पर ऐसो तो मंत्र कोई न सिखाये ।
 कृष्ण कृपा कर प्रार्थ को यह गीता को मंत्र भले समझाये ।
 मान बहे ऐसो घृत हमें फिर कृष्ण कृपा करके जो पिलाये ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "सोढे समरे" की । ताल धीमा कैरवा ॥

धर्म भूमि और कुरुक्षेत्र रे माँय, सत्रनो स्तार रे ।

कोई पारथ सूँ गिरधारी हँसने बोलिया रे; स्तार लाल ॥ टेर ॥

भलो डरयो तू लड़ने सूँ मन माँय, मित्र हमार रे ।

कोई कविता ने काथर री चारण जोड़सी रे; म्हारा लाल ॥ १ ॥
 कुन्त मात री दूध जो देवे लजाय, मित्र हमारा रे ।
 कोई कलक जो लागे रे कुन्तीभोज ने रे, म्हारा लाल ॥ २ ॥
 डूबे-डूबे पाण्डु राव री जहाज, मित्र हमारा रे ।
 कोई दुरमण देवला खेले मैखि रे, म्हारा लाल ॥ ३ ॥
 फिट रे अजुन यूँ मन काची लाय, मित्र हमारा रे ।
 कोई म्हारो तो रथ हॉक्यो मुफ्त गुमावसी रे, म्हारा लाल ॥ ४ ॥
 ॥ दोहा ॥

अजुन वचन

कुटुम्ब पात मै न करूँ, लाज भलौई जाय ।
 पुत्र पौत्र सब ही लुठे, वंश नाश हो जाय ॥
 ताते माँग के खावणो यही निश्चय मै कीन ।
 खड्ग चलणो नही दणो, सब ही बिचारे दीन ॥

कृष्ण वचन

जो तुमको लड़नो नही, तो क्यूँ लायो मोये साथ ।
 अब मै जाणे ना देऊँ, करखो पड़मी पात ॥
 पाप पुण्य मोही सबे, तुम्हें पाप नही शंय ।
 लड़णो पड़मी खेत मे, जाण न देऊँ तोय ॥

अजुन वचन

कुटुम्ब इनन हत्या बुरी, महापाप की चाल ।
 अथ पाखा चालो पर, मान लेवो गोपाल ॥
 राज सबी हर लेन ये, जिनकी परवाद शॉय ।
 धर संन्यस्त द्वारे फिरूँ, माँग माँग कर खाय ॥

भजन का अन्तरा

कृष्ण वचन

माँग के खाणो मो पहिले क्यूँ नही जाय, मित्र हमारा रे ।

तैं किरण ने हिम्मत सूँ मगड़ो साँभियो रे; म्हारा लाल ॥ ५ ॥
जो लेणो तो पहला लेत संन्यास, मित्र हमारा रे ।

कोई अन्न तो संन्यासी होवण ना देऊँ रे; म्हारा लाल ॥ ६ ॥
रण में आयौ गुरु कुटुम्ब कोई नाँय, मित्र हमारा रे ।

कोई लड़वाने आया तो समझो काल सा रे; म्हारा लाल ॥ ७ ॥
भय दीनो पण अजुँन मान्यो नाँय, सजनो म्हारा रे ।

कोई तब तो गिरधारी जुगति उपाय ली रे; म्हारा लाल ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण वचन

कुण मारे और कुण मरे, तज अजुँन अज्ञान ।
आत्म अज अम्बर सदा, पारथ गह कर दान ॥
पाप पुण्य में भूल के, तू पारथ गयो फँसाय ।
धर्म भूमि में खेलताँ, पाप लगे कछु नाँय ॥
नित्य कर्म करतो रहे, करत करत मर जाय ।
सो पारथ दुःख ना गहे, मुक्त में रहे समाय ॥

भजन का अन्तरा

अजुँन वचन

जप तप सुमरख करणो नित को काम, प्रभु जी म्हारा हो ।

कोई बखो तो हाथौँ सूँ दान दिलायखो रे; म्हारा राज ॥ ९ ॥

देणो देणो गौवाँ सुवर्ण दान, प्रभु जी म्हारा हो ।

कोई दीन जनो पर दया राखणी रे; म्हारा राज ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सुन पारथ के वैन ये, बोले कृष्ण सरोप ।
यूँ जाणूँ कथोँ आवतो, लग्यो संग को दोष ॥
भीष्म पिता दादा तेरे, उनसो छानी नाँय ।

परशुराम से क्यों लड़ें, उनको पूछो जाय ॥
 शान्तनू राजा हुने, तुम उन वश के माय ।
 लाखों जीव उण मारिया, कौन नरक चतलाय ॥
 भीष्म पिता दादा तेरो, उण सम पापी नाँय ।
 जाय देश गनार मे, खोस के बन्धा लाय ॥
 मारण मरण यह काम है, क्षत्री तणो सुजान ।
 नीच कर्म को छोड़ दे, नित्य कर्म पहिचान ॥
 जप तप यज्ञ और दान सब, पीछे जाय कर लेह ।
 लहे गाडीय को हाथ मे, के शिर लेह या देह ॥
 इतनी कही पर ना लखी, फेर कही गोपाल ।
 अथ तो रहनो मान ले, जही तर होय बेहाल ॥

॥ सोरठा ॥

जाखी मन गोपाल, अजुन दिल मे बहक गये ।
 होमी खोटो हाल, निज बचव याही समझाय दो ॥

भजन का अन्तरा

कृष्ण बचन

जो नु करे सो नित्य करम ही जाण, मित्र हमारा रे ।
 कोई नित्य करम सँ अजुन ना टलो रे; म्हारा लाल ॥ ११ ॥
 पढखो पढाखो कहिये विप्र को करम, मित्र हमारा रे ।
 और वैश्य जो करे नित वणिज ख्यौपार ने रे, म्हारा लाल ॥ १२ ॥
 रण में आपने मत हिम्मत ने क्षर, मित्र हमारा रे ।
 कोई ओई ने क्षत्री रो नित्य जो करम है रे; म्हारा लाल ॥ १३ ॥
 शूद्र होय सेवा सँ चूके नाँय, मित्र हमारा रे ।
 कोइ करम परवारो जाति जाण खे रे; म्हारा लाल ॥ १४ ॥

- चारों वरण हैं सब ही मेरे माँय; मित्र हमारा रे ।
 कोई म्हारो ही स्वरूप जगत ने जाख ने रे; म्हारा लाल ॥ १५ ॥
 मो में कौरव पाँडव कोई नाँय, मित्र हमारा रे ।
 कोई नहि तो यादव ने ना कोई ग्वाल है रे; म्हारा लाल ॥ १६ ॥
 तुम हम हम तुम कहिये एकम एक, मित्र हमारा रे ।
 कोई कुण तो मारे ने कुण जो मर सके रे; म्हारा लाल ॥ १७ ॥
 थह तो समझ तू देह थकाँ सब भाव; मित्र हमारा रे ।
 कोई देह तो मिटियाँ सूँ म्हारे माँयने रे; म्हारा लाल ॥ १८ ॥
 पंचभूत थौर तिरगुण मेरो रूप, मित्र हमारा रे ।
 ॥ कोई पाप ने पुण्य सत्र म्हॉने जाण ले रे; म्हारा लाल ॥ १९ ॥
 उठो अर्जुन उठने फरो संप्राम, मित्र हमारा रे ।
 कोई साधो ने बतकाँ मारग जोन रो रे; म्हार लाल ॥ २० ॥

कवि वचन

- असल योग ही कही अर्जुन ने बात, सजनो म्हारा रे ।
 कोई जद तो अर्जुन उठ सम्मुख लड़ रखी रे; म्हारा राज ॥ २१ ॥
 पर कर बोल्यो गाँडीय टंकार, सजनो म्हारा रे ।
 अत्र देरी नहीं कीजो ने अगड़ी छेड़ो रे; म्हारा राज ॥ २२ ॥
 दिवस काठारह भारत खूब हि कीन, सजनो म्हारा रे ।
 कोई गिरधर रो कयोहो उर बिच धारियो रे; म्हारा राज ॥ २३ ॥
 नहीं लागो जाने पाप पुण्य रो लेस, सजनो म्हारा रे ।
 वे तो आसिर मिलिया में मिलिया इयाम में रे; म्हारा राज ॥ २४ ॥
 धोड़े में बरणी जो गीता सार, सजनो म्हारा रे ।
 कोई न्यादा ने केयाँ सूँ सुख्यो न जावसी रे; म्हारा राज ॥ २५ ॥
 नहीं अर्जुन ने दिशो इयाम संन्यास, सजनो म्हारा रे ।
 कोई नाँही कुशा ने जनेऊ धारली रे; म्हारा राज ॥ २६ ॥

नहीं बिठायो यज्ञ हवन के माँय, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई भेली तो बलियोडे ने सिद्ध बणावियो रे; म्हाारा राज ॥ २० ॥
 मारण मरखो मदा हमारो काम, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई निश्चय राखो जो आवम ज्ञान ने रे, म्हाारा राज ॥ २१ ॥
 डीनो डीनो देवनाथ यही ज्ञान, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई मात तो माले यूँ जीयत स्वर्ग में रे, म्हाारा राज ॥ २६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारपाड़ी "सोडे स्रमरे" की । ताल कैरवा ॥

देखा देखो गीता पन्थ चिन्तार, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई केशवजी संन्यासी पारब ने ना कियो रे, म्हाारा राज ॥ १ ॥
 जीवत मुक्ति पाण्डव भुत ने दीन, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई गीता तो मुण्डाई रख जेन मे रे, म्हाारा राज ॥ २ ॥
 नहीं बहोँ होतो त्रय तप यज्ञ रो काम, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई नहीं तो हाँतो उठे मारग जोम रो रे; म्हाारा राज ॥ ३ ॥
 नली पण हाँतो भूतक अल रो काम, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई राजा ने पाण्डु ने कई दिन बीतिया, म्हाारा राज ॥ ४ ॥
 जो अर्जुन ने देन कृष्ण संन्यास, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई इतिहासपुर तम आवे मरूँ रख जेत मे रे, म्हाारा राज ॥ ५ ॥
 ए मय वाला कन्धी पोल पुणल, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई तार्याडे घृत में द्वाद्य के भेलदी रे, म्हाारा राज ॥ ६ ॥
 अर्बिरवास सूँ नैणों दोखे नॉय, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई निरुगोडो घृत पावो द्वाद्य मे ना मिले रे, म्हाारा राज ॥ ७ ॥
 रमारियण ७ मित्र घृत पावे नॉय, सजनों म्हाारा रे ।
 कोई द्वाद्य ही पाव पाय ने देश द्वावियो रे; म्हाारा राज ॥ ८ ॥
 अन्तकाल में दे गीता रो ज्ञान, सजनों म्हाारा रे ।

- कोई जिएण माँही स्वार्थ री बातों ए केवे रे; म्हारा राज ॥ ९ ॥
 बोलचाल भी लागे खारी जहर, सजनो म्हारा रे ।
 कोई एही रे विलिया में गीता क्या सुणे रे; म्हारा राज ॥ १० ॥
 तन थिर मन थिर वचन नहीं थिर होय, सजनो म्हारा रे ।
 कोई शिर पर तो बाजा बाजे काल रा रे; म्हारा राज ॥ ११ ॥
 देखो जग रो कैहो अंधविश्वास, सजनो म्हारा रे ।
 कोई स्वार्थिया लूटे इण भारत देश ने रे; म्हारा राज ॥ १२ ॥
 सब सूँ ऊँचो उन्नत गीता ज्ञान, सजनो म्हारा रे ।
 कोई स्वार्थियां बिगाड़यो गीता ग्रन्थ ने रे; म्हारा राज ॥ १३ ॥
 परहित कारण पारथ कृष्ण संबाद, सजनो म्हारा रे ।
 कोई स्वार्थियां क्लायो रतन ने राल में रे; म्हारा राज ॥ १४ ॥
 अर्ज सुणे तो धरे कृष्ण अवतार, सजनो म्हारा रे ।
 कोई दुराचारियों रो पापों काट दे रे; म्हारा राज ॥ १५ ॥
 गीता समझो अखिल विश्व रो सार, सजनो म्हारा रे ।
 थे तो मन्तर ही मात्र गीता मत जाणुजो रे; म्हारा राज ॥ १६ ॥
 गीता कहिये असल व्यवहार समुद्र, सजनो म्हारा रे ।
 कोई रंभक भर नहीं मारग इण में त्याग रो रे; म्हारा राज ॥ १७ ॥
 गीता ग्रन्थ ने लख्यो भरतृराज, सजनो म्हारा रे ।
 कोई उण रे भाष्य में निश्चय जाण लो रे; म्हारा राज ॥ १८ ॥
 देवनाथ गुरु गीता घृत ने लेय, सजनो म्हारा रे ।
 कोई सोई ने पिलायो घृत मानने रे; म्हारा राज ॥ १९ ॥
 मानसिंह ज्यारो भूलें नहीं एहसान, सजनो म्हारा रे ।
 म्हाने सतगुरु नहीं मिलता तो खाली रोवता रे; म्हारा राज ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

वंक कहे सुन मानसिंह, यह मोहे हांसी आस ।

उननी कहां फुरसत हती, जो गीता दर्ई समझाय ॥
 पद श्लोक है मान मौ, मेना दोऊ तैयार ।
 नाहि समय कैसे कही, केहि विधि कृष्ण विचार ॥

॥ कवित्त ॥

एक श् पद को अर्थ जो करे कोऊ, कंती ही घडी तामें करन वीत जात है ।
 यह हुते नात सौ कैसे कहे कृष्णचन्द्र, एक दिवस कहा कटे दिवस गुजर जात
 है । ऐसी यह बड़न धामों में तो नहीं मानूँ मान, कहे समझाय क्या यह भूठी
 कही जात है । विना विध्याम कही बात कैसे माने हम, तुम जो कहेत बात
 समझ मे न आत है । कहे कवि बक यह बंरु है बात तेरी, विना सीधी कियो
 बिना वृथा ही लखात है । आप बिना कौन यह स्पष्ट समझावे मान, गुणिजन
 को काम अभी छान के विज्ञान है ॥

॥ दोहा ॥

मान हंसे मुखते मधुग, कवि बंरु कश कीन ।
 छानो तू पछु ना रषो, भोल तठयो परवीन ॥

॥ कवित्त ॥

थोड़ी सी कही कृष्ण अर्जुन भी सुनी थोड़ी, दोनों चतुर हुते उन सैनी
 समझायो है । वेदव्याम जैसे विद्वानी पुरुष हाजर तहों, दोनों को भाष देव
 प्रथ यह बनायो है । दूजी हू न समझ याको समझ तू कृष्ण बाक्य, कृष्ण
 और व्यास कोई दोय ना कहायो है । जामें थे आत्मदर्शी मुखे थे नाहि दोऊ
 आत्मदर्शन के विश्व सगरो समायो है । कहे राव मानसिह बंकी न समझ
 यायो, नोरो कहा बंकी बक बंक तू कहायो है । तू तो है प्रवीण कवि तोरो
 समझाऊँ कहा, तेरो हित नाँव हित तैं औरन को चायो है ॥

॥ दोहा ॥

पर हित कारण तैं कियो, मोते यह संवाद ।
 मैं नाँ ते अनि खुष भयो, मम्मूँ नाँव विवाद ॥

॥ राम काफ़ी । ताल दीप चन्दी ॥

वंक वचन

धन्य तुम्हारी भाई । बात सब खोल सुनाई; धन्य तुम्हारी० ॥ १ ॥

कृष्ण कही अर्जुन के ताई, क्या हाजिर थे वहाँई ।

हाजिर होय जिम बात कही तुम, कसर रखी कछु नाँई । बात सब० ॥ १ ॥

मान वचन

मैं हूँ अनादि आज को नाँही, यह क्या शंका आई ।

तुम हम हम तुम केने जग लिये, अबके हि मारग राई । बात सब० ॥ २ ॥

वंक वचन

हमें तो बात बाद नहीं नृपति, न्यारे किम बाद रहाई ।

हम तुम न्यारे या भेले होते, यह समझावो गुनाँई । बात सब० ॥ ३ ॥

मान वचन

भास मात्र तुम हम दोरु हैं, कितनी बार बताई ।

भास लड़पो महा भास में मिल गयो, तब कहाँ दोष दिखाई । बात सब० ॥ ४ ॥

वंक वचन

क्या तुम व्यास कृष्ण खुद आवे, यह संशय मन माँई ।

कितने कभड़े हटत नही निश्चय, दिन दिन साफ दिखाई । बात सब० ॥ ५ ॥

मान वचन

मोते व्यास कृष्ण कय भिन्न थे, मूठी शंका खलाई ।

खोट नहीं तो निकसत कहाँ ते, कितनो ही छेड़ भलाई । बात सब० ॥ ६ ॥

वंक वचन

क्या कहूँ बात समझ नहीं आवे, तुम खुद बोलो गीताई ।

बार बार मैं कहूँ आपको, तुम नहीं रूठत कहाँई । बात सब० ॥ ७ ॥

मान बचन

यामे रीम कंठ्य रुदा करिये, तू भेरी आतम पाई ।

आतम मन यह अमृत स्वजाना, ज्यो मांटे ह्यो बधाई । वात १३० ॥ ८ ॥

देवनाथ गुरु कृष्ण मिले थे, जिन हू न घान छिपाई ।

मान छिपावे क्या अकल है खोई, गुप्त रख्यो गुप्त जाई । वात १३० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

गीता गीता क्या करे, नहीं ताथो नो नाथ ।

स्वारथिया स्वारथ बरी, दीवी छाछ मिनाथ ॥

ओ पृत चट ही मुधरमी, मिलियो रक्षी नाथ ।

मन ने पकड़ नित्र मन करे, नो छात्र सभी उड़ नाथ ॥

जो तू धी नहीं ता सक, तो गुरुमुख हांकर नाथ ।

स्वारथिया गुरु ना करो, फिर देसी स्वारथ मिलाथ ॥

आगे स्वारथ पदु मिलायो, कियो अरथ अनरथ ।

माचा गुरु जो फेवसी, मुणसी होय पारथ ॥

पारथ ही गीता मुने, तो गुरु की पोल उड़ जाय ।

कृष्ण रूप गुरु ठहरमी, पोल जिर्हा में नाथ ॥

ओता भी पारथ नहीं, तो गुरु कृष्ण किम होय ।

गलती दोनों में रही, समझ्या नहीं है फोय ॥

शिष्य जाने गीता मुनी, पूरो कीयो नेम ।

गुरु जाने मतलब कियो, नहीं दोनों मे प्रेम ॥

मानसिह अम शिष्य गुरु, वे ऊँडे कूने जाय ।

बाहे तो परु गीता मुनो, चाहे वेद मुनाथ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल वैरवा ॥

होवे होवे जो पारथ समान, जगने गीता भावे रे ॥ टेर ॥

नहिं गीता सुन ले संन्यास; नहिं वह जग से रहे उदास ।
 दीखे जन अपने समान । ज्याने गीता० ॥ १ ॥
 गीता जीवन मोक्ष कहे सोय; ऐसी मुक्ति सहजे होय ।
 देखो देखो वेद प्रमाण । ज्याने गीता० ॥ २ ॥
 खाटो खारो चरणो नाँय; स्वादि ने इनमें स्वाद न आय ।
 पड़े हूँ नरक की खान । ज्याने गीता० ॥ ३ ॥
 स्वारथ बस प्रमाण क्या दीन; पद के तोते मोक्ष न लीन ।
 देखो क्या गहरो है अज्ञान । ज्याने गीता० ॥ ४ ॥
 भयन धृक्क तल प्रेत गमाय; सिर्फ गीता को पाठ पढाय ।
 मत होषो अति रे अज्ञान । ज्याने गीता० ॥ ५ ॥
 तन तरु मन मन्दिर जो कह्याय; क्रोध प्रेन तो निकस्यो नाँय ।
 पद पद दीवी उमर गुमाय । ज्याने गीता० ॥ ६ ॥
 तोते क्यों पद पद परवीन; शिष्य ओ शंका कुछ भी न कीन ।
 हरे नमः कह कर वक्त बचताय । ज्याने गीता० ॥ ७ ॥
 हरे नमः अर्जुन कर जाय; तो यह गीता बनती नाँय ।
 कुछ भी नाँय सुनाय । ज्याने गीता० ॥ ८ ॥
 पद पद ऊपर शंका कीन; दैड एक नहीं जावण दीन ।
 जब हुवे अठारह अध्याय । ज्याने गीता० ॥ ९ ॥
 यहाँ तो दी प्रथा उठो डार; शिष्य को पूछन नहिं अधिकार ।
 गुरु चाहे कहीं दे गिराय । ज्याने गीता० ॥ १० ॥
 देवनाथ धर कृष्ण अवतार; कियो मान को परले पार ।
 क्यों कर भूलो मैं अहसान । ज्याने गीता० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माड । ताल दादरा ॥

यह गीता ध्यारी, नर और नारी, देखो समझ विचार ।

जिन्हे भाषी वसुदेव कुमार रे; यह गीता० ॥ टेरे ॥
 राठ पाठ मे रखीजो मनी रे; रु रु लाख हजार ।
 शोभा पदजो ने प्रेम लगाजो, लखजो सार अमार रे । यह गीता० ॥ १ ॥
 नृणा जी जैसे तो योगी मुनार्दे, मुनी अजुंन से चतुर मरदार ।
 वेद व्यास जैसे कथिता बद्ध कीनी, गलती न होय लिगार रे । यह गीता० ॥ २ ॥
 मन्त्र स्वरूप जानली इसको, कीनो अति अपकार ।
 मा अमार विचार न कीनो, डूब गये मङ्गधार रे । यह गीता० ॥ ३ ॥
 गीता जैसे घृत है अमृत, रहे जमी पर डार ।
 मानुष तनु विज और न मिलसी, होसी कष्ट अपार रे । यह गीता० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, दीनो शुद्ध विचार ।
 मान कहे रे धन्य महा पुरुषों, धन्य है लाख हजार रे । यह गीता० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड । ताल दादरा ॥

निज प्यारा हमारा, नैनो का तार, क्यों रुठा करतार ।
 यह करलो मन मे विचार रे, निज० ॥ टेरे ॥
 उनके तो प्रेम की नदियें बहती, यहाँ पर जाल ही जाल ।
 उनके तो ज्ञान विमान भर था, यहाँ पर चाल कुचाल रे । निज० ॥ १ ॥
 उनसे तो गीमा ताया हुआ घृत, दिया था तुमको निकाल ।
 उल्टी कुमुति यह हुई तुम्हारी, फिर दिया छात्र मे डाल रे । निज० ॥ २ ॥
 गीता पढो और प्रेम से रहो, राजी हो दीनदयाल ।
 बाड़ा बग्दी को छोड़ दो भाई, कभी न ग्वावे काल रे । निज० ॥ ३ ॥
 बाड़े की भेड़ों को बाहर निकालो, और मिह करो तजाल ।
 हो भुरियार ललहार करो तो, दूर भगे सज जाल रे । निज० ॥ ४ ॥
 गोप्य कबीर और दादू नानक, काल दिया शिर मे डाल ।
 गीता के अमृत को दान के पीया, राजी हुआ नन्दलाल रे । निज० ॥ ५ ॥

मान कहे कोई मानो न मानो, मेरा तो बदला ख्याल ।

देवनाथ ने हाथ गहो जब, भाग्यो अन्देष्ट को जाल रे । निज० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मन गीता वाक्य उर धर रे । कृष्णचन्द्र ने प्रगट प्रकास्यो,

जाको दूर मत कर रे । मन० ॥ ढेर ॥

सब तज शरण एक की रह नित, निर्भय होय विचर रे ॥ १ ॥

सब तज दे तो शरण कौन की, यह संशय परहर रे ॥ २ ॥

सर्व तज्यो पर आप तज्यो नहीं, वाही की शरण सुमर रे ॥ ३ ॥

मान आप अपने की शरण बन, सब बंधन ते टर रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "ढंके" की । ताल कैरवा ॥

पढ़ गीता रहे रीता वन्ही को धूड़ जमारो रे, अर्थ निज नाँय विचारो ॥ ढेर ॥

गीता मंत्र समान ही जान; होय त्रिमर सुखावत आन ।

स्वारथ हित ये फरत सवी नहीं अर्थ विचारो रे । अर्थ निज० ॥ १ ॥

समझे कृष्ण यशुमति को लाल; उनको खाय अवश्य ही काल ।

कृष्ण रहे यूँ विश्व बीच में व्यापक सारो रे । अर्थ निज० ॥ २ ॥

देख कृष्ण को आत्म रूप; सवी भुत को आप स्वरूप ।

असंब रूप लह लेहे अविद्या दूर ये डारो रे । अर्थ निज० ॥ ३ ॥

गीता कही उण अर्थे विचार; कृष्ण समान गुरु को धार ।

तारण करण कष्ट कियो यह कृष्णजी सारो रे । अर्थ निज० ॥ ४ ॥

देवनाथ कल्याण के रूप; मेट दिवी जिन त्रिविध की धूप ।

मान जान निज रूप नैन विच सहजे निहारो रे । अर्थ निज० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

कीनो है जुलम अपार रे, जिन गीता धिगाड़ी । कीनो है ॥ ढेर ॥

कोई कहे ये मांरूप योग है; कोई कहे न्यान पुकार रे। जिन गीता० ॥ १ ॥
 कोई कर्मकाण्ड ले भेले, जुड़ाई जुदा मत धार रे। जिन गीता० ॥ २ ॥
 गीता यह जो नाया घृत है, ज्ञान विष संसार रे। जिन गीता० ॥ ३ ॥
 मंत्र ही मात्र कहे गीता जो, पद पद भरनी वार रे। जिन गीता० ॥ ४ ॥
 तत्त्वमसि और समता भाव ले, सुख मूँ काणो व्यवहार रे। जिन गीता० ॥ ५ ॥
 गीता पढाय भेष दे जिनको, उनके पडे मुख द्वार रे। जिन गीता० ॥ ६ ॥
 ये तो लखर पडे श्यारो जब ही; कृष्ण धरे अवतार रे। जिन गीता० ॥ ७ ॥
 मान कहे ये गीता ऐसी, सगले जगन रो मार रे। जिन गीता० ॥ ८ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

फेर धरो अवतार रे, निन तत्र सुनावो। फेर धरो० ॥ टेर ॥
 मन उपनिषद् सार बसाएयो, मेटयो मेटयो द्वैत विचार रे। निज तत्त्व० ॥ १ ॥
 मिथ्या मोह पारथ ले घेरयो; विधी है ज्ञान तलवार रे। निज तत्त्व० ॥ २ ॥
 उपयो ज्ञान लड़को भयो अजुन, करके लड़यो ललकार रे। निज तत्त्व० ॥ ३ ॥
 मूम जिन गिरधर कौत बचावे; भारत हूँ मझधार रे। निज तत्त्व० ॥ ४ ॥
 यह स्वारथिया उलटी बतावे; अथ तो छुड़ावो चाँसू लार रे। निज तत्त्व० ॥ ५ ॥
 मुगपनि मुत को ज्ञान दियो जैसे, ऐसे ही शीजे पधार रे। निज तत्त्व० ॥ ६ ॥
 मम ही देरा सुरक्षित रखे; कर ममता रो ब्यौहार रे। निज तत्त्व० ॥ ७ ॥
 मान कहे मोये फिर न भरो; तारे तो भारत खंड तार रे। निज तत्त्व० ॥ ८ ॥
 ॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल धमाल ॥

गर जो गीता न होती तो रहते योही; अनमोल अभी नहीं शते कभी। टेर ॥
 श्रीकृष्ण ने महार करी कैती; जिन गीता अनमोल धरी कैती।
 जिन्हे पढ़ते ही द्वैत गई कैती। अनमोल० ॥ १ ॥
 गोपाल ने सब कुछ ठीक किया, मतवादी बखेदा मिलाय दिया।

जब नाथ ने आ अवतार लिया । अनमोल० ॥ २ ॥
 गीता सी गाय दिवी हमको; जिन आते ही दूर किया तम को ।
 सय खोज लिया अपने दम को । अनमोल० ॥ ३ ॥
 इस गाय को दुह के दूध लिया; तब बुद्धि के माट जमाय दिया ।
 अब तर्क बितर्क बिलोना किया । अनमोल० ॥ ४ ॥
 सर छाड़ चलेहों को दूर किया; निज तत्त्व का घृत यह लूख लिया ।
 जिन शीश दिया उन घृत पिया । अनमोल० ॥ ५ ॥
 यह गैया मेरी मरने की नहीं; चोरों से कमी हरने की नहीं ।
 और दूध से यह दरने की नहीं । अनमोल० ॥ ६ ॥
 हूँ हम इनके जो बाछड़िया; गो गीता का पय हम खूब पिया ।
 हम पीते ही पीते एक रूप भया । अनमोल० ॥ ७ ॥
 गुरु देवनाथ गोपाल मिले; वे कर्षा अकर्ता ग्वाल मिले ।
 हम जान उग्यों के लाल मिले । अनमोल० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राम भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

भरी क्या रोशनी गीता में; ऐसी कृष्ण ने प्यारी ॥ डेर ॥
 जो जाने है वही जाने, बिचारे ज्ञान से इसको ।
 न जाने मूर्ख जन भूले, हुए कंकर के ब्यौपारी ॥ १ ॥
 जबर है रोशनी सबसे, न कह सकते कोई शोभा ।
 पुगण और बेद सब खोजे, तो सबसे रोशनी न्यारी ॥ २ ॥
 न होते कृष्ण दुनिया में, पिलाते कौन मथ के घृत ।
 स्वारथियों ने बिगाड़ी है, छाड़ इसमें जो फिर डारी ॥ ३ ॥
 निकाला फिर नहीं मिलता, जबरदस्ती मिलाते हैं ।
 पृथक पाती नजर है यह, स्वार्थ की छाड़ जो न्यारी ॥ ४ ॥
 यज्ञ और हवन का करना, भेष घर वन में वीचरना ।

काम क्या था कहा करना, अन्धविश्वासता डारी ॥ ५ ॥

अगर सन्ध्याम ही करना, मराये काहे को कौरव ।

क्रिया यह कृष्ण क्यों लेमा, हिंस्य का पाप दुख करी ॥ ६ ॥

तजो उग अन्धता को अग, उधाडो आँख उर देखो ।

बदे यूँ मान ब्रह्मविद्या, भरी नीता में है मारी ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवली ॥

उनाया एक नया मूरज, हमारे कृष्ण प्यारे ने ॥ १ ॥

अन्धेरा छा रहा गहरा, न सूझे कर से कर भी तो ।

दना कर भात के उपर, बनाया अंधे दुलारे ने ॥ १ ॥

म्हारथी नीर से ये करते, अन्धेरा भारत भूमि मे ।

उड़ा के साम्यता को ये; मिटाते फिर उजारे को ॥ २ ॥

उधाडो ज्ञान की आँख, मिटा दो फिर अन्धेरे को ।

मभी दुनिया को कीया तंग, इनी भ्रम के अन्धेरे ने ॥ ३ ॥

गान इस बात को गानी; न जाऊँ मैं अन्धेरे मे ।

कृपा कर चानथा दीया, मेरे यशुमति दुलारे ने ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवली ॥

रेख पर मेख मारी है, हमारे कृष्ण प्यारे ने ॥ १ ॥

भाग्य की रेख को रोते, वितादी उग्र सारी को ।

पद्मथा मंत्र गीता का; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० । १ ॥

जो अर्जुन भाग्य को रोता, विजयी नहीं कभी होता ।

उनारा भार भूमि से; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ २ ॥

अगर किममत को वो जोते, मिटता कम मान दुष्टों का ।

दृष्टये दैत्य भूमि से; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ३ ॥

जो करते करम का खरडन, वरे क्यों कर्म कृष्ण जो खुद ।
 ज्ञान से युक्त कर्म करना; वताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ४ ॥
 करम को साथ लेकर वे, ज्ञान की बुद्धि वतलाई ।
 योग और यज्ञ का रस्ता; दिखाया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ५ ॥
 कर्म है जोकि शुभ करना, योग है आप में जुड़ना ।
 यज्ञ है सबके रत्न शामिल; वताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ६ ॥
 मिटादो रेख किसमत की, इसे तुम भोको आगी में ।
 बनो मत आलसी थारो; वताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ७ ॥
 अगर रोते हो किसमत को, पढ़ो मत कृष्ण की गीता ।
 पढ़के क्यों बोझ उठाते हो; वताया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ८ ॥
 कहे नृप मान सब सुनिये, भारतवासी बाह्य भाई ।
 बड़ा अन्नभोज यह अमृत; पिलाया कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

अगर श्रीकृष्ण नहीं होते, अन्धेरे में ही रह जाते ।
 उगाता कौन यह सूरज, यूँ ही भव बीच वह जाते ॥ १ ॥
 अन्धेरा छा रहा गहरा, न दिखता पाणी से पाणी ।
 उमर तो है वह थोड़ी सी; इसी में यूँ ही चले जाते ॥ १ ॥
 कृपा कर कृष्ण ने दीया, नेत्र यह ज्ञान का हमको ।
 अगर नहीं गोता को करते; तो जंगल बीच रह जाते ॥ २ ॥
 कृपा कर कृष्ण ने हमको, पिलाया ज्ञान का अमृत ।
 नाहक मिसरी के धोखे में; डली कहीं जहर खा जाते ॥ ३ ॥
 मिले गुरु नाथ जी हमको, लिया अकतार गिरधर का ।
 कहे यूँ मान निज जोया; मरें क्यों पोल के खाते ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ गग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

पढ़े हम मन्त्र गीता का, अमर रहते हमेशा हैं ।
 उठा सिर कृष्ण का कहना, अमर रहते हमेशा हैं ॥ १ ॥
 कवच हम पहन गीता का, खड़े रख बीच में भूके ।
 उड़ाके फौज दुश्मन की । अमर रहने० ॥ १ ॥
 भरे हैं बाण तरकम में, चलाये यह नहीं खुटे ।
 सहे हम बाण व्योहार के । अमर रहते० ॥ २ ॥
 बने जंगल के क्यों जोगी, दिखा के दिल मे कायर पन ।
 कवच जो अमर पहना है । अमर रहने० ॥ ३ ॥
 अग्न हस मरने से डरते, कवच क्यों गीता का पहने ।
 करे क्यों खुद को शरमिन्दा । अमर रहते० ॥ ४ ॥
 पहन लो कवच गीता का, शाह संसार के बनलौ ।
 चक्र चले लोक तीनों में । अमर रहते० ॥ ५ ॥
 कहे यूँ मान निश्चय से, शाहनशाह है हम दुनिया के ।
 जगत सब रूप गेरा है । अमर रहते० ॥ ६ ॥

प्रेम महिमा

॥ दोहा ॥

पीओ प्याला प्रेम का, जो कोई पीया जाय ।
 दिन पायों पीजो मती, पीयो तो पचसी नाँव न

॥ चौपाई ॥

और घृत पिचत बिमारी मिटावे । प्रेम घृत पीए तो बिमार हो जाने ॥
 तारे पिओ समक कर भाई । पिया जिके नर जीया नाँई ॥

॥ गान ॥

॥ राग भोरी । ताल कैरवा ॥

प्रभु है प्रेम से राजी; सुन्यो है मैं तो प्रभु है प्रेम से राजी ॥ टेर ॥
 वेद कुरान प्रेम विना पढ़ई, मूरख पंडित काजी । सुन्यो० ॥ १ ॥
 प्रेम के नेम कायदा कौनसा, रात दिवस रहे साजी । सुन्यो० ॥ २ ॥
 हरि ने रिक्तावन एक न जाने, माया रिक्तावन पाजी । सुन्यो० ॥ ३ ॥
 शायी गणिका गीथ गधालन, कौन गायत्री साधी । सुन्यो० ॥ ४ ॥
 नेम आचार कायदा दूटे, प्रेम घटा सिर छाजी । सुन्यो० ॥ ५ ॥
 मान कहे हम सत्य कहेंगे, चाहे कोई राजी नाराजी । सुन्यो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

यो मग रह गयो न्यारो; साधो बो मग रह गयो न्यारो ॥ टेर ॥
 अजामील गज गनिका लीनो, मग पकड़यो जिन सारो ।
 यो हो शको छण मग नहीं जावो, तो कैसे मिले पिब प्यारो । साधो० ॥ १ ॥
 शवरी निषाद आदि सन्त जन, जिन निज भारग विचारो ।
 भारग विचार उजड़ नहीं चाल्या, तो कष्ट गयो पैडो सारो । साधो० ॥ २ ॥
 आदि भक्तन गाय गाय कर, धीत्यो सगरो जमारो ।
 आप चलयौ धिन राह कटे नहीं, बक बक के मूल सारो । साधो० ॥ ३ ॥
 देवनाथ गुरु कौन दया जब, दरस्यो पंथ हमारो ।
 मानसिंह या मग कोई आवे, सो मोहे लागत प्यारो । साधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

सब जग रूप हमारो; सन्तों सब जग रूप हमारो रे ॥ टेर ॥
 ऊँच नीच भेरे क्या कोई, ये नहीं दुःख आगारो रे ।
 सब मे मैं और मुक्त में सब हैं, एको एक आधारो रे । सब जग० ॥ १ ॥

क्या हिन्दू और मुर्क कोई थे, भूठी कौड तुम्हारे रे ।

आत्म रूप मर्दि मे ओलख्यो, भ्रम उड़ायो सारे रे । सब जग० ॥ २ ॥

शाहजहाँ ज़री वैश्य गृह यद्, मेरे वर्ण नहीं चारो रे ।

ब्रह्म जनेक पहर गले मे, मिट गयो द्वैत विकारो रे । सब जग० ॥ ३ ॥

नही है खरर हाथ उठाऊ, नहो दंड को धारो रे ।

अगर्वा रंगून भेष नहीं धाम्, ना कोई बन् भिखियारो रे । सब जग० ॥ ४ ॥

पतङो नाँ पढ़ूँ मै कहूँ, ना कोई ज्योतिष विचारो रे ।

तीसो ही तिथि बरोबर समझूँ, एक ही सानो बारो रे । सब जग० ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु कृपा करी जद, उलफन सूँ कियो न्यारो रे ।

कहे मानसिंह सुनो भाई सायो, आत्म दृष्टि निहारो रे । सब जग० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मोरठ । ताल कैरवा ॥

क्या कहूँ कहियन जाय, लक्ष्मण क्या कहूँ कहियन जाय ॥ टेर ॥

प्रेम नही मे मैं जो यह रयो; मोमूँ ममरथ नोय । लक्ष्मण० ॥ १ ॥

विम श्रुपिथीं रे प्रेम न अन्तर, कोव भट्टो जगो मोंय । लक्ष्मण० ॥ २ ॥

शशरी शरीर प्रेम कैसो इमके, नाम लिये हृदय भर आय । लक्ष्मण० ॥ ३ ॥

जहां अभिमान तहां मैं नही रेहूँ, जिनके गरीबी तहां जाय । लक्ष्मण० ॥ ४ ॥

कहत कहत शशरी गुण खुबर, लीची हृदय लगाय । लक्ष्मण० ॥ ५ ॥

नयन सजल जाये वहन परनाला, बिरह व्यथा नाम समाय । लक्ष्मण० ॥ ६ ॥

देवनाथ गुरु मान मय शशरी; राम गरीबी मुहाय । लक्ष्मण० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग । ताल कैरवा ॥

ऊँच नीच नही ग्हारे, लक्ष्मण भैया ऊँच नीच नही ग्हारे ॥ टेर ॥

जब वन मांय जो बनफल खाये; तब कहां विम हतारे ॥ १ ॥

भील किसान निहाचर लः; सोई फल कीन अहारे ॥ २ ॥

जात न पूछी मैं तो वरुण न पूछ-यो; अतम जात त्रिचारे ॥ ३ ॥
 शबरी के बेर भूटे नहीं खाते; मुख भरत रैन सारे ॥ ४ ॥
 प्रेम प्रभाव कहां लग वरण; वरण वरण हम द्वारे ॥ ५ ॥
 मानसिंह हरि भक्त भक्ति वश; द्वार ही द्वार पुकारे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भंगल । ताल दीपचन्दी ॥

निपादभैया कर म्हाने मंगा पार, तरन ताई नाव मंगावो हो ॥ १ ॥
 प्रमुजी म्हारी सुनो हो बात रघुनाथ; म्हाने थारी पत नहीं आवे हो ॥ २ ॥
 पाहन नार अहल्या उड़ गई हो । प्रमुजी म्हारी उड़ जावे काठ की नाव,
 कनाय के किय सँ खावे हो ॥ ३ ॥
 थारी चरण रज इसड़ी कहिये हो । प्रमुजी म्हारा धोयलूँ तो आवे विरवासि,
 पछे म्हारी नाव चढ़ाऊँ हो ॥ ४ ॥
 मन सुरकाय सिय से हरि बोले हो । जनक सुता-पांव धोवण यह चाहत,
 जिके सँ सारी बात बनावे हो ॥ ५ ॥
 लावो लावो जल वेग मंगावो हो । निपाद भैया मन आवे सो कर लोय,
 धाने हस कछु न कहावे हो ॥ ६ ॥
 कनक फटोरो भर फर लायो हो । प्रमुजी म्हारा पतित पावन पग धोय,
 हर्ष मन नाथ समावे हो ॥ ७ ॥
 आप पियो ने कुटुम्ब, ने पावो हो । प्रमुजी म्हारा दियो भवत छिड़काय,
 फटोरे नीर रहायो हो ॥ ८ ॥
 हँस कर कहे रघुनाथ सुन भैया हो । निपाद भैया अब करो परले पार,
 काहे को देर लगावो हो ॥ ९ ॥
 सब भज्जाह मिल जहाज चलायो हो । प्रमुजी म्हारा गावे वे प्रेम, सँ गीत,
 गायन वारा दहत सुहावे हो ॥ १० ॥
 लक्ष्मण सँ रघुपति फरमावे हो । लक्ष्मण भैया कैसो थारो सुन्दर गान,

क्या हिन्दू श्रीग तुर्क कोई जे, भूठां मौड़ तुम्हारे रे ।

आत्म रूप सर्वहि मे ओलख्यो, मरम उदायो मारो रे । सपे जग० ॥ २ ॥

द्राक्ष्यता तथी वैश्य शूद्र यह, मेरे वर्ण नहीं चारो रे ।

इह जनेक पद गने मे, मिट गयो द्वैत विकारो रे । सपे जग० ॥ ३ ॥

नहीं हैं गगर हाथ उठाऊ, नहीं दंड को धारो रे ।

भगदा रंग न भेष नहीं धारूँ, ना कोई धनूँ भिन्नियारो रे । सपे जग० ॥ ४ ॥

पनवो नां पदूँ मैं कबहूँ, ना कोई ज्योतिष विचारो रे ।

नीमो ही तिय धंगवर समभूँ, एक ही साधो वारो रे । सपे जग० ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु कृपा करी जइ, उचकन मूँ क्रियो न्यारो रे ।

करो मानसिह सुतो भाई साधो, आत्म छष्टि निहारो रे । सपे जग० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मोरठ । ताल कैरवा ॥

कथा कहुँ कहिअन जाय; लइनए कथा कहुँ कहियन जाय ॥ टेर ॥

प्रेम नहीं में मैं जो बह रवो; मोमूँ समरय नाँय । लहमण० ॥ १ ॥

विप्र ऋषियौ रे पेम न अन्ता, क्रोध भट्टी अंगे माँय । लहमण० ॥ २ ॥

शक्ती गरीब प्रेम कैमाँ इमफे; नाम लियो हृदय भर आय । लहमण० ॥ ३ ॥

जहां श्रम मान तहां मैं नहीं रेहके, जिनके गरीबी तहा जाय । लहमण० ॥ ४ ॥

कहत कहत शक्ती गुण गुणवर; लीवी हृदय लगाय । लहमण० ॥ ५ ॥

नयन सजल जाये बहन परताला, बिरठे व्यथा नाँय समाय । लहमण० ॥ ६ ॥

देवनाथ गुरु मान मय शक्ती; राम गरीबी मुहाय ॥ लहमण० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग । ताल कैरवा ॥

उंच नीच नहीं ग्यारे; लक्षण भैया ऊँच नीच नहीं ग्यारे ॥ टेर ॥

जइ पन माँय जो बनकल नाये, तप कहां विप्र ह्यारे ॥ १ ॥

भीन क्रिगत निराचर लः; सोई फल हीन अहारे ॥ २ ॥

जात न पूछी मैं तो वरुण न पूछ्यो, अतम जात विचारे ॥ ३ ॥
 शबरी के वेर भूठे नहीं खाते; भुस्र भरत रैन सारे ॥ ४ ॥
 प्रेम प्रभाव कहां लग वरसूँ; वरण वरण हृम हारे ॥ ५ ॥
 मानसिंह हरि भक्त भक्ति वरा; वार ही वार पुकारे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

निपादभैया कर म्हाने गंगा पार, तरन ताई नाव मंगायो हो ॥ १ ॥
 प्रमुजी म्हारी सुनो हो बात रघुनाथ, म्हाने थारी पत नहीं आवे हो ॥ २ ॥
 पाहन नार अहल्या उड़ गई हो । प्रमुजी म्हारी उड़ जावे काठ की नाँव,
 कमाव के फिण सूँ लावे हो ॥ ३ ॥
 थारी चरण रज इसड़ी कहिये हो । प्रमुजी म्हारा धोयलूँ तो आवे विश्वासि,
 पछे म्हारी नाय चढ़ाऊँ हो ॥ ४ ॥
 मन मुस्काय सिया से हरि बोले हो । जनक सुता-पाँव धोवण यह चाहत,
 जिके सूँ सारी बात वनावे हो ॥ ५ ॥
 लाबो लाबो जल वेग मंगायो हो । निपाद भैया मन आवे सो कर लेय,
 थाने हम कछु न कहावे हो ॥ ६ ॥
 फनक फटोरो भर कर लायो हो । प्रमुजी म्हारा पतित पावन पग धोय,
 हर्ष मन नाँय समावे हो ॥ ७ ॥
 आप पियो ने कुटुम्ब, ने पायो हो । प्रमुजी म्हारा दिवो भवन छिड़काय,
 फटोरे नीर रहायो हो ॥ ८ ॥
 हँस कर कहे रघुनाथ सुन भैया हो । निपाद भैया अब करो परले पार,
 काहे को देर लगावो हो ॥ ९ ॥
 सब भल्लाह मिल जहाज चलायो हो । प्रमुजी म्हारा गावे वे प्रेम, सूँ गीत,
 गायन वारा बहुत सुहावे हो ॥ १० ॥
 लक्ष्मण सूँ रघुपति फरमावे हो । लक्ष्मण भैया कैसे थारी सुन्दर गान,

जिन्हें मूर्ख मन आगे न जावे हो ॥ १६ ॥
 गंगा तो नीर थोडो ही रयो तिरनो हो । लक्ष्मण भैया मूर्खो ने भावे इण रो गान
 नदी इण मूर्ख बढ क्यों न जावे हो ॥ १७ ॥
 पार पहुँचने ने राम हँस बोले हो । निपाट भैया लीजे उतराई आप,
 मोग तुम जो चित्त चावे हो ॥ १८ ॥
 क्या मैं माँगू क्या तुम देवो हो । प्रमुजी म्हारा खुद रो धारयो है संपास,
 आप वन मोग मिघावो हो ॥ १९ ॥
 पर संपास ने महमान आया म्हारे हो । प्रमुजी म्हाग क्या माँगू माँगी न जाय,
 उतराई अब पास तुमारे हो ॥ २० ॥
 तुम हम एक ही तारक कहिये हो । प्रमुजी म्हारा अपणो है एक ही काम,
 उतराई फिर क्यों कर लीजे हो ॥ २१ ॥
 तुम भी केवट केवट हम कहिये हों । प्रमुजी म्हारा केवट सँ केवट कैसे लेय,
 जवाब म्हाँने इण रो कहिये हो ॥ २२ ॥
 जो चाहो तुम मजूरी देणी हो । प्रमुजी म्हारा कर दीजो अब पार,
 फेर कछु देनी न लेनी हो ॥ २३ ॥
 आज ही क्योंही भूल मत जाइजो हो । प्रमुजी नहीं तो रह जावे सिर अहमान,
 याद हर वक्त रत्नाजो हो ॥ २४ ॥
 ऊडी भीत गुहा की देखी हो । प्रमुजी म्हारा हृदय मे प्रेम विशेष,
 हरि हंस कठ लगावे हो ॥ २५ ॥
 ऊँच ने नीच वरुण नहीं प्रेम में हो । लक्ष्मण भैया जद तन मन शुध होय,
 प्रेम उपाँरे हिरटे समावे हो ॥ २६ ॥
 बंद को भाव जो निपाट जाणतो हो । लक्ष्मण म्हाँने कह देतो दश थ लाल,
 पलित पावन काहे को वतावे हो ॥ २७ ॥
 ज्ञानो राम गुहा पण ज्ञानी हो । मित्रो यो तो मिलिया पूरविया एक,
 पूरविया सँ प्रेम बढ़ावे हो ॥ २८ ॥

देवनाथ गुरु मिले हैं पूरविया हो । प्रमुजी म्हारा प्रीत पूरवली जाण,
पूरव रो प्रेम जगायो हो ॥ २२ ॥

मानसिंह निपाद जिक्करो हो । प्रमुजी म्हांने जीवत कियो भव पार,
महजे ही जीते स्वर्ग समायो हो ॥ २३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल कैरवा ॥

रीरे चलायो नाव; केवट भैया घीरे चलायो नाव ।

तम किसो पहियो रे भाई क्या ताकीदी; भीठे भीठे स्वर सूँ गाय ॥ डेर ॥

गरा तो गायन भैया असृत सी लागे; ऐसा म्हे तो सुणिया नाँय । केवट० ॥ १ ॥

राधा ज्योरी सुन्दर भैया बोल ज्योर मीठा; लघुता रो रस ज्योरे माँय ॥ २ ॥

रही तो छोटी भैया गायन मुहावे; या में थोड़ी देर लगाय । केवट० ॥ ३ ॥

भीरी न चले तो भैया इणने रोकदे; गाय ने पूरो सुणाय । केवट० ॥ ४ ॥

मान ने ताम म्हांने याद नहीं आवे; कोई दुःख नहीं दरसाय । केवट० ॥ ५ ॥

गायन नहीं रे भैया वेद मंत्र थाण; भाग जइ म्हांने सुणाय । केवट० ॥ ६ ॥

राम जिक्को रे ऊँच नीच कौन सो; सब माँहे एक दिसाय । केवट० ॥ ७ ॥

मानसिंह यूँ दीन के बन्धु; दीव ज्योने लिया अपनाय । केवट० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल कैरवा ॥

निपाद भैया अब अपने घर जावो ।

तम जइ लौट आवेंगे बन से, तब फिर दरस दिखावो । निपाद० ॥ डेर ॥

इह उपकार एक नहीं भूखूँ, जब तक प्राण रहावो ।

तुम मोघ अति पिता सम प्यारे, कहाँ तक गुण तेरो गावो । निपाद० ॥ १ ॥

गर लगाये गीत सुणाये, फिर कब गीत सुणावो ।

अबसर मिले तो फेर मिलेने, याद रहे भूल न जावो । निपाद० ॥ २ ॥

पुलकित नैन हृदय मयो पुलकित, नैन नीर बरसावो !

मानसिंह ऐसो नेह दीन से; रघबर सो

॥ गान ॥

। राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

नाथ हम चरण छोड़ कहाँ जईये ।

हम मो दीन गन्धु अम तुममो, फिरत कहीं ना पईये । नाथ० ॥ १ ॥

बन मे रहेगे प्रभु मारग बितावें, अपने मंग ले लईये ।

पुष्प पत्र तहाँ तोरि तोरि के, मुन्दर मैज बिछईये । नाथ० ॥ १ ॥

निशिचर बन मे हूँ अति गहरे, साथ तुम्हारे कोई नहीं है ।

अधम जाति हम पहान गति जानें, साथ हमारो चाहिये । नाथ० ॥ २ ॥

कहा हग गरीब लाय नहीं आयें, इनने उत्तर दे दईये ।

रहन पैजार पाव के मोहि, पाँव ने दूर नहीं है । नाथ० ॥ ३ ॥

बिन पैजार पाँव दुःख पायें, साथी कछूँ मुन लईये ।

छोटे बिना बड़ो करि किनको, साथ कहा सुभदे दईये । नाथ० ॥ ४ ॥

श्रेम प्रवाह रोम्यो जो रुके नहीं, मानो सरिता बही है ।

दीनानाथ हाथ गहे दोनूँ, दूर हटाव नहीं है । नाथ० ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु नाथ मान के, बही गति भोरी भई है ।

मान राख मै लियो मन्गुरु को, दुबधा दूर गई है । नाथ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

। राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

निपाद भैया यह नहीं बोल सुहावे ।

तुम मोये ही दशाथ सम प्यारे, दूर किये किम आवे । निपाद० ॥ १ ॥

हम तीनों को दियो बन पितु ने, श्रौथो मंग नहीं आवे ।

शौथा तुमको जो घंग लेवें, पितु के बचम टरावे । निपाद० ॥ १ ॥

तन से दूर भैया दूर नहीं मन से, निकट ते निकट कहावे ।

तू कहा दीन दीन हम तेरे, तुम यह मांगन आवे । निपाद० ॥ २ ॥

ना कोई ज्ञान विद्वान न अपनी, आगे न मेल मिलाने ।

मान पद्य संग्रह

आते ही तुम सत्कार कियो अति, आश्रम रह सुख पावे । निपाद० ॥ ३ ॥
 कौन है मोट छोटा को भैया, कहा तुम्हें ज्ञान सुनावे ।
 तुम तो ज्ञानी आप जो कहिये, मम पितु तुल्य कहावे । निपाद० ॥ ४ ॥
 यह सुन वचन निपाद राज मन, अतुलित हर्ष बढ़ावे ।
 जिनकी डोर हाथ भगवन् के, कहो कुण ताहि गिरावे । निपाद० ॥ ५ ॥
 देवनाथ अयतार राम के, दीन जान मिल जावे ।
 मानसिंह कहे अब डर किनको, पतितन पार लगावे । निपाद० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

दूर नहीं होत निपाद; भरत म्हा सूँ दूर नहीं होत निपाद ॥ टेर ॥
 एक निपाद सुप्रीम दूसरो, तीजो निशाचर जात ।
 नू जाने थाको द्वाग अलग करू, ये मम घर में समात । भरत म्हां सूँ ० ॥ १ ॥
 गुरु बशिष्ठ जो मोये बतार्ह, वो मोसे तबी न जात ।
 मेरोहि आतम सब जग कहिये, ये मोहे बहुत सुहाव । भरत म्हां सूँ ० ॥ २ ॥
 स्वारथ हेत निफट न जाने ये, क्याल रहे मन माँय ।
 जैलो तू तैसी सृष्टि सगली, भिन्न भेद नहीं आय । भरत म्हां सूँ ० ॥ ३ ॥
 भेद नहीं रावण सूँ हो तो, नहीं वो अलग कहाय ।
 नीति युक्त युद्ध हम कीनो, इन माँहे दोष न आय । भरत म्हां सूँ ० ॥ ४ ॥
 गद्गद् करठ भरत हम बोले, तुम हो दीनानाथ ।
 मोहो निपाद आप सम दीखे, हम कम दूर हटाव । भरत म्हां सूँ ० ॥ ५ ॥
 देवनाथ रघुनाथ स्वरूपी, जिन पकड़यो मेरो हाथ ।
 पकड़त हाथ ज्ञान मन उपज्यो, ही गयो मान सनाथ । भरत म्हां सूँ ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

लक्षण भीया प्यारो लागे मरकट साथ, म्हां सूँ अब छोड़यो न जावे हो ॥ टेर ॥

ऊंच और नीच म्हारे नहीं कहिये हो ।

लक्षण भैया म्हाने दीखे एक ही जात साथ म्हारो पूरे निभावे हो ॥ १ ॥

आपन काज मदद म्होंने दीनी हो ।

लक्षण भैया नहीं आये लखी काम अवे योंने क्यूँ बिभावे हो ॥ २ ॥

गीध निपाद काम कौनो कौनो हो ।

लक्षण भैया यो मॉटो राक्षमा मूँ मौत जिहाने कैसे दूर हटावे हो ॥ ३ ॥

प्रेम बाणी रघुवर फरमावे हो ।

लक्षण भैया आय गयो नैणों में नीर मुख मूँ नहीं थोथो जावे हो ॥ ४ ॥

दीन बचन हरि बहुत सुहावे हो ।

लक्षण भैया तन क्रियो मरकट आन मान सब दुःख मिट जावे हो ॥ ५ ॥

गोपी महिमा

॥ छप्पय ॥

ब्रज धनिता सी भक्त कृष्ण की लोजी न पावे ।

कोई ना कर सके होड होय नहीं पन मर जावे ॥

॥ शीरठ ॥

कृष्ण धियोग के बीच में, कारो तन कीनो लषी ।

अपनो रंग लज दीन, जिन कृष्ण रंग में आ फसी ॥

॥ सबैया ॥

त्याग चन्ने हरि गोकुल को मधुरा में उन्हे क्या हती अधिकाई ।

गोपिन को परभाव बढ़ावन यह हरि ने एक माया दिखाई ।

प्रेम ही प्रेम में जात बही यह कृष्ण स्वरूप को जानन नाँई ।

आपनो रूप जनावन कारण यह हरि ने एक युक्ति उपाई ।

पूरण हानी जो डडव हतो विनते ब्रह्मज्ञान की वात सुनाई ।

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल कैरवा ॥

आँखो लागे ब्रंज रो सनेह; ऊँचो म्हाने आँखो लागे ब्रज रो सनेह ॥ टेर ॥
 आँखा ब्रजवासी म्हारा साचा कहिये; साचो ज्यारो सुघडो है नेह । ऊँचो ॥१॥
 प्रेम पवित्र ऊँचो भूल्यो न जावे; नम लियों नीर वहे । ऊँचो ॥२॥
 छोटे सँ मोटा ऊँचो ब्रज माँहि होया; कैसे ज्यारो गुण बिसरे । ऊँचो ॥३॥
 ब्रज रो रस ऊँचो मथुरा में नाई; वह रस अपने घरे । ऊँचो ॥४॥
 मानसिंह कहे सिन्धु सुता पति; भक्तों रो बिरध बरे । ऊँचो न्हाने ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल कैरवा ॥

कद मिलसी गोपाल; ऊँचोनी म्हाने कद मिलसी गोपाल ॥ टेर ॥
 हरि जो मिले बो घात कहो रे ऊँचो, और सभी जंजाल ।
 विन गिरिधर विन कोई नहीं रे, मैं निशि विन रहूँ बेहाल । ऊँचोजी ॥ १ ॥
 लज हरि आवें हम सुख पावें, सब ही होवें निहाल ।
 छोड़ चले हरि पूछे नहीं कछु, करत नहीं मेरो खयाल । ऊँचोजी ॥ २ ॥
 घर ने बाहर ऊँचो सब मैं छोड़या, कयकी मैं किरत कजाल ।
 ऐसी मैं जानूँ तो छोड़ती क्यों यह, कर गयो गिरिधर चाल । ऊँचोजी ॥ ३ ॥
 मान कहे अब मान कहाँ री सखी, जब से गये नन्दलाल ।
 श्याम बिहूषी फीकी लगूँ रे ऊँचो, भेजत नहीं मोय काल । ऊँचोजी ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिताला ॥

ऊँचोजी प्यारे क्या ब्रह्मज्ञान पढ़ावे ।
 ऐसो ब्रह्म तुम्हारे उदव, मेरे काम क्या आवे । ऊँचोजी प्यारे ॥ टेर ॥
 जोग समक या भोग समक ले, हमको तो एक दिखावे ।
 भोगहि जोग जोग भोग सम है, मो उर और न आवे । ऊँचोजी ॥ १ ॥
 हमको जोग एक श्याम विरह को, और न जोग सुहावे ।
 तू जो जोग कहे रे उदव, मेरी समक नहीं आवे । ऊँचोजी ॥ २ ॥
 ऐसे ब्रह्म ते प्रीति क्या उदव, संग खेलन नाहि आवे ।
 मानसिंह यो कहे ब्रजवनिता, भरम को ब्रह्म बतावे । ऊँचोजी ॥ ३ ॥

॥ मयैया ॥

ब्रह्म की बात को छोड़ रे उद्धव वार हि वार क्यों जीव जरावे ।
 मिनखों उयों सौ धार कछो तेरे ब्रह्म को पन्थ हमे नहीं भावे ।
 तेरे प्रियो छोई ढीठ नहीं और ना मुझमी नुमको समझावे ।
 नू तो तेरो यह ब्रह्म न छोड़न मोने मेरो नहीं श्याम छुटाये ।
 मान नरेश ये भाव है विरह को विरहिया मिले जब आनन्द आवे ।
 कहा कहूँ ब्रजनारी को प्रेम यह कहत ही कहत श्रद्धय प्रगावे ।

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी-टोडी । ताल तिता ॥

थोधी बात बनावे; उद्धव थोधी बात बनावे ।
 थोधी बात हाथ नहीं आवन, तोते ज्यूँ चक जावे । उद्धव० ॥ १ ॥
 हे धों व्यापक गयो क्यों मथुरा, पहिले क्या वहां न रहावे ।
 दो को कृष्ण किया कयो भेला, हमरो तो हमे दिलावे । उद्धव० ॥ १ ॥
 मारी प्रतना बरुसुर आदि, कंस को भार गिरावे ।
 ऐसो काम तेरे व्यापक कियो नहीं, मेरो ही कृष्ण करावे । उद्धव० ॥ २ ॥
 बात कारण मे निपुण है नू उद्धव, वक्त पड़े भग जावे ।
 तेरे ऊपर धरूँ ये गिगिर, तो मगजी बात उड जावे । उद्धव० ॥ ३ ॥
 और बात तेरी है मो रहन दे, हमको तो कृष्ण मिलावे ।
 नू तो उद्धव भग पित्री है, हमे क्यों नाहक पिलावे । उद्धव० ॥ ४ ॥
 आत्म व्यापक सबही जाने, ये क्या हमे समझावे ।
 जिन को काम उनही से हांवे, काहे ज्ञान चलावे । उद्धव० ॥ ५ ॥
 तुम मे है व्यापक और हम में है व्यापक, तो क्या हमे समझावे ।
 वृत्रासुर वरुदासुर कंसा, उनमे न व्यापक कहावे । उद्धव ॥ ६ ॥
 कृष्ण को पकड़ कृष्ण क्यूँ मारयो, यह भोये हांसी आवे ।
 तेरो निगुन तो ऐसो कहिये, स्वप्न मात्र दरसावे । उद्धव ॥ ७ ॥

देवनाथ गुरु द्वैताद्वैत सब, भेट के एक दिखावे ।
मानसिंह बरतन सी वस्तु, बरतन भेद जनावे । उद्धव० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

निगुन सगुन कहा न्यारो; श्यामा निगुन सगुन कहा न्यारो ।
भूल के दोष भेद तोय दीखे, ये भ्रम दूर निवारो । श्यामा० ॥ ८ ॥
निगुन माँय सगुन कहे व्यापक, सगुन औ निगुन विचारो ।
जल को कुम्भ पड़यो है जल में, जल है भीतर बारो । श्यामा० ॥ ९ ॥
सब कुछ बोले फिर भी अचोला, जग को प्राण आधारो ।
तुम हम में सब जग में कृष्ण है, एक रस भरियो सारो । श्यामा० ॥ १० ॥
ऐसी बात सुनी उद्धव की, हंसो उपज्यो मन भारो ।
मानसिंह ब्रजनारी कहे यूँ, कहा जाने विचारो । श्यामा० ॥ ११ ॥

॥ सवैया ॥

दोष से एक जो शूरा करे वह कैसे करे हमको समझावे ।
एक बनाय वताय दहे तब ही उनको हम शीश नमावे ।
भोर मकोर करे सगरे यह आपनि आपनि रोल मचावे ।
मान कहे जब ही हम मानत एक बनाय के सामने आवे ॥

॥ गान ॥

॥ राग जीनपुरी-टोडो । ताल तितलार ॥

यह निर्गुन नहीं भावे; रे ऊँचो मोहे, यह निर्गुन नहीं भावे ॥ ८ ॥
नैन न दोखे और बोले नहीं निर्गुन, कौन लो ऐसो ध्यावे
लेख्यो शामिल और मक्खन खिलायो, सो दूर किथा किम जावे । रे० ॥ १ ॥
रूप नहीं और रंग नहीं है, को अन्व कून गिरावे ।
प्रसन्न देव विहारी हमारो, हंस हंस वैन सुनावे । रे० ॥ २ ॥
निर्गुन कृष्ण रसो मयुरा में, मेरे सगुन पठावे ।

निशिचर हनन करे तेरो तिगुन, मेरो समुन क्यों ले जावे । रे० ॥ ३ ॥
हम तो चाहत है कि मांग मकान ले, हंस हंस कण्ठ लगावे ।

वां नही दीखे तेरे निगुन में, ताने नाहि सुधावे । रे उधो० ॥ ४ ॥

जो तेरो निगुन कम को मान, क्यूँ मेरो श्याम बुलावे ।

धोधी यान करे मन ऊधो, गैब घक्के क्यूँ खावे । रे उधो० ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु कृष्ण हमारे, मान गोपो बन जावे ।

ज्ञान उद्वय तेरो निगुन त्यागूँ, बोलत आतम ध्यारे । रे उधो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरभ । ताल कैरवा ॥

ऊधो क्या मोहे जोग सुनावे । तोय कहत राम नहि आवे । उधो० ॥ १ ॥

एक श्याम और जोग दूसरो, नही यहाँ जगद समावे ।

जगद भित्ति को तुझी ठाकते, मोहे अन्देती न आवे । उधो० ॥ २ ॥

नभ और जन भल भगनि पवन मे, ब्याली कहीं न पावे ।

सुन्न ते सुन्न अरर सुन्न कहिये, ता बिच श्याम मनावे । उधो० ॥ ३ ॥

श्याम परा परयन्ति श्याम है, मध्यमा श्याम दिखावे ।

बैलरी जेज श्याम को मन ही, ओंकार धुन गावे । उधो० ॥ ४ ॥

स्वान हि श्याम सुपुत्रि श्याम ही, जाप्रत श्याम कहावे ।

तुरिये श्याम शुद्ध है मेरो, जहाँ जगत भिट जावे । उधो० ॥ ५ ॥

सभी देह सो गोपो कहिये, सब में श्याम ललावे ।

गो अतीत नोमल सभी मे, भूले घात बनावे । उधो० ॥ ६ ॥

देवनाथ सो स्वयं कृष्ण है, मान कृष्ण बन जावे ।

मज बिसेन आवरण भिटियो, महान में भान समावे । उधो० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जोगिया । ताल दीपचन्दी ॥

ऊधो मैं जोगन चा दिन की ।

जब ते श्याम त्याग चले मोहि, व्याकुल हूँ ता दिन की । उधो० ॥ १ ॥

श्याम वियोग मझी नहीं लावे, कल न पड़त एक दिन की ।

का से कहूँ अब कौन लरे यह, मैं जानू मेरे मन की । उधो० ॥ २ ॥

भगवाँ वाता फिर भी उतरे, कौन रंगे रंगन की ।
 श्याम को रंग रंग्यो नहि उतरे, और न रंग चढ़न की । ऊयो० ॥ २ ॥
 कहा हमको मृगझाल औढ़ावे, लावे कौन मृगन की ।
 मन को मार मृगा हम कीनो, खाल न नेऊँ अवरन की । ऊयो० ॥ ३ ॥
 श्याम निजे तो जोऊँ रे उद्धव, नहीं तो प्राण तजन की ।
 मान कहे यों भई बावरी, भूत गई सुव तन की । ऊयो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग दुर्गा अथवा सारंग । ताल तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे क्या मोहि जोगिन बनाये ।
 ब्रह्मज्ञान को पकड़ के बैठो, खुद जोगी बन आवे । ऊयोजी० ॥ १ ॥
 खुद तो जोग रीति नहीं जाने, औरों को समझावे ।
 हमसे परे फिर जोग कौन सो, जिनको तो मोहि दिलावे । ऊधोजी० ॥ १ ॥
 एक ध्यान में लडग द्योय किम, लाख जतन नहि भावे ।
 भाव पुराने श्याम श्याम के, ब्रह्म मोको नहि भावे । ऊधोजी० ॥ २ ॥
 कोई तो भगवाँ रंगन गेरु में ऊधो, वो रंग फिर उतरावे ।
 श्याम रंग मेरो उतरे नाँहीं, दूजो नाँहि चढ़ावे । ऊधोजी० ॥ ३ ॥
 एक सखी बट ऐसी बोली ऊधो, निकल क्यों न आवे जावे ।
 मर जायँ और लाक मिलेगी, खाक श्याम धुन गावे । ऊधोजी० ॥ ४ ॥
 ऐसो कथो जब उद्धव पिबल्यो, अब नहि चाल चलावे ।
 ब्रह्म रूप हरि को ही जान्यो, और ध्यान नहि आवे । ऊधोजी० ॥ ५ ॥
 मान कहे नित्रो समझ सोच कही, अर्थ अनर्थ न हो जावे ।
 छानी उद्धव पर गोपी कम नहीं, दूषि से दूषि टकरावे । ऊधोजी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल धीमा कैरवा ॥

ऊधोजी० योने भइनाँ लाज नहीं आवे । म्दाने क्या ब्रह्म ज्ञान वनावे । ऊ० ॥ १ ॥

निशिचर हनन करे तेरो निर्गुन, मेरो मगुन क्यों ले जावे । रे० ॥ ३ ॥
 हम तो चाहत हैं कि मोंग मक्खन ले, हंस हंस करुण लगावे ।
 वा नहीं दीखे तेरे निर्गुन मे, ताते नाहि मुहावे । रे उधो० ॥ ४ ॥
 जो तेरो निर्गुन कम को मारत, क्यूँ मेरो श्याम बुलावे ।
 योथी बन कर मत ऊर्धी, गैव धक्के क्यूँ म्हावे । रे उधो० ॥ ५ ॥
 देवनाथ गुरु कृष्ण हमारे, मान गोपी बन जावे ।
 ज्ञान उद्धर तेरा निर्गुन, थागूँ, बोलन आत्म धारे । रे उधो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल कैरवा ॥

उधो क्या मोहे जोग सुनावे । तोय कहत शरम नहि आवे । उधो० ॥ १ ॥
 एक श्याम और जोग दूमरो, नहीं यहाँ जगह ममावे ।
 जगह मिले तो तुही राखदे, मोहे अन्देशो न प्रावे । उधो० ॥ २ ॥
 नभ और जल थल अगति पवन में, खाली कही न पावे ।
 मुझ ते मुझ अरर मुझ कहिये, ता विच श्याम ममावे । उधो० ॥ ३ ॥
 श्याम परा पर्यान्ति श्याम है, मध्यमा श्याम दिखावे ।
 बँलरी खेज श्याम को नभ ही, ओंकार धुर गावे । उधो० ॥ ४ ॥
 स्वत हि श्याम सुपुति श्याम ही, जाप्रत श्याम कहावे ।
 तुरिये श्याम शुद्ध है मेरो, जहाँ जगत भिट जावे । उधो० ॥ ५ ॥
 सभी देह सो गोपी कहिये, सब में श्याम लखावे ।
 गो अतीत गोगल सभी में, भूले बात बनावे । उधो० ॥ ६ ॥
 देवनाथ सो स्वयं कृष्ण है, मान कृष्ण बन जावे ।
 मज विज्ञेय आवरण मिटियो, महान में मान समावे । उधो० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जोगिया । ताल दीपचेन्दी ॥

उधो मैं लोगन वा दिन की ।
 जब ते श्याम स्वयं चले मोहि, व्याकुल हूँ ना दिन की । उधो० ॥ १ ॥
 श्याम वियोग सह्यो नहीं जावे, कल न पड़न एक दिन की ।
 का से कहूँ अब कौन लखे यह, मैं जानू मेरे मन की । उधो० ॥ २ ॥

भगवाँ बाना फिर भी उतरे, कौन रंगे रंगन की ।
 श्याम को रंग रंग्यो नहीं उतरे, और न रंग चढ़न की । ऊवो० ॥ २ ॥
 कहा हमको मृगयाज औदावे, लावे कौन मृगन की ।
 मन को पार मृगा हम कीनो, खाल न नेऊँ अवरन की । ऊवो० ॥ ३ ॥
 श्याम सिजे तो जोऊँ रे उद्वच, नहीं तो प्राण तजन की ।
 मान कहे यों भई शायरी, भूच गई लुच तन की । ऊवो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग दुर्गा अथवा सारंग । ताल त्रिताला ॥

ऊवोजी प्यारे क्या मोहि जोगिन बनावे ।
 ब्रह्मज्ञान को पकड़ के बैठो, लुच जोगी बन आवे । ऊवोजी० ॥ १ ॥
 लुच तो जोग रीति नही जाने, औरों को समझावे ।
 हमसे परे फिर जोग कौन सो, जिनको तो मोहि दिखावे । ऊवोजी० ॥ २ ॥
 एक न्यान में लडग दोय किम, लाख जतन नहीं भावे ।
 भाव पुशने श्याम श्याम के, ब्रह्म भोको नहीं भावे । ऊवोजी० ॥ ३ ॥
 कोई तो भगवाँ रंगन मेरु में ऊवो, बो रंग फिर उतरावे ।
 श्याम रंग भेटो उतरे नाँहीं, दूजो नाँहि चढ़ावे । ऊवोजी० ॥ ४ ॥
 एक सखी उठ ऐसी बोली ऊवो, निकल क्यों न आवे जावे ।
 भर जायँ और खाक मिलेगी, खाक श्याम धुन गावे । ऊवोजी० ॥ ५ ॥
 ऐसो फहो जव उद्वच विपश्यो, अब नहीं चाल चलावे ।
 ब्रह्म रूप हरि को ही जान्यो, और न्यान नहीं आवे । ऊवोजी० ॥ ६ ॥
 मान कहे मित्रो समझ सोच कही, अर्थ अनर्थ न हो जावे ।
 छानी उद्वच पर गोपो कम नहीं, दधि से दधि टकरावे । ऊवोजी० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल धीमा ॥

ऊवोजी यौने अर्था लाज नहीं आवे । म्हाने क्या ब्रह्म

तेसो ब्रह्म उधो देवां कुम्भा ने जो सोरो कृष्ण नजावे ।
 बोले न चाले बचन बेवे नहीं, हमको तो । ह सुहावे । ऊधोजी० ॥ १ ॥
 ब्रह्म और जीव जो चाहे कहे रे ऊधो, म्हॉने क्या भरमावे ।
 जो कुट्ट है तो कृष्ण चन्द्र है, नहीं तर पोल दिवावे । ऊधोजी० ॥ २ ॥
 म्हॉने तो कहे उधो जोग की करणी, कृष्ण ने क्यों न समझावे ।
 गोकुल छोड़ भग्यो मथुरापुरी, उनको काहे न मित्वावे । ऊधोजी० ॥ ३ ॥
 जोगी कृष्ण जोगन कर कुब्जा ने, तो दु खडो मित जावे ।
 बाने तो न कुट्ट न कहे रे ऊधो, म्हॉने बयूँ निकमी बहकावे । ॥ ४ ॥
 बाजा मरद मूँड मुव ऊर, ज्यॉने ब्रह्म न पावे ।
 नारी जात मनी मनी ओद्धो, क्यों कर आँलख्यो जावे । ऊधोजी० ॥ ५ ॥
 हमरी नाही पटने मुरारी, हम सिर मुकुट चढाव ।
 गोपी कृष्ण कृष्ण बने गोपो, जदहि ब्रह्म मिल जावे । ऊधोजी० ॥ ६ ॥
 रैण में सूरज कहे न ऊगे, ऊगे तो रैण मित जावे ।
 रे ऊधो तू चुप रह बावरे, नाहक जरी की जरावे । ऊधोजी० ॥ ७ ॥
 पूरण ब्रह्म केवे त्जिर्माने, बे मथुरा क्यों बहावे ।
 क्या तो राज ब्रह्म क्या बोई जंगल, पछि क्यों न दरसावे । ऊधोजी० ॥ ८ ॥
 द्रुव ज्ञान और गोपी जीव है, आप विश्वो मित जावे ।
 मानसिंह के देवनाथ प्रभु, दूजो दाव नहीं आवे । ऊधोजी० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल धीमा तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे अब तो चुब होव जाये ।
 श्याम कहे तो ठहरो रे ऊधो, ब्रह्म कहे तो जावो । ऊधोजी० ॥ १० ॥
 लख्य कहे हम एक न माने, नाहक गान गमावो ।
 जीव कहे चाहे ब्रह्म कहे तुम, मोरे रंग श्याम रंगावो । ऊधोजी० ॥ ११ ॥
 एक हि ब्रह्म तो मत्रा तुम फिनके, अबनो तो भाव मितानो ।

हम अत्रला को क्या समझावत, अपना ही मन समझावो । ऊधोजी० ॥ २ ॥

ब्रह्महि ब्रह्म धको क्या ऊधो, नाहक मूँड पचावो ।

छोड़ जिहर हरि मिले सो कह अब, प्राणाँते अधिक सुहावो । ऊधोजी० ॥ ३ ॥

प्रेम सम्बन्ध बन्ध सब तोड़ना, ऊधो सुध विसरावो ।

मानतिह सुध भूल गयो सब, जीव न ब्रह्म कछु पायो । ऊधोजी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मांड—आसावरी ।ताल कैरवा ॥

पेड़ो रस और न आवे रे; ऊधोजी म्हाँने, पेड़ो रस और न आवे रे ॥ टेर ॥

दूध गिलायो ने नाच नचायो रे; लट लट बधि खावे रे । ऊधोजी० ॥ १ ॥

गऊआँ तो दूध देखो छोड़ियो रे; वृण जल कछु नहीं खावे रे । ऊधोजी० ॥ २ ॥

म्हाँने तो ऊधोजी तुम आवे समझावन; बधियाँ ने कुछ समझावे रे । ऊधोजी० ॥ ३ ॥

गोरस गयो ने गई रंग रलिआँ रे; श्याम विना कुछ खावे रे । ऊधोजी० ॥ ४ ॥

मान कहे धन है ब्रज बनिता; इण विध प्रेम बढ़ावे रे । ऊधोजी० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

यात सुनी ब्रजनारिन की तब ऊधो सब निज दोश मुलायो ।

पोल हती सो उड़ी मन की निज ब्रह्म को भूल के श्याम सुनायो ।

बहुत हुनो ब्रह्मज्ञानी बड़ो यह प्रेम समुद्र में जात बहायो ।

ब्रह्म की पोट अचानक छूटी है दूध गयो फिर ऊँचो न आयो ।

एक भयो गलतान मिलयो ब्रह्म को वकनो सब ही विसरायो ।

भूल गयो अब आहा करयो मुख नैन में नीर की धार बहायो ।

मान कहे धन है ब्रजनारिन को यह जिन काम कमाल कमायो ।

आप तो करी भई सो भई फिर बपुरे ऊधो को करो बनायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफ़ी । ताल दीपचन्दी या चैरवा ॥

लम्पट रोल मचाई रे, दीनों देश विगाड़ ॥ टेर ॥
 ब्रह्म रूप जो कहिये कृष्णजी, वैसे कियो व्यभिचार ।
 अणदीठी यह ऐसी मेज्जी, कर दीनों सब खवार । लम्पट रोल० ॥ १ ॥
 कहत जगदीश शरम नहि आवे, महा लुचन सरदार ।
 धृक धृक घोंने दोष दूँवे भूठा, धर्म रूप अवतार । लम्पट रोल० ॥ २ ॥
 कोई कहे कृष्ण यशोमति साथे, कोई कहे नन्दकुमार ।
 कोई कहे कृष्ण बाल है हमरो, काम करे बेजार । लम्पट रोल० ॥ ३ ॥
 कृष्ण नाम ले लीला करत है, नामा भोग विहार ।
 कृष्ण की हृद को पर न पहुँचे, मगल सुपत आवे मार । लम्पट रोल० ॥ ४ ॥
 ज्ञान घृत गीता के अन्दर, पायो है सार निकार ।
 क्या व्यभिचारी की ताकत कहिये, भरदे उपनिषद् सार । लम्पट रोल० ॥ ५ ॥
 कृष्ण समान कोई योगी हुवो नहीं, नहि छोड़े घर बार ।
 घातों ब्रह्म कृष्ण नहि जायगे, जायगे सत् आचार । लम्पट रोल० ॥ ६ ॥
 धर संन्यास योग को धारे, कीना फैल अपार ।
 मुझ बाबाल जो ब्रह्म बके यूँ, माँगत द्वार हि द्वार । लम्पट रोल० ॥ ७ ॥
 देवनाथ गुरु हाथ धरयो शिर, विगड़ी दीन सुधार ।
 मानसिंह संन्यास कैंस तो, बह जाते काली धार । लम्पट रोल० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल चैरवा ॥

यह मत हमको न भावे, दूर रखो यह मत ह्मको न भावे ।

- छूत ही छूत में उमर सब खोई, छूत कभी नहीं जावे । दूर रखो० ॥ १ ॥
 नित ही भरत चौके दस चीटी, यह कुण पाप कमावे ।
 जीवहिंसक वणे कुण पूरे, कुण ऐसी स्थान गमावे । दूर रखो० ॥ १ ॥
 अपने कुटुम्ब को वस्त्र नहीं छूवे, मूठ पराई खावे ।
 धुक धुक है ऐसे वैष्णव को, इनमें कहा सुख पावे । दूर रखो० ॥ २ ॥
 जिन पति से परमेश्वर नातो, नीर ऊपर से पावे ।
 गुण्ड गोल में जाय खुशी से, वस्त्र सभी फड़वावे । दूर रखो० ॥ ३ ॥
 निज पति प्रेम कभी नहीं कीयो, महा प्रसाद वारो पावे ।
 निज पति यों ही पड़यो मल्ल मारो, ये तो दौड़ी रास में जावे । दूर रखो० ॥ ४ ॥
 निज पति सेती हमर बितानी, तिनको आँल बिखावे ।
 ये गुण्डे दस दिन के कहिये, तिनते प्रेम लगावे । दूर रखो० ॥ ५ ॥
 जो बालक अपने से उपजे, दन्तै छूत रहावे ।
 गर्मी शीत गिने नहीं कोई, केतेई वार नहवावे । दूर रखो० ॥ ६ ॥
 निज पति अरण्यो कृष्ण कर माने, जो कई मुक्ति चावे ।
 पुरुष को चाहिये स्वप्रिया निज गोपी, तब प्रभु प्रेम निभावे । दूर रखो० ॥ ७ ॥
 जगत पिता है विष्णु मेरो, सब जग दीच सगावे ।
 कुटुम्ब फलत्र रूप विष्णु को, नित सेवा करवावे । दूर रखो० ॥ ८ ॥
 पशु पक्षी जड़ चेतन विष्णु, खाली ना दसावे ।
 ऐसे वैष्णव बल कोई आवे तो, चरणों में शीश नवावे । दूर रखो० ॥ ९ ॥
 देवनाथ गुरु पूरे वैष्णव, नेक न फरक रहावे ।
 मान लियो है ब्रह्म समर्पण, जग ब्रह्म रूप लवावे । दूर रखो० ॥ १० ॥

फुटकर फल

॥ दोहा ॥

कनक अमिनी जगत में, दुःख नहीं व्यापे भोय ।
 मानसिह यह मन बुरो, देख दियो केई रोय ॥

॥ सर्वैया ॥

कबहु गह गाँव बसावन है कबहु चित योग बैराग धरे ।
कबहु मन मन्द उमग रहे कबहु संग कामिनी केल करे ।
नृप मान कह्ये बरज्यो न रहे दृढता न गहे इत उत ही फिरे ।
हरि कैसे भजूं मुन रे सजना मन तो मृग जैसे फलंग भरे ॥

॥ दोहा ॥

चार वेद गुरु मुनि पढ्यो, दयाम पिना के पास ।
तद्वि मन पति नहीं, मिटी न अन्तर दयास ॥

॥ कवित्त ॥

जले शुकदेव तबे विष्णु के पास ध्यात, देव मुनि को विष्णु मन मे हरषाये
है । अहो धर्म्य भाग आज दरस दिये मुनिराज, क्रिये शुभ कर्म जाको फल
आज पाये है । उद्यामन दियो लाय भाव भकी अधिक भाय, सरिता को
नीर लाय चरण जो धुवाये है । अरणासूत कियो पान स्वयं जो कृपानिधान,
आप कियो पान और कमला को कराये है ॥

॥ कवित्त ॥

दयाम मुन योने सभी मुनहो कृपानिधान, चारों वेद पढ़े पर
नृपि न आर्ट है । कहा जगन जीव कहा ईश्वर और ब्रह्म कहा, कौन
नय मिया इन चारन के माई है । पढ़े हम चारों वेद तद्वि नहीं मिटयो
भट, आपहु के पाम आयो मही समझाई है । ईंमे जय जगनपति शुक की
कहा भई गति, दयाम पाम पढ़यो पर संशय ना भगाई है । हरि यूँ कहे
मान जाय जनक गुरु ठान, कहेंगे यो मही प्रमाण तोष मन भाई है । पूर्ण
है दानी राव गुरु दीक्षा ताने पाय, बिना गुरु बिना तेरो भरम हू न आर्ट है ॥

॥ दोहा ॥

अथ, गुरु मन मोचियो, अथ ब्रह्म जनक मुजान ।
वेद निधी के पुत्र हम, लहे जनक ते दान ॥

तदपि उर धीज लयो, गयो जनक के पास ।
 जनक वहाँ पूछयो नहीं, खड़ो रह्यो सहे त्रास ॥
 एक दिवस जब सोचियो, नृपति निज उर नाँव ।
 वशस सुवन बाहर खड़ो, अन्दर लेहो वृत्ताय ॥
 पौढ़े रात्र सुख सैज में, शुद्ध पदुँच्यो जाय ।
 तब शुक मन शंका भई, यह मोय कहा समझाय ॥
 व्यास पुत्र हम विप्र हैं, इन कुल शंइन कीन ।
 यह शुक मुनि मन सोचते, भये निद्रा आधीन ॥

॥ कवित्त ॥

शुक जैसे मुनि फेर हुये न होय कोई, ताही को मन ऐसो नाच जो नचाओ है । स्वप्ने में सुतो शुक व्यास जो लगी है भारी, महा वीरान जंगल बीच में जो धायो है । और कोई न पाय नीर व्यास हू से प्राण जात, एक जो चमारी बाला ताते भेटायो है । ताको कहत प्राण जाय नीर हू पिलाय मोको, सुनी ऐसी बात नारी हास्य सो दिखायो है । तू तो जात विप्र है और मैं हूँ जो चमारी नार, होत अष्ट तू ही यदि नीर जो पिलाओ है । कहे राव मानसिंह साच हू की बात नहीं, साच हू न समझो यह तो स्वप्न एक आयो है । नींद हू न सोने देत मन को स्वभाव देख, मन यह नकटो कैसे खेल जो दिखायो है । स्वप्न की कहूँ बात मन को प्रभाव कैसे, शुक जैसे ज्ञानी को स्वप्ने में नचाओ है ।

॥ कवित्त ॥

दूर रह दूर रह छूय ना तू मोय हू को, मोय हू को छूयाँ कहीं पाप तू लगायगो । मैं हूँ जो कुमारी नार तुम हो पुरुषाकार, पल्लो जो भदायो तोको पाप लग जायगो । ठहर ठहर पूछूँ जाय अपने पिता को मैं, पानी तभी पाऊँ जब मोय को तू व्याहयागो । करले शरत यह मैं पूछूँ मेरे बाप हू से, बिना पूछे लाख बात नीर नहीं पायगो ॥

॥ कवित्त ॥

कहे शुकदेव मुनि तोहि को न ब्याहूँ कभी, पाए मेरे जाय तो भलाई
क्यों न जाये । ऐसे मुन नार खली पोछे जो मुडी है वः तां, सोचे
शुकदेव नाशक प्राण क्यों गमाउये । पीय के पत्रट लेंगे यहाँ तो न
देखे कोई, यह और हम तीजो कोई न गराईये । कर लबहार नार पोछे जो
गुचाई गुरु, पाय पाय नीर हम तुमही को ब्याहिये । मानूँ नहीं लाग धान चलां
जां पिता पे मेरे, पुरुष होंत भूँठे कहीं कहके बन्दवाईये । ऐसे मुनी शुक जन
आपत्ति यह जाई बैसी, अग तो पिता जो तीजो साख जो बनाईये ।

॥ कवित्त ॥

चमारी जो लेके साथ अपने बाप पास धान, मयु जैसे मीठी मुख चैन जो
सुनायो है । मोही को बिहावे यद पाऊँ मैं नीर पिता, यह वेदव्यास मुन शुक
जो कहायो है । ऐसी बात मुनी जब हर्षित भयो पिता मन, पाय पाय नीर जो तै
बचन मे बंधायो है । पाय दीनो नीर ताको व्यायो कुछ प्राण जब, तब शुकदेव
मुनि बचन पलटायो है । नू तो है चमारी और मैं हूँ जाति विम वैश्य, तेरे मेरे
सम्बन्ध रुदो कौन मो जुझायो है । रे रे मुनि गजब नू तो कह कर पलटे अग
साधु विप्र दाय जन भूँठ न बोलायो है । कहे राव भानमिह साथ हू न मानो
यारो, रयम हू की बात यह तो स्वप्न मे बनायो है । शान में तेरो है दुःख जानन
में होय केनो, मन की गति को कोऊ प्रहाहू न पायो है ॥

॥ कवित्त ॥

हाथ बात कही पर एकदू न मानी जन, हठ चढ कर शुकदेव हू की ब्यायो
है । कई दिन रहे संग मुन मुता दाय चाग, अब शुकदेव के परिवार जो
बढायो है । नारी मुन लिए साथ जंगल में जो चले जात, आमहू को वृक्ष एक
बहुत सुन्दर आयो है । ताके नीचे कूप एक ताके ऊपर लागो करी, ताको देख
बालक एक रुदन जो मचायो है । यही आम लेऊँ मैं ना और हू न लेऊँ आन,
लानों बात कडकर शक उनको समझयो है । सुपने की बात मन गावी हू न
मानो कीई. मपने की चमारी यूँ सुपने शक आयो है ॥

॥ कवित्त ॥

बालक को कहत तो नहीं शुक मान्यो कछु, नारी घूँवट पट में बैन
 गुटकायो है । मीखे मीखे नैन जोय तीखे जाँ भवारे होय, टेढ़ी निजर करके
 पूँ बचन फरमायो है । आछो मरद भयो तो ते हम ही भली है नार, एक राम
 काज केतो ओठो उतरायो है । मेरो भेष पहन ले तो मैं ही जाय तोहूँ याका,
 ऐसो बैन सुन्यो तो शुकदेव रिसियायो है । तुरत जाय चढ़यो रह आम के उपर
 शुक, चढ़ते एक नारी को बचन जो सुनायो है । कठिन आम ऐसो याते नहीं
 टूटे गिहूँ मैं तो, बात सुनी नार हंस दंत जो दिखायो है ।
 भलो मरद भयो ऐसो मरण हू से डरे तू, अंत जाति हू को भला विप्र जो
 कहायो है । कहे राव मानसिंह स्वप्न हू की बात यारो, स्वप्न हू की बात
 याको रिस हू न लायो है ॥

॥ कवित्त ॥

शुक चायो तोड़ने को आम हू की करी जाते, कैरी हू को तोड़े पहले
 चारो जो गिरायो है । जाय गिरयो साथ साथ कूपहू में शुकदेव, बैठो जो तखत पर
 आप किनकायो है । बल्यो जो जनक हू के पाँव छुवन काज शुक, दूर रह दूर रह
 बैन जो सुनायो है । ब्याह तो चमारी साथ कियो सोय भ्रष्ट करे, दोय चार
 सुत को बाप बन आयो है । ऐसी बात सुनी शुकदेव शरमायो मन, और नहीं
 सुभयो हाहा-करके चिल्लायो है । कहे राव मानसिंह स्वप्न हू ते जागो मिश्रो,
 वह स्वपनो तो यह कहा साथ जो दिखायो है ॥

॥ कवित्त ।

३ हे यूँ जनक राव धीरो रह धीरो शुक, रह चुप भेती नयूँ हाहा तैं मचाई है ।
 यह स्वप्न यही स्वप्न स्वप्न ही में स्वप्न देख्यो, वह न सत्य-तो क्व सत्य यह कहाई
 है । वो धी है असत्य और येही है असत्य देखो, यह असत्य से असत्य दरसाई
 है । जैसो मन बाहर लागे वैसो ही जो लागे उर, मन की कला को यह मन
 ही बजाई है । मन ही कला कोई शूरवीर संत लखे, ज्ञान खड़ग हाथ लेके

॥ कवित्त ॥

कहें शुकदेव मुनि तोहि कं ॥ व्याहूँ कभी, प्राण मेरे जाय तो भर्ताई
क्यों न जाइये । ऐसे मुन नार चञ्जी पीछे जो मुझी है वह ना, मोचे
शुकदेव नाहक प्राण क्यों गमाइये । पीय के पनट लेंगे यहाँ तो न
देखे कोई, यह और हम तीजो कोई न गवाहिये । कर लनहार नार पीछे जो
गुनाई पुरु, पाय पाय नीर हम नुमरी को व्याहिये । मानूँ नहीं लाख आन चञ्जी
जो पिना ये मेरे, पुण्य होत भूठे जहाँ कहकं बदनाईये । ऐसे मुनी शुक जब
आपत्ति यह नाई कैसी, अब तो पिना को तीजो साल जो बनाईये ।

॥ कवित्त ॥

चमारी जो लेंके साथ अरने बाप पास आन, मधु जैसी मीठो मुख चैन जो
सुनायो है । मोहो को विहावे यह पाऊँ मैं नीर पिना, यह वेदव्यास मुन शुक
जो कहायो है । ऐसी बात सुनी जब दर्पित भयो पिना मन, पाय पाय नीर जो तैं
बचन में बंधायो है । पाय दीनो नीर ताको आयो कुछ प्राण जब, तब शुकदेव
मुनि बचन पलटायो है । तू तो है चमारी और मैं हूँ जाति विप्र देव, तेरे मेरे
सम्बन्ध कहे कौन मो जुझायो है । रे रे मुनि गजब तू नो कह कर पत्तटे अब
साधु विप्र दोय जन भूठ न बोलायो है । कई राव मानमिह साथ हू न मानो
यारो, रजप हू की बात यह तो स्वप्न में बनायो है । स्वप्न मे ऐनो है तु ख जाग्रत
में होय केतो, मन की गति को कोऊ प्रज्ञाट न पायो है ॥

॥ कवित्त ॥

लाख बात कही पर एरुड न मानी उन, दूठ चढ कर शुकदेव हू को व्यायो
है । कई दिन रहे संग सुत सुता दोय चार, अब शुकदेव के परिवार जो
बढ़ायो है । नारी मुन लिए साथ जंगल मे जो चले जात, आमहू को वृक्ष एक
बहुत सुन्दर आयो है । ताके नीचे कूप एक ताके ऊपर लागी बैरी, ताको देख
वालक एक रुदन आँ मचायो है । यकी आम लेऊँ मैं तो ओर हू न लेऊँ आन,
लाखो बात कडकर शक उनकी समझयो है । सुपने की बात मान पाचो हू न
मानो कोई, मपने की चमारी ज्यूँ सुपने शक आयो है ॥

॥ कवित्त ॥

बालक को कहन तो नहीं शुक मान्यो कछु, नारी घूँघट पट में बैन
गुटकायो है । भीखे मीखे नैन जोय तीखे जां भवारे होय, टेढ़ी निजर करके
चूँ बचन फरमायो है । आछो मरद भयो तो ते हम ही भली है नार, एक श्याम
काज केतो ओठो उतरायो है । मेरो भेष पहन ले तो मैं ही जाय तोखूँ याका,
ऐसो बैन सुन्यो तो शुकदेव रिसियायो है । तुरत जाय चढ़यो वह आम के ऊपर
शुक, चढ़ते एक नारी को बचन जो सुनायो है । कठिन आम ऐसो याते नहीं
टूटे गिरूँ मैं तो, बात सुनी नार हंस इंत जो दिखायो है ।
भलो मरद भयो ऐसो मरण हू से डरे तू, अंत जाति हू को भला विप्र जो
कहायो है । कहे राव मानसिंह स्वप्न हू ही बात यारो, स्वप्न हू की बात
याको रिस हू न लायो है ॥

॥ कवित्त ॥

शुक चायो तोड़ने को आम हू की करी जाते, कैरी हू को तोड़े पहने
दारो जो गिरायो है । आय गिरयो साथ साथ कूपहू में शुकदेव, बैठो जो तखत पर
आप भिभकायो है । चलयो जो जनक हू के पाँव छुवन काज शुक, दूर रह दूर रह
बैन जो सुनायो है । व्याह तो चमारी साथ कियो मोय भ्रष्ट करे, दोय चार
सुत को वाप बन आयो है । ऐसी बात सुनी शुकदेव शरमायो मन, और नहीं
सूम्यो हाहक करके चिल्लायो है । कहे राव मानसिंह स्वप्न हू ते जागो मित्रो,
वह स्वपनो तो यह कहा साच जो दिखायो है ॥

॥ कवित्त ॥

कहे यूँ जनक राव धीरो रह धीरो शुक, रह चुप ऐती बयूँ हाहा तैं मचाई है ।
यह स्वप्न यही स्वप्न स्वप्न ही में स्वप्न देख्यो, वह न सत्य तो कय सत्य यह कहाई
है । वो ही है असत्य और वेही है असत्य देखो, यह असत्य से असत्य दरसाई
है । जैसे मन वाहर लागे वैसे ही जो लागे उर, मन की कला को यह मन
तो खड़ाई है । मत ही कला कोई शूरीर संत लखे, ध्यान खड्ग हाथ लेके

शीश जिन उड़ाई है । नही तो चमारी हती नही नू चमार शुरु, नही जो चमार
ना नू विप्र कर्तों ने आये है । कहे राव मानमिह यत्र पत आय नही, योगवशिष्ट
पदो जामे भाऊ यह मुनायो है । मन की कला तै हारे वडे बड़े सन्नजन
हार के हैरान भये गर पाया ह न पायो है ॥

॥ कवित्त ॥

म्यर हू मे म्यप्र देव डरो नहीं शुकदेव, नू नहीं तो चमारी क्याही नही
ब्राम जायो है । श्याम हू को पुत्र माने माने जो चमारी पति, यह ना तेरो वृथ
ही जो मन भरमायो है । नित्य है आनन्द रूप शुद्ध है स्वस्व शुक, जनक कहन
नेरो उनमे विनायो है । नारी साथ मोयो ताको दोष हू तै जान्यो शुक, मैने मे
मन को यह भ्रम जो मिटायो है । जैसे नू स्वान मे चमारी नागी व्याये
हती, तैमे जायो नोद हू ते एक न दिवायो है । ऐसे राग्य धन भाग्य भूटे है
यह स्वान जैने, मेरो तो निगानन्द आनन्द रहायो है । कहे राव मानमिह
म्यान ऐमो होत बार, मन यह देखो स्वान बीच ही हिलायो है । देवनाथ
हाथ पकड़ म्यान बीच स्वान दीनो, मान जाग जावन बीच आन जे
जगायो है ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार । ताल दीपचन्दा ॥

एडो कलजुग भायो आवसी; मनजुग दूर रहेला ॥ टेर ॥
चेदा नही गिणेला वाप ने, सामो जात्र करेला ।
नूर नरो का ऊतरे, नारी जोर चलेला । एडो कलजुगः ॥ १ ॥
धीरज धोरियो रो ऊतरे, पाड़ा हलिया खडेला ।
प्राक्षण अजिया रखसी, धोयी गाय रखेला । एडो० ॥ २ ॥
वंदित घर घर मांगसी, मूरम्भ उत्तर करेला ।
महाजन मजूगी कर रखा, शूद्र घन जोड़ेला । एडो० ॥ ३ ॥
सत्री रेवेला सूधा गाय ब्यो, दुश्मण चार करेला ।
पोल पन्थ बधमी पखा, खैना ताण मचेला । एडो० ॥ ४ ॥

ब्रह्मचारी ने वृष्णे नहीं, साधू देख्योँ डरेला ।

व्यभिचारचौरी पूजा करे, सन्त कोई नाँय मिलेला । एङ्को० ॥ ५ ॥

ब्राह्मण क्षत्री वेश्य ये, कन्या बेच करेला ।

बुद्ध बालक कछु ना गिणे, गज पर छुरी जो धरेला । एङ्को० ॥ ६ ॥

चिलम तंवाकू से प्रीतड़ी, ज्याँरा आदर करेला ।

दूध छोड़ दारु पिये, बिना सौत मरेला । एङ्को० ॥ ७ ॥

लिहा रे संग स्यालनी, हौंसी इण री हुवेला ।

निज नारी ने छोड़ के, बेरया गोली रखेला । एङ्को० ॥ ८ ॥

गोलाई क्षत्री बाजसी, क्षत्रियोँ मान ढलेला ।

मानसिद्द यों अगम कहे, चौथे अन्त मिलेला । एङ्को० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफ़ी । ताल दीपचन्दी ॥

येरे विधिना तू क्यों बावरी भई है ॥ टेर ॥

कंटक पेड़ गुलाब को रे, निर्फल बेल रही है ।

पतुर नारी गज बैलज बाम्भो, छील को मद्रा दिवी है; लिखतीतू भूल गई है ॥ १ ॥

भनवंत किरपख निर्धन पखिटत, धन जहाँ पुत्र नहीं है ।

पड़दायतली गोद खिलावे, एनी के गर्भ नहीं है; लिखतो तोको पुत्र नर रही है ॥ २ ॥

एक समय राजा शवण के, पायगा मॉय रही है ।

दाणो दलती नीर भरती, सो दिन भूल गई है; तोको कुछ याद नहीं है ॥ ३ ॥

सब असुरों मिल यक्ष कियो है, ब्रह्म त्याग दई है ।

आप स्वरूप जोगन होय बैठी, राजा मान कही है; बात सब ही सही है ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार । ताल तिताला ॥

मेहरवा वरसन क्यों नहीं पानी ।

तुम थिन रात्रा रंक दुखित भये, हार के हुए हैरानी ॥ टेर ॥

जल में धल में तरम रहे मव, धर्मित और पिक्र बानी ।
 पीय पीय कर रटत पपैया, क्रिम कर देर लगानी ॥ १ ॥
 मरुभर देश नीर नहीं नेडो, प्राण नजे सब प्राणी ।
 प्रजा दुःखत देखी नहीं जावे, तब तुम तें विनय ठानी ॥ २ ॥
 देव में इन्द्र इन्द्रिय में मर तुम, गीता मध्य बखानी ।
 नाहि से हम विनय करत हैं, मान अरज गुन खानी ॥ ३ ॥
 नर में राव सोही हम तुम हैं, या में झूठ न जानी ।
 हमरो काम काम जो तुमरो, मंद भिन्न नहीं भानी ॥ ४ ॥
 जो हम तुम दोऊ एक रूप हैं, तो जुदा नहीं कोऊ प्राणी ।
 करके कृपा आवो जलधारा, जद्य आजन्द बरमानी ॥ ५ ॥
 मान कहे इतने नहीं मानो, येव उक्त विनय ठानी ।
 अब तो कृपा मरुधर पर कीजे, मय घट अन्तर्बानी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "निहालदे" की । वाल कैरवा ॥

नृपति बोही संसार में रे, रहे प्रजा हितकार ।
 प्रजा दुःख देखे नहीं रे, करले जतन हजार ।
 करले जतन हजार; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ १ ॥
 आप तो सोचे सुख मैं सत्रा रे, प्रजा दुःख सूँ मर जाय ।
 वो नृपति नहीं दुष्ट है रे, फहूँ न भला पण पाय ।
 फहूँ न भला पण पाय; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ २ ॥
 प्रजा दुःखी खुद दुःखी रहे रे, प्रजा सुखी तो सुन्दी होय ।
 निश्चय रखे मन मॉयने रे, बाने जीते नहीं कोय ।
 बाने जीते नहीं कोय; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ ३ ॥
 चक्रवर्ती कई आगे भया रे, सुखलो जिहँरो भास ।
 रामचन्द्र और युधिष्ठिर रे, ज्योंरो प्रजा ने विश्वास ।

ज्यारो प्रजा ने विश्वास; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहेरे बाल ॥ ४ ॥

प्रजा सो जीव रूप है रे, नृपति आत्म समान

जीव मित्थो फिर आत्म भयो रे, यूँ कर नीति पिछान ।

यूँ कर नीति पिछान; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहेरे बाल ॥ ५ ॥

देवनाथ प्रताप सूँ रे, बढ्यो प्रजा सूँ स्नेह ।

मान हमेश आनन्द है रे; वरस्थो प्रेम को मेह ।

वरस्थो प्रेम को मेह; प्रजारो दुःख सुख शामिल लहे रे बाल ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

सत संगत को सुख नौहि लियो, हिय में नहीं जोत अखण्ड जगी ।

रुगनयनी त्रिया के बटावन की, उर में नहीं ये आनयाली खगी ।

घर सूते के दीपक जैसे रहो, नहीं योग अरु भोग से प्रीति पगी ।

नृप मान कहे घृह है उनको, गल सेली लगी ना नवेली लगी ।

॥ सधैया ॥

नहीं डंघर अंग भभूत छई, आडंवर की नहीं खूबी खगी ।

पद लंगर लोह भनक न हो, कटि मेखली की न खनक जगी ।

जग मग समाधि नहीं शिव से, लक अशन चन्द्रमुकी उमगी ।

नृप मान कहे घृह है उनको, गल सेली लगी न नवेली लगी ॥

परिशिष्ट

॥ सोरठा ॥

॥ मान वचन ॥

भन री मच रही दृक्, मन मन कर दौड़े सभी ।

इश री कःणी राख, ओ मिले कटेई मानसिद्ध ॥

॥ बंरु वचन ॥

म । तो मूत्तम रूप, जाल्यां मूँ जलमी नहीं ।
भूल ने कह दी भूप, फटी जिंकी टलमी नहीं ॥

१) मान वचन ॥

माया वन अन्धियार, जिखमें ओ मनरो वसे ।
ज्ञान अग्नि दो जार, कस्यो वचन पूरो करो ॥
। गान ।

॥ र म भौंड । ताल दादरा ॥

मन गंगा न्हावो, मैत मिटावो, साक करो मन चोर ।
ब्योसूँ मिलमी नन्दकिशोर रे । मन० ॥ १ ॥
दण जल न्हायो तन होय उजला, मन है कठिन कठोर ।
ज्ञान की गंग हमेशा न्हावे तो, चाले न मन रो जोर रे । मन० ॥ १ ॥
गंगा न्हावो ने न्हावो जमुना, मन तो टोर को टोर ।
दण मन रो नहीं मेल भिटे जद, जून पड़े दश और रे । मन० ॥ २ ॥
गडसठ तीरथ भटक ने आवा, सरचे कृप्य करोड ।
बाहिर को मेल धोय भवा उजला, पर मिटयो न मन को शोर रे । मन० ॥ ३ ॥
मद्गुरु गिरी से गंगा निकसी, कैयो नीर चहूँ और ।
म्हे तो म्हारे घर मे सूना, पर बहतो दे गई हिलोर रे । मन० ॥ ४ ॥
लागत हिलोरो पाव मय उडगय, मान गयो मन मोर ।
जीव ही जीव को घकयो भूल्यो, मिलगयो और ही और रे । मन० ॥ ५ ॥
सहातम मुण ने गगा न्हाईनो, मिट जाये जम रो जोर ।
ज्ञान की गंग गुरु नित बहावे, धार पड़े चहूँ और रे । मन० ॥ ६ ॥
देवन थ शुरु गग न्हायो, पन्द दिथ सब तोड़ ।
और न्हायो तो न्हावो मित्रो, मान बहे कर जोड़ रे । मन० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ र म भौंड । ताल दादरा ॥

यद है गंग हम रो, बहे गहरी घारी, ब्रह्म समुद्र में जाय ।

कोई नर रंगा सागर में न्हाय रे । यह है ० ॥ १ ॥
 ब्रह्म समुद्र गहरो भरियो, नहीं है जिण रो थाह ।
 भाग्य सभागी सो लख में न्हासी, नहिं तर नदियों में न्हाय रे । यह ० ॥ १ ॥
 पांच पचीस वृत्ति उरवृत्ति, मच्छी बसे इण भाँय ।
 मोह को मच्छ रहत है सांही, चाहे तो वाहिर आय रे । यह ० ॥ २ ॥
 प्रेम की जहाज और सन्त खेवैया, जावे त्रिकों ने लं जाय ।
 जहाज में बैठ कपट जो राख्यो, अधविच देला डूबाय रे । यह ० ॥ ३ ॥
 साठ हजार सगर सुत उत्ररे, अचरज इण रो नाँय ।
 इण ही तरह सूँ सगजा आयो तो, जग ने देऊँ तिराय रे । यह ० ॥ ४ ॥
 हमनेःतो ब्रह्म समुद्र जो पायो, नाथ मिल्या म्हाँ ने आय ।
 सागर में गंग जो सहज समार्ह, गुरुगम दीधी मिल्लाय रे । यह ० ॥ ५ ॥
 मुवाँ मुक्ति यह गंग देवे, शायद देवे नाँय ।
 मेरी तो गंग सहजे देवे मुक्ति, आवो तो देऊँ दिखाय रे । यह ० ॥ ६ ॥
 उण गंग न्हाया अनन्तो मरग्या, पत्र कियी रो नाँय ।
 इण गंग न्हाया त्रिकों रो सुनलो, आगे देऊँ बताय रे । यह ० ॥ ७ ॥
 विश्वामित्र यरिष्ठजी न्हाया, राम गरक जिण भाँय ।
 वेदव्यास शुक्रदेव मुनि जिन, प्रत्यक्ष साख ह्णाय रे । यह ० ॥ ८ ॥
 दत्त ने गोरक्ष कवीर भरतु, न्हाये गंग के नाँय ।
 शंकराचार्य न्हाये थे इण में, जीवन मुक्ति पाय रे । यह ० ॥ ९ ॥
 डंके की चोट मैं कह देता हूँ, मन बचराऊँ नाँय ।
 ऐते तरे तो हमभी तिरंगे, स्वप्ने नाँय खुवाय रे । यह ० ॥ १० ॥
 घर में गंगा समुद्र है घर में, घर में सत्र योग मिल्लाय ।
 मान यों जीवित मोक्ष मिली फिर, वाहिर जाय वलाय रे । यह ० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मैं तो लिवी पत्थरी, अजर अमीरी. छिन्न भिन्न नहीं होय ।

फिर ले देखो सब कोय रे । मैं तो० ॥ टेर ॥
 चार जिणों ने ले चेला मूँड्या, दीवी आपदा खोय ।
 राग ने द्वेष जन्मो जन्मो रा, पड़िया रेवे सब रोय रे । मैं तो० ॥ १ ॥
 मुरता निरता दाय चेल्वाँ मूँडी, रही विषम में मोय ।
 समता धार जिन्ही मन माँयने, मूर्धनी मठ में सोय रे । मैं तो० ॥ २ ॥
 मन्सुरुपों सूँ पील्य जो मॉगी, उतर न हीयो कोय ।
 जग्गा झोली में लीनी भिला, मन शब्दो री जोय रे । मैं तो० ॥ ३ ॥
 चेला ने चेली सगला सुपातर, दुख न देवे मोय ।
 कवहू हुकम लोपे नहीं मेरो, ड्युँ चाहूँ बही होय रे । मैं तो० ॥ ४ ॥
 देवनाथ को नाथ कियो जद, अपनो आप मे पोय ।
 मानमिह ऐसो संन्यामी, होयों सूँ भिठ आवे दाय रे । मैं तो० ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

होत फकीर घुरे जघरे जो फकीरन तें तो हरी ध्वरावे ।
 नेरुहू टेढी दृष्टि करे तो वे राम को काम सभी जो मिटावे ।
 आप ही राम बने यह वैठ तो और सो राम की कौन कहावे ।
 काल हू देख डरे इन ते यह काल बढ़े इन्हें काल न खावे ।
 आप ही राम बनावन हूँ ये और राम को कहा बतावे ।
 राम ते राम डरे किम कर ये राम ही राम सो राम समावे ।
 देवनाथ गुरु राम भिले जो फकीरों के श्रीति की रीति सिन्वावे ।
 मान कहै कोई मानो न मानो ये रुत अनन्त सो साकू सुनावे ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहग । ताल कैरवा ॥

साधो मेरे बिन गेरु रंग छाया रे ।
 रंगियों पिछे रंग कदे नहीं उतरयो,
 दिन दिन घुटत सयाया रे । सधो मेरे- ॥ टेर ॥

कूँडी विचार प्रेम रो पाखी, गम री नेह धिसाया रे ।
 बेकिकरी री लिखी फिटकड़ी, जद रंग पक्का आया रे । साधो मेरे० ॥ १ ॥
 सत रो साधू सुरता ने दीयो, श्वासो ही श्वास घुपाया रे ।
 मन कपड़े ने इसड़ो धोयो, कूड़ रा दाग मिटाया रे । साधो मेरे० ॥ २ ॥
 निरख परख ने रंग में जुवायो, खूब झोल रंगाया रे ।
 घोटो ताडना सदगुरु दीनो, कर कुन्दी सुख पाया रे । साधो मेरे० ॥ ३ ॥
 माया बादल अलगा इटिया, ज्ञान सुरज चमकाया रे ।
 अगम निगम रा दिया झपेटा, सुरती ने निरती सुकाया रे । साधो मेरे० ॥ ४ ॥
 गुरु रंगरेज रंग्यो रंग आजो, पहर अमर पद पाया रे ।
 पार्लंडिया तो देख ने डरिया, अलगाँ सँ शीश झुकाया रे । साधो मेरे० ॥ ५ ॥
 अग्नि.वरण रंग मेरो भगवाँ, हम तेही रूप कहाया रे ।
 पाँच तत्व ने पचीस प्रहान, सबने भस्म बनाया रे । साधो मेरे० ॥ ६ ॥
 इण रंग रंग में तो भयो संन्यासी, ना कहीं गया न आया रे ।
 जरणा झोली भील भाव की, जिण दिया जासूँ पाया रे । साधो मेरे० ॥ ७ ॥
 ऊँच ने नीच वरण नहीं जाति, भेदा भेद मिटाया रे ।
 तीनुँ आश्रम के गुरु बन घैठे, अब भेद कौन विथ लाया रे । साधो मेरे० ॥ ८ ॥
 चालूँ ही वरण आश्रम तीनुँ, अब शिष्य मेरे कहाया रे ।
 आखिर देखा रूप सब मेरा, मम स्वरूप शूद्ध पाया रे । साधो मेरे० ॥ ९ ॥
 देवनाथ गुरु किरपा करके, अगम योग दसाया रे ।
 मानसिंह ऐसे होय संन्यासी, धिन उवाँरो जननी जाया रे । साधो मेरे० ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ राम सोरठ गिरनारी । तल फेरवा ॥

कोई चालो उण घर चालो रे, मत ऊचा ऊता मालो । कोई चालो उण घर ॥ देर ॥
 रेचक पूरक कर कर कुम्भक, यूँ कँई मन ने पालो रे । मत ऊला० ॥ १ ॥
 यूँ तो पालियो ओ नहीं पलसी, मनड़ो बड़ो हे विलालो रे । मत ऊला० ॥ २ ॥
 कँई थे कुण्डली नागन जगावो, कँई सत भोम रुखातो रे । मत ऊला० ॥ ३ ॥

मुझ ने धुनों सूँ ओ नहीं डरसी, मनचो बड़ो है नखरालो रे । मतः ॥ ४ ॥
 इण मन ने नित्र मन कर देवो, झौड मिटेना जद थारो रे । मतः ॥ ५ ॥
 निज मन होयाँ चेटेई चाहे रेवो, नहीं चहिये रखवालो रे । मतः ॥ ६ ॥
 मानसिह मस नित्र मन कीयो, हरदम रहे मतवालो रे । मतः ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मोरठ-गिरनारी । ताल कैरवा ॥

मैं तो नहीं हठयोग कमाया रे, नित राजयोग चित खाया । मैं तो नहीं ॥ १ ॥
 भारत वंश उवार कृष्णजी, उनका मैं हृदय उठाया रे । नित राजः ॥ १ ॥
 राजरोती मन भयो पिपयन मे, गुरु तो नवज विन्हाया रे । नित राजः ॥ २ ॥
 समता सुवर्ण भरम दिवी इनको, जिममे ताप मिटाया रे । नित राजः ॥ ३ ॥
 गीता गाय को लेकर भाग्यन, कई-कई औपध(१)मिलाया रे । नित राजः ॥ ४ ॥
 सुवर्ण बसन्त(२)मालती फाँके, मन को लेके थिलाया रे । नित राजः ॥ ५ ॥
 सील सन्तोष को इन्तोपलादि, गम गिचाय मन लाया रे । नित राजः ॥ ६ ॥
 मैं मगना को गलिका लड़ाटे, तत्त्वममि मद (३) लाया रे । नित राजः ॥ ७ ॥
 कर हठयोग विमार भयो अपुरो, मगन्थ सुवर सुष पाया रे । नित राजः ॥ ८ ॥
 भाव विदाम मेरु क्रियो मीरो, आगम अत्र मिचाया रे । नित राजः ॥ ९ ॥
 लय रोगी को क्रियो है निरोगी, मरते फेर जिचाया रे । नित राजः ॥ १० ॥
 देवनाथ गुरु मिले रमायनी, जद यह रसायन सीखाया रे । नित राजः ॥ ११ ॥
 मानसिह ऐमे वैद भये पक्रे, सतगुरु मोय बनाया रे । नित राजः ॥ १२ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश-सोरठ । ताल कैरवा ॥

मो लम कौन है अन्तर्यामी ।

सबके अन्तर व्यापक हूँ मैं, सध प्राणिन मे नामी । मो समः ॥ १ ॥

१—माधन, २—उत्तम विचार, ३—शहद ।

वेद ने द्रव्य साख दहे सगरा, नहीं है इण में खाभी ।

न्यारो कहे सो कहे भूल से, कर कर वात निकामी । मो सम० ॥ १ ॥

पेन गरीब आप हम अपने, फिर क्यों लहें बदनामी ।

भरता हम अवरन से माँगें, वात नहीं मन मानी । मो सम० ॥ २ ॥

हम ही तो मात पिता पुनि हम ही, हम ही गरम में जाभी ।

एन हो किये और हम ही भोगें, कुण होय नमन हरामी । मो सम० ॥ ३ ॥

द्वेष्टनाथ गुरु मिले हों जद, भेट दिवी मन खाभी ।

मानसिंह जद अपने आप हम, कितकी करें गुलामी । मो सम० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई म्हाँने नहीं मुक्ति रो जर रे ।

चाहे तो मुक्ति मिले जा मिले तो, इण रो नहीं है फिकर रे ॥ डेर ॥

सीरध ब्रत खेल लड़कन का, म्हाँ पर नहीं है उजर रे ।

शिर हो तो जव सब कुब्ज करिया, अथ तो काट दियो धर रे ॥ १ ॥

पत्थर पाथर कदे न पूजूँ, मन मुड़वा लिया कर रे ।

पोल पादपड रो डोल फोड़साँ, इण पर फसी कमर रे ॥ २ ॥

कुण गिरनार चढ़े अब म्हारे, जद चढ़ गया महल शिखर रे ।

कुण रत्नाकर सागर तिरसी, ज्ञान समुद्र लिया तिर रे ॥ ३ ॥

रामेश्वर जगदीश द्वारिका, नहीं बन्नी री दर रे ।

सब कुब्ज में और मुक्त में सब कुब्ज पायो अजर अमर रे ॥ ४ ॥

तुंगनाथ त्रिजुगी चढ़े कुण, में तो पायो देव अघर रे ।

कुण शंकर त्रिभुक्त ने पूजे, पायो असल अणुधर रे ॥ ५ ॥

कुण तो भैरव देवी पूजे, कुण दे शंलारा स्वर रे ।

चाँ वपुड़ो ने कुण आवण दे, नहीं अठे चांरी कदर रे ॥ ६ ॥

मुक्ति री मुक्ति कर देवाँ, म्हे चन्नी सुत नर रे ।

पन्थापन्थ वकरियों बापड़ी, शरणे सिंह बण चर रे ॥ ७ ॥

माचा बोलो तो मन्तो थे आईजो, नहीं तो रहिजो पर रे ।

पग पर पग दे कर हूँ मीमा, माहूँ क्षान रो शर रे ॥ ८ ॥

देवनाथ गुरु माथ कियो जद, मिट गई सब गहवड़ रे ।

मान रहे मत भूल थे आईजो, मर जीवों रे घर रे ॥ ९ ॥

॥ मान ॥

॥ राग सारंग । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई मैं तो उड़ गयो छिन पग पर रे ।

इए नारग तो घे नर आवे, जीवनडा जाय मर रे ॥ १ ॥

पाँच तत्त्वों से ब्यारो रहूँ मैं, सय मे राखूँ निजर रे ।

क्या है मजाल विमुक्त कोई रेवे, राखूँ मगलो ने पकड़ रे ॥ १ ॥

मेरो ह्रुम सभी ये माने, कर धरुया सय ने मर रे ।

दुश्मण जिणने मार पकड़िया, भाथो गी करनी कदर रे ॥ २ ॥

ज्ञान विवेक विचार चार ए, भाई हमारे घर रे ।

शुद्ध वैराग ने काम मय दीयो, नहि तर जातो विगड़ रे ॥ ३ ॥

“मैं” अहकार उरुड़ कियो उलटो, बात दिबी है बदल रे ।

ब्रह्मास्मि मय “मैं” ब्रह्म हूँ, आदि अजर अमर रे ॥ ४ ॥

शोश उड़यो तो कुछ नहीं पशवा, अय दूजो शिर लियो घर रे ।

पुरिया पद चौथे पर पहुँचयो, जीव्यो काल समर रे ॥ ५ ॥

पोला पन्थ गोल नहीं चलसी, म्हारी मत कीजो कोई हर रे ।

आवणो हूवे तो समझने आईजो, मैं तो लेऊँ मट शीश कतर रे ॥ ६ ॥

स्याल जाण थे मत मरमाज्यो, मैं सुत्रीसुत नर रे ।

काह्यो मैं खड्ग धधक तो वादर, निकल जावेला अरुड़ रे ॥ ७ ॥

देवनाथ गुरु मार्यो मोकूँ, मैं तो मर ने जीयो फिर रे ।

मानसिंह अब काल क्या करमी, कोपे ऊमो दर थर रे ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

साधो सब जग कुटुम्ब हमारो । विश्वविभू में व्यापक हैं हम,
 कौन रहे फिर न्यारो ॥ १ ॥
 सब वपुधैव रूप निज मेरो, वेद और ग्रन्थ उचारो ।
 खेलत खेल अखेल रहें हम, देखो परम उजियारो ॥ १ ॥
 मैं ही कर्म करत पुनि मैं ही, मैं हूँ कर्म से न्यारो ।
 मैं ही फल और भोग मैं ही हूँ, मैं हूँ तत्त्व इकसारो ॥ २ ॥
 जब "वपुधैव कुटुम्बकम्" चीन्थो, मिट गयो सरम हमारो ।
 भिन्न भिन्न समझ मार नित लार्ह, मयो मैं आत्म हूँ आरो ॥ ३ ॥
 व्यक्तिभाव नहीं उर आनूँ, नहीं अदृष्टार उर धारो ।
 मेरो ही रूप विश्व यह कह्ये, मैं ही विश्व आचारो ॥ ४ ॥
 काम रूप होय फल कहूँ मैं, देत यह मैं सहारो ।
 एक अनेक अनेक एक होय, पूरो यह हमारो ॥ ५ ॥
 मैं ही पिता पुत्र पान मैं हूँ, मैं पती पति विचारो ।
 मेरी खुशी से भयो अनेको, देख्यो ब्रह्मतत्त्व सारो ॥ ६ ॥
 देवनाथ गुरु दया करी जद, पड़यो दूर निवारो ।
 "तत्त्वम्" पद में मान "असि" पद, सब जग सम उजियारो ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग साँड । ताल दादरा ॥

जग रूप हमारो, ना कोई न्यारो, किनको जायें त्याग ।
 मेरे ना कोई राग वैराग रे । जग० ॥ १ ॥
 अपणो आप ताप है किण्ण री, कह्यो कहाँ लागे दाग ।
 एक स्वरूप विचार लियो जद, न्यारो रयो कहाँ भाग रे । जग० ॥ १ ॥
 सङ्कल्प विन्त्य सब ही झोझ्या, सब की उद्धारें लाक ।

धार्ध ने व्याधि उणी दिन मिट गई, जमी ज्ञान की आग रे । जग० ॥ २ ॥

देवनाथ ने हाथ गहरी जद, सीधो बतायो माग ।

मान अमान निर्मान भयो जद, ना कोई विशु री लाग रे । जग० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग मलार, तर्जु "बाणो" की । ताल दीपचन्दी ॥

जीव ब्रह्म खोजण गया, अपन आप गमाया हों ।

जीव ब्रह्म कुछ ना भिन्ना, त्वाली हाथे आया जी ॥ १ ॥

जीव कहां कर जनमियो, आप ही अलुभाया हों ।

ईश क्यो दूजो है कोई, यह सब भरम मुलाया जी ॥ १ ॥

ब्रह्म क्यो व्यापक विश्व मे, अपने आप है मोई हों ।

यो कर ब्रह्म चीन्यो नहीं, न्यारो कर जोई जी ॥ २ ॥

ब्रह्म जीव कुछ है नहीं, यह तो कल्पित सोई हों ।

अंतर जहों लागे नहीं, परणी कैसे होई जी ॥ ३ ॥

ब्रह्म कोई खाको नहीं, गिर ऊंचा नहीं आया हों ।

अपनो आन भिज आप है, ना कोई शब्द लगाया जी ॥ ४ ॥

वाचक ज्ञानी सो इसा, ब्रह्म खाड के मोई हों ।

खाड गिरवाँ कैसे भिले, सुन ही सुन कहाई जी ॥ ५ ॥

मेरो तो व्यापक विश्व मे, आपा आप ही पाया है ।

जीव ब्रह्म श्रीर ईरा भी, कल्पित में ही तो लगाया जी ॥ ६ ॥

माया भी मो से भिन्न नहीं, भिन्न कहे सोई कृता हों ।

"एकोइम् बहुभयाम" की, मो में भई है फेर जी ॥ ७ ॥

दीपक लोय अजियार हो, कैसे कहे जी न्यारो हों ।

वही तो उन्नरो वही लोय है, नोय ते होय अजियारो जी ॥ ८ ॥

देवनाथ सतगुरु मिलबा, अय मेरो उद गयो सारो हों । . .

माननिद अपने रुग मे, भभला रुपनिहारो जी ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

जनक जनक बहे सब ही गावे । हिम्मत करे तो खुद होय जावे । जनकः - टेर ।
 जनक के हुनी पंच भूत की देहा । देह छते भी वो था जो विदेहा ।
 इण में संशय रती नहीं आवे । जनक जनकः ॥ १ ॥

जनक भी हुतो कोई जननी को जायो । नहीं वो जनक आकाश से आयो ।
 कर पुरुपाथ निज पद पावे । जनक जनकः ॥ २ ॥

जनक शब्द को अर्थ सुण भाई । जिणसूँ जीत लेवो जनकाई ।
 होय जनक निज रूप समावे । जनक जनकः ॥ ३ ॥

अपणा जाणे जनक है सोई । अपणा भूल्या सो मूरत होई ।
 जाययाँ बिना कैसे जनक कहावे । जनक जनकः ॥ ४ ॥

हम नीं हैं जनक भूतक हैं भाई । भूले हुवे कैसे वो पद पाई ।
 भूल भूल में शान गमावे । जनक जनकः ॥ ५ ॥

देवनाथ गुरु जानक चीना । मानसिंह को जानक कीना ।
 ६ व देह छते ही विदेह रहावे । जनक जनकः ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो इन ऐसा यज्ञ कर लीना होजी ।
 कल्प अकल्प विचार लियो उर, आत्म परगट चीना रे । साधो हम ॥ टेर ॥

गुप्त देव को भूल कर बैठे, अथ परगट कर लीना होजी ।
 यज्ञ भाग हम प्रत्यक्ष देत हैं, उर हमें अमीरस दीना रे । साधो ॥ १ ॥

जो कुछ किया सो यज्ञ रूप है, और भाव तज दीना होजी ।
 सर्व देव सो हम में व्यापक, न्यारा फेर रहे ना रे । साधो ॥ २ ॥

कण कृपा कर यज्ञ बतायो, कियो पारथ परवीना होजी ।
 नित्य विचार मंत्र लख, दुविधा निकट रही ना रे । साधो ॥ ३ ॥

छान्दयोग और केन पढ़े हम, साफ साफ कह दीना होजी ।

ताते यज्ञ हमे मन भायो, दुविधा तन पे सही ना रे । साधो० ॥ ४ ॥

यज्ञ चक्र गुरु देवनाथ से, कर हिम्मत ले लीना हाजी ।

मानसिह म्दारभिये मिले सब, अमली बात कही ना रे । साधो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "घाणो" की । ताल कैरवा ॥

साधो म्हों सूँ बी यज्ञ बण नहीं आवे होजी ।

बैठे मंत्र जपे कई लावों, कहाँ वक्त अस पावे रे । साधो० ॥ ६ ॥

कौन महान कर देवे आहुति, कुछ फिर अग्नि जलावे होजी ।

लुधा नृपा हाँऊँ अभिन जगत हे, निन आहुति पहुँचावे रे । साधो० ॥ १ ॥

वण यज्ञ से फल मिले या मिले नहीं, कात्मान्तर बतलावे होजी ।

इण यज्ञ में जो देय आहुति, देते फल मिल जावे रे । साधो० ॥ २ ॥

शुद्ध मन्त्र निन सद्गुरु कहिये, सो नित यज्ञ करावे होजी ।

प्रथम रूप सो अन्तर घैठा, निन साक्षी दरसावे रे । साधो० ॥ ३ ॥

धो यज्ञ करत यदि जो न्यजुँन, सगजो काम बगडावे होजी ।

शूरीर तैयार न्द्रे शिर, दुश्मण धार चलावे रे । साधो० ॥ ४ ॥

मेघनाद नारायणतक जो, वण यज्ञ मूँड पावावे होजी ।

कर्म यज्ञ लदमण कियो हनुमत, यज्ञ विवम करावे रे । साधो० ॥ ५ ॥

इन पर देवी कौपी नाँही, उन पर कोप दिखावे होजी ।

गंज यज्ञ से कर्म जबर है, इत कर ई फल पावे रे । साधो० ॥ ६ ॥

देवनाथ गुरु कृण मिले जद, साधो यज्ञ करावे होजी ।

मानसिह नेयो यज्ञ कीनो, जीवन सुख हो जावे रे । साधो० ॥ ७ ॥

॥ मोरठ ॥

मान वचन

श्रीजी विविध विचार, सार सखी गीता तणो ।

तो पायो नित्य अवता, मन अपने मे मानसी ॥

बंका वचन

सुन हो चतुर्पति नाथ, मनुष्य ईश अवतार कही ।

यह मन नाहि समात, बात तुमारी बंकुरी ॥

मान वचन

जो जन बाँका होय, सीधी तो सुभे नहीं ।

बाँकी लेवे जोय, सीधी पर पग ना थर ॥

॥ कवित्त ॥

कर्म के परबाण होत विभूति यह वेद कही, सो तो हम तुम्हें कैसे न्यारी
बतलायेंगे । चारह कला के अवतार श्रीरामचन्द्र, सोलह कला के श्रीकृष्ण
बतलायेंगे । इनकी विभूति अधिक उनकी कमी है क्यों, इनके सदृश क्या
अवतार न कहायेंगे । यह तो है भूक्त बंका त्याग भ्रमना को अब, जितनो है
प्रकाश तितनो तेज दिखायेंगे ॥

॥ कवित्त ॥

निमित्त अवतार धार करण सूँ लिथो दण, पर मेरी इच्छा से यह बाहिर न
फ़ाये हैं । माया बसु धार जोय तार पार किये जिन, आखिर तो मेरे शुद्ध रूप
में समाये हैं । देख निर्वाण प्रकरण गीता को देख इत, सर्ष भूतात्म यूँ कृष्ण
करमाये हैं । कहे राव मानसिंह घर को न लायो मैं, जैसे वेद कहे बचन तैसे
हम गाये हैं ॥

॥ गान ॥

॥ राम भैरवी, तर्ज "कैसे व्याऊँ राघे कृष्ण तेरो कारो" की । ताल कैरवा ॥

देखी उर भाँय, हरि ने लीला दिखाई रे; देखी उर भाँय ॥ टेर ॥

जननी जसोदा कहिये जरणा, जिन ऐसो सुत जाय ॥

शान पुत्र ऐसो हम पायो, जन्म मरण ब्याँस फेर नहीं आय रे । देखी० ॥ १ ॥

समता जमुना निर्मल वेवे, जिय रो तीर सुहाय ।

तर्क जितक मैंद वो खेले, कवहू हार के घर नहीं आय रे । देखी० ॥ २ ॥

दान्दयोग और केन पढ़े हम, साफ साफ कह दीना होजी।

ताने यज्ञ हमें मन भायो, दुविधा तन पे मही ना रे । साधो० ॥ ४ ॥

यज्ञ चक्र गुरु देवनाथ से, कर हिम्मत ले लीना होजी ।

मानमिह म्यारभिये मिले सब, अमली बात कही ना रे । साधो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणो" की । ताल कैरवा ॥

साधो म्हाँ सूँ यो यज्ञ बख नहीं आवे होजी ।

बैठे मंत्र जपे कई लावों, कहीं वक्त अन पावे रे । साधो० ॥ ६ ॥

कौन महनत कर देवे आहुति, कुण फिर अग्नि जलावे होजी ।

जुधा नृपा दोऊँ अग्नि जलत है, नित आहुति पहुँचावे रे । साधो० ॥ १ ॥

वण यज्ञ से फल मिले या मिले नहीं, कालान्तर बतलावे होजी ।

इण यज्ञ में जो देय आहुति, देते फल मिल जावे रे । साधो० ॥ २ ॥

शुद्ध अन्न नित सद्गुरु कहिये, सो नित यज्ञ करावे होजी ।

अन्न रूप सो अन्तर बैठा, नित साक्षी दरसावे रे । साधो० ॥ ३ ॥

वो यज्ञ करत यदि जो अर्जुन, सगलो काम बगड़ावे होजी ।

शूरवीर तैयार खडे शिर, दुरमण्य वार चलावे रे । साधो० ॥ ४ ॥

मेघनाद नारायणतरु जो, उण यज्ञ मूँड पचावे होजी ।

कर्म यज्ञ लक्ष्मण कियो हनुमत, यज्ञ विध्वंस करावे रे । साधो० ॥ ५ ॥

इन पर देवी कोपी नोही, उन पर कोप दिखावे होजी ।

मन्त्र यज्ञ से कर्म जबर है, इत कर इत फल पावे रे । साधो० ॥ ६ ॥

देवनाथ गुरु कृष्ण मिले जब, साक्षी यज्ञ करावे होजी ।

मानमिह ऐमो यज्ञ कीनो, जीवत मुक्त हो जावे रे । साधो० ॥ ७ ॥

॥ सोरट ॥

मान वचन

कोना विविध विचार, सार लख्यो गीता तथो ।

तो पायो नित्य अवतार, मन अपने मे मानमी ॥

शंकर वचन

सुन हो लक्ष्मणपति नाथ, मनुष्य ईश अवतार कही ।
यह मन नाहि समात, वात तुमारी बंकुरी ॥

मान वचन

जो जन बाँका होय, सीधी तो सूझे नहीं ।
बाँकी लेवे जोय, सीधी पर पग ना धर ॥

॥ कवित्त ॥

कर्म के परमाणु होत विभूति यह वेद कही, सो तो हम तुम्हें कैसे न्यारी
बतलायेंगे । धारह कला के अवतार श्रीरामचन्द्र, सोलह कला के श्रीकृष्ण
हरसायेंगे । इनकी विभूति अधिक उनकी कमी है क्यों, इनके सहस्र क्या
अवतार न कहायेंगे । यह तो है भूक्त शंकर त्याग धमना को अच, जितनो है
प्रकार तितनो तेज दिखायेंगे ॥

॥ कवित्त ॥

निमित्त अवतार धार कारण सूँ लियो दया, पर मेरी इच्छा से वह बाहिर न
कशये हैं । माया मनु धार जीव तार पार किये जिन, आखिर तो मेरे शुद्ध रूप
में समाये हैं । देख निराण प्रकरण गीता को देख इत, सर्ष भूतात्म पूँ कृष्ण
कहाये हैं । कहे राव मानसिंह अर को न लायो मैं, जैसे वेद कहे वचन तैसे
हम गये हैं ॥

॥ गान ॥

॥ राम भैरवी, तर्ज "कैसे व्याऊं राधे कृष्ण तेरो कारे?" की । ताल कैरया ॥

देखी अर माँय, हरि ने लीला दिखाई रे; देखी अर माँय ॥ टेर ॥

बननी जसोदा कहिये जरणा, जिन ऐसो सुत जाय ॥

ज्ञान पत्र ऐसो हम पायो, जन्म मरण व्यौरा फेर नहीं आय रे । देन्नी ॥ १ ॥

समता जमुना निर्मल वेवे, जिण रो तीर सुहाय ।

तर्क चित्तक नैद वो खेले, कबहू हार के घर नहीं आय रे । देन्नी ॥ २ ॥

पाँच पचीस मिनी सब गोपी, अनहद रास रचाय ।

ओझार धरनि बनी धॉमुरी, सुर नर मुनि याको मुन मुख पाय रे । देख्यो ० ॥ ३

जिज्ञासु पण जीव हतो जद, रयो मुमुक्षु थाय ।

जीव पणो नत्र भय रूप भयो, शुद्ध स्वरूप को खोज लगाय रे । देख्यो ० ॥ ४

जीव ने भय दोऊँ जद मिट गया, लारे रयो कछु नय ।

आप खिलारी आप भयो लोना, आर देव अपना गुण गाय रे । देख्यो ० ॥ ५

देवनाथ गुरु कृष्ण मिल्या जद, दीयः कृष्ण बणाय ।

मान कहे अथ कृष्ण भये हम, भरम गाँठ को दीवी है गमाय रे । देख्यो ० ॥ ६

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे ब्याऊँ राधे, कृष्ण तेरो" की । ताल कैरवा

देख्यो घनश्याम, सब शीघ्र मुगरी रे, देख्यो घनश्याम ० ॥ टेर ॥

अजय खेल नटवर को देख्यो, खेन्यो जगत तमाम ।

सभी खेल कर रह गयो नशरो, पार न पायो वाको वेद पुरान रे । देख्यो ० ॥ १ ॥

खेलन खेल अखेल रहे फिर, करता काम अकाम ।

नाना रूप खेल रयो निशिदिन, फिर बैठो लूय ओ करे विश्राम रे । देख्यो ० ॥ २

नाम रूप से श्यारो कहिए, सब ही उणरा नाम ।

जो कोई उणने जाए विचारे, पाय लेवे वो वद निर्वाण रे । देख्यो ० ॥ ३ ॥

सभी धाम में ब्यापक कहिये, ना कोई उण रे धाम ।

मानसिंह मै देतो देख्यो पूरण सब विच आतमशम रे । देख्यो ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे ब्याऊँ राधे कृष्ण तेरो करो" की । ताल कैरवा ॥

पारथ बनाय, हरि ने गीता सुनाई रे; पारथ बनाय ॥ टेर ॥

कुरुर्मा रा कौरव उभा. सब ही फौज जुड़ाई ।

अर्जुन कुटुम्बा जाल कर डरियो, सदगुरु उणने धीरज बन्वाई रे । पारथ ॥ १ ॥

या तन रथ मे सदगुरु बैठा, करड़ी वाग संमाई ।

कर्मक्षेत्र में रथ को लीयो, इत उत घोड़ा अलग न जाई रे पारथ० ॥ २ ॥
 किसका तू और कौन है तेरा, देह अभिमान गिराई ।
 उसल रुद्र को रेड भयो तू, बनत न सक शरम न आई रे । पारथ० ॥ ३ ॥
 कर्म क्षेत्र में हारे मूर्ख, हारत लाज न आई ।
 बठ खड़ा हो कर्म कर निर्भय, वाप कर्म तोकूँ लागे नाँई रे । पारथ० ॥ ४ ॥
 उतर गयो तू कर्म क्षेत्र में, अब क्यों रयो पचराई ।
 करणा हूँ सो करले निर्भय, अब क्यों पलट तेरी शयान गमाई रे । पारथ० ॥ ५ ॥
 जीव हतो ते ब्रह्म भयो अब, जीव ब्रह्म कुछ नाँई ।
 कर्म भूमि के कुक्षेत्र में, कुकरम कौरव दीना खपाई रे । पारथ० ॥ ६ ॥
 बन पारथ कोई पढ़ले सुनले, धिन है बाँरी माई ।
 नित्य पाठ लखपढ़े गीतां को, मनुष्य नही वो तो पशु सो कहाई रे । पारथ० ॥ ७ ॥
 करे नित पाठ विचार करे मन, बुद्धि तक बढ़ाई ।
 देह अभिमान दूर धर दीनो, करता करम फिर रहे अकरताई रे । पारथ० ॥ ८ ॥
 देवनाथ गुरु कृष्ण मिल्या जद, यह भूँटी घस पाई ।
 मान कहे मैं कृष्ण रूप हूँ, जीव ब्रह्म ईश की मित गई जुवाई रे । पारथ० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-त ताल दादरा ॥

कैसे हीरे लुटाये, कृष्ण दिखाये, कर कर लो व्यापार ।
 पड़ा मिलसी न दूजी कार रे । कैसे० ॥ १ ॥
 काच कथीर ने पत्थर पाथर, काम न आवे लिगार ।
 गीता खण के हीरे बिखजो, होवो भवसागर पार रे । कैसे हीरे० ॥ १ ॥
 दो हीरों ने चोर ले जावे, छीने राज दरवार ।
 बुद्धि खजाने ए हीरा मैलो, काम आवे हर वार रे । कैसे हीरे० ॥ २ ॥
 धृति नारी रे हाथ खजानो, रखो पहरायत चार ।
 धिना विचार कदे नहीं खरचे, खरचे विचार विचार रे । कैसे हीरे० ॥ ३ ॥

जो यों हीरा में शङ्का होवे तो, राखो न शङ्क लिंगार ।
 नर्व वितर्क को घणू ले कर मैं, मद्गुरु मन्मुख धार रे । कैसे हीरे० ॥ ४ ॥
 मतवाद्यों जो थोटा भेल्या, वे रहमी न्याय ही न्यार ।
 लागन चोट ही किरचा होमी, देखो पकी मन धार रे । कैसे हीरे० ॥ ५ ॥
 हृदय एरन पर हीरा कुट्या, घँम गया एरन माँय ।
 एरन टूटी पर हीरा न टूट्या, जद मन मे पत आय रे । कैसे हीरे० ॥ ६ ॥
 देवकुनाथ मिथ्या जद जोहरो, टाल ने दिया निराल ।
 मान कहे हम जोहरी पाके, न्याय न खोटों री मार रे । कैसे हीरे० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ग्रज के रसिधे" की । वाल करवा ॥

धरके कृष्णचन्द्र अग्रहार, अमी गीता को पायो है ॥ देर ॥

पीने से अमृत होत अमर प्राणो होय सोई,

ऐसो अमी कृष्णचन्द्र प्रगट दिवायो है ।

डूँढते किये सब जहाँ हूँ मैं सिर मारे,

असल अमी सो तो हाथ हूँ ना आयो है ।

कृष्ण करी कृपा जद दीनो है अमी असल,

पीते ही अमर रूप कृष्ण के समायो है ।

भरम क्रम के तोड़ बन्ध,

• भ्रम रूप दिवायो है । धर के कृष्णचन्द्र ॥ १ ॥

पारध हूँ की आँट लेके अगत को सुनाई गीता ।

ऐसे जो दयाल हम पर दया भारी कीनी है ।

भूल गये तद्वेदान भाग हूँ न रयो हमे,

ताहूँ कृष्णजी यह गीता रच दीनी है ।

रस है अवार यामे पार नहीं रस हूँ की,

जो ही जान सके याको शुद्ध होय पीनी है ।

कर्मयोगी कियो कृष्ण पारथ हू को पल माँय,

कर्मयोगी करते कछु देर हू न कीनी है ।

तत्त्वदर्शी नर हुए ह्यान गीता को गाथो है । धरके० ॥ २ ॥

चारों वेद सार को निकार भरयो गीता बीच,

कृष्णचन्द्र ऐसे कछु कमी हू न राखी है ।

सात रौ श्लोक बीच न्यारी न्यारी कीनी सब.

एक एक हूके सब मन की जो भाखी है ।

कते ही पुराण ग्रन्थ शाखों को पढ़ो तुम,

सब दर्शन बीच दर्शन गीता एक साखी है ।

और की कहे कहा यह जगत हू की दाता गीता,

ऐसी कृष्णचन्द्रजी ने अबुमुत रच राखी है ।

सभी सृष्टि को सार जगत में निजर न आयो है । धरके० ॥ ३ ॥

देषनाथ हाथ गह भूले यह बताई गीता,
मोते गहरी नींद बीच आन के जगायो है ।

जाग के मैं जोयो खोयो भ्रम यह तमाम मन,
मेरो स्वरूप सब बीच दरसायो है ।

आय हैं न जाँय कहीं भरे न जन्में हम,
द्यों के त्यों नित अक्षर अक्षर कहायो है ।

राज हू करत कछु लेश दुख को है नाँही
ऐसी गुरुदेव युक्ति कर समझायो है ।

मानसिह अब जीव ब्रह्म एक ही दरसायो है । धरके० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राधे राधे सब करे, पर राह को लहे न कोय ।

बिना राह लीयाँ बिना, पार कहो किम होय ॥

राधे राधे क्या कहो, सुनो ब्रज के लोक ।

बिना राह लियो बिना, भिटे कभी नही शोक ॥
 राधे भई बड भागिनी, पर तुमरे फूटे भाग ॥
 उण सुहाग अमर कियो, नुम क्यों लि गे दुहाग ॥

॥ गान ॥

।। तर्ज "ब्रज के रसिये" की । नाल दैरव ।।
 क्या रटगो राधे श्याम, दोनूँ मेरे बसे मन्दिर नाही ॥ टेर ॥
 वनत मन्दिर भाहि बाहिर न जावे मेरो,
 एक ही स्वरूप मेरे निज मे ममायो है ।
 आय है न जाय कही नित्य है प्रकाश यद् तां,
 धूप और छाया से निर्लेप ही कहायो है ।
 निराकार निर्लेप मङ्गल में वेद मन्थ गाई । हेजी क्या० ॥ १ ॥
 कौन हूँ हे कौन जाय आय फिर कौन मेरे,
 नित्य है प्रकाश नहीं दूर जो बमायो है ।
 नित्य है चेतन नहीं जड़ हूँ को काम कही,
 सदा खेल बीच आप खेल जो खेलायो है ।
 खेलत खेल अखेल रहे नहीं बात समझ आई । हेजी क्या० ॥ २ ॥
 मेरी ही इच्छा अवतार लियो गोकुल मोहि,
 मेरी ही इच्छा से मद्य गेल जो खेलायो है ।
 मेरी इच्छा भई जय त्याग दिवे खेल सय,
 एक जो अलखडी आप आप मे ममायो है ।
 वेद मन्थ यूँ कहे मङ्गल कि न्यारी निम पाई । हेजी क्या ॥ ३ ॥
 माया ईश ब्रह्म मेरी इच्छा हूँ से होत न्यारे,
 मेरी इच्छा भई तो सदा एक दरसायो है ।
 दियो हूँ को तोड़ मोड़ एक ही स्वरूप बीच,
 नहीं तो गयो ना कही नहीं वह आयो है ।
 भेद भरम में भटक भटक के यों ही मार खाई । हेजी क्या० ॥ ४ ॥
 निर्मित्त अवनार श्रीकृष्णचन्द्र धार लियो,

नित्य को अवतार गुरुदेव नाथ आशो है ।
 मानसिंह भयो जद पारथ सदृश मैं तो,
 गीता को दरपण लेके मुख को दिखायो है ।
 कर्मयोगी हय बने महज में उकी धूल काई । हेजी क्या० ॥ ५ ॥
 ॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिये" की । ताल कौरवा ॥

रे मंडयो चौक में रास, देखण ने पर घर कृष्ण जावे ॥ १ ॥
 बत के चौक बिच जाजम बिछाई रे । ज्ञान चन्द्र की खूब रोशनाई रे ।
 चत के चौक में जाजम बिछाई । ज्ञान चन्द्र की खूब रोशनाई ।
 रंम वँसुरी ब्रह्मानन्द की, सुणतौ सुख पावे ॥ १ ॥
 वृत्ति शृङ्गार सबयो हृद भारी रे । उत शृङ्गार सज मिल्यो है मुपरी रे ।
 वृत्ति शृङ्गार सबयो हृद भारी । उत शृङ्गार सज मिल्यो है मुपरी ।
 गोपी कृष्ण कृष्ण भये गोपी, छूँत जो मिट जावे ॥ २ ॥
 मान छोड़ कर आई अलवेली रे । सुरता नार जो राधे नवेली रे ।
 मान छोड़ कर आई अलवेली । सुरता नार जो राधे नवेली ।
 मिली पिया के माँय, न्यारी रह कृष्ण अब भटकवे ॥ ३ ॥
 देव तेतीस कोटि सब आया रे । रास देख सब ही सुख पाया रे ।
 देव तेतीस कोटि सब आया । रास देख सब ही सुख पाया ।
 गोप रूप सत्र होय ने लेख्या, रंग कर रचवावे ॥ ४ ॥
 देवनाथ ऐसो रास देखायो रे । मानसिंह उण बीच समायो रे ।
 देवनाथ ऐसो रास देखायो । मानसिंह उण बीच समायो ।
 मिल्यो है अमृत मोय, जहर फिर क्यों अब हम लावें ॥ ५ ॥

॥ सवैश ॥

दरी के कोई जात न पाँत हुती निर्वन्ध हुते नहीं बन्धन कोई ।
 हम बन्ध अनेकों डार दिये हरि दूर गये विश्वास यह मोई ।

यदि तोड़ देवें सब बन्धन को हरि आय मिले कछु जेज न होई ।
मान विचार कियो मन में वह भ्रम मति में सब कुछ छोड़ें ॥

॥ सबैया ॥

हरि के यदि जात और पाँत हुनी तो क्यों शरीर घर वेर जो खाते ।
हरि के यदि जात और पाँत हुनी तो क्यों ले गोध का गोद उठाते ।
हरि के यदि जात और पाँत हुनी तो क्यों ले गुद को कंठ लगाते ।
हरि के यदि जात और पाँत हुनी तो क्यों इनुमत को हृदय भिलाते ।
हरि के यदि जात और पाँत हुनी तो क्यों ले विभीषण का अपनाते ।
मान कहे निर्बन्ध हरि ये सभी विवादी पक्ष उठाते ॥

॥ गान ॥

॥ राम खमाच, तर्ज "भाछली" की । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई आ भक्ति नहीं भावे हो जी ।

भगवत आडी तो भीत लगाई, लम्पट माल ठग खावे रे । साधो भाई० ॥ १ ॥

जगत आधार कृष्ण जी कहिये, उवाँने सत्रिनुत बतखावे ।

वाँसूँई ऊँचा आर घण बैठा, सो महाप्रसाद न पावे रे । साधो भाई० ॥ २ ॥

न्होंने महाप्रसाद कर देवे, सुद क्यों दूर हटावे ।

गक्षप्रसाद से मोक्ष मिले तो, आप ही क्यों नही जावे । साधो भाई० ॥ ३ ॥

अधर नारी से तो राम रमत हैं, अपनी क्यों ये छिपावे ।

भोला जीव जिके नहीं समझे, भौंदू आपाँने बणावे रे । साधो भाई० ॥ ४ ॥

सब कुछ करे फिर बालक देवे, यही तो हँसी मोहे आवे ।

उमर पर्यन्त बालक क्रिम देवे, न्वाय न कोई चुकावे रे । साधो भाई० ॥ ५ ॥

बालक जिके तो रोय मांगे रोटी, ए तो फुरवां माल उड़ावे ।

बालक होय सो मात बहिन समझे, ए गोपी कर नाच नचावे रे । साधो भाई० ॥ ६ ॥

बालक जिके तो धूल मे लिपटे, कीचड़ मे ही चले जावे ।

केशर स्नान करे त्रित छठ ये, अष्ट सुगन्धी लगावे रे । साधो भाई० ॥ ७ ॥

रण भक्ति सूँ तो निकमाई आझा, भलाँई नरक में आवे ।

बाजाँ बजोल हँसी होय-अग में, कृष्ण घर मुफ्त लुटावे रे । साधो भाई० ॥ ७ ॥
 मोटा बालक ए भला घर अपने, म्हारे काम नहीं आवे ।
 याँ रे स्वर्ग में ए ही आवो, म्हारे तो स्वप्ने नहीं आवे रे । साधो भाई० ॥ ८ ॥
 स्वर्ग नरक सब मेरी इच्छा, मुक्त में ही उत्पन्न थावे ।
 स्वर्ग नरक को मैं ही दृष्टा, कृष्ण फिर भोग भोगावे रे । साधो भाई० ॥ ९ ॥
 म्हाणे बात मानसी जो नर, याँ रे वेध नहीं आवे ।
 खर मूरख से सारके नाही, मार खाए बड़ो आवे रे । साधो भाई० ॥ १० ॥
 देवनाथ-शुस सरजे मिलिया, नन का घोला मिटावे ।
 मानसिद्ध अखिल प्रभु चोम्बो, न्यारो नहीं दरसावे रे । साधो भाई० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राम परब्र । ताल धमाल ॥

बालकृष्ण क्या बुलाय कीर्तनी, बालकृष्ण क्या बुलाय ।
 इतनी देर भई सोहे गायत, अजहू सुने नहीं आय । कीर्तनी० ॥ १ ॥
 क्या तो तू झूठे ही गाये, या फन है उनके नाँव ।
 इत दोनों में कौन बात है, साचो देहु सनकाय । कीर्तनी० ॥ २ ॥
 तू ही ज झूठो हरि न बहरो, पण तू समझे नाँव ।
 पत्थरों को तू कृष्ण बनावे, तो स्वप्ने सुनन न आय । कीर्तनी० ॥ ३ ॥
 देख बेद और ग्रन्थ शास्त्र में, बात जकी यह पाय ।
 तिरय अवतार सची है प्रभु को, तब धोखो मिट जाय । कीर्तनी० ॥ ४ ॥
 कहा शृंगार पद गाय कनेबो, गूरत भोजन न लाय ।
 बालकृष्ण जो फिरे वारयो, जिनके लाय खिलाय । कीर्तनी० ॥ ५ ॥
 युवा कृष्ण जो चाहिये तुमको, तो हमें देय कुछ लाय ।
 दम सार्वे कुछ स्वाद बतावै, फिर तू गाय न गाय । कीर्तनी० ॥ ६ ॥
 गुरु ही मूढ़ मूढ़ तुम चेले, कसर एउ में नाँव ।
 मान कहे पत्थर पत्थरन से, राइयाँ आग(१) उपजाय । कीर्तनी० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

ठाकुर सेवक नाँय, मेरे मन ठाकुर सेवक नाँय ।
 ठाकुर सेवक बने नां बनिये, जो बनिया दुख पाय । मेर मन ठाकुर ॥ १ ॥
 अखिल विरर मे ठास भय हँ, खाली जगद नहीं पाय ।
 जहाँ ठाकुर सेवक दोऊं रेवे, रेवे तो तुम ही रब जाय । मेरे मनः ॥ १ ॥
 क्यों ये बानें बनावे निरुधी, किर किर जगत मुनाय ।
 आप ही ठाकुर आप पुजारी, क्यारक सय जग माँय । मेरे मनः ॥ २ ॥
 कौन वृथा यह घण्टा हिलावे, कौन विधर्मी हँमाय ।
 अपने आपको अँगूठा दिखावे, जा सूँ मन शरमाय । मेरे मनः ॥ ३ ॥
 रामिल छतों करें क्यों न्यारो, म्हाँ सूँ क्रियो नहीं जाय ।
 मान कहे मानो मत मानो, मैं तो साची दीजी मुनाय । मे' मनः ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "बाणी" की । ताल करवा ।

कृष्ण मेरो, नही गोरो नही कारो रे हेजी होजी ।
 जहाँ देवूँ मौजूद खडो है, पलक नहीं है ग्यागे रे । कृष्ण मेरो ॥ १ ॥
 दैत्य बनासुर वन्द्यासुर मारयो, तो भी न भयो हतारो रे हेजी होपी ।
 पाणू मुष्टि मार कुवलीया, कम को पकड़ पडाइयो रे । कृष्ण ॥ १ ॥
 मार जरासन्ध शिशुपाल को मारयो, दैत्यन दल सहारो रे हेजी होजी ।
 मन को मार निर्लेप रहत यह, नदवर अग्रत्र विवातो रे । कृष्ण ॥ २ ॥
 अर्जुन निवाय कुरुदल ने मारयो, जालम जयर धूनारो रे हेजी रे होजी ।
 कुक्ष कहतो ओ कुक्ष कह देवे, थाने मिलयो नहीं वरजण हारो रे । कृष्ण ॥ ३ ॥
 आप वसुदेव देवकी आप है, आप हे नन्द दुलारो रे हेजी होजी ।
 आप ही नन्द यतीमति आप ही, आप खाल यूथ सारो रे । कृष्ण ॥ ४ ॥
 आप ब्रज गोपी आप पूनाता, आप दैत्य पलहारो रे हेजी होजी ।

प शिशुपाल जरासन्ध आप ही, आप लीत्यो आप हारो रे । कृष्ण० ॥ ५ ॥
 धूल आप आप पाण्डवदल, कौन मर्यो कौन मारो रे हेजी होजी ।
 इन में मैं झूठ कहत हूँ तो, रूप विराट विचारो रे । कृष्ण० ॥ ६ ॥
 रथियों तो अपने स्वारथ बश, कीनो फैल अपारो रे हेजी होजी ।
 बा सखी हुड़दगा नाचे, लम्पट देश विगारो रे । कृष्ण० ॥ ७ ॥
 ना गोल रे भेला जो रहता तो, वह जाता भव धारो रे हेजी होजी ।
 वनाथ गुरु गीता पढ़ाई, कीयो लम्पट मुख कारो रे । कृष्ण० ॥ ८ ॥
 जूँ मैं व्यवहार लिंगार नहीं दुःख, सब जग रूप हमारो रे हेजी होजी ।
 न कहे तुम रहो रे अलगा, छुवूँ न पल्लो तुमारो रे । कृष्ण० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज “वाणी” की । ताल कौरवा ॥

साधो मैं तो वो ठाकुर मन ध्याया रे हेजी होजी ।

विरव विमु मैं प्रगट व्यापक, ना कोई पड़दा लगाया रे । साधो मैं० ॥ १ ॥

सब कुछ खाय सभी कुछ देवे, लेण देण से वो न्यारो रे हेजी होजी ।

प्रेम पुजारी सेवा माँच वैठो, सेवा करे हरधारो रे । साधो मैं० ॥ १ ॥

धोले ना धोलायो जागे न जगायो, वो ठाकुर फिर कैसा रे हेज. होजी ।

पूजा करे उत्तर नहीं देवे, हमको न चाहिये ऐसा रे । साधो मैं० ॥ २ ॥

भोजन छस्तीस छपन करे स्थारी, वो तो कदेई नहीं खावे रे हेजी होजी ।

करके तैयारी महान्त करे क्यों, सुपने न स्वाद बतावे रे । साधो मैं० ॥ ३ ॥

श्रममदेव ठाकुर भेरो ऐसो, माँग माँग सब पावे रे हेजी होजी ।

वाद श्रवण कहे सब मुख सूँ, मन राजी होय जावे रे । साधो मैं० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु मिलिया गुसाई, बलम अवतार कहावे रे हेजी होजी ।

मानसिंह ऐसो बन वैष्णव, ठाकुर बीच सनावे रे । साधो मैं० ॥ ५ ॥

॥ सबैया ॥

हांसी जो आत मेरे मन में पशुओं से घुरे अकल कछु नाई ।

राम के नाम को ऐसों गिने जिन आटे की गोली ले मच्छी चुगाई ।
 आटे में मच्छी में राम बसे और राम बसे उख कागद मॉई ।
 मान कहे मन भूल करो इख भूल में क्यों सब शान गभाई ॥

॥ सबैया ॥

धनेक ओम् और राम के मंत्र को आप लिखे औरों में लिखावे ।
 बौन में बेद में गेसो लिख्यो जिनसे ये मूरख जगत वटकावे ।
 कागद और गुमावत रयाही नयन को अपने अंधे बनावे ।
 मान कहे दर राख्यो नहीं घनश्याम उहे रहें छिप न आवे ॥

॥ सबैया ॥

ओम् को मंत्र पहचो हमने हम ओम् स्वरूप में सहज समाये ।
 आम ही रूप लख्यो जग को और ओम् बिना कछु और न पाये ।
 आ और वो सब दूर गये हम ही हम ओम् रूप लवाये ।
 मान कहे अम ओम् रटें रटते रटते निज ओम् रहाये ।

॥ दोहा ॥

सारंग मन भीठा घली, शोभा कही न जाव
 यह रस कहिये कानको, मुख जो कान के नाँव
 जहाँ मुख है शोभा नहीं, क्यों कर वेहें सुनाव
 मानमिह सारंग को, मुखियों ही पन आव ।
 हा सारंग जो राग है, इन सारंगी साज ।
 इन सारंग (१) को गान हो, और सारंग (२) को ही गाज ।
 सारंग एता भेला हुआ, क्या जानूँ क्या होय ।
 एक ही सारंग राग आ, सुणतों ले मन मोय ।

॥ गान ॥

॥ राग लूर-सारंग ; तर्ज रमिये की । ताल कैरवा ॥

भेद सूँ सिद्ध बनावो रे, मनवे ने ॥ टेर ॥

१—रत्री, २—मेघ ।

जीव भौड़ में भूल गयो है । हेजी थाँ सूँ अविद्या रो जाल हटावो रे; म० ॥१॥
 सिद्धी जायो परा पाल्यो गइरियाँ । हेजी अब थारे हाथ सूँ छुड़ावो रे; म० ॥२॥
 घास गरीबी ओ खाय बापड़ो । हेजी जगने समता रो मांस खिलावो रे; म० ॥३॥
 सिद्ध वणे जद चरली विपयो ने । हेजी इगने तुरिया वन पहुँचावो रे; म० ॥४॥
 मान रहे ऐसो मौको मिलियो । हेजी इण रो अब मत दाव सावो रे; ॥ ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

अब ही महल निज आवो रसिया ॥ टेर ॥

कुदही रे महलां घणा दिन मोदना;

अब सुमता सूँ प्रेम बढ़ावो जी रसिया । अब ही० ॥ १ ॥

पांच विपय रस कई दिन पीयो;

अब ज्ञान आनन्द मद् पावो जी रसिया । अब ही० ॥ २ ॥

सौती की सहज घणा दिन सूता;

पीव प्यारी सहज जगोवो जी रसिया । अब ही० ॥ ३ ॥

मन मथुरा थे घणा दिन रह्या;

अब गमरी गोकुल में खेलावो जी रसिया । अब ही० ॥ ४ ॥

सुमता श्यामा याद दिलावे;

इहाने दिल सूँ मती विसरावो जी रसिया । अब ही० ॥ ५ ॥

चित्तरो चैत इहारी समलो ही कुन्दल्यो;

था में प्रेम वर्षा वसंवि जी रसिया । अब ही० ॥ ६ ॥

प्रागुण वीत्यो फिर के माहि;

अब चैत चित्त मुलभावो जी रसिया । अब ही० ॥ ७ ॥

मानसिद्ध कह शुद्ध कसना;

इहाने तत्त्वमसि भोग भोगावो जी रसिया । अब ही० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

कॉई रे नीद सुख सूतो मनवा ॥ टेर ॥

सूनों मूर्तों थारो काय न सरसी, उपर काल तो आय पकड़मी;
इण काल कौज सँ नू क्लिण विव लइसी । कॉई रे नीन्द० ॥ १ ॥
बहुत प्रयत्न आ काल की माया; इण में बड़ा बड़ा गोता खाया;
कैयों रा माल अठे सुपत लुटाया । कॉई रे नीन्द० ॥ २ ॥
तेरो तू अजहू जाणे कॉईं, आयोड़ी बाजी ने हाथे मलाई;
अमहू जीतने जेज लागे नौही । कॉई रे नीन्द० ॥ ३ ॥
अपनो रूप लग्यों दुःख मिट जावे; काल बजी फेर निकट न आवे;
अन्ध कूर मूँ लुप्त बच जावे । कॉई रे नीन्द० ॥ ४ ॥
पम्थापम्थ में तो पग मत दीजे; यों रोलाँ सँ तो अलगो रहीजे;
कॉई सन्त पिलावे तां अमृत पीजे । कॉई रे नीन्द० ॥ ५ ॥
मानसिहू जैमा गुह कद पामी; जोया न मिलसी इना संन्यासी;
मान गुमान काट जम फाँसी । कॉई रे नीन्द० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

तर्ज "चैत के रसिये का । ताल दीपचन्दी

अन के आनन्द र्हँ ने आयो रतिअ ॥ टेर ॥

बाईद हँद द घर मै, हो त्रिलियो । आनन्द मगन होय मत्रो लिलियो । अव० ॥ १ ॥
वाट जाहतां ने मइत्र निजाया, मइगुरु मिलतो हो रतन दिलियो । अव० ॥ २ ॥
भूज भरम सँ अकेजो सुतो, मानो नही संग कुमता दूरो । अव० ॥ ३ ॥
पित्र प्यारी प्यारी पीत्र मया एको, दोय पण्ये रो मिट गर्था लेखो । अव० ॥ ४ ॥
श्रीतम छर्तो मै तो जाखी कुमारी, हा हा भून कर रह गई न्यारी । अव० ॥ ५ ॥
कडे सँ गुःगान मान गुरु रायो, जिय गृहस्थ बीच संन्यास दिवायो । अव० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलियो" की । ताल कैरवा ॥

नर दिव्य नेत्र में सभ, कोरो काजलियो ॥ १ ॥

ज्ञान दीप नित ज्योत जगी । त्रिण में प्रेम की जाती लगी ।

तू मन को घृत नित डार; कोरो काजलियो० ॥ १ ॥

अंजत तू नित सुख पावे । काम क्रोध फिर नहीं आवे ।

और मोयले वृत्ति नार; कोरो काजलियो० ॥ २ ॥

दिव्य नेत्र त्रिण सूँ खुले, मोह निन्द्रा में नाँव घुने ।

ब.व होसी नीता विचार; कोरो काजलियो० ॥ ३ ॥

प्राज्ञ अन्ध तू क्यों जो भयो । प्रज्ञा बलु मीच रयो ।

कट पट लेबो उबार; कोरो काजलियो० ॥ ४ ॥

इण दम की कुछ ठाव नहीं । आवे और यह आवे नहीं ।

मल कीजे जेज लिगार; कोरो काजलियो० ॥ ५ ॥

जैसे कृष्ण पारथ हि दियो । देवनाथ गुरु मोय कसो ।

मोय अपने सेवक विचार; कोरो काजलियो० ॥ ६ ॥

मान कहे मैं सख को कहूँ । गुप्त भेद नहीं नेक रखूँ ।

कोई देखो इणने सार; कोरो काजलियो० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दौपचन्दी ॥

सत बोलो रे, साक सत बोलो: कपट पट खोलो रे ॥ १ ॥

स्वारथ लुी को दूर फँक दो, मत अमृत विष घोतो रे । सत बोलो० ॥ १ ॥

भूठ कपट सूँ किता न चलसी, मतले साख सूँ ओलो रे । सत० ॥ २ ॥

तुम भी जबर उस प्रभु से डिपाओ, अन्तर्यामी नहीं है भोलो रे । सत० ॥ ३ ॥

पन्थापन्थ के कपट पट दीया, खूब मचायो इन रोलो रे । सत० ॥ ४ ॥

बाधा ने जीवशा दसा ने विसा, छोड़ सीधे मग होलो रे । सत० ॥

नारी ने पुरुष स्वाथ मुँ बिगाडो, पड़ेला जमों रो शिर ठोलो रे । सत० ॥ ६ ॥
 नकटो री लाज राम किम राखे, राम नहीं है थॉरो गोलो रे । सत० ॥ ७ ॥
 देवनाथ गुरु मन समझाई, जावो छाती मत छोलो रे । सत० ॥ ८ ॥
 मानसिद्ध कहे मिह जो वनजो, कहुँ सो वचन काटे तोलो रे । सत० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफ़ी । ताल कैरवा ॥

आवो जी मिल होरी खेलें, घोल्थो सुरंगी रंग ॥ टेर ॥
 थॉ रँगों सुँ मत खेल आवरे, कल उड जायगो पलग । आवो जी० ॥ १ ॥
 इण रंग सुँ तं अति सुख उरजे, शीतल होय जाने अंग । आवो जी० ॥ २ ॥
 ब्रह्मानन्द की बूटी पिलाड, पिथो मत विषय की भग । आवो जी० ॥ ३ ॥
 प्रेम भाव सुँ खेलो फगवाँ, सत्पुरुषो के सग । आवो जी० ॥ ४ ॥
 मान कहे नर नारी सभी मिल, खेलो खेलो करके उरंग । आवो जी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफ़ी । ताल कैरवा ॥

होरी मे हिम्मत से खेलनो, अलबेलो रा कम ॥ टेर ॥
 जो हरपोरु जीव है वपुरा, विषयों तथा गुलाम । होरी मे० ॥ १ ॥
 दण होरी मे काम फुडनी रो, पलक नहीं है विश्राम । होरी मे० ॥ २ ॥
 महा ज लिम सुँ जीत निकलनो, जवरी है माया भाम । होरी मे० ॥ ३ ॥
 जो चूके गो चिम्भट भारे, कर लेवे अननो गुलाम । होरी मे० ॥ ४ ॥
 देवनाथ गुरु फुरती सिखाई, मिल गयो आतमराम । होरी मे० ॥ ५ ॥
 मानसिद्ध कहे जेज मति कीजो, फुरती रो है थो काम । होरी मे० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

फलीरी कायर सुँ कद होय ।

रा संल दशी पर खेलें, बाहर देवे रोय । फलीरी वायुः० ॥ टेर ॥

इण शूली पर काँई तू सोवे, हम नहीं मानें कोय ।

निश्चय री शूली कलेजे पोवे, मरद जासूँ जद तोय । फकीरी० ॥ १ ॥

धाँई तू लकड़ जगावे गौला, क्यों दम अमोलख खोय ।

जय तरु ज्ञान अगन नहीं जागी, शिर कूटाई होय । फकीरी० ॥ २ ॥

काँई तू साँकल कसे कमर में, दीवी बुद्धि ने लोय ।

नित साँकल जो बन्धे म्हारे राज रे, बजन तोल मण दोय । फकीरी० ॥ ३ ॥

थूँ कीर्वा नहीं मानों फकीरी, म्हाँने भोला न जानो कोय ।

सिहा रा सुत सिंह ही होसी, खाल भेड़ों री खोय । फकीरी० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु दीवी फकीरी, अब रेया वोफारी में सोय ।

सूताँ पछे जागण री है सौगन्द, मत वतलावो मोय । फकीरी० ॥ ५ ॥

जगत बहके उरों में नहीं बहकूँ, सोच चिन्त दिया लोय ।

मानसिंह कहे मेरे घर आईजो, सुख आप में पोय । फकीरी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सौरठ । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा मती रे बिगाड़ो देरा ।

खेलयो हुवे तो खरी पर खेलो, ले गुरु रो उपदेश । फकीरा० मती० ॥ १ ॥

ताण चारण कर भया थे, धर अग्नि रो भेष ।

भेष री देख तो भूल गया थे, कर कर मौज हमेश । फकीरा मती० ॥ १ ॥

छोटो कुटुम्ब छोड़ियो घर में, अब मोटे सूँ आदेश ।

अब तो स्वाथ ने छोड़ो मावों, दोय सैबसी केश । फकीरा मती० ॥ २ ॥

वाजा महीरे ने निकर चौगुणो, कियो नहीं मंग प्रवेश ।

भारत देश रसातल जावे, दिन दिन दूखो कलेरो । फकीरा मती० ॥ ३ ॥

पन्थापन्थ में पच पच मूँवा, मूल्या आत्म जरेश ।

देवनाथ गुरु कृपा करी जद, भोगा मरम सन्देश । फकीरा मती० ॥ ४ ॥

मानसिंह जद मन मममायो, पहर यो अचल रख भेष । फकीरा मती० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । दादरा ॥

नर ए नहीं व्यौपारी, देखो विचारी, बेचे काच कथोर ।

धेतो सुगु लीजो मव वीर रे । नर ए० ॥ टेर ॥

मोटा मोटा धूखा घाले, बैठे गगा तीर ।

राम की ओट में चोट करे ए, चावे पूड़ा ने खीर रे । नर ए० ॥ १ ॥

माटी मोटी बानों बणावे, राखे लंगोटी चीर ।

लागे दम जत्र गम न पड़े कुध, नहीं बे धरे मन धीर रे । नर ए० ॥ २ ॥

पन्थापन्ध री झौड मचाई, बाधे कड़ी जंजीर ।

वाजे तो थाया पण कावा माया रा, नहीं समदों सूँ सीर रे । नर ए० ॥ ३ ॥

अलगों सूँ ई हाथ याने ओबो, नेड़ा न अबणदो वीर ।

जो कोई यॉरे पाने पड़िया, ज्यॉरो फुटो तकदीर रे । नर ए० ॥ ४ ॥

देवनाथ गुरु महर करी म्होंने, दिया असली हीर ।

मान मिह्या जो ममुद से जायके, कुण पोवे नालगे रो नीर रे । नर ए० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग रेखता । ताल कवाली ॥

बने हम त्याग के त्यागी, त्याग यह क्या विचारा है । ॥ टेर ॥

अगर कहो देह को त्यागो, तो इनको हमने कय पकडी ।

छोड़ते देह को मूरख, ज्ञान भूटा तुम्हारा है ॥ १ ॥

छोड़ अभिमान इस तन का, लैन पर हम चलायेंगे ।

फँसंगे किस लिये हम तो, हमें खारा न प्यारा है ॥ २ ॥

रहें व्यवहार मे प्रवृत्त, बही तो सच्चे शानी हैं ।

निरुल कर जाय जंगल में, मता नहीं यह हमारा है ॥ ३ ॥

अगर कुध त्याग में होता, तो भिचुक होता था अर्जुन ।

बचाया क्यों सप्यासी से, कुण पागल तुम्हारा है ॥ ४ ॥

भाग कोई चीज और होवे, सभी यह खेल है मेरा ।
 बाँग मैं मय सजाता हूँ, त्रिगड़ ना कुड़ हमारा है ॥ ५ ॥
 मगर कोई त्याग को त्यागे, बनाऊँ दोस्त मैं उसको ।
 हूँ नृप मान रूप मेरा, न मुझ से कुड़ भी न्यारा है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "डंके" की । ताल कैरवा ॥

धर्म धर्म सब कहे धर्म को अरथ न जाने रे, लख्यौं विन किम पहिचाने ॥ टेर ॥
 बादा बन्धी धर्म बनाय । इसमें नाना जोब फँसाय ।

कृष्णचन्द्र जो कयो धर्म सो कोइयन माने रे । लख्यौं विन० ॥ १ ॥

नाना सजहर सो धर्म है नाँय । यह मन आये दिये ठहराय ।

धर्म वाक्य यूँ वेद उर्षानपद् सही बलाने रे । लख्यौं विन० ॥ २ ॥

धर्म यही शुभ कर्तव्य काम । अधरम वह विपथों के गुलाम ।

विपय वास सूँ रहे रहित वो धर्म को माने रे । लख्यौं विन० ॥ ३ ॥

तब अधर्मी यहु बढ जाय । विपय झाल को बहुत जगाय ।

देव्य मूरत धर कृष्णचन्द्र अधर्म मिटाने रे । लख्यौं विन० ॥ ४ ॥

मातहतत्व लखे कोई जान । उनको धर्मी सत्त्वे मान ।

गौच तीन को बरा में किया जद आप समाने रे । लख्यौं विन० ॥ ५ ॥

कीनो अहुर धम जव रुवार । देवनाथ गुरु लियो अबतार ।

मानसिद कई सद् गीता को धम सुनाने रे । लख्यौं वि० ॥ ६ ॥

॥ गा । ॥

॥- राग खमाच, तर्ज "माछली की वाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

मित्रो म्होंने बा लघुता नहीं भावे ।

दुःखण भाय शीश काटण ने, क्यों कर लघु बन जावें ।

कृत्रीकुल को दाग पुनि लागे, गीता वचन शरमावे रे । मित्रो० ॥ १ ॥

भाग जले और बुझावे नोई, तो सगलोई धर जल जावे ।

पाणी पहिला पाल धान्य लो, वचन बढ़ा फरमावे रे । मित्रो० ॥ २ ॥